लेखक की रचनाओं के सम्बन्ध में कुछ प्रमुख सम्मतियाँ—

× × ×

कहानी संग्रहों के विषय में :—

नेशनल हैरल्ड, जून १९५०

'यह कहानियाँ संसार की किसी भी भाषा की श्रेष्ठ कहानियों के संग्रह में ऊँचा स्थान पाने योग्य हैं ।"

कविवर मैथिलीशरण गुप्त

"विधाता ने लेखक को मुक्तहस्त होकर प्रतिभा और शक्ति दी है हिन्दी कथा साहित्य अभी तक लेता ही रहा, राम कृपा से अब वह देने योग्य भी हो गया है। यह शक्ति हिंदी को ऐसी ही रचनाओं से मिल रही है · ·।"

उपन्यासों के विषय में :—

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

"यशपाल की परतूलिका स्थायी मूल्य की चीज़ों के लिए है 'देशद्रोही' संसार की उन्नत भाषाओं के उपन्यासों की तुलना में रखी जा सकती है।"

'आजकल' दिसम्बर १९४९ :—

'मनुष्य के रूप'—"उपन्यास वास्तविकता, कल्पना और उद्देश्यपरकता का अपूर्व मिलान है"

हिन्दुस्तान—नयी दिल्ली (जून १९४९)

"मतविरोध होने पर भी लेखक की कला का लोहा मानना ही पड़ता है ।"

राजनैतिक निबन्धों के विषय में :—

आचार्य नरेन्द्रदेव वाइस चांसलर, लखनऊ विश्वविद्यालय

"इन लेखों को पढकर आपके होठों पर जो मुस्कराहट आयेगा वह आत्मविस्मृति और आनन्दोल्लास की न होकर क्षोभ, परिताप और करुणा की होगी । लेखक आत्मविस्मृत समाज को कलम की नोक से गुदगुदा कर जगाने की चेष्टा करता है और समाज को जागते न देख कभी कलम की नोक समाज के शरीर में गड़ा भी देता है।

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

'गांधीवाद की शव परीक्षा'—इस वर्ष की सर्वोत्तम और सर्वोपयोगी पुस्तक है

विप्लव पुस्तक माला—१७

तुर्कमानिस्तान में जीवन मरण के लोमहर्ष संघर्ष की कहानी

पक्का कदम

अनुवादक

यशपाल

मूल लेखक

बर्दी केर्बाबायेव

प्रकाशक

विप्लव कार्यालय लखनऊ

१९४९

प्रथम संस्करण

मूल्य ४)

प्रकाशक —
विप्लव कार्यालय
२१—हीवेट रोड,
लखनऊ

अनुवाद की प्रस्तुत लिपि के प्रकाशन का अधिकार
अनुवादक द्वारा सुरक्षित है

मुद्रक :—
साथी प्रेस
२१—हीवेट रोड,
लखनऊ

समर्पण —

मानवता की मुक्ति और उत्थान के कार्य में
सक्रिय भाग लेने वाले साथियों को
सादर—

यशपाल

जिला जेल,
लखनऊ
६ मार्च १९४६

परिचय:—

गत फरवरी मास में हमारी 'राष्ट्रीय' सरकार ने कोई भी कारण या अपराध बताये बिना मुझे राजनैतिक बन्दी बनाकर जेल में डाल दिया। तब यही अनुमान करना पड़ा कि हमारी 'राष्ट्रीय' सरकार की दृष्टि में मेरे विचार, सार्वजनिक कार्य और प्रयत्न राष्ट्र हित के विरुद्ध हैं।

इस प्रसंग में यह कहना धृष्टता न होगी कि इस देश की स्वतन्त्रता और राष्ट्रीय भावना के लिये विदेशी सरकार के हाथों जितना हम लोगों ने (मैंने और मेरे साथियों ने) पाया है*, उतना शायद उन लोगों ने नहीं पाया होगा जिन्हें ब्रिटिश सरकार अपने भरोसे का समझ इस देश के राष्ट्रीय हित का उत्तरदायित्व सौंप गई है।

एक समय मुझे जेल से मुक्त करने के प्रश्न पर अंग्रेज़ गवर्नर के विरोध करने के कारण यू० पी० की कांग्रेसी सरकार को बहुत परेशानी उठानी पड़ी थी। मेरी रिहाई का प्रश्न सिद्धान्त की रक्षा का प्रश्न बन गया था। क्योंकि उस समय कांग्रेसी सरकार को विश्वास था कि अँग्रेज़ सरकार का कोपभाजन मुझे राष्ट्रीय भावना के कारण ही बनना पड़ा है। आज मेरे विचार, प्रयत्न और सार्वजनिक कार्य 'राष्ट्रीय' सरकार की दृष्टि में राष्ट्र के लिये अहितकार हो गये हैं।

मैं इस देश के हज़ारों लोगों में से एक उदाहरण हूँ। मेरी और मेरे समान हज़ारों की यह स्थिति, राष्ट्र के हित में पैदा हो गये अन्तर-विरोधों का एक उदाहरण है। यदि भगतसिंह और चन्द्रशेखर आज़ाद आज जिन्दा होते, विश्वास से कह सकता हूँ, यही बात उनके साथ भी होती, वे भी किसी जेल में होते।

---

* चौदह वर्ष का कारावास

इस बार 'राष्ट्रीय' सरकार द्वारा जेल में बन्द कर दिए जाने पर Decisive Step पढ़ते समय राष्ट्रीय हित के सम्बन्ध में पुस्तक के पात्रों के दृष्टि कोण में अन्तर और विरोध देख इच्छा हुई कि इसका अनुवाद अपनी भाषा में कर डालूं।

*　　　*　　　*

पक्का कदम की कहानी अपना परिचय स्वयं देगी। सक्षेप में कहानी का परिचय यह है.-

ज़ार के शासन में तुर्कमानिस्तान पूर्णतः रूसी साम्राज्य के आधीन था। समाजवादी क्रान्ति से ज़ार का तख्ता पलट कर ज्यों ही समाजवादी सोवियत ने शासन की शक्ति अपने हाथ में ली, सोवियत ने राष्ट्रीय समता के सिद्धान्त के अनुसार रूसी साम्राज्य के आधीन सभी गुलाम देशों को रूसी राष्ट्र के समान और स्वतन्त्र घोषित कर दिया। इन देशों को आधीनता के बंधन से मुक्त कर आत्मनिर्णय से सहयोग का अधिकार दे दिया गया।

अक्टूबर—१९१७ में ज़ार के शासन का अंत हो जाने पर तुर्कमानिस्तान में विचित्र स्थिति पैदा हो गई। ज़ार के शासन से दबी और कुचली मजदूर और किसान जनता ने मुक्ति की आशा का सांस लिया। यह जनता रूस की समाजवादी सोवियत व्यवस्था के अनुसार खेती की भूमि का राष्ट्रीयकरण और उद्योग धन्दों और व्यापार पर मज़दूरों और मेहनत करने वाली सर्वसाधारण जनता का अधिकार चाहती थी। दूसरी ओर ज़ारशाही का अंग बन कर तुर्कमानी जनता के खून से समृद्ध होते आये तुर्कमानी सरदारों जागीरदारों और व्यापारियों के लिये ज़ारशाही का तख्ता-पलट और समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का प्रयत्न उनके अन्त की सूचना के समान हो गया। इस शोषक वर्ग के साथ ही मध्यम श्रेणी का वह भाग था जो देश को ज़ारशाही के शोषण के बन्धनों में बांधने वाली नौकरशाही का अंग बन कर ज़ारशाही की तनखाहों पर पल रहा था और इस अधिकार की धांधली से जनता को लूटकर अपना स्वार्थ पूरा करता आया था।

ज़ारशाही के पतन से पैदा हो गई अव्यवस्था में तुर्कमानिस्तान के सरदारों और खानों ने स्वतंत्र राजा बन जाने के स्वप्न देखने आरम्भ किये।

उन्होंने तुर्कमानिस्तान की मजदूर-किसान जनता द्वारा कायम किये सोवियत शासन (पंचायती राज) के विरुद्ध हथियार उठा लिये। इस्लाम और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के नाम पर जनता को बहका कर सोवियत शासन के विरुद्ध मोर्चे कायम किये गए। इन सोवियत विरोधी तुर्कमानी सरदारों और खानों की सहायता के लिए सोवियत शासन के विरुद्ध लड़ने वाले ज़ारशाही के बड़े बड़े जनरल तुर्कमानिस्तान में आ पहुंचे। क्रान्तिकारी लाल सेना ने इन ज़ारशाही जनरलों को हराकर रूस से भगा दिया था। विदेशी पूँजीपति राष्ट्र इन जनरलों की सहायता के लिये प्रस्तुत थे। तीसरी बड़ी सोवियत विरोधी शक्ति थी ब्रिटिश साम्राज्यशाही जो संसार में समाजवाद के फैलने की आशंका को निर्मूल कर देने के लिए स्वयं रूस में ही उसे कुचल देना चाहती थी। ब्रिटिश साम्राज्य-शाही ने अरबों रुपया, असंख्य शस्त्र और हिन्दुस्तान से काफी सेना भी सोवियत विरोधी मोर्चे पर तुर्कमानी खानों, सरदारों और ज़ारशाही के जनरलों की सहायता के लिये तुर्कमानिस्तान में पहुंचा दी थी। परस्पर एक दूसरे को छलकर भी अपने स्वार्थ साधने में यह तीनों शक्तियाँ समाजवादी सोवियत और लाल सेना के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाये थीं।

तुर्कमानिस्तान समाजवादी लाल सेनाओं और साम्राज्यवादी सफेद सेनाओं के संघर्ष का अखाड़ा बन गया। इस अवस्था में तुर्कमानिस्तान की दिहाती और नागरिक जनता के किसी भी व्यक्ति के लिये निश्पक्ष और निरपेक्ष बने रहना सम्भव न था।

केर्बाबायेव ने उपरोक्त संघर्ष में भाग लिया था। उसने इसी वातावरण को लेकर तुर्कमानी भाषा में एक युवक अरतैक के इस संघर्ष के दुविधा पूर्ण वातावरण में एक पक्का कदम उठाने की कहानी लिखी है। अरतैक आरम्भ में ज़ारशाही के शोषण और दमन के विरोध में राष्ट्रीय भावना से विद्रोही अज़ीज़खाँ के साथ जान की बाज़ी लगाने मैदान में उतरा था। कुछ समय वह राष्ट्रीयता का दम भरने वाली, सोवियतविरोधी सफेद सेना का अफसर भी रहा और फिर सोवियत के पक्ष हो अज़ीज़खाँ और उसकी संरक्षक ब्रिटिश सेनाओं से लोहा लेता हुआ जंग के मैदान में आहत हुआ।

पक्का कदम का नायक अरतैक तुर्कमानिस्तान के कृषि प्रधान समाज का प्रतिनिधि व्यक्ति है। अरतैक को किसी भी दृष्टि से विशेष परिस्थितियों

या विशेष घटना की उपज नहीं कहा जा सकता। अपने समाज के किसी भी साधारण व्यक्ति की भाँति वह जीवित रहना चाहता है और जीवित रहने का प्रयत्न करता है? उसमें भूल भी होती है और वह भूल को पहचान कर सही राह को अपनाने का यत्न करता है। उसका लक्ष्य बहुत सीधा है — जीवित रहने के अवसर की इच्छा और जीवित रह सकने के लिये सामूहिक रूप से प्रयत्न। अरतैक की कहानी ऐसे समाज के जीवन संघर्ष की कहानी है जिस समाज के सामने जीवन और मृत्यु का प्रश्न था'— सामन्तवादी और पूँजीवादी बँधनों में बाँध कर रखने वाली साम्प्रदायिकता से रंगी राष्ट्रीयता की भ्रान्ति में साम्राज्यशाही की गुलामी के जुये में गला फँसा देने का या समाजवाद द्वारा स्वतन्त्र मनुष्य बनने का।

स्वाभावतः ही अरतैक के जीवन की कहानी जीवन मरण के लोमहर्ष संघर्ष की कहानी है।

*　　　*　　　*

साहित्य का मार्ग अपनाने के समय से मैं मौलिक ही लिखता आया हूं। मेरा विचार है कि अन्य समाजों की अनुभूतिया और परिस्थितियों को अपनी भाषा में प्रतिबिम्बित करने की अपेक्षा स्वयं हमारे अपने समाज में ही देखने और कहने के लिये पर्याप्त सामग्री है परन्तु दूसरे समाज और देशों के अपने देश जैसी ही परिस्थितियाँ और समस्यायें दिखाई देने पर तुलनात्मक दृष्टि से उनकी ओर देख लेना भी उपयोगी हो सकता है। इसलिये मैंने पक्का कदम के अनुवाद में श्रम किया है।

११ नम्बर बैरक,
ज़िला जेल, लखनऊ,
६—मार्च १९४९

यशपाल

१

तुर्कमानिया का देश अब समाजवादी रूसी सोवियत संघ का भाग है। इस समय तुर्कमानिया नहरों की सिंचाई से खूब सर सब्ज बन गया है। वहां बहुत बड़े पैमाने पर सांझी खेती होती है। बड़ी बड़ी मिलें मजदूरों की अपनी सम्पत्ति हैं और इनमें बहुत अधिक पैदावार हो रही है। तुर्कमानिया का प्रजातन्त्र राज्य पूर्ण स्वतन्त्र है, चाहे रूसी समाजवादी सोवियत संघ में रहे या उससे अपना सम्बन्ध तोड़ ले।

चालीस-पचास वर्ष पूर्व तुर्कमानिया का देश प्राय मरूभूमि था। लोग डेरावासी ढंग से रहते थे। भेड़, बकरियां और ऊंट उनकी सम्पत्ति थे। खेती थोड़ी बहुत, जहां तहां होती थी। रूस के ज़ार ने तुर्कमानिया को अपने साम्राज्य में जोड़ लिया था। स्थानीय पैदावार का कच्चा माल लेजाने के लिए एकाध रेल लाइन भी बना दी गई थी। नहरें बहुत कम थीं। तुर्कमानी जनता जीवन का डेरावासी ढंग छोड़ खेती करने और स्थायी बस्तियां बना कर रहने लगी थी परन्तु पुराने रिवाज अभी छूटे न थे। लोग प्राय ही छोलदारियों में रहते थे। छोलदारियों के ही गाव बस जाते थे। उस समय इस देश के रिवाज़ और पोशाक प्रायः ईरान और अफगानिस्तान से मिलते जुलते थे।

ज़ार के शासन के समय तुर्कमानिया में उद्योग-धंधे और कला-कौशल की उन्नति नहीं की गई। रूस के साम्राज्यवादी शासक तुर्कमानिया को अपने लिये कच्चे माल की मंडी बनाये रखना चाहते थे। तुर्कमानी लोग दु:खी और असंतुष्ट थे। १९१६ में तुर्कमानिया की जनता का असतोष देख एक तुर्कमानी सरदार अज़ीज़खां ने ज़ार के विरुद्ध बगावत कर अपना स्वतंत्र शासन जमाना चाहा था परन्तु उसकी बगावत असफल रही।

सन् १९१७ के साल तुर्कमानिया में भयंकर सूखा पड़ गया। जाड़ों

भर आकाश से जल की एक बूँद न गिरी। बसन्त आया तो धरती में घास का एक कल्ला न फूट सका। नहरें, नाले ताल सब सूख गए।

गरमी के दिन आए। झुलसी हुई धरती पर तपी धूल भरी आँधियाँ चलने लगीं। रूखे और जाड़े से पशुओं के शरीर ठठरी भर रह गए थे। सिर लटकाए, घास के लिए तरसे आँखें भूमि पर जमाए पशु भटकते फिरते परन्तु घास कहाँ थी? बसन्त जाते जाते पशुओं में बीमारी फैल गई।

किसानों ने समय पर वर्षा की आशा से खेत जोत कर बीज डाल दिए थे। जुते हुए खेत धूल से भर गए और बीज के लिए डाला गया अन्न धूल में मिल गया। किसान अपने रहे सहे पशुओं को अपनी आँखों के सामने सूख कर मरते देख रहे थे। उनके कलेजे मुँह को आकर रह जाते परन्तु बेबस थे। पशुओं को क्या देते? बच्चों के लिए, अपने लिए ही कुछ न था।

'काशी' गाँव के एक गलियारे में बहुत से दुर्बल, निढाल किसान दीवारों की छाया में धरती पर आ बैठे थे। चार आदमी धरती पर लकीरें बना 'बत्तीसी' खेल रहे थे। कुछ लोग निरन्तर नए आते दुःखों की बातें कह सुन रहे थे। कुछ चुपचाप उदास बैठे थे। कई रूस के सम्राट ज़ार के हुक्म से रूसी सेना में मजदूरी के लिए जबरन भरती कर लाम पर भेज दिए गए अपने सम्बन्धियों की चर्चा कर रहे थे। हवा के झोंके इन लोगों पर तपी धूल फेंक जाते। इन लोगों के सिर पर आकाश में भी धूल का बादल घिरा हुआ था।

एक किसान अपनी धूल भरी सफेद दाढ़ी मुट्ठी में थाम, सूजी हुई नाक फुला, भूख से रूखे निर्बल स्वर में बोला—"ऐसे दिन तो भाई कभी देखे सुने न थे, अल्ला खैर करे'।

दूसरे बूढ़े किसान ने अपनी झुकी हुई पलकें जवार के खेतों की ओर उठाईं। खेतों में धूल का बवंडर उठ रहा था। किसान के कलेजे से एक आह उठ आई। उधर से आँखें फेर वह बोला—"भैया, अपनी उम्र में काल देखा है और जाड़ा भी देखा है, पर ऐसे दिन नहीं देखे थे! पूरा बरस बीत गया और एक बूँद पानी नहीं। जाने क्या होने को है? मौलवी लोग कहते हैं—कयामत से पहले ऐसा सूखा पड़ेगा कि धरती पर कहीं हरियाली नहीं रह जायगी। अल्ला खैर करे!" किसान ने अपनी ही बात से डर कर अपनी दाढ़ी थाम ली।

समीप बैठे लोगों का ध्यान इन दोनों की बातचीत की ओर न था परन्तु शहर का मुंशी अभी दूर ही था कि सब का ध्यान उस ओर खिंच गया।

मुंशी पोथीवाला अपनी बंधी हुई ताश का बाक्स सम्भाले धीमे धीमे इन लोगों की ओर चला आ रहा था। समीप आकर पोथीवाला ने भीड़ की ओर देख पुकारा—"अरे सुना है तुमने? लोग क्या कह रहे हैं? रूस के ज़ार की गद्दी छिन गई!"

मुंशी की बात से लोग भौंचक रह गये। रतीमी खेलने वाले हाथ के गोट लकीरों पर रखना भूल गये। सूजी हुई नाक वाले किसान ने विस्मय से अपनी दाढ़ी खींच ली और उसका मुंह खुला रह गया। सब लोग पोथीवाला की ओर मौन देखते रह गये।

पोथीवाला अकस्मात ढंग से बोला—"लोग कह रहे हैं कि रूस में 'रेवलूशा' हो गया है।"

किसान लोग समझ नहीं पाये कि 'रेवलूशा' क्या होता है? अभी कोई रेवलूशा का मतलब पूछ भी नहीं पाया था कि पोथीवाला स्वयं ही बोल उठा—"किसी का क्या कहें, सभी जानते हैं, दुनिया में कैसे कैसे पापी पड़े हैं? लोगों के दिमाग फिर गये हैं। चाहते हैं दुनिया भर हड़प जायें! ज़ार के राज जैसा न्याय पहले कभी देखा था? तुर्कमान लोग कभी चैन से नहीं रहे। एक दूसरे का सिर काटते रहे परन्तु ज़ार के राज में यहाँ भी कैसा अमन रहा? ज़ार का राज गया तो देखना क्या होता है? पिछले साल ही ज़ार की सरकार के खिलाफ बगावत हुई थी तो क्या मिला? अजीज़खां और उसके दोस्त अरतैक के राज में क्या मिला? मिट्टी ही खराब हुई? राजा बिन प्रजा ऐसे हैं जैसे बिन गडरिये भेड़ों का गोल! बाघ भेड़िये का दांव लगे तो मार खाय, चोर उचक्कों का मौका बने तो उठा ले जाय।"

दूसरा बूढ़ा किसान माथे पर हाथ रखकर बोला—"भैया, मैं तो कह ही रहा था कि बड़े बुरे दिन आ रहे हैं।"

सूजी हुई नाक वाले बूढ़े किसान ने उसकी बात काट दी—"अरे तो हो क्या गया? कहते हैं न कि घरकी बुढ़िया मर गई, तो क्या बिगड़ गया? दही की हांडी लुढ़क गई, तो क्या हो गया? अरे जार मर गया, तो क्या हो गया? गद्दी पलट ही गई तो अपने को क्या, क्या हो गया? अपने देखते

देखते ही ज़ार का राज आया और इतने ही दिन में क्या नहीं देख लिया हमने ?" बूढ़ा किसान मुंशी को कनखियों से देखता सुनाता गया—"दो दो कौड़ी के आदमी तुरमखां बन बैठे। कैसे ? ज़ार के ज़ोर पर ही तो ? ...से आदमियों को डंडे के ज़ोर हाँकते रहे इस बुढ़ापे में"--उसने अपनी दाढ़ी दिखाकर कहा—"घर में एक ऊँट रह गया था, सो भी छीन लिया"—दूसरे बूढ़े किसान का कन्धा ठेल कर वह बोला—"और तुम्हारा एक ही तो जवान लड़का था, बुढ़ापे की लाठी। जबरन भर्ती में पकड़ ले गये। ज़ार को गरीबों की आह कैसे न लगती ? ज़ार का जुल्म दूर हो तो अल्ला चाहे तो मेंह भी बरस जाय ! पिछड़ तो बहुत गया है। पर क्या ? बाल बच्चों के मुँह के लिये चार दाने ही सही ! ढोर डंगर के लिये भूसा चारा ही सही !"

मुंशी ने कई बार बात काटनी चाही परन्तु किसान ऊँचे स्वर में बोलता ही जा रहा था। उसकी बात समाप्त होने पर मुंशी धमका कर बोला—"क्यों बे, सिर पर मौत नाच रही है ? होश में आओ क्या बक रहे हो ? अगर खबर ग़लत हुई तो ?"

बूढ़ा किसान और भी ज़ोर से बोला—"तो हम देहाती, ग़रीब लोग क्या जानें ? 'तुम्हीं तो कह रहे थे !"

मुंशी समझाने लगा—"अरे भाई अगर ज़ार मर ही गया, रेवलूशन भी हो गया तो क्या ? ज़ार के लड़के पोते होंगे। उनमें से कोई न कोई गद्दी पर बैठेगा ही। यह बातें उसके कान तक पहुँचेंगी तो क्या होगा ?' सोच समझ कर बात करनी चाहिये ! अल्लाह ज़ार का इक़बाल क़ायम रहे !"

मुंशी अपनी बात पूरी नहीं कर पाया था कि बस्ती की 'रेडियो' उम्सा गुल अपनी सिलवार घुटनों तक उठाये, अपने मालिक, अलनज़ार बे के घर की ओर भागती हुई बिना रुके समीप से पुकारती गई—"अरे भले लोगो, सुना है, बादशाह ज़ार मर गया !"

उम्सागुल की बात सुन सभी लोग बोलने लगे—

"वल्लाह ... क्या सच बात है ? ..."ज़ार मर गया ?"

"सच नहीं तो लोग कहते क्यों ? कोई बात होगी तभी तो कहते हैं।"

"अरे भाई, यों ही न उड़ गई हो ?"

"मुल्क में बादशाह नहीं रहेगा तो राज किसका होगा ?"

"राजा नही रहेगा तो फिर लड़ाई कैसे होगी ?"

"लड़ाई चलेगी कैसे ? जब राजा सिपाही को लड़ने के लिये हुक्म नहीं देगा तो कोई लड़ेगा क्यों ? सिपाही का क्या जरूरत है लड़ने मरने की ?"

"मुशी बीच में बोल उठा—"बस यही तो रेवलूशा है।"

ग़रीब किसान चरकेज़ चुप बैठा सब की बातें सुनता हुआ समझ पाने का यत्न कर रहा था। मुशी की बात सुन वह पूछ बैठा—"मुशी यह रेवलूशा क्या होता है ?"

मुशी ने सिर खुजाते हुये उत्तर दिया—"भैया मैं क्या जानू ? यह तो धरती फोड़कर नया कुकरमुत्ता निकला है। सौदागर कोतुर का लड़का अतेज कहता है, रेवलूशा इन्कलाब को कहते हैं।"

चरकेज़ बौखला कर बोला—"वाह भाई वाह, रेवलूशा इन्कलाब को कहते हैं। इन्कलाब क्या होता है ? यह तो अंधे की आंख से देखकर पहचानने की सी बात है। और क्या जाने भाई, रेवलूशा और इन्कलाब दोनों ही ज़ार के लडके और पोते का ही नाम हो।"

एक दूसरा किसान हाथ फैलाकर बोल उठा—"हाँ भाई, ठीक तो है। पहले भी एक बार सुना था कि फिरगिस्तान में रेवलूशा और इन्कलाब हुआ है। सुनते हैं, रेवलूशा और इन्कलाब का चुनाव होता है जैसे अपने यहाँ मुशी और पच का चुनाव होता है।"

एक और क़िसान ने बेपरवाही से कहा—'तो क्या है चुनाव होगा तो "वे" और मालिक लोगों की ही बात चलेगी ? जैसे अब "वे" और मालिक लोग अपने मन से मुशी चुन लेते हैं।"

'तुम भी क्या कह रहे हो ?"—एक और किसान पुकार उठा—"वे और मालिक लोग न रहें तो दुनिया कैसे चलेगी ?"

"तो फिर क्या है ?"—ऊँचे स्वर में कोई बोल उठा—"इन्कलाब हुआ तो अपने को क्या ? ग़रीब आदमी की तो जैसे पहले मौत थी वैसी अब।"

"तुम्हारा दिमाग़ फिर गया है क्या ?"—मुशी पोलीवाला ऊँचे स्वर बोला—"सियार की मौत आती है तो गाँव के आस पास आ हूकने लगता है, ग़रीब के बुरे दिन आते हैं तो उसकी ज़बान बहुत चलने लगती है।"

सिर हिलाकर चरकेज़ ने कहा—"ठीक है भाई मुंशी तुम ठीक कहते हो ' तुम आलिम आदमी हो !"—दूसरे लोग चरकेज़ की बात पर हँस दिये। चरकेज अपनी तीखी ज़बान के लिये माना हुआ था।

क्रोध से मुंशी के नथुने और होंठ थिरक उठे। चेहरे पर से पसीना पोंछ उसने नसीहत की—"तुम लोगों में अब बुरे का कुछ ख्याल ही नहीं रह गया है। कुढ़ मगज आदमी से सिर मारने से भला है कि आदमी दीवार से सिर पटक ले।"

उत्तर की प्रतीक्षा न कर मुंशी लौट पड़ा और अलनजर बे के खेमे की ओर चल दिया। परन्तु चरकेज़ पुकार उठा—"ठीक है भैया मुंशी, ठीक राह पर जा रहे हो। वे लोग ही तुम्हारी बात ठीक से समझ पायेंगे।" दूसरे लोग कहकहा लगा उठे। मुंशी तेजी से चलता हुआ घूम घूम कर ऐसे पीछे देखता जा रहा था कि पीछे से कुत्ते के आकर टांग पकड़ लेने की आशंका हो ?

मुंशी के चले जाने पर किसान बहस करने लगे कि ज़ार सचमुच ही मर गया है या नहीं, उसकी गद्दी छिन गई है या नहीं, और यदि ऐसा हो भी गया हो तो इससे देहात के लोगों का क्या बन बिगड़ सकता है ? चरकेज अपनी बात सुनने के लिए फिर हाथ उठा कर बोल उठा—"भाई, हम पूछते हैं ज़ार के राज में भला किसका हुआ ? • किसान का भला हुआ ? मज़दूरों का भला हुआ ? सिपाहियों का भला हुआ ? तुम्हारा भला हुआ ? किसका भला हुआ ?"

"अरे हमारा क्या भला हुआ ?"—एक के बाद दूसरा सभी लोग बोलने लगे।

"तो फिर"—दोनो हाथ उठा चरकेज़ बोला—"ज़ार मर गया तो किसका नुकसान हुआ ? अपने को क्या ? जब सभी लोग ज़ार से दुखी हैं तो उसकी गद्दी पलटेगी नहीं तो क्या ? नुकसान हुआ तो बाबाख्वां और होजा मुराद का हुआ ? अब उनकी हुकूमत नहीं चलेगी कि मन चाहा जिसे चार जूते लगा दिए ! अपने लोग जबरदस्ती भर्ती में पकड़े गये हैं, शायद वे बेचारे लौट आएं !"

"अल्ला करे तुम्हारे मुंह में घी शक्कर पड़े।"

"अल्ला चाहे अरतैक भी लौट आए !"

"दूसरे लोग लौटेंगे तो अरतैक भी लौटेगा !"

'इशा अल्ला !"

आकाश में अब भी गर्द का बादल छाया हुआ था और हवा के झोंके किसानों के चेहरों पर धूल डाल रहे थे परन्तु अब उनकी गर्दनें ऊंची हो गईं और आंखों में आशा की चमक झलक आई।

उन दिनों तुर्कमानिया के गवर्नर जनरल कुरोपाटकिन थे। गवर्नर जनरल ने प्रान्तीय गवर्नर काल्माकाव और कमिश्नर कर्नल बेलानोविच को आदेश दिया था कि ज़ार के गद्दी से उतार दिए जाने और रूस में क्रांति होने का समाचार आम जनता में फैलने न पाए। उन्हें आशा थी कि ज़ार के समर्थक और उसकी सेनायें क्रान्तिकारियों को हरा कर फिर से ज़ार का राजतन्त्र स्थापित कर लेंगे। परन्तु तार घर में काम करने वाले लोगों से और शहरों से आने वाले पत्रों से देहात में समाचार फैल ही गए। बात जिलों से जिलों में, गावों से गावों में और छोटे छोटे खेमों तक पहुँच गई। ऐना के घर भी खबर पहुंची।

उस समय ऐना अपने तम्बू में बैठी कसीदा काढ रही थी। तम्बू की छत में धुआं निकलने के लिए बनाए गये झरोखे से आती सूरज की किरणों में उसका रेशमी चोला और उसके हाथ में थमा कसीदा भी चमक रहा था। ऐना ने खबर सुनी और सोच रही थी, बादशाहों की गद्दियां कहीं ऐसे पलट सकती हैं और फिर रूस के बादशाह ज़ार की गद्दी ? सल्तनतें ऐसे पलटने लगें तो धरती ही पलट जाए। हो सकता है ज़ार लड़ाई में दूसरे बादशाह से हार कर कैद हो गया हो। पर मकान गिरता है तो ईंटें भी बिखर जाती हैं। ज़ार के साथ ही उसके हाकिम और पंच भी तो गिरेंगे और वह शैतान अलनजर वे भी मरेगा। इन सब ज़ालिमों पर अल्लाह का कहर गिरे! ज़ार नहीं रहेगा तो उसके हाकिम, अफसर, उसकी पल्टनें भाग जायँगी। जेल खाने भी तो टूटेंगे! इशाअल्ला अरतैकजान जेल से छूट जाये अरतैक मेरी आँखों का नूर! एक आह खींचकर उसने सोचा—"इन मीठे सुपनों में क्या रखा है ? छः महीने हो गये उसकी कोई खबर भी तो नहीं मिली। ऐसी मेरी किस्मत कहां कि वह आजाये। लोग मुझे तसल्ली देने के लिये, बहलाने के लिये बनाते रहते हैं, अरतैक अश्काबाद के जेलखाने में मजे में है परन्तु कोई

उससे मिल नहीं सकता। दूसरे लोग मुझे जलाने के लिये कहने लगते हैं---अरतैक को लड़ाई में आगे के मोर्चे पर भेज दिया गया है। कोई कहते है---कि ज़ालिमों ने उसे गोली मारदी है। या अल्ला ? इस छः महीने में क्या नहीं सुना ? क्या नहीं देखा ? क्या नहीं सहा ? इतना दुख तो किसी पहाड़ पर गिरा होता तो पहाड़ चकनाचूर हो जाता। इतना गम किसी दरिया पर पड़ा होता तो दरिया सूख जाता।"

ऐना हज़ारों में एक थी। उसका रूप रग ऐसा था कि सारे चमन का जोबन समेटकर एक गुलाब खिल उठा हो। परन्तु इस दुख में उसका चेहरा उतर गया और उसकी मनियारी, काली आँखों की चमक मद्धिम पड़ गई थी। वह गर्दन झुकाये रहती। पुकारे जाने पर आँखे उठाती भी तो पलकें झुकी रह जातीं। उसका सुडौल शरीर मुर्झा गया था, कधे झुक गये थे और-चलती तो पाव लड़खड़ा जाते। अरतैक की कैद की छः मास में उस पर बीस बरस का बुढ़ापा आ गया। ऐना की सौतेली माँ मामा बत्तख की चाल से झूलती हुई तम्बू में आई। वह सदा से बेपरवाह थी। उस पर न तो ऐनाके दुख के पहाड़का ही कुछ बोझ पड़ा और न 'तेजेन' में सूखा पड़ने का ही कुछ प्रभाव पड सका था। उसके भरे हुये चेहरे पर चिकने पसीने की चमक जैसी की तैसी बनी थी। न ठोड़ी के नींचे पड़ी लटों में और न उसकी आँखों की चमक में ही अन्तर आया था। मामा ने सिर पर बधे बडे रूमाल के छोर से पसीना पोंछा और अपनी भारी-भारी निरपेक्ष पलकें उठा सौतेली लड़की की ओर देख पुकारा---"बिटिया, क्या हुआ है तुझे ? क्या उमर भर योंही बिसूरती रहेगी ? भला अब क्यों रो रही है ? अब क्या ज़ार को रोरही है" ? ऐना बचपन से बहुत लजीली और भले स्वभावकी थी। परन्तु दुख के इस असह्य बोझ का प्रभाव जैसे उसके शरीर और रूप पर पड़ा वैसे ही उसके स्वभाव पर भा हुआ। पल पल दुखों और कष्टों से विरोध करती रहने के कारण वह चिड़चिड़ी और जिद्दी होगई थी। सौतेली माँ के उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण ऐना मामा से प्रायः ही चिढ़ीं रहती। उसने गर्दन झुकाये ही उत्तर दिया---"ज़ार क्या मेरी बला से सारी दुनियां मरजाय, मुझे क्या ?"

"लाहौल बिलाकुव्वत। देखो तो इस चुड़ैल को ?" मामा चीख उठी "क्या ज़माना आ गया है बाबा ? ऐसी डाइनें दुनियां में पैदा हो गई हैं तभी तो दुनिया यों तबाह हो रही है।"

ऐना की काली भवें सिकुड़ गई। गर्दन नीचे डाले ही उसने तिर्छी निगाह से मामा की ओर देखा और आंखें झुका उत्तर दिया—"बात बात में मेरे कलेजे में कटारी मारती है? आज बड़ी भली बन रही हो! किसने मेरी जिन्दगी मुसीबत में फंसाई है? मुझे बरबाद किया!"

मामा की समझ भी उसके शरीर के अनुकूल ही मोटी थी। ताने और बोली ठली का असर उस पर कम ही होता था परन्तु इस समय ऐना की बात सुन उसने दोनो हाथों से अपना चेहरा ढाप लिया और अल्लाह को याद करने लगी—

"अल्लाह पनाह दे!"

२

अलनज़र बे अपनी सजी धजी छोलदारी में चाय पीने बैठा था। उम्सागुल उतावली से तम्बू में आघुसी। ज़ार के गद्दी से उतार दिये जाने की बात वह एक ही सांस में ऊचे स्वर मे दोहराये जा रही थी। अलनज़र बे ने सुना। उसे काठ मार गया। न तो वह आंखें उठा बाहर ही देख सका और न होंठ खोल पुकार हो सका। वह स्वप्न मे डर गये आदमी की तरह निश्चेष्ट रह गया। और फिर होश सम्भाल बोझ से दम तोड़ते जानवर की तरह हाफता हुआ उम्सागुल की ओर घूर कर वह चिल्ला उठा—"बद ज़ात बांदी, क्या बक रही है? होश मे आ! समझती है तू क्या बक रही है? अभी फांसी पर लटकवा दूगा।"

बे की धमकी से उम्सागुल सुन्न रह गई। चेहरे का रग उड गया। साहस कर वह थुथलाने लगी—"मा   मालिक,   मैं कह रही थी, कि बा ' ' बादशाह की मौ   मौत से मुझे बहुत रोना आया।"

"बदज़ात कहीं की, दिन भर अवारागर्दी करती है, दिन भर कुफ़ बकती है, दिन भर खुराफातका तूफान तोलती है। क्या कीए मरे हैं तेरे सिर में? तूही गांव भर में बकती फिरी थी कि अरतैक मेरे मुह पर थूक गया। हरामज़ादी, मेरा नमक खाकर मुझे ही गाली देती है। तुझे आज ही ज़िन्दा गड़वाता हू।"

उम्सागुल का चेहरा धूलकी तरह बेरग होगया। कुछ कहने के लिये उसके होंठ हिले परन्तु अलनज़र ने उसे धमका दिया—"चुप रह बदज़ात!"

बे क्रोध से काप रहा था। उसका मन चाय की ओर से फिर गया। चाय का प्याला उठा वह चायदानी में लौटाने लगा।

हाथ कांप रहे थे इसलिये चाय फैल गई। खिन्न हो बे ने होंठ काट

लिये और चाय के सुन्दर -याले को दरवाज़े से बाहर फेंक दिया। प्याला पक्की धरती पर गिरकर चूर चूर हो गया। बे को और भी क्रोध आ गया। उसने लात मार चायदानी को भी परे फेंक दिया। चायदानी एक ओर और ढक्कन दूसरी ओर लुढ़क गये। कालीन भीग कर लम्बा दाग सा बन गया।

कोने में खड़ी उम्सागुल थर थर कांप रही थी। लड़खड़ा जाने के कारण वह धरती पर बैठ गई।

अलनज़र गम्भीर और काइयां आदमी था। अपनी स्थिति और सम्मान का ख्याल कर वह बातचीत धीरज और ठहराव से करता था। परन्तु उस समय वह क्रोध में बहक गया। वह कई दिन से मन ही मन उम्सा से कुढ रहा था और उस पर बरस पड़ने का अवसर ताक रहा था। इस समय यह भयकर समाचार भी उसी के मु ह से सुन वे आपे से बाहर हो गया। क्रोध का पहला उफान उतरते ही वह चिन्तित होने लगा • क्या यह खबर सच है? इतने में बे की चहेती बेगम शादाब आकर प्याले के बिखरे हुये टुकड़े चुनकर चायदानी को सम्भालने लगी। शादाब गर्दन झुकाये बोली—"सुनो न मालिक! सुन रहे हो? 'तुम्हीं से कह रही हू, हुआ ! माफ़ कर डालो! मुआफ़ी मांग लेने से तो कत्ल का गुनाह भी बक्श दिया जाता है। यह तो तुम्हारी बांदी ही है। सुना होगा तो इसके अपने ही होश उड़ गये होंगे।"

बेगम की बात से बे के माथे के तेवर हल्के पड़ गए। उम्सा ने मालिक के चेहरे की ओर देखा और उसकी आखों से आंसू बह चले। ज़मीन पर माथा टिका वह गिड़गिड़ाने लगी—"या अल्लाह, अगर मैंने मालिक के लिए कभी सुपने में भी बुरा चेता हो तो मैं यहां ही गर्क हो जाऊ।"

"अच्छा बस, अब बहुत मत बनो! • आंसू पोछो! नहीं तो अभी तेरी आंखों में मिर्चें झुकवाता हू!" बे ने धमकाया—"यह खबर कहां सुनी तू ने?"

उम्सा आंसू पोंछती हुई हिचकी लेकर गले में रुके आंसू निगल रही थी कि तम्बू के दरवाजे में मु शी पोस्तीवाला आ खड़ा हुआ और घबराहट में सलाम बिना किए ही पुकार उठा—"अरे मालिक बे! सुना है? क्या क़हर गिरा है, बादशाह ज़ार गद्दी से उतार दिया गया। मुल्क में

खेलूशा हो गया ! अरे ''''उम्सा तू पहले ही आ पहुंची ? ' तूने तो बस्ती भर में ढिंढोरा पीट दिया होगा ! कहर खुदा का '' "

"हां मैंने जो सुना था, कह दिया"—हिचकी लेते हुए उम्सा बोली—"मालिक मुझ से नाराज़ हो गए' '' "

मुशी ने फिर बे को सम्बोधन किया—"मालिक, बात ठीक है। मैं अभी शहर से ही आ रहा हू। घर जा कर चाय भी नहीं पी। तार घर में गवर्नर जनरल का तार मिला है।

मुशी की बात से बे के मन में सन्देह के आधार पर रही सही आशा भी जाती रही। परन्तु अब वह अपने आप को सम्भाल चुका था। मुशी को सम्बोधन कर वह बोला—"आओ बैठो। चाय पियो ! इसके बारे में भी ज़रा सोच लें !"

मु`शी की नज़र भीगे हुए कालीन पर जा पडी। शादाब की ओर देख उसने मुस्करा कर पूछा—"यह क्या ? घर में इतना छोटा कौन बच्चा आ गया कि जगह बिगाड़ दी ?"

"मुबारिक हो, बेगम।"

मु शी की बात से शादाब बेगम पल भर को झेंप गई परन्तु उसने तुरत बात सम्भाल ली—"अरे मु शी, बच्चे तो बच्चे ही ठहरे आखिर ! छोटी बिटिया जिद्द कर बाप के लिए चाय लायी थी। बेचारी ठोकर खा गई। चायदानी उसके हाथ से गिर गई।"

"या खुदा, बेचारी के हाथ पांव पर छाला वाला तो नहीं पड़ा बेगम ?"

"शुक्र खुदा का, पोखीवाला ! चायदानी दूर लुढक गई। बच्ची पर बू द भी न पड़ पाई।"

बेगम की चतुरता की प्रशसा के लिए बे ने मुस्करा कर उसकी ओर देख लिया।

पोखीवाला अपने घुटने समेट कर कालीन पर बैठा ही था कि छोलदारी की दहलीज़ पर मुहम्मदवली खोजा दिखाई दिया। मुहम्मदवली खोजा धर्मात्मा और आलिम आदिम समझा जाता था। बस्ती में उसका बहुत आदर था। वह मौलवियों के ढग का ऊचा पायजामा पहरे था। सफेद पायजामे के नीचे टखनों की लाल लाल खाल चमक रही थी।

वली को देख बे ने आदर में दोनों हाथ फैला स्वागत किया—"आओ, आओ! मौलाना खोजा आओ! तशरीफ रखो"—बे ने आदर की जगह कालीन के सिरे पर खोजा को बैठने का संकेत किया।

उम्सा ने बे की खांसी सुन उसकी ओर देखा और मालिक की आख का इशारा पहचान तम्बू से बाहर हो गई।

मुंशी पोखीवाला ने तुरन्त ही खोजा को सम्बोधन किया—"मौलाना ज़ार के तख्त से उतार दिए जाने की खबर सुनी है!"

मुहम्मदवली खोजा अपने घुटने समेट गम्भीरता से कालीन पर बैठ गया। अपनी दुशाखी दाढी हाथ में ले कालीन पर नज़र टिकाये उसने उत्तर दिया—"मुंशी पोखी, खबर तो सुनी है लेकिन सोचा कि अलनज़र बे के यहाँ चलूँ। सभी लोग राय लेने के लिये यहाँ आते हैं। ताकि सही खबर मालूम हो सके।"

"मौलाना, तुम आलिम आदमी हो, शरियत जानते हो, तुम्हारी क्या राय है?"—मुंशी ने अपना प्रश्न दोहराया।

खोजा ने दाढी हाथ में थामे, छोलदारी की छत की ओर आँखें उठा उत्तर दिया—"मुंशी पोखी, इसके मुत्तलिक एक फारसी शायर ने कहा है—दक्खिन,पच्छिम से बादल चढता दीखे तो समझो कि अब बरसेगा! और अन्यायी राजा का ज़ुल्म बढ़ता दीखे तो समझो कि अब गिरेगा।"

"अन्यायी राजा ?"—अलनज़र ने कुछ कड़े स्वर में पूछा।

मुहम्मदवली खोजा ने बे के स्वर की कड़ाई की ओर ध्यान न दिया और सहज स्वर में कहता गया—"हाँ, अलनज़र बे, ज़ार अपने वायदे से फिर गया। जब ज़ार ने हमारा मुल्क लिया तो वायदा किया था कि मुसलमानों को फौजमे भरती नहीं किया जायगा, याद है? अब क्या हो रहा है?"

"तो तुम्हारा ख्याल है कि ज़ार के तख्त से गिरने का कारण यही है कि उसने मुसलमानों को फौजी मज़दूरी के लिये जबरदस्ती भरती किया?"

बे का यह प्रश्न मौलाना को कुछ विचित्र सा जचा और उसका ध्यान बे के स्वर की ओर भी गया। खोजा ने बे के चेहरे की ओर देखा। बे अप्रसन्न था और खोजा को तीखी निगाह से घूर रहा था, मानो पूछ रहा हो यह नमक हरामी? बे की इस दृष्टि से मौलाना सिमिट गया, जैसे केंचुआ छू दिया जाने पर कुण्डली मार जाता है।

"नहीं मालिक, यह बात नहीं। यह बात ग़लत है! मुसलमानों के लिये ज़ार से बढ़कर रहीम बादशाह तो दुनिया में कोई हुआ नहीं। किताबों में नौशेरवा न्यायी का नाम आता है परन्तु ज़ार का न्याय उससे कहीं ऊँचा रहा। तुम्हीं बताओ, ज़ार के चालीस साल के राज में किसी मुसलमान की उगली मे फास तक नहीं लगी और क्या इंसाफ चाहते हो? मालिक, पेड़ गिरता है जड़ में कीड़ा लगने से, ज़ार तख्त से गिरा है तो यह अपने खानदानी झगड़ो की वजह से।"

मुशी ने बे की ओर देख खोजा का समर्थन किया—"खूब कहा मौलाना आमीन, आमीन!"

खोजा की बात से बे को सतोष हुआ। उसने भी समर्थन किया—"ठीक है मौलाना ठीक है। पेड़ जड में कीड़ा लगने से ही गिरता है।"

मुहम्मदवली खोजा अवसर देख, अपने घुटने पर हाथ टिका झूलता हुआ बे के मन की सी बात कहने लगा था कि मुशी बोल उठा—"अरे भाई इस डाह का, जलन का बुरा हो! बादशाहों और वज़ीरों की बात क्या? अपनी ही बात देख लो! किसी पर ज़रा अल्लाह का करम हो जाय तो दूसरे ऐसे जलने लगते हैं मानो उन्हीं के पेट पर लात पड़ रही हो। अब मालिक को ही देखो! अल्लाह की बरकत है मालिक पर! चश्म बद्दूर! कितनों का भला होता है मालिक की बदौलत? पर ऐसे भी हैं जो मालिक से हिरख कर जले जाते हैं। जिस प्याले में खाना उसी को ठुकराना।"

"ऐसे ही आमाल से तो दुनिया में सूखा पड़ता है"—मौलाना ने मुशी की बात पूरी की।

"लेकिन कमबख्त लोग समझते भी तो नहीं! मुसीबत आती है तो मरते भी तो ऐसे ही लोग हैं। अभी देख लो न? सूखा पड़ा है तो मालिक बे का क्या घट गया?" "क्यों मालिक?"

शादाब बेगम मेहमानों के लिये चाय ले आई थी। उसे सम्बोधन कर, बे ने सलाह दी—"शादाब मुशी पोखी थके हैं। इनके लिये कुछ पुलाव मगवालो?"

मुशी तम्बाकू की डिबिया खोल चुटकी भर तम्बाकू होठके नीचे दबाने को ही था। पुलाव का प्रस्ताव सुन उसने डिबिया बद कर जेब में लौटा दी और बोल उठा—"ओ मालिक रूह खुशकर दी मालिक ने। मालिक

का इक़बाल बुलन्द हो। ज़ार के वज़ीरों का क्या है ? वज़ीरों ने ही ज़ार के साथ दगा किया है ! यह वज़ीर पहले ज़ार के नाम से रियाया को नोंचकर खाते रहे और मौका लगा तो ज़ार को ही खागये। और रियाया को ही देखो। रियाया की परवरिश कौन करता है ? हमारे मालिक वे ! और यह भूखे, गरीब लोग वे को ही नोंच कर खा लेना चाहते हैं। मौलाना इस दुनियां में दगा ही दगा और बेवफाई है ?"

मौलाना दाढी पर हाथ फेर बोले—"इस दुनिया में नेकी का बदला बदी से ही मिलता है मुशी ?"

अलनज़र बे परेशानी अनुभव कर रहा था। हृदय में उठता लंबा सांस दबा वह तम्बू की छत में बधी डोरियों की ओर देखने लगा। एक लम्बी सांस छोड़ बे बोला—"देस राजा के बिना बरबाद हो जायगा, जैसे बिन आदमी की औरत, जैसे बेलगाम घोडी ! मुल्क और सल्तनतकी जड़ में दीमक लग गया है . .।"

मुशी बोल उठा—" मालिक इस रेवलूशा से मेरा दिल बहुत घबरा रहा है ।" बे ने अपनी भारी पलकें उठा कर पूछा—"यह रेवलूशा है क्या बला ?"

"सुना है, रेवलूशा में कुछ लोग हैं जो ज़ार की गद्दी पर बैठना चाहते हैं। सुना है यह लोग अपने मन से चुनकर किसी आदमी को गद्दी पर बैठायेंगे।"

"तो क्या सभी, जैसे तैसे लोग जो चाहेंगे, करेंगे ?"

मौलाना खोजा गम्भीर चिन्ता में अपनी दाढी सहलाते हुये बोला—"ऐसे बाग़ी लोगों को किताब में नजिस और नापाक कहा गया है। लेकिन अल्लाह पाक की मर्ज़ी के बिना कुछ नहीं हो सकता। अल्लाह बहुत रहम करते हैं। खुदा ऐसे लोगों का मौका देते हैं और अपने गुलामों के आमाल और करम देखते है। जो लोग खुदा को भूल जाते हैं, बग़ावत करते है, उन पर खुदा का कहर नाज़िल होता है। यह सूखा पड़ना और ज़ार का तख्त पलटना सब बागियों के गुनाहों का अंजाम है, यह सब कयामत के आसार हैं।"

मुशी पोवी मौलाना की बात न समझ पाया, न उसने उस ओर ध्यान ही दिया परन्तु बे यह बातें सुन चिन्ता में चुप बैठा रहा। वह सोचने

लगा—"ज़ार की सल्तनत पलट गई तो रियाया उठ खड़ी होगी, शायद जगखत्म हो जाय और जगी मज़दूरी के लिये पकड़े गये लोग लौट आयेंगे। कितने ही बदमाश दिल में बदले की आग और जलन दबाये हुये हैं, लौटेंगे तो जरूर शरारत करेंगे। यहाँ भी बगावत होगी। क्या इन्तजाम हो सकेगा ? भूखे नगे लोग यों ही बलवा किये हुये हैं, जाने कब लूटपाट शुरू करदें ? मावी जैसे लोग ही क्या कम हैं ? मौका पाकर जो न कर डालें ? जेल टूट गया तो ? अगर अरतैक भाग कर आगया !" वे ने चिन्ता से एक गहरी सांस ली। उसके माथे पर पसीना छलक आया। शादाब की ओर देख उसने कहा—"बहुत गरम हो रहा है तम्बू के परदे उठवा दो!"

गरमी अभी कुछ अधिक नहीं थी। मार्च का महीना अभी लगा ही था। तम्बू के पर्दे प्राय. जून के महीने में उठाये जाते थे।

"क्या मालिक—"शादाब विस्मय से बोली—"गरमी तो अभी ऐसी नहीं है ?"

वे कुछ उत्तर न दे चुप रह गया। उसके मन में चिन्ता और आशका का जो भाड़ सुलग रहा था बेगम उसकी तपन क्या समझ पाती ?

वे अपने जीवन में इतना व्याकुल कभी न हुआ था, उस समय भी नहीं जब कि उसने बड़ी तैयारी से अपने बेटे का ब्याह गांव की सुन्दरी ऐना से रचाया और बस्ती का बदमाश अरतैक ऐना को ले भागा। पाहुनों से मन की बेचैनी छिपाने के लिये बे कभी अपना बदन खुजाने लगता, कभी तबू की छत के झरोखों की ओर देखने लगता। गरम चायकी प्याली से उसे शरीर में कुछ ताज़गी जान पड़ रही थी परन्तु मन अब भी वैसे ही उचाट था। बात करने को उसका मन न चाहता था। बहुत देर चुप रह वह बोला—"मौलाना खोजा, दिल घबरा रहा है। जान पड़ता है, दरअसल क़यामत के आसार हैं·····"

३

ज़ार की पुलिस अरतैक को तेजेन से अश्काबाद ले गई तो रेल के डिब्बे की खिड़कियों में लोहे के सींखचे लगे हुए थे। उसके हाथ पाव रस्सियों से जकड़ कर बन्धे थे और उनमें घाव बन गए थे। इन घावों की कुछ दवा दारू न की गई। इन घावों पर कभी कभी टिंचर लगा दिया जाता था। टिंचर घावों पर ऐसे लगता था जैसे पिसी मिर्चें छिड़क दी गई हों। अरतैक दांत पीस कर इस पीड़ा को भी सह जाता। गाड़ी में उसे एक लकड़ी बेंच पर लिटा दिया गया। उसके चारों ओर हथियार बन्द सिपाही खड़े थे। किसी भी आदमी से कोई एक भी बात कर सकने का कोई अवसर उसे न मिला।

अश्काबाद की जेल में अरतैक को एक सूनी, अंधेरी कोठड़ी में धकेल कर भारी-भारी किवाड़ बहुत ज़ोर के धमाके से मूद दिए गए। किवाड़ों पर भारी ताला पड़ा रहता। अंधेरी कोठडी में धकेल दिया जाने पर अरतैक लोहे की एक खाट से टकरा कर गिरता गिरता बचा। कुछ देर तक अंधेरे में बैठे रहने के बाद वह लोहे की खाट की जगह पहचान सका और दीवार में ऊंचे पर एक सीखों से मढा झरोखा भी उसे दिखाई दिया।

इसके बाद उससे भेद पूछे जाने लगे:—

"तुमने ज़ार की सरकार के खिलाफ बगावत की थी?"

"हां"

"तुम्हारे साथ दूसरे और कौन लोग थे?"

"सभी लोग थे!"

"तुमने ऐसा काम क्यों किया?"

"ज़ार का राज खत्म करने के लिए!"

"बागी अज़ीज़खां की फौज में तुम्हारा क्या ओहदा था?"

"सिपाही"

"तुम्हारी बस्ती से दूसरे कौन आदमी अज़ीज़ की फौज मे थे?"

"मुझे नही मालूम।"

संगीनों से लैस सिपाही अरतैक को घेर कर खड़े थे। अरतैक के इस उत्तर से अफ़सर ने सिपाहियों को इशारा किया। दो सिपाहियों ने अपनी सगीनों की नोकें अरतैक के शरीर में धसा दीं।

अरतैक ने दांतों से होंठ काट लिये और उत्तर दिया—"मेरे गांव का कोई आदमी मेरे साथ अज़ीज़ चपैक की फौज में नहीं था। तुम चाहो तो मेरे बदन के टुकडे कर आग पर भून कर खालो लेकिन मेरे साथ कोई दूसरा आदमी नहीं था।"

उस अंधेरी कोठड़ी में अरतैक को छः मास बीत गये। इन छः मास में अरतैक को जेल के सिपाहियों और जांच पड़ताल करनेवाले अफ़सरों के सिवा और किसी को देखने का अवसर न मिला। अंधेरी कोठरी के किवाड में एक छोटा सा झरोखा था। इस झरोखे की राह दिन रात में एक बार रोटी का एक टुकड़ा और कुछ नमकीन गरम लप्स अरतैक को पेट भर लेने के लिये दे दी जाती। नित्त की हाजतें भी उसे इसी कोठड़ी में ही पूरी करनी पड़तीं। सगति के लिये केवल मक्खियां थीं और समय काटनेके लिये वह खटमल मार सकता था। उसके कानों को केवल कोठड़ी के बाहर घूमने वाले सिपाहियों के कदमों की आहट और तालों में चाबियां घूमने की आवाज़ ही सुनाई दे पाती थी या जेल की दीवारों के बाहर से रेल के इजन की सीटी सुनाई दे जाती। अरतैक को इस जीवन का अभ्यास भी हो गया। वह चुप बैठा बैठा अपने गांव की बातें सोचता रहता, अपनी प्यारी ऐना को याद करता रहता। वह सब बातें उसे एक बहुत दूर बीते जीवन की, स्वप्न की बातें जान पड़तीं।

उस अंधेरी कोठडी में औरत का सहारा बीती हुई बातों की याद ही थी। वही याद उसका धन थी। अपने घर की याद, बूढी माँ की ममता की याद, अपनी छोटो चुनबुली बहन की याद और प्यारी ऐना से विवाह की तैयारी की याद। बीती हुई घटनाओं की स्मृति की राह पर वह बीते दिन की ओर चलता चला जाता। इस राह का पहला पड़ाव उसका बचपन था, और अन्तिम पड़ाव जेल की अंधेरी कोठड़ी। उसे अलनज़र बे के अत्याचार याद आते,—बस्ती पर उसका कैसा आतंक छाया हुआ था! वह

स्वयम भी उस आतंक का शिकार था। अलनज़र उसके घर की सब संपत्ति समेट चुका था, उसका प्यारा घोड़ा भी उसने कुर्क करवा लिया था और अन्त में उसकी मंगेत, प्यारी ऐना को भी अपने लड़के बख्तेखाँ के लिये छीन लेना चाहता था। ज़ारके राज के बढ़ते जाते अत्याचारों से तेजेन के किसानों के लिये जब चुपचाप मर जाने या बग़ावत करनेके सिवा कोई और चारा रह ही नहीं गया तो वे बग़ावत कर उठे। उस समय अरतैक ने समझा सहे हुए अत्याचारों के बदले का समय आया है। तब अरतैक ने समझा कि जनता और रियाया उठ खड़ी हो तो क्या कर सकती है, लोग क्या कुछ, कितना कुछ कर सकते हैं! उन घटनाओं को वह अब दूसरे ढंग से सोचता। उन घटनाओं से उसे बहादुर अज़ीज़ चपैक की याद आती। और याद आता कि चपैक की बहादुरी लोगों को साथ ले चलने में थी।

अज़ीज ज़ार की सेना से हार कर भाग गया। उस समय अरतैक ने भी कोशिश की कि ऐना को लेकर भाग जाय। अलनज़र बे ने अपने आदमियों को ले उसे घिरवा कर पकड़ लिया और ज़ार की पुलिस के हाथ सौंप दिया। अरतैक का मुश्कें बांधकर अश्काबाद लाया गया और उसे जेल की अंधेरी कोठड़ी में मूंद दिया गया। यह सब एक सुपना था—पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर वह एक दम खाई में गिर पड़ा। वह बीता हुआ जीवन एक लंबा सुपना था। यह सुपना कई भागों में बटा हुआ था। कभी सुपने का एक भाग और कभी दूसरा अरतैक की याद में उभर उठता। उसे बचपन के और बग़ावत के साथी चरकेज़ और अशीर याद आने लगते और कभी अपने बैरी—अलनज़र बे, बाबा खां, लँगड़ा कुली खां—पटवारी और मौलाना मुहम्मदवली खोजा याद आते और उसका मन क्रोध और असफलता की कड़वाहट से भर जाता

महीने पर महीने बीतते गये। एक दिन अरतैक की अंधेरी कोठड़ी के किवाड़ में बना छोटा सा झरोखा खुला और एक मुस्कराता हुआ चेहरा उसे दिखाई दिया। अरतैक का मन इतना निराश हो चुका था कि उसने उस ओर देख कर भी ध्यान न दिया। उसे अपने नाम की पुकार सुनाई दी—"अरतैक बबाली, अरतैक बबाली।"

अरतैक को जान पड़ा—आवाज परिचित थी। यह जेलखाने के एक सिपाही की आवाज़ थी जो कभी कभी उसे मिस्री का टुकड़ा या मक्खन

चुपड़ी रोटी झरोखे से थमा देता था। यह चीज़ें लेने को अरतैक की इच्छा न होती तो भी वह सिपाही उसे दे ही जाता और दो चार बातें तसल्ली की कह जाता।

पुकार सुन अरतैक उठ कर झरोखे के पास आया। सिपाही बहुत प्रसन्न दिखाई दिया। धीमे स्वर में सिपाही ने टूटी फूटी तुर्की भाषा में कहा—"बबाली, ज़ार धूल चाट गया. ज़ार गया! तुम जल्दी अपना घर"

सिपाही ने इधर उधर झांका और झरोखे को मूंद एक ओर सरक गया।

अरतैक सिपाही की बात ठीक से समझ न सका परन्तु सोचने लगा—'क्या मतलब?... ज़ार धूल चाट गया! क्या ज़ार हार गया? अगर ऐसा है तो शुक्र खुदा का ..!"

अरतैक रात भर सोचता रहा। उसे नींद न आई। लगभग पौ फटने के समय उसे नींद आई और उसने सुपना देखा-कि वह एक सीधी खड़ी ऊंची चट्टान से चिपका हुआ है, उसके पांव धरती पर नहीं लग पा रहे। वह चट्टान धीमे धीमे हिलने लगी, जान पड़ा कि चट्टान गिर पड़ेगी। अरतैक ने आंखें झुका नीचे देखा, वहां एक बड़ा अजगर बल खा रहा था। इस अजगर के नथुनों से धुआं निकल रहा था। अरतैक भय से कांप उठा अरतैक का साहस टूट गया। वह मौत का सामना करने की तैयारी करने लगा। सहसा उसने देखा कि नीचे बल खाते हुये अजगर के माथे से खून का फव्वारा छूट गया। लोहे का कवच पहने एक जवान अजगर के बड़े सिर पर सवार हो गया। इस जवान ने अपना हाथ अरतैक की ओर बढ़ा दिया अरतैक ने सहायता के लिये अपना हाथ उस बहादुर की ओर बढ़ाया। दोनों के हाथ छुये ही थे की अरतैक की आंख खुल गई।

अरतैक का कलेजा ज़ोरों से धड़क रहा था। धड़कन कुछ कम होने पर अरतैक सोचने लगा—"इस सुपने का क्या अर्थ हो सकता है?" इस अंधेरी कोठड़ी को चट्टान मान लिया जाय और अलनज़ार को अजगर तो मेरी ओर सहायता का हाथ बढ़ाने वाला बहादुर कौन है?" इसी कल्पना में डूबा अरतैक अपनी खाट पर लेटा रहा। दीवार में ऊंचाई पर बने झरोखे से सूर्य की किरणें सुनहरी सलाखों की तरह कमरे में खिंच गई थीं। अरतैक उन किरणों में नाचते अणुओं की ओर आंख लगाए बीती रात के सुपने की ही बात सोच रहा था। उसकी कोठड़ी के ताले में चाबी घूमने की

आहट सुनाई दी। इस शब्द से उसका ध्यान खुलते हुए किवाड़ों की ओर गया। मनमें उसने सोचा—इन कमबख्तों की पूछ ताछ जाने कब खत्म होगी? कब इससे छुटकारा मिलेगा?"

जेल का अफ़सर कोठडी में आया। अफ़सर की बांह पर एक लाल पट्टा बँधा हुआ था। यह नई बात थी। अफसर ने हाथ में थमें कागज़ों में कुछ ढूंडते हुए पूछा—"तुम्हारा नाम अरतैक बचाली है?"

अरतैक ने हामी भरी।

"अपना सामान उठाओ!"

"क्यों?"

"तुम अपने घर जाओ, तुम्हें छोड़ दिया!"

"अरतैक ने अविश्वास से अपने सीने पर हाथ रख पूछा—"मैं अपने घर जा सकता हूं?"

"हां, हां घर जाओ, गांव जाओ, अपने बाल बच्चों के पास।"

अरतैक अपनी खाट से उछल पड़ा और उसने फिर पूछा—"जनाब, कोई भूल चूक तो नहीं है?"

"शुक्र खुदा का, कोई भूल नहीं है।"

"मज़ाक कर रहे हो?"

"नहीं, मज़ाक नहीं! ज़ार ने धूल चाट ली। मुल्क अब आजाद है।" अफ़सर ने उसकी रिहाई का परवाना अरतैक को थमा दिया। और बिदाई में हाथ मिलाने के लिए बांह आगे बढा दी।

अरतैक कोठड़ी से बाहर निकला तो उसका मित्र सिपाही दिखाई दिया। सिपाही ने मुस्करा कर कहा—कहो, मैंने कहा था न जार धूल खा गया?"

अरतैक ने सिपाही के गले में अपनी बाहें डाल दीं और रुंधे हुए गले से बोला—"तुम्हारी मित्रता कभी नहीं भूलूँगा। तुम्हारा नाम?"

सिपाही ने अपना नाम बताया—"तिशेन्को"—"मैं अभी तक अकेला था"—अरतैक ने कहा—"आज से तुम मेरे भाई हुए।"

तिशेन्को ने भी अरतैक के गले में बांह डाल कर उत्तर दिया—"मित्र मैं भी तुम्हें कभी न भूलूंगा। हम दोनों भाई भाई हुये!"

जेल मे आते समय अरतैक अपनी मां का एकलौता बेटा था। जेल से जाते समय उसे एक भाई मिल गया। दोनो ने सगे भाइयों की तरह विदा ली।

लोहे की मोटी मोटी सलाखें जडे जेल के बड़े फाटक से बाहर निकलने पर अरतैक को जान पड़ा कि सुहावनी हवा उसके दाढी से ढके चेहरे को सहला रही है। उस स्वतन्त्र वायु में श्वास लेने पर उसे अनुभव हुआ कि महीनों बाद वह भर पूरा सांस ले पाया है। जैसे उसका दूसरा जन्म हुआ हो। सड़क के दोनों ओर बहती पतली नहरों के दोनों ओर हरी घास जमी हुई थी। पेड़ों पर नए फूटे कल्ले अभी पत्तियों का रूप न ले पाए थे। बसत की वायु में नयी फूटती वनस्पति की महक समाई हुई थी। अरतैक और दूसरे कैदियों को यह दृश्य एक सुहावना स्वप्न जान पड़ रहा था। उन लोगों को विश्वास न हो रहा था कि वे लोग सहसा स्वतन्त्र हो गए हैं। अपने पैरों में बेड़ियों का बोझ न पा और जजीरो की खनखनाहट न सुन पाने से वे लोग तेज़ चाल से चल रहे थे मानो अब भी भय हो कि पीछे से आकर उन्हें पकड़ न ले। वे लोग शहर के बाजार मे पहुँच गए। लोगों ने उनकी ओर ध्यान भी न दिया। उन लोगों को भी शहर में कोई नई बात दिखाई न दी। कहीं कहीं लोगो की बातचीत में सरकार बदल जाने की बात सुनाई दे जाती। अरतैक पहले कभी अश्काबाद न आया था। शहर की चौड़ी चौड़ी सुथरी सड़कें, ऊ चे मकान और सजी हुई दुकानें उसे बहुत भली लगीं। वह रेल में बैठा और उत्सुकता से तेजेन की ओर चल दिया।

अरतैक तेजेन पहुँचा। वह अपना घर और देश पहचान न पा रहा था। सब ओर रूखे, खुश्क मैदानों में रेत और धूल उड़ रही थी। न कहीं हरियावल न कहीं पानी का नाम। बसन्त का कोई भी चिन्ह कहीं दिखाई न देता था।

बसन्त के आरम्भ में तेजेन की छटा निराली ही होती थी। घन्टे घन्टे मे धरती रूप रग बदलती रहती। पल भर की सौंधी सीलन लिये वायु चेहरों को सहला जाती और दूसरे पल घटाटोप बादल आकाश पर छा जाते। इसके बाद हवा के तेज झोंके बादलों को उड़ा आंखों से ओझल कर देते। और फिर आकाश से बूंदें झरने लगतीं। मैदानों में उड़ती धूल पीले मटियाले जल में समा जाती। धरती पर जगह जगह छोटी छोटी नालियां बहने

लगतीं। फिर सब कुछ जलमय हो जाता। जैसे अकस्मात वर्षा आ जाती वैसे ही पलक मारते बादल फट कर सूर्य की किरणें फैल जातीं। धुली हुई घास के मैदान और वृक्ष किरणों में सब्ज़े के खिलौनों की तरह चमकने लगते। पक्षियों के लाखों जोड़े अपनी अपनी बोली में चहक उठते। सब ओर जीवन के राग की गूंज समा जाती।

हरी घास से ढके फूलों से छिटके मैदानों में, छाज जैसी बड़ी दुमें लटकाए दुम्बा, भेड़ें बिखरी दिखाई देतीं रहतीं और उनके पीछे मेमनों के जोड़े कुलांचे भरते रहते। कहीं जाड़ों में बढ़ गए बालों से ढके ऊंटों के झुण्ड मनमाना चारा पाकर सन्तुष्ट कुहान फुलाए घूमते रहते। ऊंटनियां अपनी कुण्डलीदार गरदनें फैला कर अपने दूध पीते बच्चों को पुचकारती दिखाई देतीं। घोड़ियां थनों में दूध भरे, अपने चंचल बछेरों के पीछे भागती हुई गावों की धरती को रौंद डालतीं। गौओं के टोल चरते चरते थक जाते और घास समाप्त न होती। वे उसी घास पर लेट पूंछ से मक्खियों को हांकती जुगाली करने लगतीं। बस्तियों में दो चार ही आदमी दिखाई पड़ते। किसान खेतों में ही बने रहते। समय रहते ही वे बैलों को ले सील में धरती को जोत डालते या बस्ती के जवार के खेतों में क्यारियां बना सब्जी, तरकारी बोने लगते। खरबूज़े, तरबूज़े बो देने का भी यही समय था। नहरें वर्षा के जल से अघा जातीं और पानी सड़कों, पगडण्डियों पर फैल जाता। ऐसी बसन्त में तेजेन के किसान वर्ष भर के लिये अन्न और दूसरे आवश्यक सामान का आयोजन कर लेते थे।

परन्तु अरतैक ने देखा कि उसके गांव की रूखी खुश्क धरती धूल से भरी थी। अपना देश वह क्या पहचानता, उसे अपने काले तम्बू का नामोनिशान भी कहीं दिखाई न पड़ रहा था। उसका प्यारा काला तम्बू जिसमें उसने जन्म से धूप, आंधी और वर्षा से शरण पाई थी! उसकी मां? उसकी छोटी बहिन भाई को देख किलकती, फुदकती शाकिरा? सब कुछ कहां गया?

अरतैक विस्मय से बस्ती में चारों ओर आंखें दौड़ा खोज रहा था। और सब कुछ तो लगभग वैसा ही था परन्तु उसका तम्बू दिखाई न पड़ा। सब तम्बुओं की बस्ती से ऊपर सिर उठाये, अलनज़र का फैला हुआ और ऊंचा तम्बू भी दिखाई दे रहा था। सब से अन्त में ऐना के परिवार का तम्बू भी दिखाई दे रहा था। सब तम्बू अपनी जगह थे परन्तु अरतैक के

तम्बू की जगह खाली पड़ी थी।

खोया हुआ सा खड़ा अरतैक परेशान था कि क्या करे ? अलनज़र के तम्बू पर आख पड़ने पर मन म ख्याल आया—पहले जाकर इसीसे समझ लू । ऐना के तम्बू को देख सोचा—उसका क्या हुआ होगा ? पहले लोगों से मां का पता ले ? मां जिन्दा तो होगी ? बेचारी पर क्या बीती होगी, गरीब शाक़िरा, उसका क्या हाल होगा ?

दुविधा मे अरतैक कितनी ही देर तक खड़ा ही रह गया, जैसे उसके पांव जुड़ गये हों ! कितने ही आदमी आकर पास से निकल गए। वह किसी को पहचान न पाया ऐसे कब तक खड़ा रहेगा ? वह एक ओर चल पड़ा। ऐना के तम्बू के सामने आ पहुँचा। उसे कोई झिझक न हुई, न ऐना की मां 'मामा' और पिता मुराद की नाराज़गी का ख्याल आया परन्तु इस तम्बू के द्वार पर पहुँचते पहुँचते फिर उसके पांव जड़ होने लगे। आशका हुई ' ' वह ज़िन्दा तो होगी, उसके बाप ने उसे कहीं ब्याह दिया होगा ?

अरतैक की दृष्टि सब से पहले ऐना के पिता मुराद पर ही पड़ी। वह तम्बू के बाईं ओर घोड़ी के थान के समीप एक गढा खोद रहा था। आहट पा मुराद ने आंखें उसकी ओर उठाईं और पहचान न सकने के कारण पल भर चुप, ध्यान से देखता रहा। पहचाना तो आगे बढ़ उसने अरतैक को सीने से लगा लिया। उमड़ आए आंसू वस में करने के लिये बूढ़े ने मु ह फेर लिया और बोला—"बेटा अरतैक, हम लोग तो तुम्हें देखने की आस ही छोड़ चुके थे। शुक्र अल्ला का ! तुम्हें देख आंखे शीतल हो गईं ! बेटा, बड़ा हौंसला हुआ तुम्हें देख कर। तुम आगये, अब कोई चिन्ता नहीं। बस, अब इस तम्बू को ही अपना घर समझो !"

मुराद का यह व्यवहार देख अरतैक विस्मय से अवाक रह गया। उसका मन हाथ से जाता रहा। अश्काबाद की जेल में सगीनों से कोंचा जाने पर भी वह अडिग बना रहा था परन्तु मुराद की इस ममता ने उसे पिघला दिया। उसका चेहरा गुलाबी हो गया, पांव लड़खड़ाने लगे और माथे पर पसीना आ गया। बोलनेका यत्न किया तो उसका गला रूध गया।

मुराद ने कहा—"बेटा तुम चले गये तो ''''अच्छा, भीतर जाकर आराम तो करो !" मुराद ने उसे तम्बू के दरवाजे की ओर धकेल दिया।

अरतैक दरवाजे पर आ कर फिर एक बार ठिटका औ सोचा---ऐना जरूर यहां ही है तभी तो उसके पिता ने मेरा इतना ख्याल किया और सोचा---एकाएक सामने जाने से ऐना कहीं घबरा न जाए ! आहट करने के लिए उसने दरवाजे पर से खांसा।

ऐना भीतर ही थी। महीन कसीदा काढ़ते समय, रोशनी के लिये वह तम्बू के झरोखे से आती किरणों के नीचे बैठी हुई थी। किरणों के प्रकाश में तकिए पर काढ़े हुये कसीदे के अक्षर चमक रहे थे।

"दुआओं की गोद में · ··"

दरवाजे पर अरतैक के खांसने की आवाज ऐना के कान में पड़ी और उसके खून में बिजली सी कौंध गई परन्तु उसने मन को बस कर समझाया क्यों पागल होती है; अन्धे को तो सदा ही आंखों के सपने आते हैं। परन्तु उसकी आंखें तम्बू के दरवाजे की ओर उठे बिना न मानीं। एक कद्दावर मर्द भीतर आता दिखाई दिया। ऐना की आंखें विस्मय से फैल गईं। वह अपनी जगह से उछल पड़ी---' अरतैक जान !" उसके होंठ पुकार उठे। उसकी बाहें अरतैक के गले से लिपट गईं और सिर अरतैक के सीने पर जा टिका।

ऐना को सुध आई तो वह लजा गई। पीछे हट उसने अपने हाथों चीना कालीन बिछा कर अरतैक को बैठाया और उसके पास बैठ गई। उसके जीवन के स्वप्न साकार होगये, हृदय की बगिया फूल उठी, हृदय का उत्साह और आनन्द उसके चेहरे पर छलक आया। उसकी बड़ी बड़ी आंखों की चमक और होठों के रंग में उसका खोया हुआ जोबन पल भर में लौट कर उमड़ उठा। जैसे दुख के दुर-दिन कभी आए ही न थे।

अरतैक की ऊंगलियां ऐना के रेशमी बालों में उलझ कर फस गईं। दूसरी बांह से उसे अपनी ओर समेट पिघले हुए गले से उसने पुकारा "मेरी ऐना, मेरी जान, मेरी रूह, मेरा आँखों की पुतली· ····"

ऐना अरतैक की गोद में सिमिट आई और उसके गाल पर अपना कोमल गाल रख, उसने धीमे से अरतैक के कान में कहा---"मेरी जान, अगर तुम अब भी न लौटते तो मैं जान दे देती। अब मैं तुम्हें पल भर के लिये भी कहीं न जाने दूगी।"

कुछ पल अरतैक ऐना की बाहों में अपने आप को और दुनिया को

भूले रहा परन्तु मनमें चिन्ता उठने लगी। उसने पुकारा—"ऐना·· ·· " परन्तु चुप रह गया। ऐना अरतैक के मन की बात भांप गई—"अभी क्या अपने यहां नहीं गये ?" उसने पूछा और अरतैक की आंखों में झांका। ऐना की बड़ी बड़ी रसीली स्वच्छ आंखें सान्त्वना दे रही थीं चिन्ता न करो डर की कोई बात नहीं

"हमारे यहां खैरियत तो है ऐना ?" अरतैक ने पूछा। चिन्ता की कोई बात नहीं अरतैक ' तुम्हारे जाते ही तुम्हारे चाचा आये थे और मां और शाकिरा को साथ ले गये। उन्हें किसी तरह की कमी नहीं। अभी तीन दिन पहले भी उनकी खैर खबर मिली थी। शाकिरा के लिये एक टोपी काढ कर मैंने भेजी थी और अब्बा ने मां की पोशाक के लिये रेशम का थान और दूसरी ज़रूरी चीज़ें भी भेज दी हैं।"

"ऐना शुक्रिया तुमको !"—अरतैक ने सतोष से सांस ली। ऐना ने मुस्करा कर विरोध किया—"वाह क्या कह रहे हो! वो क्या मेरी मां बहनें नहीं ? मेरे ज़िन्दा रहते उन लोगों को तकलीफ कैसे हो सकती थी !" अरतैक का मन गदगद हो गया। वह कुछ कह न सका। पल भर बाद उसने पूछा—"ऐना उस बदमाश अलनज़र ने तो ज़रूर तुम लोगों को परेशान किया होगा ?"

"अब जाने दो उस नीच की बात ' क्या होगा वह सब याद करके !" "नहीं कहो, मुझे तो दिन रात उस नीच से डर लगा रहता था कि जाने तुम्हें कैसे कैसे परेशान कर रहा होगा। क्या किया उसने ?—सुने बिना मुझे चैन न आयगा।"

"अच्छा सुनो'—ऐना बोली—"तुम्हें पकड़ कर ले गये तो मैं मुरदा सी पड़ी रहती। तम्बू से कभी ही बाहर निकलती। एक रोज़ मैं दरवाज़े पर थी। अलनज़र के आदमी मुझे पकड़ ले जाना चाहते थे। मैं धक्का देकर अलग हो गई। झगड़े में मैं नीचे गिर पड़ी। मां चिल्लाने लगी "अरे ज़ालिमो, लड़की को मारे क्यों डाल रहे हो! इससे इसे अपने लड़के की बहू बनालो !" मुझे भी समझाने लगी "ऐसे अपनी मिट्टी क्यों खराब कराती है! वे बड़ा आदमी है, उसके यहां आराम भी होगा और इज्ज़त भी!

मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने फटकार दिया—"अगर तुझे वे का इतना ख्याल, है तो तू ही उस छोकरे के साथ जा बस !" एक रोज़ मां मुंह

पर छलनी जैसे दाग भरे बच्चे को अपने साथ ले आई, बच्चे आखिर मेरे कंधे पर हाथ रखने लगा। मैंने कालीन छांटने की कैंची खोल कर कहा—"हिमत है तो छू मुझे!" फिर मैंने मां को भी कहा—"अगर तू अब फिर इसे यहां लाई तो पहले मैं यह कैंची तेरे गले से पार उतारूंगी और फिर खुद भी मर जाऊंगी। इसी बीच अब्बा आ गये। मामला देख गुस्से में उन्होंने बेलचा उठाकर मां की कमर पर दे मारा। मा ज़मीन पर गिर पड़ी और चिल्लाने लगी। बच्चे उठकर भागा। अब्बा बेलचा लेकर बच्चे के पीछे भागे। बच्चे डर के मारे सिर पर पांव रख कर सर हो गया। उसकी टोपी वहीं दरवाज़े पर ही गिर गई।

दूसरे दिन खोजा मौलाना बहकाने आया। मैं आगे बढ़ी कि उस बुड्ढे की खबर लूं। अब्बा ने मुझे रोक उसकी बात सुनने से इनकार कर कहा—"मौलाना और सब ठीक है लेकिन वे के यहां लड़की के रिश्ते की बात ले मेरे यहां मत आना।" मौलाना ने भी फिर सूरत न दिखाई। इसके बाद बे ने धमकी दी कि हम लोगों को बस्ती से निकाल देगा। पिता जी ने कहा बस्ती से तो मैं मर कर ही निकलूंगा और देखा जायगा कि पहले मैं मरता हूं कि बे मरता है। पिता जी न मेरा बहुत साथ दिया। मां तो सौतेली ठहरी, वो सदा मिनमिनाती रही। मैंने भी कहा—तू बकती रहा कर तेरी कौन परवाह करता है।

भाग्य की बात! उसी समय तम्बू का दरवाज़ा खुला और मामा गाय दोह कर दूध का बर्तन हाथ से लटकाये भीतर आई। धूप से चौंधियाई आंखों से वह अरतैक को तो पहचान न सकी परन्तु देखा कि लड़की किसी जवान मर्द के साथ अकेली हिलमिल कर बैठी हुई है।

मामा माथा पीट कर चीख उठी—"हाय, दुनिया गारत हो गई! हाय इतनी बेहयाई! जवान लड़कियों के ऐसे चालचर! ज़मीन फट जाये और यह लोग फ़ना हो जाय ...."।

अरतैक कालीन से उठा और मामा के पास जाकर बोला—"अरे क्या कर रही हो मौसी! पहचाना नहीं मुझे? मैं अरतैक हूं, सलाम मौसी!"

मामा की आंखें और हाथ दोनों ही हैरानी से फैल गये और दूध का बर्तन मामा के हाथ से गिर गया—"ओह बेटा अरतैक" मामा चिल्ला उठी और अरतैक को अपने हृदय से लगा लिया।

४

संध्या हो चुकी थी। बस्ती के चाय खाने (होटल) के मालिक जमरूदी के मकान में रोशनी जल चुकी थी। मकान के भीतर के कमरे में बस्ती के माल अफसर उमेद खां और खोजा मुराद, बड़ा मुंशी कुलीखां-लँगड़ा और दारोगा बाबा खां और दो तीन दूसरे भले लोग चाय पी रहे थे। बातचीत धीमे धीमे चल रही थी। चायखाने के मालिक जमरूदी को ऐसे मुर्दा दिल लोग पसंद न थे। वह अपने चाय खाने में हंसी, मज़ाक और शोर शराबा पसन्द करता था।

जमरूदी कमरे की चौखट के साथ सटा खड़ा, अपनी फैली हुई दाढ़ी खुजाता हुआ अपने मेहमानों की ओर देख रहा था। मेहमानों के चेहरे पर उसे मुर्दनी ही दिखाई दे रही थी। कोई उसकी ओर ध्यान ही नहीं दे रहा था न कोई पुलाव जल्दी लाने या शराब लाने के लिये पुकारता था। जमरूदी यह भी न भांप पाया कि इन लोगों को किसने दावत पर बुलाया है? वह खड़ा खड़ा थक गया तो बैठ गया। बैठा बैठा उकता गया तो खड़ा हो गया और आखिर बोला—

"भले लोगो, आज यह कैसी सुस्ती छाई हुई है? आपका खादिम जमरूदी हाजिर है। कोई हुक्म कीजिये!"—परन्तु जमरूदी की इस बात का भी कुछ असर न हुआ।

बस्ती के इन बड़े लोगों के उदास होने का कारण भी ठीक ही था। खबर मिली थी कि इलाके के गवर्नर कर्नल बेलानोविच हालत हाथ से निकलती देख, आग लगी झोंपड़ी में बसने वाले चूहों की तरह, झोंपड़ी छोड़ भागे। बेलानोविच ने इलाके का इन्तजाम लेफ्टीनेंट कर्नल आंतोनोव के हाथ में सौंप, स्वयं फैरूशा में, जनरल काल्माकोव के पड़ोस में जा बसे, ताकि हालत और बिगड़ने पर तुरन्त भाग सकें।

बस्ती के अफसर लोग बेलानोविच को विदाई देकर चायखाने में आ बैठे थे। वे लोग अपनी स्थिति के बारे में चिन्तित थे। इन लोगों की सहायता से कर्नल बेलानोविच ने काफ़ी सम्पत्ति बटोरी थी। कर्नल का सामान कई माल गाड़ियों में भर कर उनके साथ भेजा गया था। यह भले आदमी परेशान थे कि अब वे किसके सामने सलाम करेंगे? और कौन इनके सिर पर अपने हाथ का साया करेगा। लेफ्टीनेन्ट कर्नल आन्तोनोव तो स्वय ही घबरा रहा था।

माल अफसर उमेदखाँ अपने फूले हुये गालों पर से पसीना पोंछ कर गम्भीर स्वर में बोला—"कहते हैं न कि जाने पहचाने दुश्मन से लड़ लेना आसान होता है। इस हाकिम को हम समझ गये थे, वो हमें समझ गया था। उसका साया अपने सिर पर था। वो कभी हम लोगों पर बिगड़ता था, धमकाता भी था पर उसने कभी किसी का कुछ बुरा नहीं किया। यह तो एक नसीहत थी कि हम गलती न करें। उसका साया बाप का साया था। दारोगा ठीक कहते हैं—हम लोग अनाथ हो गये हैं। आन्तोनोव भी कोई आदमी है? ·· बिलकुल बेदम!

कुलीखां लंगड़े ने मुह मे दबा तम्बाकू का बीड़ा निकाल दरवाज़े से बाहर फेंक दिया और होठों से टपकती लार हाथ से पोंछ कर बोला—"बेदम का क्या मतलब? ···· बेलानोविच सिर पर बैठा था तो वह कर ही क्या सकता था? कुत्ते को शह मिले तो भेड़िये पर चढ बैठता है। हम लोग साथ देंगे तो उसे हिम्मत बधेगी। अमले के बिना कोई गवर्नर क्या कर लेगा? उसे सल्तनत सम्भालने दो! फिर देखना, सल्तनत खुद सब कुछ सिखा देती है।"

दारोगा बाबाखां ने गम्भीरता से भौं चढाकर समर्थन किया—"ठीक है, कुली खां सही कह रहा है। हाकिम कोई भी हो, हुकूमत हमी लोगों को चलानी है! कुली खां के पांव में खम है तो क्या, दिमाग़ उसका दुरुस्त है भाई!"

मौलाना खोजा ने कुली खां के लंगड़ेपन पर मज़ाक कर दिया। इस बात पर झगड़ा उठ खड़ा हुआ। दारोगा ने दोनों को समझा कर चुप कराया और दूसरी बात आरम्भ कर दी—"मौलाना! सुना नहीं, अरतैक लौट आया है।"

"कौन अरतैक?" मौलाना ने पूछा

"अरतैक को नहीं जानते ? हमारी बस्ती का लड़का है ! याद नहीं उसका घोड़ा छिनवाया था ! अरे जिसने अज़ीज़ की बग़ावत में साथ दिया था ? उसे पकड़वा कर अश्काबाद भिजवाया था ! याद नहीं ?"

"सीधे, सीधे कहो न" कुलीखां बोल उठा—"जिसने अलनज़र बे के लड़के की बहू छीन ली और मालअफसर के मुंह पर थूक दिया था और पचों को भी धमकाया गया ?"

खोजा मुराद को इस बात पर क्रोध आ गया। कमर में बंधे मियान से चांदी की मूठ की खंजर खींच उसने कुलीखां को ललकारा—"मुंह पर थूक दिखाऊं मैं ? कहो तो तुम्हारे मुंह पर थूकूं ?"

कुलीखां ने अपनी कमर से रिवाल्वर निकाल कर जवाब दिया—"मैं तुम्हारे बाप के मुंह पर थूकता हूं।"

माल अफसर उमेदखां ने दोनों के बीच बचाव किया और समझाया—"क्या बचपन कर रहे हो तुम लोग ? अपनी उम्र और ओहदे का तो ख्याल करो।"

जमरूदी की एक बीबी एक बढ़िया पोशाक पहने, एक कढ़ा हुआ दस्तरख़ान लेकर आई और मेहमानों के बीच बिछा गई। दूसरी बीबी आकर पुलाव का थाल रख गई और तीसरी शराब लेकर आई। जमरूदी टोंटीदार लोटा और चिलमची ले मेहमानों के सामने आ पूछने लगा- "कोई साहब हाथ धोना चाहते हैं ?"

उमेदखां आस्तीनें समेट पुलाव पर झुक गया और बोला—"दारोगा साहब, आपने ठीक वक्त पर शराब मंगाई। शराब हमेशा हर मौक़े-मौज़ू है। शराब में यही तो बात है कि गुस्सा आ रहा हो, पी लीजिये, गुस्सा जाता रहेगा। आप खुश हों, पी लीजिये, मन उदास हो जायगा। तबीयत ठीक न हो, पी लीजिये, तबीयत सुधर जायगी और सेहत में पी लीजिये, तबीयत गिर जायगी।"

"यों कहो, शराब सबको बराबर कर देती है। समझदार और बेसमझ सब एक बराबर हो जाते हैं" दारोगा बोला। दारोगा की बात ठीक ही थी कुछ ही मिनिट बीते थे कि कुलीखां और खोजा मुराद आपसी झगड़ा भूल एक दूसरे से प्याले छुला छुला कर पीने लगे और मनमुटाव दूर हो गए।

खाना अभी चल ही रहा था कि एक हरकारे ने आकर खबर दी कि

रेलवाई लोगों की क्लब मे अभी हाल में पचों का चुनाव होगा। वहाँ सब लोगो को बुलाया गया है।

कुलीखां ने मुँह का गस्सा चबाते हुये हरकारे को हुक्म दिया "अभी हमलोग खा ी रहे हैं। जब तक हमारा खाना खत्म नहीं होगा, चुनाव उनाव कुछ नहीं होगा। कह दो जाकर अभी हम लोग नहीं आ सकते।"

हरकारे को तो इन लोगो ने धमका कर लौटा दिया परन्तु मन में दुविधा होने लगी पचों का चुनाव ! यह एक नई बात थी। परन्तु इसमें अचम्मा क्या था ! सभी बातें नई थीं। अब ज़ार ता रहा नहीं। सभी लोग ज़ार बन गये थे। सभी लोग तुर्कमखा र न बैठे। सभी जगह सभा चुनाव और ऐसे ही झगड़े चल रहे थे। बेइन्तज़ामी फैल रही थी। कुत्ते अपने मालिकों को और बिल्लियों अपनी मालिकाओं को भूल गई थीं। लेकिन दुश्मन क्या कर रहा है, यह जानना भी तो ज़रूरी है। मौके की बात है, खुद को ही पच चुनवाया जा सकता है ! न हो, अपने आदमियों को ही चुन वाया जावे ! यह सब सोच क' इन लोगों ने जल्दी ही चुनाव की सभा में पहुचने का निश्चय किया। और सभी लोग तुरत क्लब की ओर चल पड़े।

चुनाव की सभा अभी शुरू न हुई थी। इस भीड़ में सभी लोग रूसी जवान ईवान चर्नीशोव की ओर देख रहे थे। चर्नीशोव रेलवाई की वर्दी पहने था। तेजेन शहर के तुर्कमानी और रूसी मजदूरों में सबसे अधिक आदर चर्नीशोव का ही था। सभी लोग जानते थे कि चर्नीशोव ज़ार और ज़ार के अमलों का कट्टर दुश्मन था। लोग यह भी जानते थे कि बागी अज़ीज के साथियों और चर्नीशोव में गहरी मित्रता रही थी।

अरतैक के मन मे सबसे पहले चर्नीशोव ने ही अन्याय के विरोध का बीज बोया था। परन्तु अश्काबाद जेल से छूट कर लौटने के बाद अरतैक चर्नीशोव से मिल न पाया था। चर्नीशोव सभा के लिये बढ़ती हुई भीड़ में खड़ा सरसरी निगाह से आने वाले लोगों को देख रहा था। उसने देखा बांह पर लाल पट्टा बाधे एक फौजी सिपाही इधर उधर कुछ पूछता फिर रहा है। कुलीखां लगड़े को देख सिपाही ने उससे भी अपना सवाल पूछा—"मैं अरतैक बबाली से मिलना चाहता हू, वह कहां होगा ?" कुलीखां ने सिपाही की बात की ओर कुछ ध्यान दिया और एक ओर निकल गया।

चर्नीशोव बढ़कर सिपाही के पास पहुंचा और बोला—"अरतैक बबाली से मिलना चाहते हो ? क्यों, क्या काम है उससे ?" मन ही मन चर्नीशोव घबराया—"अरतैक अभी हाल ही में तो अश्काबाद से छूट कर आया है, क्या कोई और मुसीबत उसके सिर आ पड़ी ?"

सिपाही ने हामी भरी "हां मैं अरतैक से मिलना चाहता हूं"। "इससे पहले तो तुम्हें तेजेन में कभी नहीं देखा ?"—चर्नीशोव ने फिर पूछा—"कहां से आ रहे हो ?"

"अश्काबाद से।"

चर्नीशोव का सदेह और बढ़ा—"क्या काम है अरतैक से ?—" उसने पूछा—"क्या सरकारी आमला है ?"

"नहीं"

"तो फिर क्या काम है ?"

"अरतैक मेरा गहरा मित्र है सिपाही ने मुस्करा कर उत्तर दिया—" मैं आज ड्यूटी पर यहां आया था। आशा थी मित्र से मिलूंगा परन्तु निराश ही हो रहा हूं। मुझे आज ही रात अश्काबाद लौट जाना है।"

इस सिपाही ने अपना नाम तिशेन्को बताया। तिशेन्को ने चर्नीशोव को अश्काबाद जेल में अरतैक से परिचय और मित्रता होने और जेल में अरतैक पर बीती बातों की कहानी सुनाई। चर्नीशोव ने भी बताया कि अरतैक उसका भी पुराना मित्र है। जेल से आकर अरतैक उसके मकान पर आया था चर्नीशोव मकान पर न था इसलिये अरतैक उसकी पत्नी से ही बात कर लौट गया। वह स्वयम् अरतैक को खोज रहा था। अरतैक शहर से चालीस मील दूर अपने गांव में है।

चर्नीशोव और तिशेन्को आपस में बातचीत करने लगे। तिशेन्को को जब विश्वास हो गया कि चर्नीशोव कम्यूनिस्ट है तो उसने अश्काबाद की हालत उसे कह सुनाई कि मज़दूरों की जो पचायत चुनी गई है उसमें सब पुराने सरकारी अफ़सर, पादरी, सोशलिस्ट रेवोल्यूशनरी लोग भर गये हैं। तुर्कमान मज़दूरों और किसानों में से कोई भी आदमी तुर्कमानी सोवियत में नहीं लिया गया। एक काउण्ट (बूढ़े जागीरदार) साहब जो इलाके के गवर्नर कोल्माकोव के दोस्त हैं, सोवियट के प्रधान बन बैठे हैं।

चर्नीशोव यह बातें पहले ही सुन चुका था और एक साथी को अपने

विचारों से सहमत था उसे सन्तोष भी हुआ परन्तु उसने खुल कर बात न की। ज़ार के राज में उसे बरसों पुलिस से सावधान रहना पड़ा था। अब ज़ार का राज समाप्त हो चुका था परन्तु बे मतलब बात न कहना उसकी आदत हो गई थी। और उसने सोचा—कौन जाने तिशेन्को अश्काबाद के ज़ार पक्षी लोगों का ही आदमी हो और उसका भेद लेना चाहता हो।

चर्नीशोव की इस सावधानी से तिशेन्को उसके मन का सन्देह भाप गया। परन्तु चर्नीशोव की रेलवे मज़दूर की वर्दी देख तिशेन्को के मन में सन्देह होने का कोई कारण न था। वह चर्नीशोव को बांह से थाम एक ओर ले गया और उसे अपना पार्टी का टिकट दिखा दिया। तिशेन्को का टिकट देख चर्नीशोव ने दिल खोल दिया और तेजेन की हालत बताई कि शहर में कम्यूनिस्ट पार्टी का कोई सगठन नहीं। उसे छोड़ केवल दो और पार्टी-मेम्बर शहर में थे और शहर के मज़दूरों का भी कोई अच्छा सगठन न था। सभा शुरू होने का समय हो जाने के कारण उनकी बातचीत आगे न बढ़ पायी।

सभा में सबसे पहले अश्काबाद की सोवियट से आये प्रतिनिधि ने लेक्चर दिया। उसने ज़ारका अत्याचार समाप्त होने के लिये जनता को बधाई दी और कहा कि आज़ादी का यह युद्ध पूरी आज़ादी पाये बिना रोका नहीं जा सकता। उसने जनता को समझाया कि फिलहाल जो चालू सरकार कायम की गई है उसके फैसला को सख्ती से पूरा करना होगा।

उसके बाद चर्नीशोव बोलने के लिये खड़ा हुआ। उसने कहा कि ज़ार के राज में तुर्कमानिया की हालत खराब होना ज़रूरी था क्योंकि ज़ार और उसके गुट्ट ने रूस के बाहर के देशों का जनता को चूस लेने के लिये ही इन देशों और इलाकों को अपने राज के जाल में समेटा था। उसने कहा कि ज़ार की सरकार अपने सहायक जागीरदारों और बड़े बड़े धना व्यापारियों को ही फायदा पहुँचाने की रीति पर चलती थी और जनता को असली हालत नहीं जानने देती थी। इस राज में देश और जनता बरबाद हो रहे थे। ज़ार ने इतना बड़ा जग छेड़ रखा था। परन्तु इस जग से जनता को मौत और कगाली के सिवा और कुछ नहीं मिला। उसने ज़ार की सरकार के अत्याचारों की कई मिसाल सुनाई। उसने कहा कि यह ज़ार की अत्याचारी नीति का ही परिणाम था कि १८१६ में तुर्कमानिया में बगावत कर अज़ीज़ ने अपने देश को ज़ार के राज और रूस से अलग कर लेने की

कोशिश की और जनता ने भी अज़ीज़ को सहायता दी क्योंकि ज़ार के ज़ुल्मों से जनता की ज़िन्दगी दूभर हो चुकी थी। उसने कहा—"पहले हम अपनी (अस्थायी) चालू सरकारसे यह मांग करते हैं कि सबसे पहिले इस जग को खत्म किया जाय। जग से केवल धनी लोग फायदा उठा रहे हैं जनता इसमें पिसी जा रही है। जनता की सबसे पहली मांग है कि किसानों को खेती के लिये ज़मीन और सिंचाई के लिये पानी मिले। ज़मीन, कारखानों और बाजार के प्रबन्ध पर जनता का कब्जा हो। अगर अस्थायी—(चालू) सरकार इस मार्ग पर नहीं चलेगी तो यह सरकार भी ज़ार की सरकार जैसी ही बन जायगी।"

चर्नीशोव की बातें सुन कर सभा में बैठे कुछ लोगों के चेहरों पर घबराहट झलकने लगी, खास तौर पर दारोग़ा, पंच और दूसरे पुराने सरकारी अफ़सर आपस में ताक झांक करने लगे। उन्हें ऐसे जान पड़ा कि पिछले गदर के मामले में उनकी गिरफ्तारी की जाने वाली है। मुशी ने माल अफ़सर के कान के पास मुंह कर कहा—"भैया अपने को क्या ? ज़ार हो, दारोगा हो सोवियट की पंचायत हो, अपनी बात चलनी चाहिये, फिर हम ही ज़ार हैं।"

एक पंच ने कहा—"यह लोग तो ऐसी बातें करते है कि अज़ीज़ की बगावत खुद गवर्नर ने, दारोगा ने, हमने कराई हो। शहर पर हमला करने वाले डाकुओं का कोई कसूर नहीं था।" यह तो अजीब तमाशा है ? .. दूसरा बोला—"चुप ही रहो, भैया! कोई सुन लेगा तो और मुसीबत होगी।"

चुनाव हो गया। चर्नीशोव और उसके साथियों के सिर तोड़ कोशिश करने पर भी चर्नीशोव को छोड़ दूसरा कोई मजदूर या किसान सोवियट मे न चुना जा सका।

दारोगा बाबाखां को चुनाव का यह खेल कुछ समझ न आया। "इस चुनाव से फायदा क्या ?" वह सोचने लगा—"क्या चुने हुये लोग गवर्नर बनायेंगे ?.. तो फिर कर्नल अन्तोनोव क्या करेगा ? गवर्नर और दूसरे बड़े हाकिमों के रहते तो अफसर मनचाहा करते रहे अब जब यह ढेरों आदमी हुकूमत चलायेंगे तो कैसे निभेगी ? हुकूमत तो एक की चल सकती है पचासों की नहीं। गड़बड़ी मचेगी, शहर और गाँव सब बरबाद हो जायगे और क्या ?" साथ चलते माल अफ़सर को पुकार वह बोला—"खोजा मुराद

खां, यह पचों का चुनवा तो अपनी समझ में आया नहीं !"

"दारोगा हमें खुद इसका कुछ मतलब नहीं समझ आया—" माल अफ़सर ने उत्तर दिया।

"तो अब गवर्नर क्या करेगा ?"

कुली खां आगे आगे लंगड़ाता जा रहा था। यह बातचीत सुन उसने चाल धीमी कर दी और दारोगा के साथ साथ चलता हुआ बोला—"समझ क्या नहीं आया ? -गवर्नर को कौन कुछ कह रहा है ? वह गवर्नर तो गवर्नर ही रहेगा।

"तो यह सोवियत के पच क्या करेंगे ? खाद ढोयेंगे ?"

"यह गवर्नर के मातहत मददगार हो जायंगे।"

उमेदखां ने एक लम्बी सांस ली—"सभी कुछ सामने आता जाता है भाई ! जिन्दा रहे तो अपनी आंखों देख ही लेंगे।

५

खोये हुये बेटे को पाकर मां की छाती ठण्डी होगई। अरतैक की मां नूरजहाँ ने बेटे का सिर सीने पर रख उसे चूमा। काँपते हुये हाथों से उसके शरीर और कपड़ों को सहलाती रही।

"मेरे बेटे, मेरे लाल! तू कहां चला गया था?" उसकी आंखों से झड़ते सतोष के आंसू थम न पाते थे।

मां के स्नेह की इस बाढ़ से स्वयम अरतैक की आंखों मे भी आंसू छलक आये। उसे जान पड़ा कि मां के स्नेह की इस बहिया से १६१७ के सूखे से तपा तेजेन का पूरा देश सिंच गया।

शाकिरा भाई के गले में बाहें डाल मचल गई कि हम अब भैया को नहीं छोड़े गे।

अरतैक का चचा अधेर उम्र का आदमी था। उसकी दाढ़ी खिचड़ी हो गई थी परन्तु शरीर की काठी मजबूत बनी थी। उसने अरतैक को सुनाय कि वह दो बेर तेजेन से अश्काबाद पहुँचा। दोनो बार वह तीन दिन और तीन रात जेल के फाटक के बाहर बैठा रहा। जिस किसी भी आदमी को फाटक के भीतर-बाहर आते-जाते देखता उसी से अपने भतीजे की बाबत पूछताछ करता और भतीजे से मिला देने के लिये गिड़गिड़ाता परन्तु कुछ न बना। अब अपने भतीजे को सही सलामत घर आ गया देख चाचा का चेहरा खुशी से चमक उठा।

महीनों से सूना, उदास और बेरौनक दिखाई देने वाला काला तम्बू प्रसन्नता और उल्लास से चहक उठा। अरतैक के मित्र और परिचित और बहुत से लोग केवल उसका नाम सुनकर ही उससे मिलने और बधाई देने आ जुटे। जीत के जलसे का सा रग बध गया। एक ओर बड़ी सी देग में

पकता भेड़ का मांस अपना सुरीला राग अलग से गुनगुना रहा था।

अरतैक का पड़ोसी बूढ़ा गरीब किसान खादिम भी अरतैक से मिलने आया। खादिम को भी अलनज़र बे ने बरबाद कर दिया था। उसने अपनी दुख की कहानी अरतैक को सुनाई "बे ने मेरी खत्ती खुदवा कर सब गेहूं निकलवा लिया और पीट पीट कर मुझे अधमरा कर दिया ......।"

"खादिम बाबा, दिल छोटा न करो"—अरतैक ने तसल्ली दी—"ज़िंदगी रही तो एक दिन अलनज़र को भी समझ लेंगे। तुम्हारा सब गेहू लौट आएगा।"

"तुम ज़िंदगी की शर्तों की बातें करते हो अरतैक बेटा!"—खादिम ने आस्तीन से आंसू पोंछते हुए कहा—"यहां मेरे बाल बच्चे सोते जागते भूख से तड़पते रहते हैं और बे के अघाए हुए कुत्ते गेहूँ की रोटियों पर नाक सिकोड़ रहे हैं।"

"बाबा घबराओ नहीं। तुम भूखे रहोगे तो हम लोग भी भूखे रहेंगे, हम खायेंगे तो तुम भी खाओगे। जब तक अपना वक्त नहीं आता मिलजुल कर जैसे तैसे निबाहना होगा।"

"बेटा, ज़िंदगी में तुम्हें देख लिया बस सब पा लिया। अब मुझे कोई दुख नहीं। तुम से अपने दुख की बात कहली। नहीं तो मैं अपनी बात किस से कहता।"—खादिम ने आंसू पोंछ लिए और उसका चेहरा उत्साह से चमकने लगा, वह अरतैक को सुनाने लगा—"ऐना बहुत बहादुर लड़की है। उसने तुम्हारे पीछे कमबख्त बे का मुह कालाकर, उसकी नाक काटली। बे ने लोगों के सामने अपनी इज्ज़त रखने के लिए अपने लड़के बल्ले के लिये ऐना की जगह उस भोंडी बेहूदा छोकरी, अतैरी को ब्याह लिया। बे की बेइजती और परेशानी की बात सुनते समय खादिम हस हस कर ज़मीन पर लोट लोट गया! और फिर गम्भीरता से सीधे बैठ अपनी दाढ़ी सहलाते हुए उसने पूछा—"बेटा अरतैक, अब ऐना को कब घर लारहे हो?"

"उसकी सौतेली मां 'मामा' भला मानेगी?"—अरतैक ने उत्तर दिया।

"अरे मामा! वो तो ऐसे मानेगी कि .? अभी उसे मुराद के बेलचे का डडा भूला नहीं होगा। भूल गया होगा तो बेलचा तो अभी मुराद के पास है ही! ऐना को अब अपने घर आना ही चाहिये। वह अपने घर की

मालिक क्यों न बने ?"

"खादिम बाबा, तो फिर जैसे तुम कहोगे, होगा।"

"नहीं भैया, अब देर ठीक नहीं। बेचारी ने बहुत सह लिया। ऐना को जल्दी से जल्दी घर ले आने के लिये अरतैक स्वय ही उतावला था। पर वह चाहता था, अलनजर से बदला लेने और ब्याह का जलसा एक साथ ही हो। ऐना को यह देर पसन्द न थी। उसने अरतैक को समझाया—"तुम बे की बात से मन क्यों खट्टा किया करते हो ? बेइज्ज़ती तुम्हारी हुई है कि बे की ? बताओ ? तुमने उसके लड़के को पीटा, उसका घोड़ा भी छीन लिया लिया और तुम्हारी ऐना तो तुम्हारे पास है। अब अगर वह बात बढाये तो तुम जवाब दो। यों ही क्यों झगड़ा बढाना चाहते हो ? मैं ही जानती हूँ तुम्हें एक बार खोकर मैंने कैसे पाया है अब यह झगड़े में तुम्हें नहीं करने दूंगी।"

एक तरह ऐना की बात ठीक ही थी परन्तु अरतैक का मन न माना। बे से उसके अपने ही झगड़े की बात तो न थी। सूखे के उस बरस में बे ने अरतैक के घर का और दूसरे सभी किसानों के घर का सब अनाज समेट लिया था। बस्ती के बहुत से लोग अपना अनाज खो सोते-जागते भूख से तड़प रहे थे। उस बरस तो फसल की कोई आस थी नहीं और कौन जानता था कि अगली फसल तक कितने मरेंगे और कितने जियेंगे। बस्ती के लोग यों मर रहे थे और बे मुट्ठी मुट्ठी भर अनाज के दामों ऊट और घोड़े खरीद कर समेटता जा रहा था। अरतैक यह सब कैसे सह जाता ?

ऐना और अरतैक की मा दोनों ही उसे शान्त रहने के लिये समझाती रहतीं परन्तु उसके सीने की आग बार बार भड़क उठती थी। वह यह कैसे भूल जाता कि बे ने उसकी खान्दानी बस्ती से उसका तम्बू उखाड़ कर बाहर निकाल, उसका अपमान किया है। जब तक वह अपनी पुरानी जगह अपना तम्बू न जमाले-अपमान को कैसे भूल जाय ! वह अपनी पुरानी जगह जमना चाहता था।

मां आशंका से विरोध करती थी—इस बात के लिये झगड़ा और मुसीबत सिर लेने की क्या जरूरत ? सभी जगहें एक सी ही हैं। धरती-धरती में क्या फरक फिर देखा जायगा, अभी रहने दो ! हमें यहां क्या तकलीफ है। उसके चाचा ने भी समझाया—नहीं यह नहीं हो सकता।

अभी तुम कहीं नहीं जा सकते बरस भर से पहले मैं तुम्हें कही न जाने दूगा।

खादिम ने कहा, मां और चाचा ने जोर दिया, मुराद भी राज़ी था और ऐना को भी व्यर्थ देर भली न लग रही थी। इसलिये अरतैक ने ब्याह का दिन पक्का कर लिया। मुराद ने लड़की के लिये 'कल्याम' (लड़की का मूल्य) की कोई बात न की। उल्टे उसने कहा—"तुम लोग ब्याह के लिये जितने चाहे मेहमानों को न्योता दे लो। दावत का इन्तज़ाम मैं खुद करूगा।"

अरतैक के मित्र, उसके चाचा के सगे सम्बधी और मित्र और अल नज़र बे से नाराज़ सभी लोग इस ब्याह के अवसर पर इकट्ठे हुये। उस साल सूखे के कारण लोगों के घोड़े अच्छी हालत मे न थे इसलिये बरात में सवारों का वह रग न हो सका जो बे के लड़के के ब्याह मे जमा था। फिर भी पन्द्रह घुड़ सवार और पन्द्रह स्त्रियां ऊटो की सवारी पर बरात की यात्रा में चलीं।

बरात जान बूझ कर अलनज़र बे के तम्बुओं के सामने से निकली और जान बूझकर खूब हो हल्ला किया, धूल उड़ाई और आकाश में गोलियां भी चलाईं। खादिम एक दुबले से टट्टू पर सवार, हाथ में मोटा डडा लिये बरात के आगे आगे था। उसकी लम्बी लम्बी टागे टट्टू के पेट नीचे लटक रही थीं और उसके नगे पांव रकाबों से बाहर फैले हुये थे। बे के खेमों के सामने आकर खादिम ने ललकारा—"अबे ओ बे के गलीज़ कुत्ते, हिम्मत है तो निकल बाहर"।

बे की बहू अतैरी जली, शोर सुन भागी हुई खेमे के दरवाज़े पर आई और खादिम को देख, कहकहा लगाकर हस उठी। बे का सबसे प्यारा घोड़ा 'मालकौश' इस गर्द गुबार, चीखो पुकार, गोलियों की गड़गड़ाहट और रग बिरगे कपड़ों को देख भड़क उठा और अगाड़ पिछाड़ी तुड़ा बस्ती में भाग निकला।

अलनज़र बे का तम्बू बरात के पांव से उड़ी धूल से भर गया और बरातियों की दागी हुई बन्दूकों से उसके कान बहरे हो गये। क्रोध में पागल हो उसने अपनी छोलदारी के कोने से दुनाली बन्दूक उठा ली और दरवाज़े की ओर लपका फिर ठिठक गया। बन्दूक उसने एक ओर पटक सिर को दोनों हाथों में थाम एक ओर तह्‌ा कर रखे हुये कालीनों पर जा बैठा। वह सोचने लगा—यह लोग किस तरह मेरा अपमान कर रहे हैं! मैंने नकद सोने का

कल्याम (बहू का मूल्य) देकर लड़के के लिये मुराद की लड़की ली थी। उसे यह लोग छीन ले गये। अब यहां आकर मेरे सामने मुह चिड़ा रहे हैं और मेरे सिर पर धूल डाल रहे हैं। क्या कयामत आ गई है! लोगों को अदब आबरू का कोई ख्याल नहीं रहा। ज़ार मर गया तो क्या, मैं तो अभी ज़िन्दा हू! मैं यह अपमान नहीं सह सकता।

अलनज़र ने फिर बन्दूक उठाली परन्तु इसी समय उसे पुकार सुनाई दी —"हाय मालिक, मालकौश भाग गया··· ··" बे तम्बू के दरवाज़े की ओर लपका परन्तु दरवाज़े पर आकर फिर ठिठक गया। बन्दूक उसके हाथ से सरक गई। उसे सूझ न रहा था कि क्या करे? उसका मन चाहता था स्वय अपना मुह नोच ले।

"मालकौश भाग गया······" चिल्लाती हुई शादाब तम्बू में घुस आई परन्तु बे का चेहरा देख उसका अपना चेहरा फीका हो गया। वह और भी तीखे स्वर में चिल्ला उठी—"हाय मालिक तुम्हें क्या हो गया? "गोली तो नहीं लग गई!"

बे ने सुध सम्भाली और शादाब को उल्टे हाथ से पीछे की ओर धकेल चुप रहकर लौट जाने के लिये कहा। शादाब डर कर तम्बू के पिछवाड़े से निकल गई।

रूमाल से मुह पोंछ वह अपने आप को समझाने लगा—"जो हुआ होने दो! जुओं से तग आकर कोई अपना कपड़ा थोडे ही जला देता है! इन कमीनों के मुह लगने से क्या फायदा? यह कमबख्त सोते जागते भूख से बिलख रहे हैं इसीलिये तो मरने मारने का बहाना खोज रहे हैं! रसूल पाक का हुक्म है—"गुस्से को मारो!" मैं भी ताव में आ गया था······अल्लाह ने बांह से थाम कर रोक लिया।"

× × ×

बरात के लोग मुराद के घर चाय पीने बैठे। बावर्ची ने बहुत शौक और कारीगरी से तैयार किये पुलाव के देग का ढकना खोल लकड़ी की कड़छी से पुलाव को हिलाया। दूर दूर तक महक फैल गई। मामा दुविधा में थी कि वह सबके साथ हसी खुशी में साथ दे या रूठकर एक ओर हो जाये? इस आमले में उसकी जो कुछ भी उपेक्षा और अपमान हुआ था इसे तो वह सह जाती कि लड़की का कल्याम नहीं लिया गया। कल्याम ही न लिया

जाता तो भी एक बात थी। यहां उलटे दहेज़ दिया जा रहा था और दहेज़ के साथ बरात की खातिरदारी का खर्च भी लड़की के घर पर आ पड़ा था। मामा मन ही मन सोच रही थी—ऐसा तो कभी किसी ने सुना न था! ब्याह से पहिली सांझ पति से उसकी काफी कहा सुनी हो चुकी थी। मन में तो वह चाह रही थी कि फिर बात बढ़ाये परन्तु मुराद के बेल्चे के डंडे की याद न भूलती थी। यह याद आ जाने पर वह कमर की डंडे से परिचित जगह को दबा कर चुप रह जाने के सिवा क्या करती?

अवसर के विचार से मामा ने भी अपना लाल रेशम का सबसे बढ़िया जोड़ा निकाल कर पहना था। मेल जोड़ में आई स्त्रियों के सामने उसने भरसक अपने मनका दुख प्रकट न होने दिया। परन्तु जब बहू को लेने आई स्त्रियां विदाई के लिये तैयार होने लगीं, वह बरात की स्त्रियों से विदाई का सगन मांगे बिना न रह सकी। बरात के साथ आई स्त्रियों ने नेग के पन्द्रह रुबल (रूसी रुपये) दे दिये परन्तु मामा अड़ गई कि और चाहिये। इस समय उसे मुराद के डंडे का भी डर न था, क्योंकि मेहमानों के सामने मुराद मार पीट न कर सकता था। बरात की स्त्रियों के लिये कठिनाई यह थी कि उनके पास उस समय और रुपया था ही नही।

अरतैक यह उलझन देख परेशान था। कुछ सोच कर वह झगड़े की जगह पहुंचा और ऊंचे स्वर में बोल उठा—"क्यों तुम सब लोग मामा के पीछे पड़ी हो जी? झूठ मूठ बातें बना रही हो?" वह बनावटी गुस्से में बरात की औरतों पर और ऊंचे चिल्ला उठा—"तुम्हारा ही नाम ले कर कोई ऐसी बातें कहे तो तुम्हें बुरा नहीं लगेगा? यों ही कहे जा रही हो। तुम उसकी बात तो सुनो! ढंग से बोलो! तुमसे वह पैसा क्या मांगेगी, अरे चाहे तुम ढंग से मांग लो तो और अपने पास से दे दे!"

मामा का सीना अभिमान से फूल उठा। गर्दन ऊंची कर वह बोली—"देख लो दूल्हा, कोई सुनता तो है नहीं, यों ही पीछे पड़ गई। मुझे क्या ऐसा कमीनी समझ लिया है? मैंने कल्याम भी नहीं लिया। मैंने कहा, बरात का पुलाव हम करेंगे! तुम लोग कहो तो ऊंटों का भाड़ा भी मैं चुका दूं? घुड़सवारों का नेग मैं दे दूं? पर बात तो सुनो! दूल्हा बेटा, तुम्हीं समझाओ इन लोगों को। "मेरा तो जो कुछ है, अब तुम्हीं लोगों के लिये है।"

तेजेन में रिवाज़ चला आया है कि विदाई के समय दुल्हन को कालीन पर बैठाल कर, घसीटते हुये घर से बाहर ले जाते हैं। ऐना ने इससे इनकार कर दिया और एक चादर ओढ़ बाहर निकल आई। उसे ऊंट पर सवार कराने के लिये स्त्रियां आगे बढ़ीं तो उसने इसमें भी सहायता लेने से इनकार कर दिया और लपक कर ऊंट पर सवार हो गई।

६

खादिम, जब देखो अलनज़र बे के लड़के बक्ले की शादी का किस्सा सुनाने लगता:—"जब बे ने ऐना को हथियाने में मुंह की खाई और आस पास की बस्तियों में उसके नाम पर थू थू होने लगी तो उसने दूर दूर की बस्तियों में बहू के लिये खोज करनी शुरु की। तेजेन के पच्छिम में दूर बसने वाले अगेत खान्दान की उसने बहुत प्रशसा सुनी थी। बे ने उन लोगों के यहा सम्बन्ध मिलाने वाले भेजे।

बे ने अगेत लोगों की लड़कियों की बहुत बढ़ाई सुनी थी—अगेतों की बेटियां घर का दिया होती हैं। कहावत थी--अल्ला ने रूप बांटा था तो अगेतो की बेटिया दो हिस्से ले आई थीं और वैसी हीं वे सुघड़ और सुलच्छनी भी थीं। अगेतों की बेटी घर लाकर कभी कोई पछताया नहीं।

अगेत लोग पहले तो इस सम्बन्ध के लिये तैयार न हुये। उन्हें एत-राज़ था कि जिस दूल्हे की दुल्हन छोड़ गई उस घर में वे लोग अपनी लड़की कैसे दे दें? परन्तु फिर अलनज़रों के खान्दान के नाम की बात से वे तैयार हुये तो कल्याम भी उन्होंने खूब बढाकर मांगा—चालीस ऊट, चालीस रेशमी चोगे, चालीस भेड़ें, चालीस बोरे चावल, पांच घड़े मीठा तेल, पांच पीपे चीनी और एक पीपा हरी चाय की पत्ती।

आखिर अगेतों की बेटी बुरके में मुह छिपाये अलनज़र बे के खेमो मे आई और बक्ले के तम्बू में उसका प्रवेश कराया गया। बे ने इस अवसर पर बस्ती के लोगों को दिल खोल कर दावतें दीं।

दूल्हे के घर की रसमें होने लगीं। बे के घर के लोग और मेहमान 'मुह दिखाई' के लिये बहू को घेर कर बैठे थे। बहू ने मुह उघाड़ने से इनकार कर दिया। इसके बाद दूल्हे के जूते उतारने की रसम की गई। बहू ने जूते उटा तो लिये परन्तु सम्भाल कर कोने में रखने के बजाय, क्रोध में जूतों को बाहर

फेंक दिया। जब बहू को दूल्हे की खूंटी पर लटकी टोपी लाकर देने को कहा गया तो उसने बैठे बैठे सिर हिला दिया और उठी ही नहीं।

मेहमानों में से किसी ने चुटकी ली--"मैया बहू का मिजाज़ है। यह बल्ले खां को नचा देगी।"

परन्तु बल्लेखां बहुत प्रसन्न था। वह भौंवे चढा कर बोला—"बल्लेखां को क्या अपने जैसा समझ लिया है?—यहां बीवी को इशारे पर न नचाया तो नाम बदल देना।"

बहू ने दूल्हे की बात सुनी तो आंचल की आड़ से उसकी ओर घूर कर देखा जैसे गली के कुत्ते अपने यहां घुस आये और कुत्ते को देखते हैं और दांत पीस लिये।

पहले चुटकी लेने वाला फिर बोल उठा—"हम शर्त बदते हैं बहू ने अगर बल्लेखां को हथेली पर सरसों जमाकर न दिखा दी!"

पहले दिन बहू अपना चेहरा दोनों हाथों से आंचल में लपेटे रही परन्तु दूसरे ही दिन उसने न केवल घूंघट उलट दिया बल्कि अपने तौर भी दिखने लगी। वे वे घर के लोगों ने प्यार से अतैरी का नाम "अलीं (चमन की हिरनी) रखा था लेकिन महीना बीतते बीतते लोग उसे अतैरी बहरी * पुकारने लगे। उसके गठीले हठीले बदन की ऐंठन दोहरी तेहरी पोशाक में भी छिप न पाती।

शादाब दूसरी बहुओं को अपने हुक्म और दबदबे में रखती आई थी और उन्हें अपने घर के कायदे से चलाती थी। अतैरी से सामना होने पर पहले ही अवसर पर शादाब ने कान छू कर तोबा करली।

अतैरी ने पहले ही दिन सास को सुना कर कह दिया—"मैं कोई तुतलाती बच्ची तो हूं नहीं कि किसी से बोलना सीखूं गी……किसी को हुक्म चलाने का शौक है तो अपनी लड़कियों पर पूरा किया करे।"

महीने भर में अतैरी की आवाज़ और कदमों की धमक खेमे के कोने-कोने में गूंज उठी। लोगों की बात पूरी हुई—अरतैक सचमुच बल्लेखां के सिर पर चढ़ बैठी। शादाब दबे दबे कहती—"बाबा, तह तो ससुर को दाढ़ी थाम कर नचाती है।"

---

* एक खूंखार शिकारी चिड़िया जो छोटे-छोटे पक्षियों का शिकार करती है।

एक दिन तन्दूर पर रोटी सेकने की बारी के लिये अतैरी का बडी बहू से झगड़ा होगया। बड़ी बहू ने कहा—"पहले आटा लेकर मैं आई हू। पहले मेरी बारी है।"

"बारी वारी मैं नही जानती"—अतैरी ने जवाब दिया—"पहले मैं रोटी सेकूंगी। हट परे!"

अतैरी बड़ी बहू की परात परे हटाने लगी तो बड़ी बहूने उसका हाथ थाम लिया। अतैरी ने अपना हाथ छुड़ा एक हाथ बड़ी बहू की गर्दन में डाला और दूसरे से उसका कमर बन्द पकड़ पहलवानों की तरह उठा राख के ढेर पर पटक दिया। ऊपर से उसके आटे की परात भी उसके सिर पर औंधा दी और गाली दे कर बोली—"यह ले लाज की मारी कुतिया! ले अपनी बारी ले!"

अलनज़र बे के खेमों मे दो पाए तो क्या चौपाए भी अतैरी से कांपने लगे। यहां तक कि बड़े बड़े बदमिजाज़ ऊंट भी उसे देख ऐसे सन्नाटा मार जाते कि भेड़िए का सामना हो गया हो। परन्तु एक बात किसी को समझ न आई कि अतैरी जाने क्यों, बे की भुलाई हुई, सताई हुई बेज़बान पहली बेगम "मेहली" पर क्यों रीझ गई।

अतैरी को ससुराल आए अभी बहुत समय नहीं बीता था कि एक दिन बे नें मेहली को इतना पीटा कि बेचारी में रोनें चिल्लाने का भी दम न रहा। यह देख अतैरी गुस्से मे दांत पीसती अपने रूमाल का छोर चबाती रही। उसका जी चाह रहा था कि मेहली की तरफ से बे की खबर ले परन्तु जैसे तैसे मन मार कर रह गई क्योंकि अभी वह नवेली दुल्हन थी और ससुर के सामनें बोली नहीं थी। कुछ ही दिन बाद फिर अलनज़र लाठी ले मेहली को पीटने लगा। अबकी अतैरी ने आ बे के हाथ से लाठी छीन ली और लाठी ले एक ओर खड़ी होगई।

बे की आंखों से चिंगारियाँ बरसने लग गई। उसने एक ओर पड़ा बेलचा उठा कर अतैरी को ललकारा—"बदतमीज़ छोकरी, तेरी यह मजाल!"

अतैरी लाठी उठा और सीना निकाल बे के सामने आगई—"हिम्मत है तो मार मुझे देखूं तेरी मर्दानगी!"

शादाब बेगम भागी हुई आई और बे की बांह पकड़ बोली—"क्या

जुल्म कर रहे हो ? शर्म नहीं आती ?"

अतैरी ने सिर पर वार करने के लिए बे के हाथ में उठा बेलन्चा जहां का तहां रुक गया और धीमे, धीमे धरती पर आ टिका। बे अपना क्रोध वश में करने के लिए लम्बी लम्बी फुफ़कारें छोड़ता खड़ा था। अतैरी ठहरी और आगे बढ आई। बे की ठोड़ी अपनी उँगली से उचका कर बोली—"ज़रा अपनी इस दाढ़ी का तो ख्याल कर! लानत है तुम पर! इस गरीब मेहली ने तेरा क्या बिगाड़ा है ? ग़रीब एक टुकड़ा खाकर चीथड़े लपेटे दिन काट रही है। सब जालिम इस ग़रीब को नोंच नोंच खा रहे हो!"

पिटते पिटते मेहली में इतना भी दम न रहा था कि पिटने का विरोध करती या रो भी सकती परन्तु अतैरी को अपनी ओर से बोलते देख मेहली का जी भर आया और वह चीख कर रो पड़ी। इसके बाद से मेहली पर मार न पड़ती। कम से कम अतैरी के आस-पास रहने पर कोई मेहली से कुछ न बोलता।

बहू के हाथों बेइज़्ज़ती सह कर अलनज़र बे जल भुन गया। उसने अपने लड़के बल्लेखाँ को बुलाया और गाली देकर फटकारा—"तेरे जैसे लड़के से तो मैं बे औलाद मर जाता तो अच्छा था। तू एक औरत को काबू नहीं कर सकता ? तू दुनिया में क्या करेगा ? औरत को भी बस नहीं कर सकता तो सिर से टोपी उतार कर औरतों की तरह रूमाल बांध ले। औरत तेरी बांदी है या तू औरत का गुलाम है! तूने उसे सिर पर चढ़ा कर मेरी इज्जत धूल में मिला दी।"

बल्लेखां सिर लटका, आंखें चुरा कर बोला—"मैं क्या करू ? तुम्हीं ने उसे लाकर मेरे गले चक्की का पाट बांध दिया है।"

"मैं क्या करू ?"—क्रोध में विवश हो बे भड़क उठा—"जा डूब मर किसी अंधेरे कुएं में! अबे तू अलनज़र की औलाद है ?" 'पूत पालने में ही सिखाए जाते हैं और बीबी को पहले दिन बस किया जाता है। मार मार कर भुजा दे कमबख्त को! मर जायगी तो लड़कियों की कमी नहीं है दुनिया में! बच रहेगी तो इशारे पर चलेगी! मर्द की आवाज़ पर औरत कांप न उठे तो वह मर्द क्या ? वह बवीत क्या ?"

बल्लेखां ने सिर झुकाए ही उत्तर दिया—"उसे मारना-पीटना मेरे बस का नहीं। कहो मैं घर छोड़ जाऊँ ?"

बे और भी नाराज़ हो गया—"मुंह काला करके दूर हो जा मेरे सामने से!"

बे, शादान और बख्शेखां कोई भी अतैरी-बहरी को बस न कर सका। बे ने अपने विश्वासपात्र मित्रों से राय ली कि कुछ जादू टोना किया जाय, बहू को कैसे बस किया जाय? कोई भी उपाय न बता सका। मौलाना खोजा ने उसे समझाया—"मालिक बे, बिगड़ैल औरत से तो अजदहे भी कांपते हैं"—अपनी बात के समर्थन में मौलाना ने किताब में पढ़ी एक कहानी सुनादी और फिर समझाया—"बिगड़ैल औरत का इलाज? कम्बख्त को बेच नहीं सकते, घर से निकाल नहीं सकते, कत्ल नहीं कर सकते। बस खुदा हाफिज है। गले ढोल बंध गया है तो गम खाओ, चुप बैठो। जितनी कूद फाद करोगे उतना ही ढोल और बजेगा। निभाने के सिवा उपाय क्या है। पड़ी रहने दो कमबख्त को!"

निराश हो बे खुदा से पनाह मांगने लगा—"या अल्ला, इस मुसीबत से तेरे सिवा मुझे कौन बचा सकता है?"

अतैरी बहरी अपने ज़ोर पर अलनजर बे के खेमों की मलका बन बैठी। मेहली बरसों से मारपीट और उपेक्षा सह कर सूख कर कांटा हो गई थी। उसकी सूरत भी घिनौनी और बेरौनक हो गई। अतैरी का राज मेहली के लिये फला। उसके दिन फिर गये। मारपीट न हो पाती और खाना कपड़ा भी मिलने लगा। शरीर पर मांस चढ़ने लगा। गालों पर सुरखी और आँखों में चमक आ गई। वह रेशमी पोशाक पहन सिर पर मशहदी शाल ओढने लगी। उसकी चाल में चुस्ती और मटक भी आ गई। अब वह कुयें से पानी लेने जाती तो लोग घूरने भी लगते। और तो और अब वह अलनज़र को भी भली लगने लगी

× × ×

जंग खत्म हो गई थी। मई के महीने में बे का बख्शे खां के जन्म से पहले पला पलाया गोद लिया लड़का मावेद भी लाम पर से लौट आया। बे ने मेहली के रोने पीटने की परवाह न कर ज़ार के अफसरों को प्रसन्न करने के लिये मावेद को लाम पर भेज दिया था। मावेद को जीता जागता लौट आया देख मेहली खिल उठी। अब मेहली के ओठों पर हंसी नाचती रहती, उसके गाल थिरकते रहते और निगाहें भी चंचल हो उठीं।

मावेद के कुछ बदले हुये रंग देख अलनज़र बे सनका। मावेद की चाल ढाल, उठना बैठना, बोलना, सभी बातें बदल गई थीं। अब वह रूसियों की तरह हाथ मिलाता था। बे अपने मन की शंका दबाये रहा और गोद लिये बेटे को प्यार से पुकार कर बोला—"आओ बेटा, तुम्हें देख जान में जान आई। दिन रात मन कांपता रहता था। लाम पर जाने कब क्या हो जाय? हजार शुक्र अल्ला का तुम आ गये। बेटा तुमने लोगों के सामने मेरा सिर ऊंचा कर दिया··· " बे शादाब बेगम को पुकार कर बोला—"बेगम, खुदा का शुक्र करो, घर का लड़का खान्दान का नाम उजला कर लाम पर से लौटा है। खुशी का मौका है। कुछ खाने पीने का इन्तजाम किया है तुमने। आने जाने वाले सभी लोगों के लिये भी चाय-पुलाव का खयाल रखना।" और फिर मावेद को सम्बोधन किया—"बेटा, मैं ही जानता हू कैसे सीने पर पत्थर पर रख ज़ार का जुल्म बर्दाश्त कर तुम्हें लाम पर भेज दिया। क्या कहूं, एक तरफ़ तुम्हारे लिये सीना कट-कट कर रह जाता था, दूसरी तरफ़ और मुसीबतें सिरपर टूट पड़ीं। मालकौश को डाकू उड़ा ले गये और फिर अज़ीज़ ने बग़ावत की तो लोगों ने गवर्नर के यहां जा कर चुगली करदी कि मैं भी बाग़ियों के साथ हूँ। अब तुम्हें क्या बताऊं? तुम्हारे जाने के बाद मैंने गवर्नर के यहां दरख्वास्त दी कि कर्नल हमारे खान्दान से किनारा खाता है इसलिये मेरे बेटे को जबरन भरती करा लिया गया है। सुल्तान ज़ार के वफ़ादार खान्दानों के लड़कों का लाम पर भेजा जाना बहुत बे इनसाफी है। तुम्हें वापिस बुलाने के लिये दरख्वास्त दी। मैं तो हर दम तुम्हारी राह तकता रहता था। हज़ार शुक्र है खुदा का कि मेरी मेहनत बर आई और ज़िन्दगी में तुम्हारा मुंह देख लिया।"

मावेद जानता था उसे बे ने स्वयम ही लाम पर भिजवाया था और उसका दिल अपने जबरन बने बाप से जला हुआ था। लौटकर उसने बे का दूसरा ही व्यवहार पाया। कुछ मेहली की ममता भरी पैनी पैनी आँखों का भी असर था। उसके मन का क्रोध बुझने लगा। मावेद पर अपनी चिकनी चुपड़ी बातों का प्रभाव होता देख बे और भी बातें बनाने लगे—"बेटा, क्या कहूँ इतना समय तुमने लाम पर कैसे बिताया होगा? सोचते ही कलेजा मुंह को आने लगता है। पर बेटा तुमने मेरा नाम रौशन कर दिया। तुम्हीं घर के चिराग़ हो। नल्ले ने तो कुन का नाम डुबो दिया।

लाम पर तुम्हें खाने-पीने को भी तो ठीक से नहीं मिला होगा। कैसे दुबला गये हो। तुम्हें किसी बात की फ़िक्र की जरूरत नहीं। ज़रा खुराक बढ़ाओ और आराम करो। और अब तुम्हारे ब्याह में भी देर नहीं होनी चाहिये। जो लड़की तुम्हें जच जाय, बस तुम नाम भर बतादो। तुम्हारा ब्याह हो जाय और फिर तुम्हारे लिये अलग से एक सफेद तम्बू लगवादूं तो मुझे सतोष हो।" शादाब को बुला कर बे ने हुक्म दिया—"लड़के के लिये रेश्मी जोड़े बनवादो और मेहली से कहो, क्या करती है दिन भर ? इसकी जरूरत खिदमत का ख्याल रखे। चाय और खाना हरवक्त उसके सामने रहना चाहिये।"

बे के मन में मावेद से डर तो था। जब उसने नौजवान को फ़ुसला कर अपने प्रति सतुष्ट कर लिया तो यह भी ख्याल आया कि बदमाश अरतैक जो न कर गुजरे गनीमत। ऐसे समय बूढ़े अरतैक का सामना क्या करेगा ? मावेद पर ही भरोसा किया जा सकता था। इसलिये मावेद का और भी अधिक लाड़ चाव होने लगा।

मावेद के साथ जबरन भरती किये गये बहुत से जवान मज़दूरी के लिये बहुत दूर दूर के इलाकों में भेज दिये गये थे परन्तु मावेद को भाग्य से तुर्कमानिया की रेलवे लाइन पर ही काम दिया गया था। वह दिन मावेद ने बड़ी कठिनाई से बिताये थे। उसने बे को सहायता के लिये कई पत्र लिखे परन्तु उसे कभी कोई उत्तर न मिला। उन पत्रों की बात याद आने पर बे कहने लगा— " बेटा, मुझे सदा चिंता बनी रहती थी जाने तुम पर क्या बीत रही होगी, विदेस में गांठ का पैसा ही काम आता है। तुम्हारे लिये मैंने चार बार सौ सौ रूबल भेजे। दो बार तो डाकखाने से और दो बार उधर जाते जान पहचान के आदमियों के हाथ।"

"तुम तो जानते ही हो, इन डाकखानों का जैसा हाल है ! पहुचने की उम्मीद ही कभी नहीं मिली और न ही उन भले आदमियों ने लौट कर खबर दी। रुपया तुम्हें मिल तो गया था ?

भरती के समय मावेद धेला कौड़ी कुछ साथ न ले पाया था। पैसा जेब में न होने से मावेद आवश्यक चीज़ों के लिये तड़प तड़प कर रह जाता। दूसरे साथियों और मज़दूर को गरीबी मे तड़पते देख और उनकी बातें सुन सुनकर मावेद के मन में ज़ार की सरकार और इस सरकार की छत्र-छाया में ढेरों दौलत बटोर कर, दूसरों के कधों पर सवारी करने वालों के

प्रति घृणा और गुस्सा भरता रहा। वह मन में सोचता रहता--बे स्वय आराम और मज़े कर रहा है। मुझे मरने के लिये उसने यहाँ भेज दिया है अगर कभी घर लौटूंगा तो उस मक्कार जालिम से अच्छी तरह समझूंगा। इन विचारों के कारण लाम से घर लौटने पर मावेद गुमसुम बना रहता परन्तु बे के खुशामद के व्यवहार और मेहली के लाड़ प्यार से उसके विचार बदलने लगे। बे आँखों में आँसू भर भर मावेद को अरतैक के दुर्व्यवहार और दूसरी ज्यादतियों की कहानी सुनाता रहता।

"बेटा मुझे तुम्ही से उम्मीदें हैं"—अलनज़र मावेद को समझाता—"बड़े तो जैसा हुआ वैसा न हुआ। ये लड़का तो अपनी औरत से ही डर गया। तुम्हीं अरतैक से बदला ले कर मेरी रुह को शांति दे सकते हो। नहीं तो कब्र में भी मेरे दिल में बेइज्जती की आग दहकती रहेगी।"

मेहली के लिये तो मावेद का लौट आना मुर्दा शरीर में जान पड़ जाने जैसा हुआ। वह मावेद के गले में बाहें डाल, उसे चूम चूम कर परेशान कर देती। मेहली की बाहें गले पर छूने और अपने सीने पर उसका सीना बार-बार दबने से मावेद का शरीर चचल होने लगा। अतैरी की रक्षा में, मेहली को किसी की मार और धमकी का डर न रहा था तिस पर उसे बहाना मिल गया कि बे ने उसे मावेद की खिदमत का खास ख्याल रखने का हुकम दिया है—वह बे झिझक मावेद से चिपटी रहने लगी, जब देखो किसी न किसी बहाने उसी के पास बनी रहती। जब देखो मावेद के लिये चाय लिये खड़ी है। जब देखो साफ सुथरी चायदानी और प्याले को आंचल से रगड़-चमकाती रहती। सुबह के नाश्ते में वह उसे ऊँटनी के दूध में शहद और मक्खन मिला कर देती। खिलाते पिलाते समय मावेद के शरीर से ऐसे सट कर बैठती कि उसकी छातियां मावेद के शरीर से दबती रहतीं और उसकी सांस मावेद की मूछों में उलझी रहती।

खाने, पीने, पहिरने की यह पौबारह देख मावेद सोचता--बचपन में सही गरीबी और लाम पर भुगती मुसीबतों का बदला क्या अब ब्याज समेत मिल रहा है? परन्तु मेहली की बाबत सोच उसे घबड़ाहट होने लगती। वह सोचता--यह क्या तमाशा है? मैं अलनजर बे का लड़का हूं या मेहली का दोस्त? दोनों बातें साथ साथ कैसे चल सकती हैं? कई दिन तक वह इस दुविधा में रहा आखिर एक दिन मेहली से उसने साफ-साफ बात की—

"देखो, मैंसी, बे मेरा बाप है और तुम बे की बेगम हो।"

"पत्थर है वो तुम्हारा बाप ?.. जैसे तुम जानते नहीं ?"

"यह तो तुम ठीक कहती हो, लेकिन बे मेरे लिये बहू ढूंढ रहा है, और मेरा दिल तुमसे लग गया है ... अब बताओ क्या होगा ?"

मेहली मावेद के गले में बाहें डाल उससे चिपट गई और उसके गाल से अपना गाल सटा कर आंखें मूंद, पिघले गले से बोली—"नहीं यह नहीं हो सकता ... मैं तो जान रहते तुम्हें नहीं छोड़ूंगी।"

"लेकिन वे क्या करेगा ?"—मावेद का दिल धड़क रहा था।

"मैं कुछ नहीं जानती"— मेहली ने उत्तर दिया—"मेरे लिये जैसा खेमे के दरवाज़े पर बंधा हुआ 'अल्वा' (कुत्ता) वैसा बे।"

"लोग क्या कहेंगे ?"

"लोगों से मुझे क्या लेना है ? बकने दो लोगों को ? क्या जान दे दूं लोगों के लिये ?"

"अगर बे जान गया तो ?"

"जब नहाने चली तो भीगने का डर ?" ज़िन्दगी भर मार ही तो खाई है। मेरा भी तो दिल है !"

"तो फिर यहां गुजारा नहीं होगा !"

"मेरी जान, यहां कौन हमारे नाड़ गड़े हैं ? दुनिया में जगह की कमी नहीं है। यहां हमारे लिये कौन नेमतें रखी हैं। अल्ला ने हाथ-पांव दिये हैं। जहां हाथ-पाव हिलायेंगे चार रोटी कमा लेंगे, दिल को चैन तो मिलेगा।"

मावेद ने मेहली को सीने से लगा लिया। मेहली की गालें अनार के फूल की तरह गुलनारी हो गईं।

"मेरी जान, मावेद ने मेहली के कान में कहा—"सच कहूं, मैं यहां बे के टुकड़ों की खातिर नहीं तेरे ही लिये पड़ा हूं। नहीं तो इस बेईमान को कभी का लात मार जाता। तू मेरी, मैं तेरा ! जो होता है, हो ! लेकिन जब तक अपना इंतजाम न हो जाय, बात दबाये रहो।"

मेहली ने सिर झुका कर अनुमति दी और सोचती रही—मैं किसी की

क्या परवाह करती हूँ। दुनिया जाय ठेंगे से। लेकिन अतैरी बहरी भाप गई तो बुरा होगा।

कुछ ही दिन बाद बे ने फिर मावेद से बात की—"बेटा, तुमने अपने ब्याह की बाबत कुछ कहा नहीं। बताया नहीं, कौन लड़की पसन्द आता है। न हो, मैं ही कोई लड़की देखू?"

मावेद ने सिर झुकाकर उत्तर दिया—"अब्बाजान, यह साल जैसा बीत रहा है, सब तरफ परेशानी और तंगी है। सभी तरह के झगड़े बखेड़े, चल रहे हैं। मेरा ख्याल था" इस काम में अभी जल्दी की ज़रूरत क्या? ज़रा अमन और शान्ति हो जाने पर ही यह काम किया जाय तो ठीक हो।"

मावेद के उत्तर से बे का मन हरा हो गया—"बेटा तुम्हारे जैसे समझदार जवान से मुझे ऐसी ही आशा थी। जो तुम कहते हो वही ठीक है।"

७

अश्क़ाबाद के जेल से छूटकर आने के बाद अरतैक ने १६१७ के दुश्काल का साल अपने परिवार में रह कर ही बिताया। वह जेल में कमज़ोर हो गया था। अच्छा खाना और आराम मिलने से उसका शरीर पनपने लगा। वह चाचा के साथ खेतों में काम करता। उसका जीवन गांव के किसानों में घुल मिल गया। वह उनके सुख दुख का भागी हो गया। पुराने परिचित चेहरों पर आंखें गड़ाये, उनकी बातें सुनता। वह सोचता रहता—लोग ज़ारकी सरकार पलटने और आज़ादी की बातें करते हैं परन्तु कहां आज़ादी ? कैसी आज़ादी ? आख़िर बदला क्या ? तब और अब में अन्तर क्या हुआ ?

ज़ार फरवरी में तख्त से उतार दिया गया था परन्तु सरकार का काम अब भी पुराने अफसरों के ही हाथ में था। अफ़सर लोग जागीरदारों और दूसरे बड़े आदमियों की राय और मदद से काम चला रहे थे। दो चार चेहरे और नाम बदल गए थे। गवर्नर को अब कमिस्सार पुकारा जाने लगा। दारोगा, माल अफसर जैसे के तैसे रहे। तेजेन में रेल के क्लब में हुई सभा में जो पंच चुने गए थे वे भी चालू इन्तज़ाम का साथ देने लगे।

शहरों में ग़रीब लोगों और देहात के किसानों को ज़ार की पुरानी सरकार और केरेन्सकी की नयी अस्थायी सरकार में कोई भेद न जान पड़ा। दारोगा और दूसरे सरकारी अफ़सर पहले तो नयी पचायती सरकार से बहुत डरे। लेकिन कुछ ही दिन में उन्होंने देख लिया कि घबराहट व्यर्थ थी। ज़ार के राज में कुछ तो डर ज़ार के अफ़सरों का था, अब तो वे ही मालिक बन गए। गांवों की जनता का हाल अकाल के कारण बहुत बुरा था—न अनाज, न मांस, न दूध-घी। किसानों के शरीर सूखे चमड़े से ढँके ठठरी भर रह गए थे।

इस सूखे में किसान बरबाद हुए तो इसका कुछ असर दारोगा बाबाखां, माल अफ़सर खोजामुराद और कुलीखां पर भी पड़ा। मरे पिसे किसानों से इस हालत मे क्या वसूली हो सकती थी? किसान लोग पेट की आग से व्याकुल हो, ज़मीनें छोड़ शहरों की ओर चले गए। जहां मौका पा कर कुछ मज़दूरी-दिहाड़ी कर लेते और राशन की दुकानों के सामने घन्टों लाइन बांधे खड़े रहते। जो लोग गावों मे रह गए वे रात के अंधेरे में तीन-तीन चार चार आदमी मिल, लाठी, बेलचा और टूटी फूटी तलवारें ले, अलनज़र बे जैसे अमीर लोगों की खत्तियां खोद अनाज चुरा लाने के लिए घूमते फिरते। कुछ हाथ लग जाता तो दस पांच दिन पेट भर अनाज पा जाते और कभी अनाज के बदले मार खा कर घर में सिर छिपा लेते। सरकारी अफ़सर इन लोगों का सामना न कर कतरा जाते। कभी कभी यह लोग इतना साहस कर जाते कि सरकारी डाक ही लूट लेते। ईरान से माल आने जाने पर सरकारी रोक थी, परन्तु अब चोरी चोरी सब कुछ आ-जा रहा था।

सरकारी अफ़सरों की आमदनी का बड़ा सहारा थीं—किसानों से मिलने वाली रिश्वतें, नज़राने और वसूलियां। किसानों की ऐसी हालत में उनसे कुछ पा लेने का अवसर न रहा। अफ़सरों ने अपने गुज़ारे के दूसरे तरीके निकाल लिए। अस्थायी सरकार ने गांवों में सूखे और अकाल के कारण सहयोग सभाओं की मार्फ़त कुछ सामान सस्ते दामों देने का प्रबन्ध किया था। इसके लिए राशन कार्ड बांटे गए थे। अफ़सरों ने इन राशन कार्डों से ही अपना काम बनाना शुरू किया।

फ़रवरी की क्रांति के बाद, दूसरे सूबों की तरह तेजेन में भी देहातों और शहरों में जनता की सहयोग सभायें बनादी गईं थीं। जनता को कुछ बताए बिना सभी लोगों के नाम इन सहयोग सभाओं में लिख लिए गए। गांव के सभी किसानों के नाम कार्ड बना दिए गए। इन कार्डों के हिसाब से शहर के राशन दफ्तरों से चीनी, चाय, मक्खन, रोटी वगैरा सरकार के यहाँ से मगा लिया जाता। अफ़सर लोग मन चाहे दामों इस माल की चोरबाज़ारी करते। किसानों को इस खेल का कुछ पता भी न था। उनके बाल बच्चे भूखे तड़प रहे थे।

अरतैक का पुराना मित्र चरखेज़ अलनज़र बे के ही गांव में रहता था। एक दिन चरखेज़ तेजेन में सहयोग सभा के दफ्तर में गया। अवसर की बात, जिस समय चरखेज़ सहयोग सभा के दफ्तर में पहुँचा—कुलीखां और

मुतरज्जिम (अनुवादक) ताशेखां में झगड़ा चल रहा था। झगड़ा राशन कार्डों पर हो गया था और बात बात में बहुत बढ़ गया।

"ज़ुल्म की हद हो गई! अपनी पूरी बस्ती के किसानों के कार्ड तुमने ले लिए! तुम्हारा पेट नहीं भरा? अब मेरे यहां के किसानों के नाम भी भरे ले रहे हो! उनके नाम तुम्हें काटने पड़ेंगे।"—ताशेखां चिल्ला कर बोला।

कुलीखां ने विरोध किया—"कौन कहता है यह नाम तुम्हारे किसानों के हैं? यह किसान तुम्हारे खरीदे हुए हैं? तुम्हारे गुलाम हैं? कौन हो तुम मुझसे नाम कटवाने वाले?"

"तुम्हें काटने पड़ेंगे!"

"ज़बान सम्भाल कर बोल!" कुलीखां और बिगड़ उठा।

"क्यों, यह तेरे बाप की विरासत है?"

कुलीखां ने ताशेखां को बहन की गाली दे दी और ताशेखां ने उसके मुंह पर घूंसा दे मारा। दोनों गुत्थम गुत्था हो गए। दफ्तर की मेज़ें, कुर्सियां उलटने लगीं और आलमारी में रखी हुई बोतलें गिर गिर कर टूटने लगीं। पहरे पर खड़े सिपाही ने यह झगड़ा देख सीटी बजा दी। ताशेखां ने कुलीखां की गर्दन दोनों हाथों में ले ली और दबा कर उसका दम घोंट देने को ही था कि दारोगा बाबाखां दफ्तर में आ गया। बाबाखां ने ताशेखां के हाथों से कुलीखां की गर्दन छुड़वाई गर्दन छूटते ही कुलीखां ने एक वार ताशेखां के सिर पर कर दिया। परन्तु बाबाखां उन्हें फिर भिड़जाने से रोक लिया और झगड़े का कारण पूछने लगा।

"देखो इन बेवकूफों को!" कारण सुन उसने दोनों को फटकार कर कहा—"यह पढ़े लिखे आदमियों की हालत है कि नामों के लिये झगड़ रहे हैं। मैं तो काला अक्षर भैंस बराबर जानता हूं लेकिन जितने चाहो नाम लिख सकता हूं। नाम मैं बोलता हूँ। नामों की कमी है? तुम कार्ड लिख लिख कर ऊंट लाद लो!"

"अरे बस्ती के किसानों के नाम खत्म हो गये हैं तो ढोर गोरू के नाम। जंगल के जानवरों के नाम लिख सकते हो। लानत है तुम्हारी अक्ल पर! यह पढ़े लिखों का हाल है?"

चरकेज़ ने शहर से लौट राशन कार्डों का यह किस्सा अपने गांव में और अरतैक के गांव में सुनाया।

किसान हैरान थे—"सरकार किसानों के नाम पर राशन और सामान दे रही है। और खा जाते है शहर के अफसर मुहर्रिर! हमारे हाथ कुछ नहीं लगता!"

"ऊंह, तुम किसान ही तो हो? किसान का क्या है? किसान ने अपनी कमाई, अपना हिस्सा कभी खुद खाया है?"

"अरे भाई उस रेवलूशा, इन्कलाब से क्या मिला?"

"इन लोगों ने तो कहा था कि ज़ार मर गया। अब ज़ार के दारोगा, माल अफ़सर, काज़ी, मुहर्रिर सब जायगे। किसान भर पेट खायगे पियेंगे! ग़रीब अमीर सब एक से रहेंगे और जाने क्या, क्या?"

"बातें तो ऐसे करते थे कि धरती पर ही बहिश्त बन जायगा।"

"हुआ क्या? जागीरदारों के हाथ और लम्बे हो गये। पहले यह लोग ज़ार के नाम पर खाते थे, अब खुद ज़ार बन गये।"

"अरे, ज़ार मरा वरा कुछ नहीं?"

"अपने बड़े-बूढ़ों का ढंग था कि जिस तम्बू में घर के लोग मरने लगें, उस तम्बू को फूक कर झोंपड़ी में जा बसते थे।" चरखेज़ ने समझाया—"उन लोगों का कहना था कि तम्बू घर के लोगों को खाने लगते हैं। वैसी ही अपनी यह ज़िन्दगी है। भैया, या तो जिन्दा रहें, या मर ही जायं! रेंगते रहने में जिन्दगी क्या? किसान को या तो लोग दोहते जाते हैं या उसे कोल्हू में डाल कर पेर लेते हैं। जागीरदार और ज़ार के लोग हमें मिटाये दे रहे हैं। यह लोग ही मिट जाय तो किसान जिन्दा रहे।

"चरखेज़ ने ठीक कहा भैया"–अरतैक बोल उठा "एक बार फिर अज़ीज़ की तरह उठना होगा। उन लोगों को गिराना होगा।"

पिछले बरस की बगावत की सज़ा किसान अभी भूले न थे। किसी ने सिर झुकाये ही कहा—"तब भी क्या हुआ? दो उठे और मर गये। बाकी वैसे ही पड़े रहे।"

लोग उठकर चले गये तो भी अरतैक सिर झुकाये बैठा धरती पर लकीरें खींचता कुछ सोचता रहा।

दूसरे दिन वह तड़के ही दारोगा बाबा खां के यहाँ पहुँचा। बाबा खां अरतैक की रुखाई और आँखों में बेचैनी देख भांप गया कि अरतैक झगड़े के लिये आया है। शायद जेल भेजे जाने का बदला लेने आया हो!

बाबा खां ने समझदारी से काम लेना उचित समझा। अरतैक के लिये तुरत चाय और मिस्री मगाई और मुस्करा कर अगवानी के लिये बोला—"आओ भैया आओ, मुबारक हो घर लौटे हो। तुम्हें आये तो कई दिन हुये? तुम्हारे यहाँ जाने की बात सोच ही रहा था। अब तब में ही वक्त निकल गया। जब चलने को हुआ, कोई न कोई आ बैठा, कहीं न कहीं जाना पड़ गया। अरे सरकारी काम का कोई ठिकाना है। एक झंझट हो तो बताऊ। जब तुम्हें वे लोग पकड़ कर ले गये, क्या बताऊं बेबसी में चुप रह जाना पड़ा। भाई पड़ोस का नाता कोई मामूली चीज़ है? सोचा, मुझे अब कितने दिन ज़िन्दा रहना है? अब तुम्हारा मुह क्या देख पाऊ गा? हजार शुक्र है अल्ला का! हां तुम्हारा ब्याह हो गया मुबारक, मुबारक! तुम्हारे दो हाथ की जगह चार हाथ हो गये। भाई तुमने अलनजर बे को खूब सीधा किया·· ··वाह!"

अरतैक बाबा खां को खूब समझता था। मन में उसने सोचा यह मुझे कैसे बना रहा है? बेवकूफ समझता है। वह चुप रह गया।

अरतैक की चुप्पी से बाबा खां भांप गया कि अरतैक उसकी बातों में नहीं आया। उसने पैंतरा बदला—'भैया अरतैक तुमने बहुत ज़ुल्म सहा है। खैर इसका बदला तुम्हें अल्लाह के यहां तो मिलेगा ही लेकिन अब तुम्हारा ब्याह हुआ है। घर में खर्च भी होता है। खर्च की ज़रूरत होगी। पड़ोसी से क्या पर्दा? जिस चीज की, जिस मदद की जरूरत हो, अपना ही घर समझ कर कहना। अल्लाह के करम से इस घर में दो-एक आदमी के लिये कुछ हो ही सकता है। और फिर तुम्हारा तो यह अपना ही घर है, तुम्हारे जैसे बहादुर का तो हक़ है। तुम्हारे ब्याह के लिये एक बोरी गेहूँ और दो भेड़ें रखवाली थीं। क्या बताऊ, उलझनों में टलता ही गया, अब तक न भेज सका। मगवा लेना और अपना घर समझ कर जो ज़रूरत हो कह देना, तकल्लुफ़ करो तो मेरी क़सम है!"

"एक बोरी गेहूँ, दो भेड़ें और जिस चीज की जरूरत हो!" कोई और सोचता—"कितनी मेहरबानी है? अकाल के दिनों में यह कम नहीं है? सम्भाल कर खर्चें तो तीन चार महीने का गुजारा है। और बेच लें तो पूरा तम्बू कालीनों से जगमगा उठे। आदमी छः महीने की मेहनत में भी इतना नहीं कमा सकता। इतने माल को कौन ठोकर मार सकता है। आज तो बाबा खां का मुह देखना मुबारक हो गया। मां और ऐना सुनेंगी तो प्रसन्न

हो जायगी। इतने में से पड़ोसी खादिम की भी थोड़ी बहुत सहायता हो सकती है। आज तो खुदा छप्पर फाड़ कर दे रहा है।—परन्तु अरतैक ने यह नहीं सोचा। उसने सोचा—

आज तो यह खूब माल खिलाने को तैयार है। लेकिन इस बदमाश का माल जहर है। जब लोग भूख से बिलबिला रहे हैं, यह रिश्वत खाना हराम नहीं तो क्या है! जो मेड़ गल्ले से बिछड़ी, भेड़िये के मुह गई। जहां *साथ के लोग भूखे मरेंगे वहां मैं भी मरूगा। अगर साथ के लोग खा* पायेंगे तो मैं भी खा लूगा। साथियों का साथ छोड़ना सबसे बड़ा गुनाह है।

"बाबा खां,"—अरतैक ने उत्तर दिया—"आपकी मेहरबानी के लिये बहुत शुक्रिया। जैसे तैसे गुज़ारा चल रहा है। हाल तो सभी किसानों का बहुत बुरा है। सभी को मदद की ज़रूरत है।"

अपनी चाल खाली जाने से बाबा खां को निराशा के साथ ही क्रोध भी आ गया। मन ही मन कहा- "भूखे ही मरना चाहता है तो तुझे रोक कौन रहा है।"—अरतैक को जब उसने गिरफ्तार करवा पुलिस के हाथ जेल भेजा था, उस समय वह और भी बुरी तरह डांट सकता था परन्तु अब समय बदल गया था। भूख से तड़पते किसान मरने मारने पर तुले थे। ऐसी हालत में किसी एक से भी झगड़ा हो जाय तो बहाना पाकर गांव का गांव सिर पर आ पड़े और घर बार लूट ले! तब बचाने कौन आयगा? गवर्नर आन्तोनोव तो खुद ही पर कटे बाज़ की तरह दुबका बैठा है।

पचायत? ' उसकी परवाह कौन करता है। माल अफ़सर मुराद? वह पहले अपनी जान ही बचाले। क्या दिन थे कि कुलीखां से लिखवा कर एक दरखास्त खूफ़िया पुलिस को भिजवादी! एक अरतैक क्या, सौ अरतैक पल भर में मिट्टी में मिल जाते। परन्तु वे दिन तो अब थे नहीं। अपमान और क्रोध निगल कर बाबाखां दुखी स्वर में बोला—"भैया कुछ मत कहो! लोगों की हालत तो देखी नहीं जाती। सच कहता हू, यह हालत देख कर तो मुह में दिया अनाज बाहर को आता है। लेकिन कोई करे तो क्या? मैं अपना घर भर उठा कर बांट दू तब भी क्या बनेगा? समुदंर में बूंद भर का भी तो फरक नहीं पड़ेगा! दिल पर जो बीत रही है, मैं ही जानता हू। कहने से क्या होता है! कुछ इंतजाम होना चाहिये भैया! अपने बूते भर कर ही रहा हूं। सभी अफ़सरों और पचों के दस्तखत से एक दरखास्त सरकार के यहाँ मैंने लोगों की मदद के लिये भिजवाई

है। हम ने लिखा है—"देहात के किसान बरसों शहरों का पेट भरते रहे हैं। ज़ार के अमले को, उसकी फौजों को खिलाते रहे हैं। मुल्क भर का पेट हम ने बरसों भरा है, अब किसानों पर मुसीबत पड़ी है तो क्या उनकी मदद नहीं करोगे ? उन्हें भूखा मर जाने दोगे ? मुसीबत में घर के जानवर को भी अपनी रोटी का हिस्सा बांट कर खिलाया जाता है। आज देहात का किसान दम तोड़ रहा है। आज उसके मुंह में रोटी का टुकड़ा दो। कल तुम हम से दस गुना ले लेना। अर्ज़ी अश्काबाद जा चुकी है। सूबे का कमिस्सार कोल्माकोव अपनी जान पहचान का है। देखो, कुछ तो किया ही जायगा ••।"

अरतैफ इस बहानेबाज़ी से थक कर बीच ही में बोल उठा—"बाबा खाँ, लोग कहते हैं कि सरकार देहात के किसानों के लिये अनाज और दूसरा सामान भेज रही है।"

"क्या कहते हो; यही होता तो और चाहिये क्या था ? अरे मैं ही न आकर यह बात तुम से कहता ?"

"लोग कह रहे हैं कि सहयोग सभाओं के दफ़्तरों से सामान बंट रहा है।"

"उह, वह तो शहरों के लिये है भाई, देहात के लिये कहां ?"

"सुना है, सब सरकारी अफ़सर और मुहर्रिर हज़ारों राशन कार्ड दबाये बैठे हैं।"

"यह झूठी अफवाहें हैं। कह दें रात खेतों में खूब बारिश हुई तो क्या ज़बान थोड़े ही पकड़ सकते हैं।"

"सुना है अफसर लोग फर्ज़ी नामों से कार्ड बना रहे हैं। सुना है बाबाखां ऊंटों के बोझ भर राशन कार्ड बनवा रहे हैं।"

बाबाखां का चेहरा सुर्ख होगया और गर्दन पर नीली नसें उभर आईं, माथे पर त्योरियां गहरी होकर आंखों में लाली आगई। अंगीठी की ओर थूक कर आंखें झुकाये ही बाबाखां बोला—"अरतैफ यह क्या दिल्लगी कर रहे हो तुम ?"

"बाबखां, लोगों का पेट काटना दिल्लगी है ?"

"लोगों का पेट कौन काट रहा है ?"

"जब कुलीखां और ताशोखा में राशन कार्डों के लिए झगड़ा चल रहा था, किसने कहा था—कलम सम्भालो, जितने नाम चाहते हो, मैं लिखाता हू ?'

"देखो अरतैक !"—बाबाखां अरतैक की आंखों में घूर कर बोला—"झगड़े के लिए बहाने क्यों ढूंढते हो ? जो कहना है साफ़ साफ़ कहो ! अगर तुम्हारा ख्याल है कि मैंने तुम्हें जेल भिजवाया था, तो साफ कहो ! दिल्लगी मैं पसन्द नहीं करता। तुम जानते हो, मेरा नाम बाबाखां है, मैं दारोगा हू।"

अरतैक के माथे पर भी बल पड़ गये परन्तु अपने को बस कर बोला—"दारोगा साहब, तुम्ही क्यों नहीं सीधी साफ़ बात कहते ? तुम्हीं बताओ, फर्ज़ी राशन कार्ड बनवाये हैं या नहीं ? मैं सवाल कर रहा हूँ, तुम गुस्सा दिखा रहे हो।"

"मैं तुम से बात नहीं करना चाहता।"

"तुम बात नहीं करना चाहते ? लेकिन मैं राशन कार्डों का और सरकार के यहां से आए माल का हिसाब चाहता हूँ।"

"तुम क्या मेरे इन्सपेक्टर हो ?"

"उस बात की तुम परवाह मत करो !"

"अरतैक, मजबूर हूँ कि तुम इस समय मेरे तम्बू में मेहमान हो, नहीं तो तुम्हें जवाब देता ...."

"तो बाहर आ जाओ, दे लो जवाब !"

बाबाखां गुस्से में कांपता हुआ उठ खड़ा हुआ। उसी समय बाबाखा की बीबी नादाब पर्दे के पीछे से सामने आगई और पति का हाथ थाम चिल्ला उठी—"हाय मैं मर गई ! अरे अरतैक भैया, क्या कर रहे हो तुम ? .. होश करो ! अरे भागो लोगो ! खून ! खून !"

नादाब की पुकार सुन शूरे तम्बू में आ गया। देहात और शहर दोनों ही जगह शूरे की बात की इज्जत थी। दोनो आदमियों की आखों में सुर्खी और उनके लम्बे लम्बे सांस सुन शूरे समझ गया कि वे एक दूसरे पर टूट पड़ने के लिए तैयार हैं। "अरे भाई बैठो बैठो"—दोनों को अपनी अपनी जगह बैठाने के लिए कधों से दबाते हुए शूरे ने हसते हुए ऐसे बात कही कि झगड़े की बात वह जान नहीं पाया।

अरतैक क्रोध से कांप रहा था, कुछ उत्तर न दे सका ।

"क्यों, बात क्या है ?"—शूरे ने कहा—"कांप क्यों रहे हो ऐसा जाड़ा तो नहीं है ?"

"शूरे आगा, आप को जाड़ा क्यों लगने लगा ?" अरतैक बोला ।

"बाबाखां, तुम्हें ख्याल करना चाहिए था । मेहमान के लिये जाड़े का भी इन्तज़ाम नहीं कर सकते थे ?"

"जाड़ा नहीं"— बाबाखां बोला "उसके सिर में दरद है ।"

"मेरे सिर दरद का इलाज तुम्हारा सिर तोड़ कर होगा"—अरतैक ने उत्तर दिया और बाबाखां की तरफ दो कदम बढ़ गया ।

यह देख नादाव दोनों हाथ उठा फिर चिल्ला उठी—"शूरे आग ! मेरे बच्चों के बाप के दिमाग़ को जाने आज क्या हो गया है । तुम अरतैक को समझाओ, क्या कर रहा है ?"

शूरे ने झगड़े का कारण पूछा और बोला—"भैया, मैं भी राशन कार्डों के ही बारे में पता लेने आया था ।" बाबाखां ने फिर बात टालना चाही तो शूरे भी बिगड़ उठा:—"बाबाखां, सभी बातों की हद होती है । तुम हद का खयाल ही न करो तो दूसरे कहां तक गूंगे-बहरे बने रहें ? पेट तो सभी के हैं । सिर्फ अरतैक और मेरी ही बात नहीं, सभी लोग तुम से हिसाब लेंगे ।"

बाबाखां कुछ उत्तर न दे ठोड़ी हाथ में थामे बैठा रहा । वहां और प्रतीक्षा करने से कुछ फायदा न देख अरतैक तम्बू से निकल आया और शहर की ओर चल दिया । वह सोचता जा रहा था । तेजेन जाकर चर्नीशोव के सामने सब बात रखे और फिर उसकी राय से चले" " ।

८

उन दिनों चर्नीशोव को सैकड़ों ही उलझनें थीं। मिलने जाने वालों को कभी ही वह घर पर मिलता। अरतैक को भाग्य से वह घर पर ही मिल गया। सलाम दुआ होने पर पहले चर्नीशोव ने ही शिकायत की-"अश्काबाद से लौट कर तुम यहाँ आए और मिले बिना ही चले गए। इन्तज़ार भी की। बड़े वैसे आदमी हो।"

अरतैक ने मुस्करा कर उत्तर दिया—"खूब, उल्टा चोर कोतवाल को डांटे! मैं तुम्हारे यहाँ कितने चक्कर काट गया। तुम एक बार भी मेरे यहा न आए, अच्छे मित्र हो! मेरा ब्याह हुआ, तुमने उसकी भी कोई परवाह न की। अच्छा, अगर तुम हमारे यहां आकर दस दिन के लिए न रहो तो फिर मैं भी कभी तुम्हारे यहां नहीं आने का।"

चर्नीशोव ने हस कर अरतैक के गले में बाँह डाल दी और बोला—"अरे आयेंगे क्यों नहीं तुम्हारे यहां, अपना ही घर है। ज़रा वक्त ठीक हो लेने दो। आज कल तो देहात में तुम्हें अनाज-दाने की भी तकलीफ होगी?"

"नहीं मित्र, ऐसी बात तो नहीं है। कम से कम मैं खुशकिस्मत हूं। मेरा चाचा और ससुर दोनों मदद कर रहे हैं। तुम आओ, तुम्हारे लिये दूध, मक्खन, मांस सब हो जायगा।

"चलता तो तुम्हारे साथ ही लेकिन क्या कहू, फसा हुआ हूँ बुरी तरह। लोग छुट्टी नहीं देंगे।"

"हफ्ते दो हफ्ते के लिये भी छुट्टी नही मिलेगी?"

"हफ्ते दो हफ्ते? यहां घण्टे भर की भी छुट्टी नहीं है। आज कल तो रात में सोने के लिये भी समय नहीं।"

"ठीक कहते हो भैया"—अरतैक गम्भीर स्वर में बोला—"मैं भी सोच

रहा हूँ कुछ करना होगा, जार तो मरा परन्तु उसके बेईमान अफसरों के पंजे अभी तक जमे हुए हैं। इन लोगों से अपनी गर्दन छुड़ाने के लिए जनता को एक बार फिर उठना होगा।"

चर्नीशोव ने चेतावनी से उसकी ओर देख कर उत्तर दिया—"पिछले वर्ष अज़ीज़ के साथ बग़ावत में शामिल होते समय तुमने हमसे राय भी नहीं ली। मैंने तुम्हें तब भी कहा था कि ज़रा सोच विचार कर चलो परन्तु तुमने कुछ परवाह नहीं की। तुम्हें अज़ीज़ पर बहुत भरोसा था, अब कहाँ है अज़ीज़! तुम लोगों ने शहर पर हमला बोल दिया, हुआ क्या? हम लोग जानते थे तुम्हारी बग़ावत का कुछ नहीं बनेगा। हम लोग तुम्हारी सहायता भी नहीं कर सके! अलबत्ता, तुम लोगों पर हमला करने के लिए जो फौजी मोटरें आई थी उन्हें हम लोगों ने तोड़ गिराया। तुम्हें शायद यह पता भी नहीं लगा और न इससे तुम लोगों को कुछ फायदा ही हुआ। हम लोगों के कई काम के साथी उस समय मारे गए। यदि वे लोग रहते तो इस क्रान्ति के समय बहुत सहायक होते।" चर्नीशोव चुप होगया और कुछ सोचने लगा। अरतैक भी कुछ देर चुपचाप सोच कर सहसा बोला—"चर्नीशोव तुम्हारा खयाल है मैंने गलती की · ···"

अरतैक को चुप रहने का संकेत कर चर्नीशोव बोला—"जो हुआ सो हुआ। तुम्हारी बग़ावत में एक तो कोई राजनीति समझने वाला नेता नहीं था और न तुम्हारी तैयारी ही ठीक ढंग से हुई थी लेकिन फिर भी उस बग़ावत का भी अपनी जगह लाभ हुआ ही। यह अच्छा हुआ कि अब की तुमने मुझसे बात करली। दो महीने पहले तुम मुझे बग़ावत के लिये कहते तो मैं भी तैयार हो जाता परन्तु इधर रूस से आये कुछ पर्चे और किताबें मैंने पढी हैं और बात मेरी समझ में आई है। रूस से पार्टी के साथियों और लीडरों ने जो तरीका बताया है वह मुझे समझ आता है। रूस में दूसरी क्रान्ति की तैयारी हो रही है। किसी भी समय यह क्रान्ति हो सकती है। परन्तु यह क्रान्ति केवल सरकार का काम हाथ में ले लेने के लिये ही नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिये, सामाजिक क्रान्ति करनी होगी।"

अरतैक चर्नीशोव की बात के अन्तिम शब्दों का कुछ अर्थ न समझ पाया परन्तु इतना ज़रूर समझा कि कोई बड़ा परिवर्तन होने वाला है।

चर्नीशोव बोला—"केरेंस्की की सरकार पूरी ज़मीन किसानों को बाँटने

के लिये तैयार नहीं। यह सरकार मिलें मज़दूरों के हाथ में देने के लिये तैयार नहीं। इस सरकार के अमल और ज़ार के अमल में भेद ही क्या है? यह सरकार जग खत्म करने के लिये भी तैयार नहीं। बड़े व्योपारियों और पूंजीवालों के फ़ायदे के लिये यह सरकार लड़ाई चला रही है और ग़रीब जनता लड़ाई में गाजर मूली की तरह कट रही है। लोगों को मिला क्या? आज़ादी क्या हुई?—" इसके बाद चर्नीशोव अरतैक को ताशकन्द, बाकू और पेट्रोग्राड में मज़दूरों की हालत के बारे में और मज़दूरों पर नयी सरकार के दमन की बातें सुनाता रहा। और फिर बोला—"अरतैक, तुम ईमानदार आदमी हो। तुम इस सरकार के तरीके और चालों को समझो और देहात के किसानों के सामने यह सब बात रखो। एक बात मत भूलना, किसानों को जो कुछ करना हो, मज़दूरों को साथ ले कर हो कर सकेंगे। यदि किसान अकेले बग़ावत कर बैठेंगे तो मिट कर रह जायगे। किसानों की बग़ावत में जो लोग नेता बनेंगे, वे खुद जागीरदार बन कर किसानों के सिर पर बैठ जायगे। किसानों को आज़ादी केवल मज़दूरों की नेता बोलशेविक पार्टी ही दिला सकती है। इस पार्टी के बताये रास्ते पर चलने से ही सवाल हल होगा। वक्त से पहले कुछ कर बैठोगे तो अपने पांव कुल्हाड़ी मारोगे। अभी तुम किसानों को समझा कर अवसर के लिये तैयार करो" · · "

अरतैक ने दारोगा बाबा खाँ की राशन कार्डों की चोरी की बात चर्नीशोव को सुनाई और ऐसे बदमाशों को ओहदों से हटाने का अनुरोध किया।

चर्नीशोव ने उत्तर दिया—"मैं जानता हूँ खूब अंधेर गर्दी हो रही है। परन्तु अंधेर गर्दी करने वाले दो चार आदमियों को ठोक पीट कर निकाल देने से कुछ नहीं बनेगा। इससे किसानों की भूख नहीं मिट सकेगी। पहले ज़रूरी है कि किसान जनता को इन बातों का पता लगे और किसानों की ओट में इस इतजाम के खिलाफ़ पचायत में आवाज़ उठे। तुम्हें इस काम में मैं पूरा सहायता देने के लिये तैयार हू।"

चर्नीशोव अरतैक को किसानों में आन्दोलन चलाने का ढग बता रहा था कि इतने में चरखेज़ तेज़ कदमों से भीतर आया। चर्नीशोव की बात काट कर गुस्से भरे स्वर में उसने बताया कि बाबाखां आज शहर में आया है और अपने मालिकों—खोजा मुराद खां और कुलीखां से अरतैक

की शिकायत उसने की है। उन लोगों ने अरतैक का इंतज़ाम करने का फैसला किया है। जान पड़ता है अरतैक पर फिर कोई मुसीबत आने वाली है। उसने अरतैक को इसके लिये सावधान रहने के लिये कहा।

अरतैक पहले ही भरा बैठा था। चरखेज़ की बात सुन वह उफ़न उठा—"यह लोग मेरा इंतज़ाम करेंगे ? मैं । पहले इन लोगों का इंतज़ाम किये देता हूं। एक दफ़ा मैं इन लोगों के हाथ पड़ गया यही क्या कम है। देखूंगा मुझे कौन हाथ लगाता है ? जो पहल करे सो जीते—मैं ही क्यों न उनके यहाँ चलूं ?"—उसने चरखेज़ से पूछा—"सहयोग सभा का दफ्तर है कहां ?"

पलभर के लिये चरखेज ठिठका—अरतैक कोई जल्दबाज़ी न कर जाय ? और फिर सोचा—पहल करना ही ठीक है और बोला—"दफ्तर दूर नहीं है। चलो मैं तुम्हारे साथ चलूं ।· लेकिन वहां क्या होगा ?"

"यह वहीं जा कर देखेंगे कि क्या होगा । यहाँ बैठे बात बनाने से क्या लाभ !"

चर्नीशोव ने अरतैक का चेहरा देख कर भांप लिया कि इस समय यह मानेगा नहीं परन्तु फिर भी समझाया—"अरतैक, सुनो, इस तरह जल्दबाज़ी मत करो। मैं यह नहीं कहता कि तुम इन लोगों से मार खा जाओ परन्तु यह भी सोचो कि हम लोग अभी जिस तरीके से काम करने की बात कर रहे थे · 'ज़रा सम्भल कर चलो !"

"मैं तुम्हें बड़े भाई की जगह मानता हूं" अरतैक ने चर्नीशोव को उत्तर दिया—"परन्तु यह बात दूसरी है। मैं एक बार मार खा चुका हूं ··· अब की नहीं खाना चाहता !"वह चरखेज़ को साथ ले चल दिया।

इन दोनों के चले जाने के बाद चर्नीशोव इन लोगों के बारे में ही सोचता रहा और अपनी पत्नी 'अन्ना' से बोला—"तुम इस लड़के को पहचानती हो ?—इन लोगों ने समझा होगा कि छः महीने जेल में सड़ा कर इसे दबा लिया। वो और भी आग बगोला बन कर निकला है। उसे धुन सवार हुई है तो उसे कोई रोक नहीं सकता। आदमी को होना भी ऐसा ही चाहिए; बस यह है कि राह से फिसल न जाय। पर अकेला है। अकेले आदमी को राह भटकते देर नहीं लगती। · मुझे डर है वह मुसीबत में न फंस जाय। मैं जाकर देखता हूं··· ··" चर्नीशोव ने टोपी सिर पर रखी।

और चल दिया।

अरतैक और चरखेज़ सहयोग सभा के दफ़्तर में पहुंचे और सभा के प्रधान से मिले। प्रधान साहब ने उनकी ओर देखा और बेपरवाही से आंखें फेर लीं।

चरखेज़ बोला—"हम लोग 'कोश' के किसानों की ओर से आये हैं। हमारे यहां किसानों को खबर मिली है कि हम लोगों के नाम से राशनकार्ड बना बना कर आप के दफ़्तर के मुशी और हाकिम सभा का राशन खा रहे हैं। यही बात हम जांचने आए हैं। हम नामों की फहरिस्तें देखना चाहते हैं।"

प्रधान के माथे पर त्योरियां गहरी हो गईं। वे गुस्से में बोले—"हम तुम्हारे किसानों और मुशियों को नहीं जानते। जिन लोगों के पास कार्ड हैं, उन्हें राशन दिया जाता है। हमारे यहां कोई फहरिस्तें नहीं हैं।"

अरतैक समझ गया कि यह साहब भी खाऊ है, लूट मे अपना हिस्सा पाते हैं। सीधे सीधे बात नहीं सुनेंगे। परन्तु चर्नीशोव की बात याद कर वह नम्रता से बोला—"जनाब, हम लोग काग़जात उठा कर ले नहीं जायगे। देख भर लेना चाहते हैं। हो सकता है, हमारा भी नाम आपके यहां हो।"

"मै और कुछ नहीं सुनना चाहता।"

"यह तो न्याय नहीं है!"

"मैंने कह दिया कि कोई काग़ज नहीं दिखाया जायेगा!"

"हम देख कर जायगे!"—अरतैक मेज़ पर हाथ पटक ऊंचे स्वर में बोला।

प्रधान साहब सहम गये। मेज पर हुए धमाके से उनकी मोटी नाक पर टिका चश्मा फिसल गया। संभल कर वे बोले—"आप लोग चिल्लाते क्यों हैं? यह हाट बाजार की जगह नहीं, दफ्तर है।" वे फिर तेज़ हो उठे—"आप लोग बाहर जाइये।"

अरतैक ने हाथ बढ़ा उनकी ठोडी पकड़ ली, और बोला—"आँखे मत दिखाओ! अभी उठा कर नीचे पटक दूंगा। दफ़्तर का सब रोब धरा रह जायगा। काग़ज़ निकालो!"—अरतैक ने दूसरे हाथ का घूसा उनके सिर पर उठा कर दिया।

प्रधान साहब के कंधे सिकुड़ गये और एक लम्बा सांस ले उन्होंने

कुर्सी की पीठ का सहारा ले लिया और फिर मुस्करा कर बोले—"अरे भाई, बिगड़ते क्यों हो ? नाराज़ होने की बात क्या है ? बैठिये तो ! मैं तो यह पूछ रहा था कि आप लोग कौन हैं ? आप गांव वालों की ओर से आये हैं, गांव के प्रतिनिधि हैं ? सो दफ़े देखिये काग़ज़ात ! जो समझ न आये, मुझ से पूछ लीजिये ! और वैसे आप को जो कुछ चाहिये, कहिये ! इस समय तो चाय भी नयी आ गई है !"

अरतैक और चरखेज़ काग़ज़ों में नाम देखने लगे। कोश के आस पास के सैकड़ों किसानों के नाम चढ़े हुये थे। अरतैक का भी नाम मौजूद था।

अरतैक ने पूछा—"इन लोगों के कार्ड कहां है ?" "मेरा खयाल है"—प्रधान ने उत्तर दिया—"कुली खां के यहां होंगे या खोजा मुराद के पास !"

"यह हमारे कार्ड हमें मिलने चाहिये !"

"मेरे हाथ में तो हैं नहीं। यह कार्ड जांच कमेटी से मिल सकेंगे। हाँ इनकी लिस्ट चाहिये तो तुम मुझसे ले सकते हो।"

अरतैक ने उठ कर कहा—"चरखेज, जांच कमेटी को कहां खोजते फिरेंगे; आओ कुली खां के यहां चलो !"

चरखेज़ को दूसरी जगह जरूरी काम था परन्तु अरतैक इंतज़ार के लिये तैयार नहीं था। वह अकेला ही कुली खां के दफ्तर में पहुँचा।

कुली खां और बाबा खां एक साथ बैठे अरतैक की शिकायत में दरखास्त लिख रहे थे। अरतैक को देख बाबा खां विस्मय से घबरा गया। कुली खा भी घबराया परन्तु अपने को सम्भाले रह और अरतैक को सम्बोधन कर बोला—"आओ, आओ, बैठो, क्या खबर है ?"

अरतैक ने बिना लाग लपेट के सीधे ही उत्तर दिया—"खबर यह है कि सहयोग सभा के दफ़्तर से मालूम हुआ है कि हमारे गांव के किसानों के सब राशन कार्ड तुम लोगों ने हथिया लिये हैं। अब अगर पेट भर गया हो तो हमारे कार्ड लौटादो !" "कैसे कार्ड ?"

"बनो मत कुली खां। भोले मत बनो ?"

कुली खां ने क्रोध में होंठ काट कर बाबा खां की ओर देख कर पूछा—"यह कौन आदमी है ?" "बड़ा बदतमीज़ है !"

बाबा खां ने धीमे भारी स्वर में उत्तर दिया—"इसे जानते होगे, यह

हमारी बस्ती का आदमी है—अरतैक व वाली !"

"ओ हो, अरतैक ? अश्काबाद की जेल में रह कर इसका मिजाज़ ठीक नहीं हुआ । फिर लोगों को भड़का रहा है !"—कुली खां ने अरतैक की ओर देखा—"अच्छा मियां तुम खुद आ गये, नहीं तो बुलाना पड़ता।"

"जब कहो मैं हाज़िर हो सकता हू !"

"अच्छा, इस बात को रहने दो, तुम्हें और क्या काम है ?"

अरतैक ने एक कुर्सी खींचली और कुली खां के साथ बैठ गया और मुस्करा कर बोला—"कुली खां, दूसरे काम बाद में होंगे पहले कार्ड निकालो !"

लंगड़े मीर मुंशी ने मूछों पर हाथ फेर क्रोध में पूछा—"हूँ, तुम मुझसे हिसाब तलब करने वाले कौन हो ?"

"मैं अपने कार्ड तलब कर रहा हू !"

"तलब कर रहा हूं ··· 'मेरे पास तुम्हारे पचानवे कार्ड हैं। लेकिन इस वक्त नहीं मिल सकते। कार्ड लेने हैं तो फरवरी की तीस तारीख को आना।"

इस मज़ाक से अरतैक के होंठ क्रोध से फड़क उठे। वह कुली खां के और नज़दीक सरक कर बोला—"कुली खां, तुम हद से बढ़ रहे हो !"

"यह तो मेरी आदत ही है।"—कुली खां मुस्करा दिया।

"कार्ड नहीं दोगे ?"

"मैं ने तुम्हें तारीख बतादी है।"

अरतैक का सिर घूम गया। उसे समझ न आया कब और कैसे उसके हाथ का मुक्का कुली खां की नाक पर जा पड़ा। कुली खां अपनी लंगड़ी टांग पर गिर पड़ा। वह उठने का यत्न कर ही रहा था कि अरतैक ने धम्म-धम्म चार लातें उसकी पीठ पर जमादी। कुली खां फिर गिर पड़ा। उठने का यत्न न कर कुली खां ने जेब से पिस्तौल निकाल कर सम्भाली। अरतैक ने तुरत एक ठुड्डा उसके हाथ पर दिया। पिस्तौल कुली खां के हाथ से छिटक कर दूर जा पड़ी। अरतैक ने पिस्तौल उठा कर अपनी जेब में रख ली। अरतैक ने कुली खां को कोट के कालर से पकड़ ऊपर उठाया और तख़्त पर पटक उसके नाक, मुंह और जबड़ों पर कई मुक्के

जमाये । कुली खां बेदम हो जाने से चिल्ला भी न सका । बाबा खाँ दफ़्तर से निकल ज़ोर से चिल्लाने लगा—"दौड़ो-दौड़ो खून हो गया— । पुलिस · ·!"

इसी समय खोजा मुराद चौखलाहट में चिल्लाता हुआ भीतर आया—"इकलाब, इकलाब, बोल्शेविक, लेनिन !" परन्तु सामने का दृश्य देख विस्मय से उसकी बोलती बन्द हो गई । बड़ी कठिनाई से उसके मुह से निकला—"ई-इकलाब !"

उसके पीछे-पीछे आया चर्नीशोव । उसने गम्भीर स्वर में खोजा की बात का समर्थन किया—"ठीक है, इकलाब की बात ठीक है । तार घर से खबर मिली है कि इकलाब हो गया है । उसने कमरे के चारों ओर आँख दौड़ाई । स्थिति समझ उसने आवेश से हांफते हुये अरतैक को बांह से थाम लिया और खींचता हुआ बाहर ले गया !"

"मैं तुम्हें जाने कहां कहां खोजता फिरा छोड़ो इस झमट को । कितने ज़रूरी काम है जल्दी आओ !"

६

पहली बार फरवरी १६१७ में क्रान्ति हुई थी। उसी वर्ष अक्टूबर में फिर क्रान्ति हो गई। रूस में केरेंस्की की सरकार टूट गई और उसके साथ ही प्रान्तों और प्रदेशों की सरकारें भी टूट गईं। गवर्नरों के अधिकार पचायतों के हाथ में चले गये। परन्तु इन पचायतों मे केवल कम्युनिस्ट और बोल्शेविक लोग ही नहीं दूसरे लोग, सोशलिस्ट, मेन्शेविक और मध्यम श्रेणी के बड़े लाग भी थे।

जल्दी में प्रायः यह भी हुआ कि महकमों—विभागों के नाम और दफ़्तरों पर लगे साइनबोर्ड तो बदल गए लेकिन काम पुराने ढर्रे पर ही चलता रहा। अश्काबाद में तुर्कमानी और अज़रबैज़ानी मध्यम श्रेणी के लोगों ने एक प्रादेशिक कमेटी बनाली और इसका प्रधान ज़ार के ज़माने के बड़े अफसर कर्नल उरेज़ सरदार को बना लिया।

तेजेन में मज़दूर और फौज़ी सिपाहियों के प्रतिनिधियों की एक नयी पचायत बन गई। इन प्रतिनिधियों में चर्नीशोव और कुलीखां चुन लिये गए। कुलीखां ने एक दम एलान कर दिया कि वह सोवियत सरकार का कट्टर पक्षपाती है।

ठीक इसी समय तेजेन में १६१६ की स्थानीय बग़ावत का नेता अज़ीज़ खां चापेक भी फिर से आ पहुँचा। तुर्कमानिया के बहुत से लोगों का अब भी अज़ीज़ खां पर बहुत विश्वास था और वे उसे अपना नेता समझते थे।

अज़ीज़खां १६१६ की बग़ावत में हार कर अफ़गानिस्तान भाग गया था और अब तक वहीं छिपा था। तेजेन में आते ही अज़ीज़ ने अपना सगठन शुरू कर दिया। अपना कार्यक्रम उसने किसी को न बताया परन्तु फिर भी भूख से तड़पते और सरकार के प्रबन्ध से असन्तुष्ट लोग उसके सगठन में आने लगे। जागीरदार बे और अमीर लोग भी समाजवादी

क्रान्ति में अपनी जागीरें और खजाने छिन जाने की आशंका से उसका साथ देने के लिये तैयार हो गए और तेजेन के बड़े-बड़े व्यापारी भी सब ओर संकट और भय देख उसकी रक्षा में जुटने लगे। अज़ीज़ के पास जो भी आता वह सभी को आश्वासन और रक्षा का भरोसा दे देता। अज़ीज़ ने तुरन्त अपनी इन्तजामी कमेटी भी बना ली। इस कमेटी में वेमील नहर के इलाके से करीमयुल्ला को, वेक नहर के प्रदेश से अल्ली टोपी को, ओतमेश नहर के इलाके से यारमुश काज़ी को और कयाल के इलाके से अलनज़र बे को ले लिया। तेजेन और आस पास के देहात में दो सरकारें, दो फौजें बन गईं:—एक अज़ीज़खां की और दूसरी पचायत के प्रतिनिधियों की।

अरतैक दुविधा में था कि वह किस सरकार का साथ दे? उसकी इच्छा अपने मित्र चर्नीशोव के साथ पचायती सरकार की ओर रहने की थी। परन्तु इस पचायत में चर्नीशोव के साथ जार के जमाने के दूसरे अफसर खास कर कुलीखां भी था। कुलीखां का जोर इस पचायत में उसकी ज़ार के जमाने की शक्ति से भी अधिक था। अरतैक को यह सहन न हो सका। अरतैक ने अपने मन को बहुत समझाया परन्तु वह कुलीखां का साथ देने के लिये तैयार न हो सका। वह किसी तरह भी कुलीखां का भरोसा न कर सकता था। उसने कुलीखां की नाक तोड़ी थी और वह जानता था कि कुलीखां बदला लिये बिना न मानेगा।

चर्नीशोव से मिलने पर अरतैक को उसने समझाया—"तुम किस दुविधा में फसे हो? इतना सह कर भी क्या तुम्हारी आंखें नहीं खुली? मैंने हमेशा तुम्हारा साथ दिया है। अब हम लोगों का समय आया है और अब चूकना नहीं चाहिए। मैं मजदूर हूं और तुम ग़रीब किसान हो। हम गरीब लोगों के लिये पचायत छोड़ और ठौर कहां?"

"कुलीखां जैसे ग़रीबों के साथ?"

"बेवकूफी मत करो अरतैक! तुम जानते हो हम लोगों का उद्देश्य सोवियत से ही पूरा हो सकता है!"

"भैया, ऐसे सांपों के साथ बसने से तो बेवकूफ़ बनना भला।"

"इसका मतलब है ·· ·?"

"नहीं हमारी मित्रता बनी रहेगी। हो सकता है फिर कभी हम लोगों का साथ हो जाय।"

चर्नीशोव अरतैक की इस जिद् से खिसिया गया। उसे अरतैक पर बहुत विश्वास था और उसकी ईमानदारी और बहादुरी पर भरोसा था। परन्तु जाने क्यों उसका दिमाग़ फिर गया था। चर्नीशोव को अपने प्रति भी असन्तोष था कि वह अपने उद्देश्य के प्रति एक मित्र की सहानुभूति क्यों न ला सका। यदि अरतैक जैसे मित्र और किसान उसका साथ न देंगे तो वह क्या कर सकेगा ?

"तुम्हें अपना विरोधी बन जाने देने से तो अच्छा है तुम्हें गिरफ्तार करा दूं"—चर्नीशोव ने मुस्करा कर कहा—"अरतैक हो सकता है कुछ समय बाद तुम्हें होश आ जाय !"

अरतैक भी हंस दिया—"देख लो चर्नीशोव, यह है तुम पर कुलीखां की सगती का असर। तुम अपने मित्रों पर वार करने का बात सोचने लगे हो। अच्छा है भाई चल दूं। न जाने तुम कब सचमुच ही हमला कर बैठो।"

"चुप रहो अरतैक, क्या बकते हो।"

"अच्छा तुम जैसे कहो। नहीं बोलूंगा भाई।"

"तुम हमारी सेना में पल्टन कमाण्डर क्यों नहीं बन जाते ?"

"तुम्हारे साथ में मामूली सिपाही बन कर भी रहने को तैयार हूं। परन्तु उस लंगड़े बदमाश के साथ मुझे जनरल बन कर रहना भी मंजूर नहीं।"

"जिद् मत करो।"

"यह मुझ से न हो सकेगा।"

चर्नीशोव आह भर धीमे धीमे समझाने लगा—"अरतैक तुम समझदार आदमी हो। जानते हो मैं तुम्हारा बुरा नहीं चेतूँगा। मेरी बात मानो। पचायतें तुम्हारी अपनी—किसानों और मज़दूरों की है। किसान लोग इन पचायतों से ही ज़मीन और पानी पर अपना कब्ज़ा कर सकते हैं। तुम छोटी छोटी बातों में उलझ रहे हो। कुलीखां आदमी बुरा है सही ? वैसे वह काम का आदमी है। इतनी सी बात के लिए तुम अगर पचायती सरकार के विरुद्ध हो जाओ तो यह तुम्हारी अपनी सरकार और किसानों के साथ धोखा नहीं होगा ? तुम पंचायत की तरफ़ नहीं होगे तो जाकर घर में बैठ नहीं रहोगे ! चुप बैठे रहना तुम्हारे बस का नहीं। तुम पचायत का साथ नहीं दोगे तो अज़ीज़ का साथ दोगे ! तुम जानते हो, अज़ीज़ तो डाकू है। वह

जागीरदारों, मुखियों, अमीर किसानों और मौलवियों का गिरोह बना कर खुद सुल्तान बन जाना चाहता है।"

"चर्नीशोव तुम अज़ीज़ की बात रहने दो।"

"ठीक है, तुम उसकी निन्दा नहीं सुनना चाहते परन्तु मुझे सच्ची बात कहनी चाहिए। हो सकता है. कुछ दिन तक अज़ीज़ तुम्हारे जैसे आदमियों को बहका ले और उसे कुछ सफलता मिल जाय। परन्तु उसकी चाल बहुत दिन तक नहीं चलेगी। आखिर तो जनता उसका भेद जानेगी ही। समझेगी कि वह जनता का शत्रु है या मित्र! एक हल्ले में चाहे वह कामयाब हो जाय परन्तु उसके कदम टिक नहीं सकेंगे।"

चर्नीशोव की बात सुन अरतैक सिर झुकाए सोचता रह गया। चर्नीशोव को आशा हुई कि वह मान गया है। परन्तु अरतैक सहसा उठ खड़ा हुआ और अपना गुस्सा दबा कर बोला—"मैं पचायत सरकार का शत्रु नहीं हूँ। सोवियत सरकार के विरुद्ध मैं हाथ नहीं उठाऊंगा परन्तु कुलीखां और उसके मित्रों का मैं कट्टर शत्रु हू। जब तुम ऐसे लोगों को निकाल दोगे, तब तक मैं ज़िन्दा रहा तो स्वय ही तुम्हारे पास आजाऊंगा।" अपनी बात समाप्त कर अरतैक बाहर जाने के लिये दरवाज़े की ओर चला—

"ज़रा ठहरो"—चर्नीशोव उसे अधिकार से पुकार बोला—"मेरी बात पूरी सुन लो। मैंने केवल अनुभव से कहा था कि यदि तुम हमारा साथ नहीं दोगे तो अज़ीज़ से जा मिलोगे। लेकिन तुम्हारी बात से साफ है कि तुमने अज़ीज़ का साथ देने की बात पक्की करली है। तुम एक बार अच्छी तरह सोचलो! तुम कहते हो तुम सोवियत सरकार के खिलाफ हाथ नहीं उठाओगे। अगर तुम अज़ीज़ के साथ मिलते हो तो यह कैसे सम्भव होगा? यह कैसे हो सकता है तुम पूरब भी चलो और पश्चिम भी चलो! जब तुम सोवियत के शत्रुओं का साथ दोगे, उनकी सहायता करोगे तो यह सोवियत पर चोट करना नहीं तो क्या होगा? उस समय पछताने से भी क्या लाभ होगा? हमें कौन झगड़ा लेकर चलना है, यह मामूली सवाल नहीं है। अपने झगड़े के लिये सिपाही को जान देनी पड़ती है। तुम झगड़े की बात नहीं सोचते, सोचते हो कि फलां आदमी तुम्हें पसन्द नहीं। आदमी बड़ा है या झगड़ा? और अगर कुलीखां जैसे आदमी से भी जनता का कुछ काम बन सकता है तो उससे काम क्यों न लिया जाय?"

अरतैक सिर झुकाये दरवाज़े में खड़ा रह गया। उसके चेहरे पर परे

शानी और जिद् अब भी मौजूद थी। चर्नीशोव की ओर देख बिना ह वह बोला—"यदि कुलीखां जनता के काम आ सकता है तो अज़ीज़ ने भी जनता की बगावत का झण्डा ऊंचा किया। जिस समय कुलीखां ज़ार के जनरलों की जूतियां चाट रहा था, अज़ीज़ तलवार सूत कर इन जनरलों के सिर तराश रहा था। यह तो तुम्हें भी याद होगा!"

"यही तुम्हारी भूल है!"—चर्नीशोव ने कड़े स्वर में चेतावनी दी—"अरतैक, याद रखो जनता भूल चूक तो माफ़ कर देती है परन्तु गद्दारी माफ नहीं करती।"

अपनी बात कह चर्नीशोव खिड़की से बाहर देखने लगा और अपना क्रोध रोके रखने के लिए अरतैक की ओर देखे बिना वह मेज़ पर ऊँगलियों से तबला सा बजाने लगा।

अरतैक उत्तर देने को हुआ परन्तु फिर कुछ भी न कह सिर लटकाए चुपचाप दरवाज़े से निकल चला गया। वह सिर लटकाए ही गली से बाज़ार में पहुच गया। आस पास से आने जाने वाले लोगों की ओर उसका ध्यान नहीं गया। बिना सोचे समझे वह चलता जा रहा था बिना किसी ख्याल के। बाजार में खूब ज़ोर से खड़खड़ाहट कर चलती हुई एक बैलगाड़ी की लपेट में आते आते बचा। पुल परसे पार होते समय वह पुल के खम्बे से ही टकरा गया। वह अचेत सी अवस्था में चल रहा था। जान पड़ता था वह अपना हृदय और सोचने, समझने की सब शक्ति अपने मित्र के यहां ही छोड़ आया है। उदासी से वह निर्जीव सा हो रहा था।

अरतैक पुल की दीवार पर झुक कर पानी की ओर देखता हुआ सोचने लगा—"दुख सुख के साथी चर्नीशोव से आज मेरा बिछोह हो गया। उस दिन जब मैं अश्काबाद जा रहा था, जब उम्मीद थी कि शायद मौत के घाट उतर रहा हू तब केवल चर्नीशोव ही ढाढ़स बन्धाने स्टेशन पर आया था। चर्नीशोव ने सदा मेरे दुख में साथ दिया। जब मैं कुछ सोच भी न सकता था, तब भी चर्नीशोव ने ही मेरी आंखें खोली थीं। आज भी वह सगे भाई की तरह मुझे साथ न छोड़ने के लिये बार बार समझा रहा है · ···" अरतैक के मन में उबाल सा उठा कि चर्नीशोव के पास लौट जाय और अपने हाथों में उसका हाथ थाम कहदे—मैं तुम्हारे साथ हूं। परन्तु उसी समय कुलीखां का चेहरा उसकी आंखों के सामने आ खड़ा हुआ।

चर्नीशोव के घर की ओर मुड़ते मुड़ते उसके पांव ठिठक गए और एक

गहरी आह भर उसने कहा—"चर्नाशोव से मेरा कोई झगड़ा नहीं लेकिन मैं कुलीखां के साथ कभी नहीं चल सकता। या तो मैं ही रहूँगा या वह। कुलीखां का साथ करने से तो मैं अज़ीज़ का ही साथ करूंगा।"

अरतैक दृढ़ निश्चय से बाज़ार की ओर चल पड़ा। वह अज़ीज़ के मकान की ओर बढ़ा चला जा रहा था। "चर्नाशोव ठीक ही कहता है"—उसने सोचा—"इस ज़माने में किसी भी आदमी के लिए चुप और अलग बैठना सम्भव नहीं। आदमी को इधर या उधर, किसी न किसी का साथ करना ही पड़ेगा। अज़ीज़ से एक बार बात करके देखना चाहिए। यदि उससे बात न बनेगी तो गांव लौट जाऊंगा।"

अज़ीज़ का खेमा, या दरबार अलाकोचक सराय में था। जिस समय अरतैक अज़ीज़खां के यहां पहुंचा, वह एक गद्दे पर करवट से लेटा हुआ कुछ सोच रहा था। अरतैक का उदास चेहरा देख कर ही अज़ीज़ उसकी मानसिक अवस्था भांप गया। अज़ीज़ उठ कर पाल्थी मार कर बैठ गया और अरतैक को सम्बोधन किया—"कहो भाई अरतैक, क्या हो रहा है ?"

"आज कल जैसे दिन बीत रहे हैं, कोई क्या कह सकता है"—अरतैक ने उदास स्वर में उत्तर दिया।

पिछले वर्ष की बगावत में अज़ीज़ को अरतैक पर बहुत भरोसा था। वह उसे भूला न था, दूर अफ़ग़ानिस्तान में भी उसे अरतैक की याद आती रहती थी। अरतैक की उदासी का कारण पूछ कर उसने कहा—"मेरा जो कुछ बल है, वह तुम्हारे जैसे साथियों के भरोसे ही है। अरतैक, तुम मेरे दाहिने हाथ हो। किसने परेशान किया है, बताओ मुझे उस कमबख्त का नाम! मैं अभी उसका घर फूंक कर, उसे नेस्तनाबूद कर दूंगा। मेरे ज़िंदा रहते तुम्हें परेशान होने की ज़रूरत नहीं है।"

"अज़ीज़खां, मेरी अपनी परेशानी की मुझे कोई चिन्ता नहीं है। तुम हमारे ग़रीब किसानों की हालत देखो"—अरतैक ने उत्तर दिया।

"ओह, तुम तो दूर की बातें कर रहे हो।"

लेकिन मेरा ख़याल था कि तुम भी इन बातों का ख्याल करते हो। पिछले बरस तो तुम्हें ऐसा ख़याल था।

"ख़याल मुझे अब भी है। तुम यह मत समझो कि मेरा दिल बदल गया है। यह भी न सोचना कि तुम्हारी आओ भगत नहीं की ? मेरा

दिमाग़ इस समय फ़िक्र में चकरा रहा है। सैकड़ों ही सवाल सामने हैं।"

"अजीजखाँ मैं अपना सवाल लेकर नहीं आया हूँ।"

"जो भी सवाल हो, कहो।"

"सवाल किसानों का ही है। मैं तुम्हें किसानों का रक्षक समझता रहा हू। पिछले बरस तुमने किसानों में एलान किया था, अगर बे लोग और जागीरदार तुम्हें दबाना चाहते हैं तो उन्हें उखाड़ फेंको। लेकिन आज कैसे लोग तुम्हें घेर बैठे हैं, मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हू।

"तुम किन लोगों की बात कह रहे हो?"

" मैं तुम्हारे सब साथियों को तो जानता नहीं। हां अलनज़ार बे को ज़रूर जानता हूँ। वह सदा ज़ार के पक्ष में रहा है, जनता के पक्ष में कभी न था। इस एक आदमी को देखकर मुझे दूसरे लोगों के बारे में भी सन्देह होता है। अलनज़ार बे वह आदमी है जो मेरे जैसे गरीबों का खून पीकर फूल रहा है। अगर तुम ऐसे आदमियों की सलाह पर चलना चाहते हो तो फिर ज़ार के कारिन्दों और तुम्हारे काम में भेद ही क्या रहेगा?"

"अरतैक ज़रा सोच समझ कर बात करो।"

"मैं खूब सोच समझ कर ही कह रहा हूँ।"

अरतैक की इस दो टूक बात से अज़ीज़ सहम गया। सीतला के दागों से भरे उसके चेहरे पर परेशानी झलक आई और उसकी बड़ी बड़ी आँखों में लाल डोरे फिर गये। अपने मन का भाव प्रकट न होने देने के लिये करवट बदल वह और आराम से बैठ, गम्भीर स्वर में बोला—" अरतैक तुम जानते हो मैंने ज़ार के खिलाफ बगावत क्यों की थी? क्यों मुझे अपना वतन छोड़ कर भागना पड़ा? सिर्फ़ इस लिये कि मैं ज़ार के बदमाश कारिन्दों को खत्म कर देना चाहता था यह जान बूझ कर तुम मुझे ज़ार के बराबर कैसे कह रहे हो?"

अरतैक पर अज़ीज़ की बात का गहरा प्रभाव पड़ा परन्तु फिर भी उसने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—"अज़ीज़ खाँ मैं अब भी तुम्हारी बात ठीक से समझ नहीं सकता। जो होगा सामने आ जायगा। दूध होगा तो दूध, और पानी होगा तो पानी। मैं तुम्हारी बराबरी किसी से नहीं कर रहा हूँ। परन्तु मैं तुम्हारा मित्र हूँ इसलिये साफ़ बात कह रहा हूँ।"

अज़ीज़ इस कड़ी बात से भी बिगड़ा नहीं। वह और भी नरमी से

बोला—"भाई, तुम मुझे जान नहीं पाये। मैं ज़ार के कारिन्दों की नस्ल में से नहीं हूँ जो अपने मालिक के बूते पर कूदते थे। मैं खुद घर बार और सगे सम्बन्धियों के सुख दुख को समझता हूं। चपैक सर्दार का खून है। कोई नहीं कह सकता कि मैंने कभी रियाया पर ज़ुल्म किया है। मैं तुम्हारे मन की बात भी समझता हूँ लेकिन अल्ती सोपी और अलनज़र बे मेरे भाई बन्द नहीं। और न उनकी बात मेरे लिये कुरान की आयत है। भाई यह तो राजनीति है। देहात में इन बड़े आदमियों की ताक़त है। लोग अब भी इनकी बात मानते हैं। अगर दुश्मन से भी अपना काम निकल सके तो हर्ज क्या है? जब तक अपने कदम नहीं जमते, इन लोगों से मदद लेनी ही होगी। मैं उनकी बात सुनता हूँ, राय भी लेता हूँ, लेकिन फैसला तो मुझे ही करना है। तुम फिजूल बातों में मत उलझो। तलवार सम्भालो।"

"नहीं भाई अज़ीज़ यह मेरे बस का नहीं। अलनज़र बे के साथ मेरा निबाह नहीं। एक सराय में तो क्या, जिस गाँव या देश में बे रहेगा मैं नहीं रह सकता। तुम नाराज भले ही हो जाओ परन्तु वे तुम्हारे साथ है तो मेरे लिये तुम्हारे यहाँ जगह नहीं।"

"क्या बचपन कर रहे हो अरतैक? मैं तुम्हारे लिये सर्दार अज़ीज़ खां नहीं एक तुर्कमानी साथी हूँ। तुम बताओ तुर्कमान का यह कायदा है कि कोई भी इन्सान मेरे यहाँ आता है तो मुझे उसकी इज्जत रखनी है, अलनजर हो या कोई और हो। तुमसे मैं कोई सौदा नहीं कर रहा हूं। लेकिन याद रखो मेरे साथ रहोगे तो तुम्हारे लिये तरक्की की राह खुल जायगी। मैं तुमसे जल्द बाज़ी के लिये नहीं कह रहा हू। तुम मन को खूब तौल लो। अलनज़र है क्या? अगर वह तुम्हारे खिलाफ़ जबान भी हिलाये तो उसका घर तुम्हारे सामने फुकवा दूँ।"

"क्या कहूँ मैं?...मैं तुम्हारा नौकर हूँ और बे तुम्हारा दोस्त है। तुम्हीं बताओ किसका हक ज्यादा है?"

"अज़ीज़ देखो, मुझसे कसम मत दिलावाओ। मेरी बात ही काफ़ी है। तुम मेरे कदम जम लेने दो। अलनजर को मैं कान से पकड़ कर तुम्हारे हवाले कर दूंगा।

यदि इतनी बात चर्नीशोव ने कुली खां भी बाबत कहदी होती तो अरतैक आँख मूद उसके साथ हो गया होता परन्तु चर्नीशोव तो लंगड़े

का पक्ष ले रहा था। इसलिये अरतैक अज़ीज़ के पास में चला गया। लेकिन उसे क्या मालूम था कि जिस राह पर पांव रखा है वह उसे वहां से कहां ले जायगी। पिछले दिनों में उसने जो कुछ सहा था उसके आधार पर वह अपने आप को खूब अनुभवी और पक्की समझ का आदमी समझने लगा था और उसका विचार था कि हालात के मुताबिक उसने बिलकुल ठीक मार्ग अपनाया है। क्रान्ति के बाद तेजेन में हथियारों की कमी न थी। अज़ीज़ ने अरतैक और काज़िल खां को अपनी फौज का कमाण्डर बना दिया। अरतैक के कधों पर हरे रग के हिलाल और तारे के निशान लग गये। उसकी पीठ पर राइफल और कमर में तलवार लटकने लगी।

उसी समय तेजेन में पचायत की ओर से एक लाल फौज भी बन गई। इन लोगों के कधों पर लाल निशान थे। इस फौज के अफसरों में चर्नीशोव और कुली खा थे। इस फौज का कमाण्डर कुली खां का मित्र कलूई खां था। कलूई खां देव का देव, भयानक रूप रग का आदमी था। उसकी आँखे भी बड़ी-बड़ी थीं। एक ही शहर मे दो फौजें, एक ही बाज़ार के एक सिरे पर लाल दाढ़ी-मूछ से घिरे लाल चेहरे वाला काज़िल खां कमर में टेढ़ी तलवार लटकाये ऐंठता फिरता और दूसरी ओर कलूई खां कमर में माउज़र पिस्तौल और छोटी किर्च अड़ाये घूमता दिखाई देता।

भोले किसान इन लोगों की ओर सहमी हुई आँखों से देखते और सोचते रह जाते—"जाने दुनिया में क्या होने जा रहा है!"

१०

एक खूब बड़े कमरे में, लम्बे चौड़े कालीन पर अज़ीज़ खां अपने सलाहकार साथियों के साथ बैठा दिल बहला रहा था।

रोएदार खाल की बनी अपनी लम्बी-लम्बी टोपियां उतार कर उन लोगों ने एक ओर रख दी थीं। खिड़की से आती दोपहर की धूप उन लोगों के उस्तरे से मुंडी खोपड़ियों पर पड़ रही थी। बीच में एक दस्तरखान पर चाय के प्याले, चायदानियां और मिश्री रखी हुई थी। आते जाड़े की सुहाती-सुहाती घाम में इन बर्तनों पर मक्खियां अपने राग गुन-गुना रही थीं। प्यालों में भरी गहरी चाय से महक लिये भाप उठ रही थी। कमरा बड़ा और ऊंचा होने पर भी हुक्के से निकला हुआ धुआँ छत के नीचे मंडरा रहा था।

अज़ीज़ के साथ ही अक्सा कुर्बान यारमुश काज़ी बैठा हुआ था। काज़ी की काली दाढ़ी बड़े थैले की तरह उसकी ठोड़ी से लटकी हुई थी। जांघों पर टिके उसके हाथ भी काले रोमों से ढँके रीछ के पंजों जैसे जान पड़ रहे थे। उसकी बड़ी-बड़ी साफ आँखों से मूर्खता झलक रही थी। वह एक दरबारी राजनीतिज्ञ नहीं बल्कि बेपरवाह देहाती ग का ही मालूम देता था।

अक्सा कुर्बान के साथ ही भारी भरकम कारीमुल्ला बैठा था। कारीमुल्ला का माथा और दाढ़ी शेष चेहरे से बहुत आगे बढ़े हुये थे। ऐसा जान पड़ता था कि सिर पर चक्की का पाट रख देने से चेहरा पिचक कर ऊपर नीचे के भाग आगे बढ़कर बीच का भाग भीतर धस गया हो। उसकी धसी हुई आँखों में छोटी-छोटी पुतलियां चमक कर आतुरता प्रकट रही थीं। मुल्ला अनपढ़ था परन्तु उसके बाप दादा मुल्ला थे। इसलिये मुल्ला का नाम खान्दानी तौर पर चला आ रहा था। उसके आगे आल्ती सोपी एक मामूली

सा कुरता पहने बैठा था। कुरता गले पर मैला था। उसके ऊँचे पायजामे के पहुँचे से उसकी बिवाई से फटी एड़ियां दिखाई दे रही थीं और और सूखी सूखी पिंडलियां भी झलक रही थीं। उसका भूरे रंग का लबादा कंधे से अटका हुआ था। अपनी आदत के अनुसार वह इस समय भी दाहिने हाथ से माला जपता जा रहा था और मन में शायद कोई तिकड़म सोच रहा था। उसकी आँखों और चेहरे से निर्दयता टपक रही थी। जैसे उसका चेहरा निर्दय था वैसे ही उसकी जुबान भी कड़वी थी। ईमानदारी और इन्साफ़ के झगड़ों में वह कभी न पड़ता था। पिछली बग़ावत में भाग लेने के कारण वह भी अरतैक के साथ अश्काबाद के जेलख़ाने में रह आया था। उस बग़ावत में सोपी ने जनता पर अन्याय के विरोध के लिये नहीं बल्कि खानों और मुल्लाओं का राज कायम करने की आशा से भाग लिया था।

इस चक्कर के अन्त में अलनज़र बे के साथ धुसरे से चेहरे का आदमी मदीर ईशान बैठा हुआ था। इशान की आँखें फ़ौलादी रंग की थीं और चौड़े जबड़े फैले हुये थे। उसकी आयु होगी, लग भग पैंतीस बरस की। पिछले पन्द्रह बरस से वह रूसी अफ़सरों के साथ रह कर तुर्कमान लोगों की बात रूसी में समझाने का काम करता रहता था। इसलिये लोग बाग में उसका काफ़ी रोब था। उसकी ज़बान कैंची की तरह चलती थी इसलिये लोग उसे मदीर (जल्दी बोलने वाला) पुकारने लगे थे। बजुर्गों और मुल्लाओं से बातचीत करते समय वह शरीयत (धार्मिक पुस्तकों) की ही जबान में बात करता था इसलिये लोग उसे ईशान (आलिम) भी पुकारने लगे।

यह था अज़ीज़ खां का दरबार जहाँ उसकी नीति तय होती थी। अरतैक भी कमरे में एक ओर बैठा था। इन लोगों की बातचीत सुनने के लिये वह किसी न किसी बहाने वहीं बना रहा।

बातचीत राजकाज के प्रबंध के बारे में हो रही थी। अज़ीज़ ने अपना तरीका बहुत दिन पहले, अफ़गानिस्तान में रहते समय ही मन में निश्चय कर लिया था परन्तु इन लोगों का मन रखने के लिये वह इन लोगों की सलाहें बहुत महत्व देकर सुन रहा था।

आल्लीसोपी सभी लोगों की ओर निगाह दौड़ा कर सबसे पहले बोला—"अज़ीज़ खां, ख़ुद नये कानून बनाने का ख़याल करना ही ग़लत

है। सही क़ानून हज़रत पैग़म्बर ने एक हज़ार बरस पहले ही क़ायम कर दिये थे। हम उन क़ानूनों से बाहर नहीं जा सकते। असली क़ानून शरियत का क़ानून है। मगर शरियत को समझने में कहीं शक होता है तो आलिमों की राय ली जानी चाहिये। एक आलिम को क़ाज़ी बनाया जाना चाहिये। शरियत के क़ानून में कोई चूंचे चुनाचे नहीं होना चाहिये। शरियत के हुक्म पर पूरा अमल होना चाहिये। अगर शरियत का हुक्म है कि गुनाहगार का हाथ काटो, हाथ काट दो। अगर शरियत का हुक्म है गुनाहगार का सिर काटो, तो सिर काटो। अगर शरियत का हुक्म है कि गुनाहगार को फांसी पर लटकादो, तो फांसी पर लटकाओ।"

अलनजर बे ने सिर हिलाकर मुल्ला सोफी का समर्थन किया—"ठीक है ठीक है—"मन ही मन वह सोच रहा था—यह है तरीका अरतैक का इन्तजाम करने का।

दूर से बाद में बोला यारमुश काज़ी, भर्राई हुई आवाज़ में जैसे कि गले में फांस अटकी हुई हो।—"वैसे तो मुल्ला की बात सोलह आना सही है लेकिन शरियत के क़ानून के साथ ही अपना रीति-रिवाज़ भी तो है। कहावत है, आदमियों की परवाह चाहे न करो पर रिवाज़ पर कायम रहो। शरियत तो शरियत है पर अगर हम रिवाज़ पर कायम हैं तो भी ठीक है।"

कारीमुल्ला न तो शरियत की और न रिवाज़ की ही बात कर सकता था। बहुत देर तक कोशिश में नाक और दाढी हिला हिला कर वह आखिर बोला—"हाँ भाई, हम तो यह कहते है कि ' मिसाल कहते हैं न कि चाहे ऐसे ठीक समझ लो, चाहे वैसे कर लो। मतलब यह कि बात ठीक होना चाहिये। और अपना इस्लामी रिवाज़ ठीक होना चाहिये, बस यही ठीक है।" यह बात कहने के वक्त में कारीमुल्ला का पूरा शरीर थर्रा उठा, उसकी मुण्डी हुई खोपड़ी की खाल तक सिकुड़ गई और शरीर पसीना पसीना हो गया। वह ऐसे हांफ रहा था जैसे मंजिल पूरी करने के बाद घोड़ा हांफता है। कांपते हुये हाथों से अपना चाय का प्याला उठा वह प्यास बुझाने के लिये घूंट भरने लगा।

अलनज़र गम्भीर स्वर में शान्ति से बोला—"यह ठीक है कि शरियत और रिवाज़ दोनों ही मानने से हम लोग ग़लती से बच सकते हैं। अब ज़माना बदला है तो ज़माने के साथ नये कानून की भी ज़रूरत होगी। जहाँ तक मैं समझता हू क़ुरान में और हज़रत मुहम्मद की रवायात में

रिवाज़ की बात नहीं है। रिवाज़ तो ज़माने की हालत से लोगों की ज़रूरत के मुताबिक बन जाता है। मुल्ला लोग खुद मानते हैं कि कुरान में पिछली आयतें पहली आयतों के खिलाफ़ पड़ती हैं। आज कल का ज़माना हज़रत पैगम्बर के ज़माने से बदल गया है। आज अगर लोगों की तरफ़ से इकट्ठे हुये लोग मिलकर हालत के मुताबिक कानून बनाते हैं तो यह शरीयत और रिवाज़ के खिलाफ़ नहीं है।"

बातचीत का कोई भी शब्द लिखा नहीं गया। फौज के लिये कितना खर्च किया जायगा, कैसे किया जायगा और यह रकम कहां से आयेगी, इस विषय में अज़ीज़ ने अपने दरबारियों से कोई राय नहीं ली। उसने सब नहरों के इलाकों पर अपनी इच्छा से कर लगा दिया। जब लोगों ने पूछा--यह रकम कहां से आयेगी? तो अज़ीज़ ने उत्तर दिया—"जिन लोगों के पास रकम है उन्हीं के यहां से रकम आयेगी।" अज़ीज की इस मनमानी घरजानी से और बे लोगों की दौलत पर उसके हाथ फैलाने से अलनजर घबराया। अलनजर ने इस विषय में बात उठाने के लिये अजीज़ की ओर प्रश्नात्मक ढङ्ग से कुछ कहने के लिये मुंह खोला परन्तु अज़ीज़ खां ने उस ओर से आंखें फिरा कर दूसरी बातें आरम्भ कर दी--"बुजुर्गों इस साल रियाया की हालत बहुत खराब है। यह बात आप मुझसे ज़्यादा जानते हैं। लोग भूख से तड़ातड़ मर रहे हैं। इस अकाल मौत से लोगों को बचाने के लिये क्या इन्तज़ाम किया जा सकता है?"

अलनजर और अधिक कर बढ़ाये जाने की आशंका से तुरन्त बोला—"सरकार से मदद लेनी चाहिये!"

"सरकार कौन है, हम सरकार हैं।"—अज़ीज़ बोला।

चाय का प्याला पीने से यारमुश काज़ी को और अधिक पसीना आ गया। वह अपने छींट के कुर्ते का दामन हिलाकर हवा करता हुआ बोला—"सुना है, सहयोग सभा बनी हैं। सुना है, शहर के तंग सुथन्ने वाले (पतलून पहनने वाले) अफ़सर सब सरकारी राशन आपस में बांट लेते हैं। हम लोग भी सरकारी राशन क्यों न लें। ज़ार तो मर गया फिर भी इन तंग सुथन्ने वालों का ही राज चलता रहेगा। अज़ीज़ खां, इन लोगों के सुथनों में छेद करना होगा।"

अजीज़ की जगह उसके अफसर'माल मदीर ईशान ने उत्तर दिया—"कुर्बान आग़ा, सहयोग सभायें क्या देती हैं? जैसे बीमार आदमी के

मुँह में पानी की बूँद टपका दी जाये। इतना राशन लेकर बाँटने लगो तो किसी के हाथ कुछ न आये, जैसे मुट्ठी भर अनाज लेकर दस बीघा ज़मीन पर बो दिया। वहाँ से अगर कुछ मिलेगा तो ले लेंगे लेकिन रियाया की मदद के लिये इससे कुछ नहीं बनेगा। उनके लिये तो कुछ और ही करना होगा।"

"जो कूकर मारेगा वही कूकर करेगा"—आल्ती सोपी बोला—"किसानों को जिसने लूट कर भूखा मारा है वही आकर इन्हें मरने से बचायें, खाने को दें।"

'तुम सीधी बोली में बात करो तो समझ में आये।"—अज़ीज़ खाँ ने कहा।

"अज़ीज़ खाँ, अनाज धरती की ओर ही जाता है। फसल काटो तो अनाज की बाल धरती पर झुकती है। मड़ाई करो तो अनाज धरती पर गिरता है। खेत में बोओ तो अनाज धरती में घुस जाता है। बोरी में भरो तो अनाज का मुँह धरती की ओर रहता है। कटाई में जितना अनाज खेतों में बिखर जाता है, वही गरीबों और पक्षियों के भाग आता है। जो अनाज ब्योपारी की खत्ती में चला गया वह किसी का नहीं? न तुम्हारा न हमारा।"

'सोपी की बात सोपी ही समझे।"

"किसान की कमाई का क्या है? रुपये में से चार आना जागीरदार के कारिन्दे के हिस्से गया, चार आने साहूकार के हाथ, चार आने जागीरदार सरकार के हाथ, चार आना उसके पेट के लिये रहा।"

'तो फिर?

"साहूकारों, जागीरदारों की खत्तियों में गया किसानों का अनाज कहाँ गया? वह खत्तियों में धरा है। इस अनाज को धरती से निकालो। इतना अनाज अगर धरती से निकल कर किसान को मिल जाय तो अगली फसल तक किसान बच जायगा।"

"मतलब है जागीरदारों और बे लोगों से अनाज माँगा जाय?"

"माँगे से दे दें तो भला, नहीं तो लेना तो होगा ही। अभी कहा नी आलनजर बे ने। बदले ज़माने में हालात के मुताबिक कानून बनाना होगा।"

"आखिर काम की बात कही—"सोपी ने करवट ले अज़ीज़ का

समर्थन किया।

सोपी के अपने यहां अनाज था नहीं इसलिये दूसरे साहूकारों और जागीरदारों का अनाज छीना जाने में उसे कोई आपत्ति न थी। एक से छीन कर दूसरे को दे देने में उसे एतराज़ न था। इस समय सोपी के मन में असली बात यह थी कि बेक नहर के इलाके का प्रतिनिधि होने के नाते जागीरदारों से अनाज लेकर अपने इलाके में वही खुद अनाज बंटेगा। किसानों में उसकी मानता बढ़ेगी सो बढ़ेगी, इसके अलावा उसके अपने घर अनाज की कमी न रहेगी। सोपी या कोई दूसरा आदमी थोड़ा बहुत माल समेट ले, इसमें अज़ीज़ को कुछ एतराज न था। वह चाहता था लोग बाग और किसानों को उस पर विश्वास हो जाय।

यारमुश काज़ी को सोपी की बात पसन्द न थी परन्तु वह बहुत यत्न करने पर भी इतना ही कह सका—"मतलब 'इसका मतलब तो है' ।"

कारी मुल्ला को भी यह प्रस्ताव नापसन्द था। मन ही मन उसे इस बात पर क्रोध भी आ रहा था परन्तु अज़ीज़ के भय से वह चुप रह गया। अज़ीज़ से अलनजर बे को भी भय था परन्तु उसे अपने नुकसान का भी भय सबसे अधिक था। वह साहस कर बोला—"बात सोपी की ठीक है लेकिन हमारे यहां ईरान और रूस जैसे साहूकार हैं कहां जिनके यहां बड़ी बड़ी खत्तियां भरी हों? यह तो गरीब लोगों की बस्ती है। फसल कटी और बनियों के हाथ से निकल दूर रूस की मण्डियों में जा पहुंची। यहां किसी के यहां आठ दस बोरी अनाज होगा भी तो क्या? कुनबे के लोग हैं, रिश्ते और जान पहचान के लोग हैं। तुम कहते हो, वे लोगों के यहां अनाज है भैया, मैं भी वे ही हूँ परन्तु मैं ही जानता हूँ कि इस बरस खुदा ही हाफ़िज है!......कैसे निबाह होगा? अगर इसी तरीके पर चले तो गरीबों का पेट तो क्या भरेगा उनकी हालत और बुरी हो जायगी और वे लोग भी बिगड़ उठेंगे। दुश्मन का मुकाबिला करना है तो आपस में बदगुमानी और झगड़े न उठें तभी अच्छा।"

अब तक अरतैक एक ओर चुपचाप बैठा था परन्तु अब रह न सका—"मालूम होता है जैसे दुनिया में सतह पर बगावत हो रही है वैसे ज़मीन के भीतर भी हलचल है। तो अलनजर की खत्तियों में भरी सैकड़ों बोरियों की जगह आठ दस ही रह गईं। मालूम होता है, बेचारे का अनाज धरती निगल गई!"

यह बात सुन अलनजर बे ने अज़ीज़ खां की ओर देखकर पूछा—"क्या यह आदमी भी तुम्हारा सलाहकार है ?"

अज़ीज़ खां ने बे की नाराज़गी की परवाह न कर उत्तर दिया—"यह आदमी हमारी फौज का एक कमाण्डर है।" बे को चुप रह जाना पड़ा। इसी समय एक अफ़सर ने आकर अज़ीज़ को सम्बोधन किया—एक परदेसी मेहमान आप से अकेले में मिलना चाहता है।"

यह सुन अज़ीज़ ने अपना दरबार स्थगित कर दिया। दरबारी लोग हुउठकर चले गये। परदेसी भीतर आया और आकर उसने कमरे क दरवाजा सावधानी से बन्द कर लिया। मेहमान की आयु तीस बरस की लगभग होगी। कद मझोला, घनी भवें, रग कुछ ढका हुआ, मूछे और दाढी खूब काली, दांत कुछ बड़े बड़े लेकिन खूब साफ चमक रहे थे। वह रेशमी कमीज़, खाकी पतलून और घुटनों तक ऊंचे बादामी बूट पहने था।। उसके कधों पर चोगा था। पोशाक उसकी तुर्कमानी थी परन्तु वह तुर्कमान जान न पड़ता था।

उसने अपना परिचय दिया—"मैं अफगान हूं ।

अफगानिस्तान में अज़ीज़ खां ने अपनी मुसीबत के दिन बिताये थे। अफ़गानिस्तान का नाम सुनते ही अज़ीज़ ने विश्वास से मेहमान की ओर देखा परन्तु मेहमान के व्यवहार और तौर तरीके में कुछ ऐसी नफ़ासत थी कि अज़ीज़ के मन में सन्देह हो गया। कुछ सोच कर उसने मेहमान से प्रश्न किया—"तुम अफ़गान हो या बलूची हो ?"

मेहमान ने इस्लामी ढग से सीने पर हाथ रखकर उत्तर दिया—"शुक्र खुदा का मैं मुसलमान हूं, शुक्र खुदा का उसने मुझे अफगान पैदा किया है।"

"नाम पूछ सकता हूं।"

"अब्दुलकरीम खां"

"कारोर ?; एगल ?"

"जो काम सौंप दिया जाय उसे पूरा करना।"

"कहां से तशरीफ आ रही है, किस तरफ़ का इरादा है ?'

दरवाज़े और खिडकी की तरफ देख अब्दुल करीम धीमे स्वर में बोला—"मैं कुछ खास बात करना चाहता हूं।"

"यहां कोई खतरा नहीं है, महफ़ूज जगह है। जो चाहो कह सकते हो।"

अब्दुलकरीम खां ने एक बार चारों ओर देखा। उसके इस ढग से अजीज़ का सन्देह और बढ़ा—यह आदमी कोई चोर है या भगोड़ा; या कोई जासूस है? उसने एक बार फिर मेहमान को विश्वास दिलाया कि यहां से कोई ग़ैर आदमी बात नहीं सुन सकता। बेखतरे कहो! अफ़गानिस्तान मेरा दूसरा वतन है। अफ़गानिस्तान के लोग मेरे लिये तुर्कमानिया के लोगों की तरह ही अपने सगे हैं। तुम अगर अफ़गान हो तो बेखौफ़ जो चाहे कहो। अगर खून कर के भी आये हो तो यहाँ तक मेरी पहुँच है, तुम्हे कोई छू नहीं सकता।

अब्दुलकरीम खां ने भरोसे से कहा—"मैं भगोड़ा खूनी नहीं हू। मैं एक राजपूत हू।"

"राजपूत?"

"मैं अफ़गानिस्तान के अमीर हबीबुल्ला खां का राजपूत हू।"—अब्दुलकरीम खां गर्दन उठा कर बोला।

अज़ीज़ की नजरें बदल गईं। उत्सुकता से उसने पूछा—"तुम्हें मेरे पास अमीर ने भेजा है?"

"खुदा मुझसे ग़लत बात न कहलाये—"अब्दुलकरीम ने कुछ ठिठक कर उत्तर दिया—"जिस समय मैं अफ़गानिस्तान से चला था आप के खान बन जाने की खबर वहाँ नहीं पहुंच पाई थी। अमीर ने मुझे खुरासान के कुर्बान मुहम्मद खां जुनैद के यहाँ भेजा था। लेकिन मुझे हुक्म है कि अगर हो सके तो मैं आप से भी मिलू।"

"तो तुम खुरासान ताशौज़ जा रहे हो?"

"मैं ताशौज़ से लौट रहा हू। कुर्बान मुहम्मद खां ने आपको सलाम कहा है।"

"शुक्रिया, तुम पर अल्लाह की इनायत इस सन्देश के लिये। खान आग़ा मज़े में हैं?"

"शुक्र अल्लाहका। खान आग़ा खुशहाल हैं। खान आग़ा आपको अपना भाई खयाल करते हैं। उनका सदेश है कि आपको किसी किस्म की

मदद की जरूरत हो तो खत या आदमी भेज कर खबरदें ।"

"हम लोग अफगानिस्तान में ही एक दूसरे के भाई बने थे ।"

"ठीक है । मुझे मालूम है ।"

"अब्दुलकरीम खां, यहाँ से कहाँ जाने का इरादा है ?"

"यहाँ मैं आप के ही पास आया हूं । जा कर मुझे अमीर हबीबुल्ला खां को आप से मुलाकात की खबर देनी होगी ।"

अज़ीज़ ने, अब्दुल करीम खां से अफ़ग़ानिस्तान के बारे में बहुत सी बातें पूछीं, पश्तो में बातचीत कर अपना संतोष कर लिया कि वह अफगानिस्तान से ही आया है । अफगानिस्तान के कई खानों का ज़िक्र उसने अब्दुलकरीम से किया । अब्दुलकरीम ने इन लोगों का ठीक ठीक परिचय दिया इस पर भी अज़ीज़ खां ने उससे पूछा—"तुम्हारे पास अमीर का कोई पत्र है ? "

"देख ही रहे हो कि मैं भेस बदल कर आया हू—"अब्दुलकरीम ने उत्तर दिया—"इसीलिये मैं तुर्कमानो पोशाक भी पहने हू । ऐसी हालत में अपनी सरकार का पासपोर्ट (राहदारी) या कोई पत्र मैं साथ कैसे रख सकता हूँ ? किसी दूसरे आदमी को तो मैं यह भी नहीं बता सकता कि मैं अफ़ग़ान हूं ।"

अज़ीज़ का सन्देह दूर हो गया तो उसने अब्दुलकरीम से उसकी यात्रा का प्रयोजन पूछा ।

"खान आग़ा—"अब्दुलकरीम ने उत्तर दिया—"मुसीबत के दिनों में आप ने और जुनेद आग़ा ने अफगानिस्तान में ही जगह पाई थी । मेरा खयाल है हम लोगों का सलूक बुरा नहीं रहा होगा ?"

"नहीं शुक्रिया, मैं बहुत आराम में रहा और मशकूर हूँ ।"

"जुनेद आग़ा अब खुरासान के पूरे इलाके का मालिक है । और अब आप की हैसियत भी, अलअहम्दलिल्ला, बहुत ऊंची है । इस वक्त दुनिया में कैसी गड़बड़ी मच रही है और राजनीतिज्ञ लोग कैसी चालें चल रहे हैं, यह मुझसे ज्यादा आप ही खुद जानते हैं । ज़ार ने आपके साथ जो ज़ुल्म किया सभी जानते हैं और यह जो नई सरकार बन रही है, तरबूज़ को तराशे बिना कौन जानता है कैसा निकलेगा ? कौन जाने यह ज़ार से भी ज्यादा जालिम निकले । आपका क्या खयाल है,

आप रूस पर ही भरोसा करेंगे या किसी दूसरी सल्तनत के साये मे आना बेहतर समझेंगे ?"

"किस सल्तनत के साये में ?"

"हूं ''''समझ लीजिये, बर्तानिया !"

"बोझा ही ढोना है तो इंट ढोई कि पत्थर ! क्या फरक पड़ता है। रूस के ज़ार ने जो किया बर्तानिया का बादशाह उससे कम क्या होगा ? मैं तो किसी के भी जुये में गर्दन फसाना नहीं चाहता।"

करीम खां के माथे पर बल पड़ गये परन्तु अज़ीज़ का ध्यान उस ओर न था। करीम सम्भल कर बोला—"मेरा मतलब तो है कि आप किससे साथ करना चाहते हैं।"

"मैं इस झंझट में नहीं फसना चाहता।"

"अपने पड़ोसी अफगानिस्तान के बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

"पूरी की आस से हाथ की आधी भली''''दूर के बड़े बड़ों से अपना पड़ोसी अफगानिस्तान बहुत अच्छा !"

अज़ीज़ के समीप सरक कर अब्दुलकरीम बोला—"बस इसी मतलब से मुझे अमीर हबीबुल्ला खां ने जुनेद आग़ा और आप की ख़िदमत में भेजा है। अब तक यह रहा कि मुसलमानों को एक तरफ़ रूस, दूसरी तरफ़ बर्तानिया और तीसरी तरफ़ फ्रांस बांटे रहे। लेकिन अब इस जंग के बाद मौका है कि दुनिया के मुसलमान मुल्कों में एका हो जाय। इस के लिये सभी को कोशिश करनी होगी। एक जान एक दिल हो कर ! लेकिन हम लोगों को एक बड़ी ताक़त के सहारे की भी जरूरत है, मिसाल के तौर पर बर्तानिया ही हो। अमीर की राय है कि इस वक्त रूस में फैली गड़बड़ का फ़ायदा उठा कर मुस्लिम मुल्कों तुर्की, तुर्कमानिया और अफ़ग़ानिस्तान का एका बन सकता है। इस बारे में आपकी राय क्या है ?"

अज़ीज़ खां सिर झुकाये सोचता रह गया। अब्दुलकरीम खां की बात बहुत सीधी सादी न थी कि जैसे चाहा देहात पर कर लगा दिया। इस सवाल का जवाब देने से पहले खूब सोच लेना जरूरी था। अज़ीज़ खां अफ़ग़ानिस्तान से जा मिले तो रूस क्या योंही देखता रह जायगा ? और फिर अफगानिस्तान का अमीर क्या ज़ार से भला होगा ? अफ़ग़ानिस्तान उसे पड़ोसी सुल्तान मानेगा या उसे अपनी सल्तनत का एक जागीरदार भर ही बना देगा ?"

करीम भी जानता था कि सवाल अज़ीज़ के लिये आसान नहीं है। ख़ूब सोच लेने का अवसर देने के लिये करीम चुप बैठा उसकी झुकी हुई पलकों की ओर देखता रहा।

अज़ीज़ काफी देर तक सोचता रहा और फिर अपने हुक्के के तम्बाकू में एक दियासलाई दिखाकर हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। सूने कमरे में हुक्के की गड़गड़ाहट बहुत ज़ोर से सुनाई दे रही थी और तम्बाकू का नीला नीला बोझल धुआँ कमरे भर में फैल गया। हुक्के की सटक मुँह में लगाये अज़ीज़ ने पूछा—"जुनैद आग़ा की क्या राय है ?"

"जुनैद आग़ा सब मुसलमानों का एका चाहता है। वह अमीर से सहमत है।"

"आग़ा ने अमीर के लिये कोई ख़त दिया है ?"

"ख़तों के बारे में तो मैं अरज़ कर चुका हूँ कि अगर मैं पकड़ा जाऊँ और ऐसा कोई ख़त पत्र मेरे पास निकल आये तो मेरी तो जान जायगी ही, लेकिन मेरी जान की इतनी फ़िक्र नहीं। ऐसी हालत में जिस काम के लिये मैं जोखिम झेल कर आया हूँ उसकी भी राह रुक जायगी। ख़त पत्र मैं अपने साथ कैसे रख सकता हूँ ?"

"ठीक कहते हो।"

"फिर क्या राय है आपकी ?"—कुछ प्रतीक्षा के बाद करीम ने पूछा।

"मैं जुनैद आग़ा के साथ हूँ। आग़ा जो कहते हैं, ठीक है।"

दो दिन तक अज़ीज़ खाँ और अब्दुल करीम खाँ तुर्कमानिया और अफ़ग़ानिस्तान की सन्धि के बारे में बातचीत करते रहे। इस बीच करीम ने तेजेन में अज़ीज़ की स्थिति का पूरा पता लगा लिया। अज़ीज़ के सलाहकारों, उसके फ़ौजी अफ़सरों और सोवियत सरकार की स्थिति भी वह जान गया। अवसर निकाल कर उसने कादिल खाँ और कलूई खाँ और उनकी फ़ौजों को भी देख लिया। करीम हर बात के ब्योरे में गहराई तक जाता था। उसकी चतुरता और सावधानी से अज़ीज़ को विस्मय होता था। अज़ीज़ ने ऐसे चतुर और समझदार आदमी अफ़ग़ानिस्तान में कभी न देखे थे। अपने दरबारियों को उसने अब्दुल करीम खाँ का भेद न बताया।

दो दिन बाद अब्दुल करीम खाँ सेराख की ओर चला गया।

११

अरतैक के गांव का और उसका लंगोटिया अशीर भी दूसरे साथियों के साथ जबरन भरती में पकड़ा गया था। वह दूसरे तुर्कमानी साथियों से अधिक दूर, मजदूरी पर रूस के भीतरी भाग में भेज दिया गया था। ज़ार की सरकार टूटने पर जब दूसरे लोग लौटे, अशीर उनके साथ ही न लौट सका। वह कई महीने बाद, कई रेलों का चक्कर लगाता हुआ तेजेन स्टेशन पर पहुंचा।

अशीर स्टेशन से शहर की ओर आ रहा था और आते जाते लोगों के चेहरे पहचानने का यत्न कर रहा था। पहला परिचित आदमी उसे अरतैक ही मिला। दोनों मित्र यों अचानक एक दूसरे को पा गदगद हो गले मिले।

अरतैक अशीर की ओर विस्मय से देखता रह गया। अशीर रूसी मज़दूरों के ढंग का गहरे भूरे रंग का सूट पहने था। कपड़े उसके मशीनों के तेल से चीकट हो रहे थे और पांव में भारी भारी फौजी बूट थे। अरतैक को अशीर का पहरावा देखकर नहीं, चेहरा देखकर विस्मय हो रहा था। उसका चेहरा बिलकुल बदल गया था। उसके चेहरे पर पक्कापन झलक रहा था और माथे पर अनुभव की रेखायें पड़ गई थी। उसकी भोली चंचल आंखें भी गहरी और गम्भीर हो गई थीं। तेजी से बहती, किलकिलाती जल की धारा बदल कर गहरा गम्भीर ताल बन गई थीं। अरतैक देखता रह गया कि अशीर को हो क्या गया?

अशीर को भी अरतैक का चेहरा बदला हुआ जान पड़ा। अरतैक के चेहरे पर पहले की सी उलझन न थी। उसके चेहरे पर भी निर्भयता और आत्म विश्वास झलक रहा था, आंखें अधिक चमकीली और सजीव हो गई थीं। अरतैक एक रेशमी चोग़ा पहने था। कमर में एक ढीली पेटी से

तलवार लटक रही थी और हाथ में एक मैगज़ीन-राईफल थमी थी। सब से अधिक विस्मय हो रहा था अशीर को अरतैक के कंधों पर हरे रंग के हिलाल और तारे के निशान देखकर। उसी ओर देखते हुये अशीर ने पूछा—"तुम किस फौज में भरती हुये हो ?"

अशीर की बात से अरतैक को अचम्भा हुआ। अशीर ने पहले न मित्र का बाबत, न अपने और उसके घरबार की बाबत, न गांव की बाबत और न ढोर डंगर का ही कुछ पूछा। अरतैक के जेल से लौटने और सेना के बारें में भी कोई बात नहीं! सीधे यही प्रश्न, किस फौज में भरती हुये हो? उसने उत्तर दिया—"मैं अज़ीज़ की फौज में हूं।"

"अज़ीज़ खां की फौज ?"—लम्बी यात्रा से थकी आँखें झपक कर अशीर बोला—"अज़ीज़ खां किस फौज में है ?"

"अज़ीज़ खां की अपनी फौज है !"

"किन लोगों के साथ है वह किस वर्ग (जमात) के साथ ?"

इस प्रश्न से अरतैक को और भी हैरानी हुई। अशीर का ढंग भी मित्रों जैसा नहीं, कुछ संदेह भरा और अफसराना था। उस बात की उपेक्षा कर अरतैक ने साफ़ साफ़ जवाब दिया—"वर्ग से तुम्हारा क्या मतलब ? वर्ग मैं नहीं जानता। अज़ीज़ तुर्कमानी जनता के साथ है।"

"तुर्कमानी जनता के साथ या तुर्कमानी जागीरदारों के साथ ?"

"मेरा तो खयाल है कि जनता के साथ !"

"तो तुमने यह कंधे पर निशान कैसे लगा रखे हैं ?"

"क्यों क्या निशान लगाना मना है ?"

"नहीं, यहाँ दूसरे निशान होने चाहिये थे।"

"लाल फौज के ?"

"हाँ"

"जब तक लाल फौज का कमाण्डर कुली खां रहेगा, लाल फौज का निशान मैं नहीं लगा सकता।"

"अफ़सोस है मुझे।"

"क्यों ?"

"हम तुम एक माँ बाप के बेटे न सही पर एक ही जमात की औलाद थे।"

"तुम क्या समझते हो, तुमने अपनी पोशाक बदलदी है तो जनता भी बदल गई है ?"

"सवाल पोशाक का नहीं दिल का है।"

"तो क्या यह निशान ही मेरा दिल है।"

"अरतैक, १९१६ में हम लोगों ने ज़ार की सरकार के खिलाफ़ बग़ावत क्यों की थी ? तुमने जेल किस लिये काटी ?"

"जुल्म का विरोध करने के लिये।"

"तो फिर लाल निशान छोड़ कर हरे निशान क्यों लगाये हो ?"

"मैं तो कह चुका, कुली खां के निशान मैं नहीं लगाऊंगा।"

"लाल निशान कुली खां के नहीं है वह जनता के निशान हैं।"

"तेजेन में तो ये कुली खां के ही निशान हैं।"

"खैर मैं नहीं जानता अज़ीज़ खां अब क्या कर रहा है। पहले तो वह जनता के ही साथ था। लेकिन मुझे तो लाल निशान छोड़ दूसरा कोई निशान सुहाता नहीं ?"

"अशीर, लाल हरे रंग के निशानों का झगड़ा बाद में होता रहेगा। चर्नीशोव से इस बारे में मेरी बात हो चुकी है। आओ तुम चाय तो पीओ। जरा सुस्ता लो पहले।"

दोनों मित्र अज़ीज़ खां के डेरे पर अब्बा की 'काफ़िला सराय' में पहुंचे। यहाँ तोंद बढ़ाये, चिकने चिकने चेहरे के लोगों को धीमी और भद्दी चाल से सहन में आते जाते देख अशीर को भला न मालूम हुआ। अज़ीज़ खां भी दिखाई दिया। अशीर की पोशाक देख अज़ीज़ के माथे पर त्योरी पड़ गई। अशीर के बैठते ही वह अरतैक की ओर देख बोला—"यह कौन आदमी है ?"

"मेरा एक दोस्त, अशीर साहब !"

"क्या करता है ?"

"जबरन-मजदूरी से छूट कर अभी लौटा है।"

"हूं"

"तुम भूल गये, पिछले साल की बगावत में यह मेरे साथ ही तुम्हारे यहाँ आया था।"

"अब तुमने याद दिलाया, पहचान लिया।"—अज़ीज़ ने उत्तर

दिया—"कमबख्त ज़ार की नौकरी ने हज़ारों नौजवानों को बरबाद कर दिया। कपड़े तो देखो इसके, क्या पहने है? चेहरा कैसा पीला हो रहा है? मालूम होता है जैसे परेशानी काट कर लौटा है। तसल्ली रखो भैया, यही गनीमत है कि ज़िंदगी बच गई, हाथ पांव सलामत हैं। सब ठीक हो जायगा।"

"अरतैक अशीर को अपने ब्याह और ऐना की बातें सुनाता रहा। अतैरी-बहरी की बातें सुन सुन वह खूब कहकहा लगा कर हसा। बहुत देर तक तो अरतैक अशीर के घरबार की खबर टालता रहा लेकिन बाद में उसे बताना ही पड़ा कि उसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी। इस खबर से अशीर को बहुत दुख हुआ। वह साल भर से अपनी पत्नी से मिलने की आस लगाये बैठा था। जबरन भरती के समय अपने घर के लोगों से मिलने का भी समय उसे न मिला था। अशीर बहुत देर तक सिर झुकाये उदास बैठा रहा। अरतैक उसे सान्त्वना देने का यत्न करता रहा।

अशीर अरतैक को सुनाने लगा कि उसे इवानोव भेजा गया था। उसे एक मामूली मज़दूर की तरह कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। वहां कुछ साथी मिले जिनसे बातचीत होने पर उसे देश और दुनिया की हालत का पता लगा—"अरतैक इससे पहले मैं कुछ समझता न था। हम लोगों ने यहां बे लोगों के खिलाफ बग़ावत की। हुआ क्या? सौ-पचास लड़ मरे, पचासों चुपचाप बैठे रहे, कुछ बे लोगों का पैसा खाकर उनकी ओर हो गये, कुछ हमी लोगों में लड़ मरे। रूस में ऐसी बात नहीं है। वहां किसान मजदूर खूब सगठित हैं।"

"कैसे? क्या मतलब तुम्हारा?"

"उन लोगों में सगठन और दृढता है।"

"साल भर में तुम नई बातें और नई जुबान सीख आये हो। मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पाया।"

"मैं साल भर और रहता तो रूसी बोलना भी सीख जाता। अब मेरे दिल में जबरन भरती में भेजे जाने का कोई कलख नहीं और न वहां कडी मेहनत करने का। घरबार का खयाल न होता तो अभी साल दो साल और वहीं रह जाता। हम लोग अनपढ हैं बोली भी नहीं जानते। इसीलिये तो मुतरज्जिम (अनुवादक) हमारा खून पीते रहे।"

"तुम मुझे कुलीखां से मित्रता न करने के लिये कोस रहे थे, क्या कुलीखां मुतरजिमां से भला आदमी है ?"

"वह बात ही दूसरी है।"

"अशीर अभी यहां सैंकड़ों ऐसे आदमी हैं जिन्हें ठिकाने लगाना होगा। कुलीखां है, अलनजर बे है। मैं अज़ाज़खां से कुछ दिन की छुट्टी लिये लेता हूँ। एक साथ गांव चलेंगे। वहां अपने पुराने मित्रों से मिलेंगे और अलनजर बे को भी अपना सलाम कह लेंगे।"

"बहुत ठीक रहेगा अरतैक, मैं उसे जरूर सलाम कर लेना चाहता हूं।"

अरतैक अज़ीज़खां से छुट्टी मांगने गया तो खान ने उसे चेतावनी देकर कहा—"देखो, देहात में कुछ गड़बड़ी न हो। अभी सब्र करो।" अरतैक बात टाल गया। अपने मन की बात उसने न कही।

दोनों मित्र एक काफिले के साथ गांव की ओर चल दिये। राह उजाड़, सपाट मैदानों में से होकर जाती थी। ऊटों के चौड़े चौड़े पांव के दुरमट पड़-पड़ कर सड़क समतल हो गई थी और हवा उसे बुहार कर साफ़ किये दे रही थी।

अशीर इस सड़क पर चलता दूर दूर तक नज़र दौड़ाता हुआ सोचता जा रहा था, ऐसी सड़क पर बाइसिकल कितने मजे में चल सकती है और सफर कितनी आसानी से और जल्दी तै हो जाता। एक बात की ओर उसका ध्यान बार-बार जा रहा था कि रेल के स्टेशन से सड़क के किनारे-किनारे तुर्कमान लोगों की छोलदारियां लगातार फैली हुई थीं। इनमें कज्ज़ाक लोगों की छोलदारियां भी काफी थीं। यह लोग नये-नये आकर बसे जान पड़ते थे। जैसे रात भर ज़ोर की बदल-बरसात के बाद अचानक मैदान में झुण्ड के झुण्ड धरती के फूल (कुकर मुत्ते) उग आये हों। राह में भूख से सूखे शरीर, थके मांदे किसानों के झुण्ड के झुण्ड शहर की ओर आते मिलते थे। आंखों की दौड़ में, दूर तक कहीं भी घास या हरी झाड़ी दिखाई न देती थी। रेतीले मैदानों में पनपने वाली कांटेदार झाड़ियां भी कुम्हला कर धरती पर बिछकर सूख गई थीं। जुते हुये खेतों में धूल की आंधियां चल रही थीं और मोटे मोटे पहाड़ो कौए इन खेतों में से अनाज के बीज अपनी फौलादी चोंच और पंजों से खोद-खोद कर चुग रहे थे। मनुष्य और पशु भूख से सूख रहे थे परन्तु कौवे मुटा रहे थे। जगह जगह लाशें रहने के

कारण उन्हें खूराक की कमी न थी। काफिला मीलों सफर कर चुका था परन्तु एक भी घुड़ सवार राह में न मिला। आखिर अशीर को सड़क पर खूब दूर धूल का बादल सा दिखाई दिया। फिर सुमों की आहट सुनाई दी और दो घुड़सवार सरपट घोड़े दौड़ते हुये काफिले के पास से निकल गये। एक सवार दोहरा लाल चोगा पहने ऊंचे घोड़े पर सवार था। दूसरा सवार भी भारी शरीर का, मोटा सा आदमी था और एक चितकबरी घोड़ी पर सवार था।

घुड़सवारों के बगल से निकल जाने पर अरतैक ने उन्हें पहचान लिया। वह तुरन्त घूम गया और अपनी राइफल उठा उसने घुड़सवारों पर निशाना साधा। वह राइफल का घोड़ा दबाने को ही था कि अशीर ने हाथ बढ़ा राइफल खींचली और पूछा—"यह कौन लोग हैं इतनी शान से ?"

"तुम क्या समझते हो ?" बड़े यत्न से अपना गुस्सा रोक अरतैक ने उत्तर दिया—"इस बरस देहात के कौए ही नहीं मुटा रहे शहरों में ज़िन्दा गरीबों को नोच कर खाने वाले गिद्ध भी मुटा रहे हैं। यह थे तुम्हारे लाल निशान के सरदार !"

"लाल फौज के सरदार ?"

"हां कुलीखां और केजुइखां !"

इसके बाद दोनों मित्रों में कोई बात न हुई। दोनों सिर झुकाये थके मांदे कदम कदम चलते गये। गांव पहुँच कर अरतैक मीराद की छोलदारी में और अशीर अपने परिवार की छोलदारी में चला गया।

अशीर की मां दूर से बेटे को पहचान न सकी—"हैं, यह कौन रूसी हमारे यहां घुसा चला आ रहा है ?" अशीर की मां सोच रही थी। उसी समय अशीर पुकार उठा—"मां !"

बुढ़िया का शिथिल शरीर कांप उठा और उसकी धुन्दली हो गई आंखों में आंसू छलक आये।

"मेरा बच्चा ! अशीरजान !—वह बार बार चिल्लाने लगी और बेटे को बांहों में ले सीने से चिपटा लिया। मन का पहला आवेग बस में आ जाने पर मां आंखों से आंसू बहाती अपनी दुख की कहानी, अपनी बहू की मौत की बात सुनाती रही। मां ने रो रो कर सुनाया—"जब तुम्हें पकड़े लिये

जा रहे थे मैं दौड़कर अलनज़र बे के यहां गई और उसके पांव छू छू कर मैंने दुहाई दी, मेरा एक ही बेटा है, मालिक रहम कर। मेरा बेटा मुझे बख्श दे!" बे ने एक न सुनी। आज मां की आंखों में दुख के आंसुओं की जगह आनन्द के आंसू बह रहे थे।

"बेटा, अल्ला ने तुझे मेरी गोद में लौटा दिया। अब दुनिया में मेरी कोई साध बाकी नहीं" ।"

१२

अरतैक तड़के ही कुछ खाकर घर से निकल पड़ा। आकाश में क़रा-कोरम के रेगिस्तान से उड़ने वाली रेत की घटाओं जैसे उजले उजले बादल रूई के बड़े बड़े लोंदों की तरह सूर्य की किरणों में चमकते हुये उड़ रहे थे। हवा के झोंके मुख पर लगते तो कुछ ठंडी ठंडी सीलनमी अनुभव होती। हवा सड़ती हुई लाशों की दुर्गंध से बोझल हो रही थी। अरतैक खादिम बाबा की छोलदारी की ओर चल पड़ा।

खादिम ऊखली में बिनौलों की खली कूट रहा था और सिर झुकाये सोचता भी जा रहा था। खली में से उड़ती पीली पीली भूसी खादिम की पलकों और दाढ़ी पर जम गई थी। उसका चेहरा भी बिनौले की खली जैसा ही जान पड़ रहा था। जान पड़ता था जैसे कब्र से उखाड़ कर निकाला हुआ चेहरा हो। जब वह पलकें उठा सामने देखता तो उसकी आंखें पीड़ा और घृणा से पथराई हुई सी जान पड़तीं। अरतैक को देखकर भी वह उत्साहित और प्रसन्न न जान पड़ा। उसकी घरवाली 'बीबी' की आयु रही होगी तीस बरस परन्तु वह भी बुढ़िया जान पड़ती थी। बीबी के चेहरे पर भी घोर निराशा और उपेक्षा जमी हुई थी। उनकी सात आठ बरस की लड़की केवल बांस की कमचियों का ढांचा भर दिखाई देती थी। उसका भी रंग सूखे कुम्हड़े की तरह पीला हो रहा था। इस परिवार की अवस्था देख अरतैक का कलेजा मुंह को आने लगा।

अरतैक मन ही मन सोच रहा था—"इन लोगों के लिये क्या किया जाय? क्या मदद इनकी की जा सकती है?"

उसी समय पड़ोस से अलनज़र बे की अकड़ भरी आवाज़ और उसके घोड़े मालकौश की हिनहिनाहट सुनाई दे गई। अरतैक के कलेजे में घृणा और हिंसा की आग भड़क उठी—अभी जाकर इस कमबख्त से कहूँ, अगर तुझे जान प्यारी है तो एक ऊंट बोझ गेहूँ फौरन खादिम बाबा के घर

पहुँचा ! उसी समय ख्याल आया—अगर मैं न जाकर कहूँ और वे खादिम बाबा के यहां एक ऊट गेहूँ पहुचा ही दे तो क्या होगा ? दूसरों का क्या होगा ! एक खादिम बाबा का ही तो सवाल नहीं है ?

"खादिम बाबा"—उदास स्वर में अरतैक बोला—"कहो क्या हाल है ?"

शायद खादिम अरतैक की सहानुभूति का भाव समझ न पाया। दुखी आदमी चिड़चिड़ा हो ही जाता है —"हमारा क्या हाल है ! खादिम ने चिढ़ कर उत्तर दिया—"हाल है उनका जो समूर की टोपियां, लाल चोगे और काले चमकदार बूट पहन कर अकड़ते फिरते हैं। यों तो दुनिया के फिक्र हमें छोड़ जायगे या हम दुनिया को छोड़ जायगे।"—पल भर अरतैक की ओर देख वह फिर बोल उठा—"ऐसे भी आदमी हैं जो कन्धों पर निशान लगाये, कमर में तलवार लटकाये अकड़ते फिरते हैं"—वह कहकहा लगा कर हंस उठा बदहवास पागल की तरह !

खादिम की पागलपन की बातें और हंसी अरतैक के दिल में बर्छी की तरह धस गई। पीड़ा से उसका कलेजा ज़ोर से धड़कने लगा। अपना लाल चोगा उसे ऐसा जान पड़ा जैसे उसके शरीर से आग की लपटें उठ रही हों। उसका शरीर झुलसा जा रहा हो। वह खादिम की छोलदारी से झपटकर निकल गया परन्तु खादिम का पागलपन का कह-कहा उसका पीछा कर रहा था। वह कह-कहा हिचकियों और रोने की चिल्लाहट में बदल गया। अरतैक का हृदय असह्य पीड़ा से उसके हाथों से निकला जा रहा था।

अरतैक छोलदारियों की कतार के सामने से चला जा रहा था। छोलदारियों के सामने के चूल्हे और अगाठियां सूनी पड़ी थीं। इस बरस इन चूल्हों और अगीठियों में आंच नहीं जलाई जा रही थी। चूल्हे और अगीठियां उखड़ी और चिटकी हुई थीं। कहीं कहीं इन चूल्हों में चींटियों और दीमकों ने भिटे बना लिये थे। अरतैक इस उजड़ी, सोग मनाती बस्ती को देखता जा रहा था। उसके कानों में खादिम के कहकहे और आँसू भरी हिचकियां गूंज रही थीं। वह समझ नहीं पारहा था—कहां जाये, क्या करे ? सामने कच्ची दीवारों पर बनी एक झोपड़ी पर उसकी आँख पड़ी। कुछ लोग इस दीवार की टेक लिये घाम ले रहे थे।

दीवार के सहारे घाम में बैठे लोगों ने अरतैक को पहचान कर सलाम किया। इन लोगों के स्वर में कोई शिकायत या शत्रुता का भाव न था परन्तु अरतैक को उनकी उदास और निराश आंखें कहती हुई जान पड़ीं—"दोस्त

पिछले साल तुम भी हमारे साथ इस झोपड़ी में पड़े थे । तुम्हीं ने तो आज़ादी, इन्साफ और ज़ुल्म का मुकाबिला करने की बातें करके हमारे दिलों को बेचैन कर दिया था । अब तुम भी अफ़सर बन बैठे, कन्धों पर निशान लगा कर । शायद तुम हम पर रोब जमाने आये हो ।"

"क्यों मैंने यह चीथड़े लाद लिये हैं । यह पोशाक पहन कर यहां गाँव में क्यों आया । अशीर ने ठीक ही किया, उसे मैंने कपड़े बदलने के लिए दिये तो उसने नहीं बदले । मैंने क्या मूर्खता की ?" वह अपने कीमती कपड़ों की परवाह न कर उन लोगों के बीच धरती पर आ बैठा ।

चरखेज़ ने अपना लबादा उतार अरतैक के लिये बिछाते हुये कहा—"यह लो, तुम इस पर बैठो । धूल में तुम्हारे कपड़े खराब हो जायेंगे ।"

अरतैक को चरखेज़ की बात में घृणा और अपमान मालूम हुआ । खिन्न होकर वह बोला—"चरखेज़ आगा, मेरे कपड़ों पर मत जाओ । मैं वही पुराना अरतैक हूँ । मेरा दिल तो नहीं बदल गया ।"

उसी समय अशीर भी आ पहुंचा । लोग उसे देख खुश होकर उठ खड़े हुये । अशीर के कपड़े उन लोगों को और भी विचित्र जान पड़े । वे उससे मज़ाक करने लगे—"अशीर तुम तो पूरे पूरे रूसी बन गये ।"

"हमने समझा था कि चर्नीशोव ही आ रहा है ।"

"हमने तो समझा कि रेल का गार्ड आ रहा है ।"

"कारखाने का मज़दूर लगता है ।"

"मैं रूसी बन गया तो कौन बड़ी बात है !"—हँस कर अशीर बोला—"तुम अरतैक को देखो, वह तो खान बन गया है ।"

अरतैक पहले ही चिढ़ा बैठा था । बिगड़ कर बोला—"अब यह बकवास बन्द करो ।"

"देखलो, अभी से रोब जमा रहा है ।"—अशीर और भी हंस दिया ।

अरतैक गम्भीर हो गया—"तुम्हारा मतलब क्या है ? साफ़ साफ़ क्यों नहीं कहते ? तुम लोगों की मुसीबत की बात कह रहे हो ? संगठित होने को कहते हो ? तो आओ, चलो हम तुम्हारे पीछे हैं । तुम से नहीं हो सकता तो मेरे पीछे आओ ।"

"तुम्हारी बात मैं समझा नहीं"—अशीर उसकी ओर देख कर बोला—

"मैं सदा तुम्हारे पीछे साया की तरह चला हूँ, अब भी तैयार हूँ। यह सब लोग भी तैयार हैं। और अब तो तुम अफसर हो ही! हुक्म करो! सब लोग तैयार है।"

अरतैक क्रोध में काँप उठा। वह चाहता था अशीर को और कड़ी बात कहे। उसके होंठ और हाथ फड़क उठे। आस पास बैठे लोग पहले मज़ाक से खुश हो रहे थे परन्तु बात बिगड़ती देख गम्भीर हो गये। बीच में बोल कर चरखेज़ ने बात बदली—"अशीर, तुम रहे कहाँ बरस भर? क्या क्या देखा सुना?" फिर अकाल की बात चलने लगी कि इस मुसीबत के समय किसानों कि सहायता कैसे हो सकती है?"

"अगर तुम लोग तैयार हो तो राह मैं बताता हूँ"—अरतैक बोला।

"हम लोग सदा तुम्हारे पीछे रहे हैं और अब तो तुम जो कहो .. " कई आदमी एक साथ बोल उठे।

"गल्ले के लिये दूर जाने की जरूरत क्या है। गल्ला तो साल भर के लिये यहीं मिल सकता है।"

लम्बी लम्बी भौं वाला बूढा तैयारी से उठ कर बोला—"यही हो जाय तो हम लोगों की जान बच जाय! बताओ कहां है गल्ला?"

"गल्ला और कहाँ होगा? अलनज़र की खत्तियों में खूब भरा है।"

"अलनज़र ने क्या गल्ला हम से उधार लिया था कि अब लौटा देगा?"—चरखेज़ ने पूछा।

"अलनज़र ने हमारे गल्ले की डकैती की थी, हम उससे माँगने नहीं जा रहे हैं।"

"अलनज़र अज़ीज़खाँ के वज़ीरों में है।"

"वज़ीर नहीं वह ज़ार हो जाय! हम चोरी से छिपाया गल्ला निकाल कर भूखों को देंगे।"

"अज़ीज़खाँ की सोच लो!"

"अज़ीज़ अपनी खुद सोचता रहेगा।"

अशीर उठ कर खड़ा हो गया—"ठीक है दोस्तो, अरतैक हमारा पुरान मुखिया है।"—उसने अरतैक की पीठ थपथपा दी।

पहले कभी कोई बे लूटा न गया हो ऐसी बात तो न थी फिर भी बात

मामूली भी न थी। यह बात मजहब, और शरिअत के खिलाफ थी। इस्लामी रिवाज़ के भी खिलाफ थी। अलनजर क्या चुपचाप लूटा जाने के लिये तैयार हो जायगा? दो चार दस की जान ज़रूर जायगी! पर किसानों की जानें तो यों भी जा रही थी। अलनज़र को शायद भूखे मरते गरीबों पर तरस ही आ जाय, या वह भीड़ देख कर ही डर जाय । आदमी अपने घर वालों को भूखा मरने दे तो भी गुनाह है। भूखा मरे, दोजख भी जाय। इससे तो आदमी लूटने का ही गुनाह सिर ले ले। भूखे किसान यही सब बातें सोच रहे थे। कुछ बड़े बूढे घबराये भी परन्तु बाकी सब लोग बे के यहां चल कर गल्ला निकलवाने के लिये तैयार हो गये। बात तुरन्त ही गाँव भर में फैल गई और भीड की भीड लोग बे के खेमों की ओर चल दिए।

भीड़ के चढ़े आने की खबर बे के यहां पहुच गई थी। उसने अरतैक के कन्धों पर लगे हरे निशानों की ओर देखा और अशीर के रूमी मजदूर के कपड़ों की ओर भी नजर दौड़ाई। भय और घबराहट से उसकी भौं और होंठ थिरक रहे थे। यह क्या होने जा रहा है! वह बार बार मन में सोच रहा था।

अरतैक आगे बढ कर बोला—"बे आग़ा, हालत तुम जानते ही हो! किसान एक एक एक करके भूख से मरते जा रहे हैं रोज़-रोज़ इतने आदमी मर रहे हैं कि कब्रें खोदना भी मुश्किल हो गया है। जो आज चलते फिरते दिखाई भी दे रहे हैं, समझलो कल यह भी कब्र में लेट जायंगे। सभी लोग जानते हैं तुम बड़े दयालू हो इसी लिये सब लोग तुम से मदद मांगने आये हैं। अगले साल फसल पर हम तुम्हारा गल्ला दाना दाना चुका देंगे। देखो तो इन लोगों की तरफ़! क्या हालत हो रही है सब की?"

ज़माना बदल चुका था। एक साल पहले लोग ऐसा साहस करते तो वे भीड़ को गाली दे दुत्कार देता, भाग जाओ यहाँ से यह गल्ला तुम्हारे बाप का है! और गोली चला कर इन्हें भून डालता परन्तु इस समय उसे दूसरे ही ढग से बात करनी पड़ी—"भैया, मैं क्या नहीं देख रहा हूं। पर कहीं धरती में से गल्ला निकल सकता है! इतना ही मेरे बस में होता तो मैं भला लोगों को दुखी होने देता! बाँटता और असीसें लेता। मेरे पास है ही क्या? मेरे पास तो जो कुछ था, कभी का बाँट चुका अब तो सब मिला कर एक बोरी गेहू भी न निकलेगा। इतना अगर बाँटने भी लगू तो चार-चार दाने भी हिस्से न पड़ेंगे। अब सब भाई आये हैं तो क्या करू! जो है पाव आध सेर

सभी को बराबर बाँट देता हू। न होगा थोड़ा खली में ही मिला कर काम आजायेगा।

अरतैक अभी तक मुस्कर हट बनाए था परन्तु बे की बात सुनकर उसके माथे पर बल पड़ गए। बे की ओर घूर कर उसने कड़ी आवाज में कहा—"यह लोग भिखमंगे नहीं हैं। पाव आध सेर की भीख मांगने नहीं आए हैं। यह लोग अपना गल्ला वापिस लेने आये हैं जो तुमने पिछले साल झपट लिया था? तुम सीधे सीधे देते हो तो ठीक ही है। अगर अड़ियल टट्टू की तरह अड़ोगे तो हम उसी तरह इन्तजाम करेंगे।"

"भैया मैं तो कह चुका कि मेरे पास होता तो माँगने की जरूरत ही न पड़ती। कसम न खिलाओ, मेरी बात मानो। मेरे यहाँ गल्ला है नहीं।"

"बे आग़ा, बात बहुत होली, चलो खत्ती का दरवाजा दिखाओ। हम लोग खुद ही देख लेंगे।"

बातों से काम न देख अलनज़र ने तौर बदले। धमका कर बोला—"ज़बान सम्भाल कर बोलो। कौन हो तुम मेरा गल्ला लेने वाले? मेरे भी दो हाथ हैं। मैं भी अलनजर हूँ कुछ और न समझ लेना। कन्धों पर दो फीते क्या लगा लिए हैं तुर्रमखाँ बन बैठे हो। बहुत ज़बान चलाओगे तो यह निशान विशान फड़वा कर रख दूंगा।"

अशीर भीड़ में से आगे बढ़ आया और अलनज़र की ओर घूर कर बोला—"ओहो बहुत फाड़ना जानते हो? पहले मेरे ही कपड़े फाड़ लो।"

अशीर ने अपना तेल मे चीकट कोट उतार कर बे के मुह पर दे मारा। कोट में भरे गर्द और तेल की बू से बे को जोर की छींक और खांसी आ गई। इस अपमान से क्रुद्ध हो वह अशीर पर झपटा परन्तु अशीर ने उससे पहले ही एक घूसा उसके मुह पर जोर से दिया। अलनरज़ ने खेमे के कोने से लाठी उठाई परन्तु अरतैक ने लाठी उसके हाथ से छीनली। अशोर फिर उसकी ओर झपटा परन्तु इस बार चरखेज़ ने उसे थाम लिया। बे सहायता के लिये ज़ोर से पुकार उठा—"मावेद हो। मर्दों हो, दौड़ो!"

बे की चीख पुकार मुहम्मदवली खोजा ने अपने खेमे में सुनी। वह कपड़े उतार कर लेटा हुआ आराम कर रहा था। पुकार सुन एक तहमत लपेटे ही दौड़ा आया। आ कर उसने देखा भीड़ बे को घेरे खड़ी है और उसके हाथ पांव बांधे जा रहे हैं। यह देख खोजा चुपचाप उल्टे पांव अपने

की ओर भाग गया।

हल्ला सुन बे के घर की स्त्रियां दौड़ी आई। मेहलो ने यह सब दृश्य देखा तो घबरा कर चीखने को ही थी। उसी समय समझ आया कि लोग स्त्रियों का कुछ नहीं कह रहे हैं तो यह तमाशा देख उसके ओठों पर मुस्कराहट आ गई। अतैंगे-सहरी को लोगों की इस हरकत पर गुस्सा आ गया। वह झपट कर अरतैक का मुह नोच लेने को ही थी कि उसका भी विचार बदल गया।—"अच्छा है, ज़रा इसका मिजाज़ दुरुस्त हो जाय, बहुत चीखा करता है।" उसने सोचा।

बेगम शादाब रोती हुई अरतैक से बोली—"क्या कर रहे हो बेटा, शरम नहीं आती तुम्हें! तुम्हारे बाप की उम्र का है! तुम उसकी दाढी नोच रहे हो? बेचारे पर रहम करो! तुम्हारा अपना घर है भीतर आ कर बैठो, तुम्हारे खाने पीने के लिये लाती हू।"

मावेद भी शोर सुन खेमे की आखिरी छोलदारी से भागा हुआ आया और बोला—"हटो पीछे, खबरदार कौन है! खबरदार अगर मेरे बाप को हाथ लगाया!"

मावेद अरतैक की ओर दौड़ा परन्तु अशीर ने उसे बीच ही मे रोक उसकी गर्दन दोनों हाथों मे लेली। चरखेज़ ने भी उसे थाम लिया। दोनों मावेद को खींचते हुये एक ओर ले गये। अशीर ने मावेद की आँखों में आँखें डाल धमका कर पूछा—"अबे बेवकूफ, यह लोग तेरे फायदे के लिये लड़ रहे है और तू इन्हीं पर चोट कर रहा है। सिर घूम गया है तेरा!"

चार बरस गुलामी करके भी तुझे होश नहीं आई?"

"तुम समझते हो मैं यहाँ शौक से पड़ा हूँ?"

"तो यहाँ पड़ा क्यों है?"

"मावेद चुप रह गया। अशीर भी उसका भेद समझ न पाया और मावेद की ओर देखता रहा और बोला—"अगर तुम हम लोगों के साथ हो तो बताओ अनाज की खत्ती कहाँ है?"

मावेद ने चारों ओर नजर दौड़ाई। उसके मन से बे का आतंक अब भी दूर न हुआ था और मन में बे से बदला लेने की इच्छा भी जाग उठी।

अशीर ने उसका अभिप्राय समझ कर कहा—"कोई नहीं देख रहा है। भरोसा रखो मुझ पर!"

"मेरा हिस्सा मिलेगा ?"

"जरूर !"

'मैं खत्ती बताये देता हूँ परन्तु तुम खत्ती खोलोगे तो मैं हो हल्ला और मार पीट करूगा। ताके बे को शक न हो।"मावेद ने आँख से मालमवेशा के बंधने की जगह की ओर इशारा कर दिया।

अशीर समझ गया। उसने पूछा—'और कहाँ है ?"

मैं यही एक जगह जानता हूँ। यहाँ भी कम नहीं निकलेगा।

अलनजर के हाथ पांव बांध कर ईंधन के ढेर पर बैठा दिया गया था। यह किसी भी सवाल का जवाब न दे रहा था। वह सोच रहा था किसी तरह भाग कर अज़ीज़ के यहाँ पहुँच जाय। लेकिन गल्ले का तो दाना भी नहीं बचेगा। अज़ीज़ अगर इन सब को कत्ल भी करदे तो भी क्या ? मैं भिखमगा हो गया। और अज़ीज़ का भी क्या पता ? एक ज़माना था जब जार के कर्नल और दारोगा मेरी बात पर दौड़े आते थे। यह गाँव मेरे इशारे पर नाचता था। आज सब बरबाद हो गया...।

अरतैक ने किसानों को लेकर सारे खेमे की छोलदारियां छान डालीं परन्तु अलनज़र की ही बात ठीक हो रही थी। तीन बोरी से अधिक गेहूं न मिला। अतैरी ने अपने खेमे में किसी को घुसने न दिया। वह दरवाजे पर पांव जमाकर खड़ी हो गई और बोली—"यहाँ जो आयगा सिर काट लूंगी।"

अरतैक अतैरी को पहचानता न था—"यह औरत कौन है ? यह तो बे के घर की औरत नहीं जान पड़ती। इसे पहले कभी देखा नहीं—" उसने पूछा।

"यह बल्ले की बहू है, अतैरी ! अगेतों की लड़की !"

अरतैक एक औरत से क्या लड़ता, क्या बहस करता ? उसे अतैरी पर गुस्सा भी आया था।

"वाह यह त मेरी मौसी होती है"—अतैरी को सुनाकर अरतैक बोला—"ब्याह हुआ तो मैं था नहीं। नहीं तो यह सम्बध कभी न होने देता। वह निकम्मा आदमी ऐसी औरत के लायक है ?"

"अतैरी का चेहरा बदल गया। दरवाज़ा छोड़ एक ओर हो वह बोली—"अरे भाई भांजे के तो सात गुलामों को भी जगह देनी होती है।

आओ,-आओ, बैठो।" स्वय ही उसने छोलदारी के दरवाजे का परदा उठा दिया।"

अरतैक भीतर गया और एक नज़र में चारों तरफ़ देख बोला—"अच्छा मौसी, जरा बाहर के लोगों से निबटलू फिर बैठ कर बातचीत होगी।"

किसान छोलदारियों के आसपास, गढ़ों में और ऊंटों के बधने की जगह लाठियों से ठोक-ठोक कर छिपी हुई खत्ती खोज रहे थे। अशीर घूमता हुआ मालकौश के थान पर पहुंचा और जगह-जगह ज़मीन ठोक कर टोहने लगा। एक जगह पोल सुनाई दी। खोदने पर यहाँ खूब बड़ी खत्ती निकल आई।

किसानों ने जगह घेरली और फावड़े-बेलचे लेकर खत्ती खोदी जाने लगी। यह देख बे आपे से बाहिर हो गया। एक झटके से उसने अपने हाथों की रस्सी छुड़ाली और एक तलवार उठा भीड़ पर झपट पड़ा। गल्ले का नुक़सान उसे अपने खून का नुक़सान जान पड़ रहा था। बे की तलवार अरतैक के सिर पर पड़ती परन्तु अशीर ने पहले ही एक हाथ बे की कमर में डाल कर उसे उठा धरती पर पटक दिया।

मावेद बे की मदद के लिये दौड़ा। परन्तु लोगों ने उसे भी पकड़ कर बांध कर एक ओर रख दिया। घर की औरतें रोती हुई आईं और बे को लाश की तरह उठा कर भीतर ले गईं। अलैरी अशीर पर झपटी और उसका मुंह नोंचने लगी। अशीर ने उसे कमरबन्द से उठा नीचे पटक दिया। चोट खा वह ऐसे चिल्लाने लगी जैसे उसके गले पर छुरी रखी जा रही हो।

चरखेज ने बीच-बचाव किया—"अरे क्या कर रहा है? उसका पेट गिर जायगा। क्यों गुनाह सिर लेता है। छोड़दे इसे।"

पूरी भरी गल्ले की खत्ती देख किसानों की आँखें ऐसे चमक उठीं जैसे बच्चे मिठाई को देख कर किलक उठते हैं। उनकी महीनों की दबी भूख भड़क उठी और आतें कुलबुलाने लगीं। स्त्रियां और बच्चे बोरियां ले लेकर दौड़ पड़े। खादिम बाबा की घरवाली और लड़की दो बोरियां और दो चदरें लेकर आईं।

खादिम अरतैक की ओर उंगली उठा कर बोला—"भैया अरतैक, भूलना नहीं। सांझे हिस्से के साथ बे के यहाँ से मेरा और भी निकलता है।"

"खूब याद है, बाबा"—अरतैक ने उसे विश्वास दिलाया—"तुम्हारा दोहरा हिस्सा रहा।"

खत्ती के चारों ओर मेला सा लग गया। अरतैक ने भीड़ को चुप रहने और बारी-बारी से आकर अपना हिस्सा लेने के लिये कहा। वह स्वयं खड़ा हो हिस्सा बांट कराने लगा।

अलनज़र अपनी छोलदारी में लेटा अनाज पाने वालों की प्रसन्नता भरी किलकारियां सुन रहा था। उसके कलेजे पर छुरियां चल रही थीं। इस खत्ती पर उसने बड़ी आस बांधी थी। सोचा था एक-एक बोरी गेहू की कीमत एक-एक ऊंट लेगा। और दो पसेरी पर एक कालीन। किसी को सेर भर भी देगा तो चाँदी का गहना रखवा लेगा। उसका इरादा था कि शहर में एक बड़ी दूकान खोल कर एक आटे की चक्की लगायेगा। रूई बेलने का एक कारखाना भी वह खोलना चाहता था। लेकिन खत्ती लुटी जा रही थी ...।

उससे रहा न गया तो फिर उठा। एक पेंसिल और काग़ज का टुकड़ा ले वह खत्ती के पास जा खड़ा हुआ। गल्ला पाने वाले सभी लोगों को वह चेहरे से पहचानता था। वह काग़ज पर सब का हिसाब लिखता जा रहा था—मौका आयगा ते पूरा-पूरा वसूल करूंगा।

गल्ला घर-घर के आदमियों के हिसाब से बँट रहा था। अरतैक ने अपना हिस्सा नहीं लिया। उसने कहा—"मैं अपने चाचा के यहाँ खाता पीता हू मुझे अलग हिस्से की क्या जरूरत?" अशीर को उसने जबरन मज़दूरी की भरती के इनाम में और नये जोड़े कपड़े खरीदने के लिये दूना हिस्सा दिया। इस पर किसी को अपत्ति थी तो केवल अलनज़र को!

खत्ती में से साठ ऊट के बोझ का गल्ला निकला। गांव के किसानों की अलफ टल गई। सबको हिस्सा मिल जाने पर अरतैक ने मावेद के लिये भी एक हिस्सा बचा लिया था। इस पर भी अलनज़ार बे ने आपत्ति की—"यह किसका हिस्सा है?"

अरतैक ने मुस्करा कर उत्तर दिया—"बे आग़ा यह खुदा के नाम का है।"

१३

अरतैक की उजड़ी सी छोलदारी ऐना के आजाने से आबाद, गुलज़ार हो गई। लम्बी काली छोलदारी बाहर से देखने में बहुत बड़े लम्बे से काले सरबूज़ की तरह दिखाई देती थी पर भीतर से तरबूज़ के गूदे की तरह रंगीन थी। छोलदारी का फ़र्श, दीवारें और छत सब बढ़िया कालीनों से मढ़े थे। बीचों बीच एक बहुत कीमती कालीन था और अगीठी के समीप बैठने की जगह पर भी रेशमी गद्दियां सजी हुई थीं। जहाँ तहाँ रखी हुई बोरियों और थैलों पर भी कढ़ाई का बढ़िया काम था। ऐसा जान पड़ता था बाग़ और चमन अपने फूल लेकर यहाँ होली खेल गये हों। छोलदारी की इस शोभा की जान थी, रेशमी पोशाक़ पहने ऐना। उसके सिर पर भी रेशमी रुमाल बंधा रहता। माथे पर सुनहरी पटिया थी। पटिया से छोटे छोटे लटके लटकन उसके माथे पर झूमते रहते। अरतैक के लिये सब से बड़ा संतोष यह था कि छोलदारी की सब सजावट, कालीन और कसीदा ऐना के ही हाथों का बना हुआ था।

ऐना सुन्दर तो यों भी थी परन्तु नवेली बहू की पोशाक ने उसे और दमका दिया। अरतैक उसकी अदाओं को देखता रह जाता। उसकी चाल ढाल में एक अद्भुत कोमलता और लोच थी। चाय के लिये उसका समावार सजाना, चायदानी से प्यालों में चाय उड़ेलना ऐसे हल्केपन और सफ़ाई से होता कि देखते ही बनता। उसके चलने की आहट भी सुनाई न देती और कभी कोई चीज़ उसके हाथ से गिरकर या धक्के से भी अपने स्थान से हिल न पाती। उसकी सफ़ाई भी प्रशंसा के लायक थी। छोलदारी में कभी गंदगी या गड़बड़ न दिखाई देती।

ऐना का प्रभाव अरतैक की मां नूरजहाँ पर भी पड़ा। आराम, सफ़ाई और सुघड़पन से वह भी पहले से जवान जान पड़ने लगी। बेटे और बहू के सुख और संतोष से उसके भी ओठों पर मुस्कराहट बनी रहती। उसके

निराश और अंधेरा जीवन में फिर से सुख सतोष की किरणें चमचमा उठीं। शाकिरा पर भी ऐना का असर कम न था। नई रेशमी पोशाक में वह मा खूब फबती थी। वह अब पहले से कुछ गम्भीर हो गई। जवानी का आभास उस पर झलकने लगा था। ऐना उसे कसीदा सिखा रही थी। शाकिरा छोलदारी के एक कोने में बैठी घटों कसीदा काढ़ने में मन लगाये रहती। पड़ोसियों पर ऐना के प्रभाव का नूरजहाँ को अभिमान था। पड़ोस की स्त्रियां और लड़कियां उससे बात-बात में सलाह लेतीं और ऐना के बनाये कालीन और कसीदे नमूने के तौर पर गाँव भर में फिरते रहते। स्त्रियां आ आ कर उससे कालीनों के रगों के मेल और फूल डालने के बारे में राय ले जातीं।

ऐना अरतैक के लिये चाय बना कर लाती तो उसके पास ही बैठ जाती। अरतैक उसके गालों में पड़ते खोयों को देखता रह जाता।

"तुम तो बाहर ही बाहर रहते हो"—लजाते हुये ऐन बोली।

चाय समाप्त कर प्याला एक ओर रखते हुये अरतैक ने उत्तर दिया—"जानता हूँ तुम्हें बुरा लगता है। मुझे भी यह अच्छा नहीं लगता पर क्या करूँ ?"

"बात क्या है"

"क्या बताऊँ ? आज कल बड़े विकट समय हैं, रोज उलझनें पैदा हो रही हैं। सब बातें इस समय शहर में हो रही हैं। वहीं उलझा हुआ।"

"अरतैक जान, क्या शहर में घर से अच्छा लगता है?"।—ऐना ने पूछा

ऐना का कोमल हाथ अपने हाथों में ले अरतैक ने उत्तर दिया—"अच्छा तो क्या लगता है। मैं चाहे जो करूँ, जहाँ रहूं दिल मेरा यहाँ तुम्हारे पास ही रहता है।"

"यह तो है, परन्तु तुम यहाँ ही रहते तो अधिक अच्छा होता।"

"ऐना, अगर मैं जनता के काम छोड़ कर यहाँ आ बैठू तो बिलकुल बेमतलब, घर घुस्सू आदमी बन जाऊगा।"

"हाय, यह तो मैं नहीं चाहती। मैं तो चाहती हूँ तुम्हारा नाम हो, तुम बड़े बड़े काम करो। यह देख कर मेरा सिर ऊंचा हो जाता है। गांव भरके

लोग तुम्हारी इज्जत करते हैं। पर दिल तो चाहता ही है तुम अपने पास रहो।"

ऐना के विचार अपने ही जैसे देख अरतैक को और भी संतोष होता। वह हर बात में ऐना से राय ले सकता था। घर पर रहने की बड़ी इच्छा थी परन्तु घर पर बैठा रहता तो ज़िन्दगी क्या होती और ऐना की ही इच्छा कैसे पूरी होती।

चाय पीते पीते अरतैक ने मां और ऐना को अलनज़र बे का गल्ला छीन कर किसानों में बांट देने की बात सुनाई। नूरजहाँ घबरा गई— "हाय बेटा यह तूने क्या किया शरीयत में तो बे लोगों और मालिकों के माल को हाथ लगना हराम कहा है।"

"अम्मां, अगर किसी की जान बचाने के लिये चोरी भी की जाय तो शरीयत में ऐसी चोरी भी हलाल हो जाती है। और फिर हम लोगों ने चोरी कब की? यह तो किसानों का ही गल्ला था सो हमने वापिस ले लिया।"

"वाह, गल्ला अगर किसानों का ही था तो उस पर इतना झगड़ा, मार पीट, रोना धोना क्यों हुआ?"

"अलनज़र ने हम लोगों से गल्ला छीन लिया था तो हम लोगों ने क्या गाना बजाना किया था?"

"बे ने रुपया तो उधार दिया था लोगों को!"

"तुम्हें कितना मिला था?"

"मैंने, मैंने तो एक पाई भी नहीं ली!"

"तो फिर तुम्हारे खेतों का गल्ला कहां गया? मैं तो बरस भर मेहनत करके गया था? क्या कुछ भी पैदा नहीं हुआ?"

नूरजहाँ क्या उत्तर देती? अरतैक को बरस भर खेतों में मेहनत करते उसने देखा ही था। यह भी वह जानती थी कि उस साल उसने भूखे पेट ही रह कर बिताया था परन्तु यह वह न समझ सकती थी कि किसानों की कमाई बे ने क्यों कर हथियाली? वह सीधी बात समझती थी, पराई चीज़ चाहे किसी की भी हो, छीन कर लेना हराम है। नूरजहाँ को इस बात से संतोष था कि खादिम जैसे ग़रीब आदमी अब अगली फसल तक किसी तरह मौत से बच जायगे। यह भ ।उसे याद आने लगा कि बोरियों पर

बोरियां बे की खत्तियों में भरी गई थीं। बीच ही में उसका बुढ़ापे का लोभ जाग उठा—

"अरतैक, हमें कितना गल्ला मिला ?"

अरतैक मुस्करा दिया—"अभी तो मां हलाल हराम की बात कर रही थी और अब इसे अपने हिस्से की चिन्ता हो रही है।"

"मां तुम और ऐना ज़िन्दा रहो, मेरे हाथ पांव सलामत पाएं, हिस्से की फ़िक्र न करो। तुम लोग भूखी नहीं रहोगी।"

"हमें इतना मिल गया बेटा ?"

"तुम्हें ज़रूरत थी ?"

"ज़रूरत ? ज़रूरी चीज़ों की ज़रूरत का क्या कहना ? जितनी मिल जाय ?"

"शरीयत का ख्याल नहीं मां ?"

शरीयत की बात याद आजाने से नूरजहाँ ने दोनों हाथ ऊपर कर तौबा की और बोली—"नहीं भाई हम किसी दूसरे की चीज़ नहीं लेंगे। सोचा था, सब को मिला है तो तुम्हे भी हिस्सा मिला होगा इसीलिये पूछ रही थी।"

"क्यों अपना हिस्सा लेने में बुरा क्या था ? मैंने इसीलिये नहीं लिया कि जो लोग ज्यादा मुसीबत में हैं उन्हें कुछ और मिल जाय। हमारा तो काम चल रहा है।"

"नहीं बेटा, नहीं लिया तो भला ही किया। तुम्हारे पीछे मुझे फ़िक्र ही लगी रहती कि जाने इस बात का क्या अन्जाम ? तुम यह बन्दूक-तलवार और कंधों के निशान विशान भी हटादो बेटा, वापिस कर दो वह सब अपने मालिक को। और भले किसानों की तरह चुपचाप घर में रहो। अरे हल्ला मचाने से ही अगर कुछ होता हो तो दुनिया में तुम्हारे बिना भी हल्ला मचाने वालों की कमी नहीं है बेटा।"

"मैं ऐसा निकम्मा आदमी थोड़े ही हूँ कि चदरा तान कर पड़ा रहूँ और ज़िन्दगी बिता दू। मां, ज़िन्दगी तो कुछ करने धरने में ही है।"

"बेटा अपने घरका सा सुख सबर मारे मारे फिरने में कहाँ ?"

"मां बैठे बैल को कौन खिलाता है। बैठे रहने से सुख सबर कहाँ से

आ जायगा ? मैं घर ही बैठा रहता तो यह बहू तुम्हें कैसे मिलती ? क्यों ऐना ?"

ऐना आंख झपक कर मुस्करा दी। मुँह से कुछ बोली नहीं। मां ने उसे पुकार कर कहा—"तू ही क्यों नहीं समझाती इसे ? मारा मारा फिरेगा तो तेरी क्या जिन्दगी होगी ?"

"ऐना तो कहती है, यहाँ बैठे रहोगे तो तुम्हें कोई पूछेगा ही नहीं। पूछ लो न इससे क्या कहती है !"

"ऐना जान, सच तुम ऐसी बातें कहती हो ?"

"अम्माँ, बन्दूक की गोली भी बहादुर को पहचानती है, उससे बच कर निकल जाती है।"

"ओह बेटी, तो तू ही उसे बिगाड़ रही है। भाई, तुम लोग अब सियाने हो, भला बुरा समझते हो। पर बुढ़ापे में मेरा दिल बहुत घबराता है। कहीं मुसीबत में न फंस जाना ! मेरा तो दम निकल जायगा ..

१४

तेजेन लौट कर अरतैक ने देहात में अलनज़र बे के यहाँ से गल्ला लेकर भूखे किसानों को बाँट देने की बात अज़ीज़ को साफ़ साफ़ कह सुनाई।

अज़ीज़ की आँखें क्रोध में लाल हो गईं और माथे पर बल पड़ गये—"मैंने तो तुम्हें खबरदार रहने को कहा था"—वह कड़े स्वर में बोला।

शान्त स्वर में, बेपरवाही से अरतैक ने उत्तर दिया—"मैंने तुम्हें कोई वचन नहीं दिया था।"

अज़ीज़ का गुस्सा भड़क उठा—"मैंने तुम्हें किस बात से खबरदारी के लिये कहा था? बोलो!"

अरतैक के चेहरे पर भी सुर्खी आ गई। उसका भी मन चाह रहा था कि डँट कर जवाब दे—"मैंने जो चाहा किया, तुम से जो बन पड़ता है, तुम करलो! परंतु उसने क्रोध दबा कर, कुछ काँपते हुये स्वर में उत्तर दिया—"अज़ीज़खाँ मैं तुम्हारा साथ दे रहा हूँ इसका यह मतलब नहीं कि मैं कुछ देख, सुन नहीं सकता। मेरे भी दिमाग़ है। मैं मुर्दा नहीं हूँ। मेरे अपने भी ख्याल हैं। अच्छा बुरा भी समझता हूँ।"

"मैं मानता हूँ तुम्हारी बात... लेकिन तुम तो मेरे ही पाँव पर कुल्हाड़ी चला रहे हो!"—अज़ीज़ ने कुछ ठंडे होकर कहा।

"अज़ीज़खाँ यह बात नहीं है।"

"कैसे नहीं है यह बात!"

"अगर मैं तुम्हें नुकसान पहुँचाना चाहता तो मैं कुलीखाँ के यहाँ नौकरी कर सकता था। पिछले साल बग़ावत में मैंने तुम्हारा साथ दिया और अब मैं तुम्हारी ही फ़ौज में आया हूँ। तुम्हारे लिये मैं जान की जोखिम

उठा रहा हूँ। लेकिन एक बात साफ है कि मैं तुम्हारा गुलाम नहीं हूँ! यह बात साफ रहे कि मैं ग़रीब जनता के खिलाफ नहीं जा जाऊगा। अगर तुम्हें इस बात में एतराज़ है तो यह है तुम्हारी नौकरी!"—अरतैक ने अपनी बन्दूक और अफ़सरी की पेटी अज़ीज़खाँ के सामने पटक दी

अज़ीज़ ने सुर्ख आँखों से एक बार अरतैक की तरफ ताका और फिर सिर झुका लिया और सोचने लगा। उसके भरोसे के आदमी ने ही उसका हुक्म नहीं माना। इस मामले का तुरन्त ही पूरा पूरा फैसला होना चाहिए। वर्ना यह आदमी जाने क्या कर बैठे! इस आदमी का क्या भरोसा! इससे क्या फायदा! क्रोध के कारण अज़ीज़ के मुख से बात न निकल पा रही थी। उसी समय यह भी खयाल आया—अगर इसे मैं आज निकाल दूं और कल क़िज़िलखाँ भी मुझे छोड़ कर चलता बने तो क्या होगा! और यदि यह लोग मुझे छोड़ दुश्मन के साथ जा मिले? यह खयाल आते ही उसका गुस्सा दबने लगा। उसने यह भी सोचा—अरतैक को आस पास देहात के लोग चाहते हैं, उसकी इज्जत करते हैं। ऐसा आदमी मेरा साथ छोड़ जायगा तो इससे मेरी बदनामी ही होगी। इस समय मुझे जनता की सहानुभूति की ज़रूरत है। इस विचार में डूबा वह बहुत देर तक चुप बैठा रहा।

अज़ीज़खाँ सोच रहा था—अरतैक और अलनज़र दोनों में से वह किसी को भी छोड़ नहीं सकता और दोनों को सम्भाले रहना सम्भव नहीं। वह किसको सम्भाले और किसे जाने दे! उसे जान पड़ा अरतैक ही अधिक काम आ सकता है। अपना गुस्सा छिपा कर वह बोला—"अरतैक, जब हमारे असल खयाल एक हैं तो झगड़े की बात नहीं होनी चाहिये। तुम्हें यह करना था तो मुझे कह जाते एक अलनज़र क्या मैं सौ अलनज़र तुम पर निछावर करदू। अब तुम्हें कोई ऐसा कदम उठाना हो तो पहले मुझ से ज़रूर बात कर लेना ताकि मैं सब इन्तज़ाम रख सकूं और मुझे तुम्हें टोकना न पड़े। अब लोग क्या कहेंगे? कि अज़ीज़खाँ तो ज़ार से भी बढ़ कर ज़ुल्म कर रहा है। अपने साथियों को लूट ले रहा है।"

"चार पाँच लोग ऐसा कहें तो कहें, जनता तो तुम्हारा एहसान मानेगी।"

"शायद तुम्हरा ही खयाल ठीक हो! तुम लोग बाग़ की बात अधिक समझते हो। फिर भी होशियार तो रहना ही चाहिए।"

उसी समय अज़ीज़ को खयाल आया—"अगर अरतैक को ही अपनाना त यही हो। इस ज़िद्दी की बात ठीक भी है! एक अकेले जागीरदार का

नाराज़ होने दे कर हजारों किसानों को अपनी ओर खींच लेना कहीं बेहतर ! बे मुझे छोड़कर जा भी कहाँ सकता है ! बोलशेविकों के यहाँ उसका गुजारा कहाँ ! बे का तो गुजारा फिर भी हो ही जायगा । जरूरत तो है प्रजा को अपनी ओर समेटने की । इस मामले में मुझे दुश्मनों से पहले कदम उठाना होगा।"

अज़ीज़ गर्दन ऊंची कर गम्भीरता से बोला—"कुछ सिपाही साथ ले लो और मेरे साथ शहर चलो । हम लोग ग़रीब रियाया की हालत अपनी आँखों देखेंगे । आज शहर में एलान करवा दो कि जो लोग मुनाफाखोरी करके ग़रीब रियाया को भूखा मार रहे हैं, उन्हें अज़ीज़खाँ सख्त सजा देगा।"

अरतैक को विस्मय भी हुआ और सतोष भी । वह हुक्म पूरा करने के लिये तुरन्त उठ खड़ा हुआ ।

सिपाहियों की एक टुकड़ी से घिरे हुए अज़ीज़खाँ और अरतैक तेजेन के बाजारों में घूम रहे थे । एक बाजार के सिरे पर भीड़ का जमाव हो रहा था । भीड़ की ओर इशारा कर के अरतैक बोला—"यह देखो, भिखमगों का मेला।"

आकाश में बादल छाये हुये थे । कभी कभी बादलों की संध से सूर्य की किरणें चीथड़ों में लिपटे, भूख से सूखे लोगो के चेहरों पर पड़ जातीं और उनकी भयानकता को और बढ़ा देतीं । भीड़ टुकड़ों की तलाश में देहातों से घिर आये भूखे किसानों की थी । कुछ लोग चिल्ला चिल्ला कर अल्लाह की दुहाई देकर भूखे पेट के लिये कुछ मांग रहे थे । स्त्रियां और बच्चे निराश और व्याकुल होकर चिल्ला चिल्ला कर रो रहे थे । घुड़सवारों को देखकर भीड़ हाथ फैला चिल्लाती हुई इन लोगों की ओर दौड़ी—"हम भूख से मर रहे हैं, हमारे बच्चे मर रहे हैं । अज़ीज़ खां हम मर गये । हमारे पेट का ख्याल करो।"

अज़ीज़ यह दृश्य देख चुप रह गया । कुछ देर सोच कर अरतैक को समीप आने का इशारा कर वह बोला—"मैंने खुद आंखों देख लिया तुम ठीक कहते थे । इन कमबख्त जागीरदारों, रईसों और मुनाफ़ाखोरों का सब कुछ लूट कर गरीबों को बांट देना ही काफ़ी नहीं । इन बदमाशों को गोली मार कर सजा देना भी ज़रूरी है ।"

अज़ीज़ ने अरतैक को हुक्म दिया—"अभी हाल में सब गल्ले के व्योपारियों और सस्ती वालों का गल्ला, दुकानों का सब माल जब्त कर लो ।"

उसी समय कई दुकानों का गल्ला उसने अपने सामने भूखी भीड़ में बटवा दिया। कुछ गोदाम के ताले तुड़वा कर उसने अपने मोहरबन्द ताले लगवा दिये। यही इतजाम उसने बड़ी बड़ी दुकानों का भी किया।

गोतूर तेजेन का बड़ा भारी सौदागर था। जब उसका गोदाम ज़ब्त किया गया, वह हाथ फैलाकर दुहाई देता हुआ अज़ीज़ के सामने आया—"मालिक, मैंने तो तुम्हारी बहुत मदद की है। मेरा लाखों रुपया 'जीज़ाक' और 'फ़र्गना' में फसा हुआ है। मेरा दिवाला निकल जायगा तो तुम्हारा ही नुकसान होगा। मेरा तो जो कुछ है, तुम्हारा ही है। विलायत में मेरा लाखों रुपया मारा जा रहा है।"

अज़ीज़ ने चारों ओर खड़े लोगों को सुना कर उसे धमका दिया—"चुप रहो! तुमने ग़रीब रिआया का बहुत खून पिया है। लाखों की जान जा रही है, तुम्हें हुंडियों और दिवाले की फ़िक्र हो रही है।"

"मालिक तो मेरे माल की कीमत बाजार भाव से ही मिल जाय!"

"तुम्हारे माल की लागत की कीमत दे दी जायगी, लेकिन जब हमारे पास फालतू रकम होगी!"

गोतूर दुहाई देता हुआ अज़ीज़ का चोगा पकड़े खड़ा रहा। अज़ीज़ ने अपना घोड़ा बढ़ाया तो वह साथ साथ दौड़ने लगा। अज़ीज़ ने पीछे घूमकर एक सिपाही को हुक्म दिया—"अगर यह बदमाश अपनी दुकान की तरफ़ जाय तो इसे गोली मार दो"—और घोड़े को एड़ी लगा वह चल दिया।

गोतूर चिल्लाता रह गया—"अज़ीज़ खां, अपने ग़ुलाम पर रहम कर!"

तेजेन के सबसे बड़े आटा गोदाम और रोटी के कारखाने पर भी अज़ीज़ ने कब्जा करके इस कारखाने का नाम 'अज़ीज़ का तन्दूर' रख दिया। शहर भर में उसने डौंडी पिटवा दी—"देहात के भूखे किसान, और शहर के बेकार लोग जिन्हें रोटी की तगी हो, 'अज़ीज़ के तन्दूर' से आध सेर रोटी बिना दाम ले सकते हैं।"

अज़ीज़ "काफ़िला सराय" में लौटा तो बहुत उत्साहित था। मूंछों पर बल देकर वह अरतैक से बोला—"एक अलनजर को खत्ती ले लेने से क्या हो सकता था? गरीब भूखी जनता का पेट भरने का तरीका यह है!"

"मेरी सामर्थ और तुम्हारी सामर्थ में बहुत अन्तर है अज़ीज़ खां! मैं

इस पेड़ की जड़ खोद रहा था तुमने उसे उखाड़ फेंका।" अरतैक ने उत्तर दिया। अजीज़ की मुस्कराहट और झूठा अभिमान उसे भला न मालूम हुआ। वह दूसरे कमरे में जाकर सोचने लगा—अगर कुलीखां चर्नीशोव को न रोके होता तो जो कुछ अजीज़ ने आज भूखों की भीड़ देखकर किया, चर्नीशोव ने कभी का कर दिया होता। अज़ीज़ तो जो चाहे कर सकता है परन्तु चर्नीशोव हर बात के लिये कमेटी और पचायत का मोहताज है।

अरतैक खिड़की से सराय के फाटक की ओर देख रहा था। सामने अलनजर क्रोध से काले चेहरे से, पांव पटकता आता दिखाई दिया। अरतैक ने देखा वे सीधा अजीज के दीवान खास की ओर जा रहा है। वह जरूर उससे मेरी शिकायत करेगा। मन में उसने सोचा—कह लेने दो इसे जो कहना है। देखें इसकी बात सुनने के बाद अजीज क्या कहता है। अरतैक उठकर अपने सिपाहियों की तरफ़ चला गया।

अलनज़र ने रो रो कर अपने ऊपर बीती कहानी अजीज़ को सुनाई और अंत में आँसू पोंछता हुआ बोला—"अज़ीज खां, अरतैक ने मुझे लूट लिया, बात यहीं तक नहीं है। तुम यह सोचो, तुम्हारे नौकर ऐसे काम करेंगे तो तुम्हारी कितनी बदनामी होगी?"

मुस्कराहट छिपाकर अजीज़ बोला—"लेकिन बे आग़ा, तुम तो कहते थे कि तुम्हारे यहाँ इतना गल्ला था ही नहीं।"

"अरे कितना गल्ला था? कुछ भी नहीं! यह तो घर के लोगों का पेट काट काट कर मैंने जमा किया था कि कौन जाने आगे कैसे दिन आते हैं।"

"लेकिन हम लोगों ने तो यहाँ तय किया था कि जितना भी फालतू गल्ला मिले इकट्ठा कर भूखे ग़रीबों में बांट दिया जाय!"

"तुम्हारा जो भी हुक्म हो, हम मानेंगे लेकिन यह तो नहीं कि जो अवारा लौंडा चाहे आकर हम लोगों की बेइज्जती कर जाय! उतना गल्ला मैं, खुद ही ग़रीबों को बांट देता।"

"खुद तुमने कितना गल्ला ग़रीबों में बांटा था?"

"मैं तो देख रहा था कि जब तुम्हारा हुक्म हो.... !"

"अरतैक को यह मेरा ही हुक्म था कि रियाया के बिगड़ उठने से पहले ही बे का गल्ला ले लो!"

"मुझे ही हुक्म किया होता।"

"अब यह बात खत्म करो।"

अलनज़ार क्रोध में भरा केवल दांतों से होंठ काटता रह गया। वह फिर बोला—"खान, तुम कुत्ते को पुचकार पास भी बुलाते हो और फिर लाठी भी मारते हो।"

अजीज ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—"देखो बे आग़ा, अब इस बात को खत्म करो। हम लोग बहुत लम्बे सफ़र पर चल रहे हैं। छोटी मोटी चीजों के हाथ से गिरने और खो जाने के लिये क्या रोना धोना! कोशिश करो कि मजिल पर सलामती से पहुंच जायें। आज आटे का बड़ा गोदाम और रोटी का कारखाना मैंने ले लिया है। कल हम अज़ीमान की गल्ले की खत्तियां और आटे का कारखाना भी लेलेंगे। यह सब मिलाकर बहुत बड़ा कारोबार बन जायगा। यह काम मैं तुम्हारे ही हाथ में दे दूंगा। रुपये में से दस आना तुम्हें ग़रीबों में बांटना होगा बाकी से तुम्हारा नुकसान पूरा हो जायगा। रईसों का जो माल हम ले रहे हैं, सब पाई पाई चुका दिया जायगा। लेकिन अभी भूखे मरते ग़रीबों की तसल्ली के लिये रईसों को अपना माल देना ही होगा। तुमने दीवान में कहा था कि रियाया और रईसों में झगड़ा न होने देना चाहिये। यह झगड़ा बचाने के लिये तुम्हें ग़रीबों का खयाल करना होगा। मुझे खबर मिली है कि सोवियत पचायत में चर्नीशोव ने बे लोगों की दौलत जब्त करके गरीबों में बांट देने की बात रखी थी परन्तु कुशीखां ने यह बात होने नहीं दी। उन लोगों को झगड़ों में पड़ा रहने दो। उनके दांव हमें खेल लेने चाहिये। तुम समझते हो न? फिर इस ज़रा सी बात के लिये रोना धोना क्या?… ।"

जब अलनजर बे "काफ़िला सराय" से लौटा तो वह बहुत प्रसन्न था। इसके बाद अरतैक से मुलाकात होने पर भी उसने बीती बातों और बुरे व्यवहार की कोई शिकायत न की। वह अरतैक से ऐसे मिला कि शिकायत की कोई बात हुई ही न हो।

१५

अक्टूबर, १६१७ की क्रान्ति से रूस में किसानों-मजदूरों की सोवियत (पचायती) सरकार तो क़ायम हो गई परन्तु उसके शत्रुओं की कमी न थी। सोवियत के यह शत्रु समाज के सभी भागों से इकट्ठे हो कर नयी सरकार के क़दम न जम सकने देने की कोशिश कर रहे थे। विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियाँ इन्हें धन और हथियारों से मदद देने के लिये आ पहुँची थीं, जनता को सरकार के विरुद्ध भड़काने के लिये सभी सम्भव प्रयत्न किये गये। धर्मान्ध लोगों को धर्म की दुहाई देकर भड़काया गया। अनाज और जिन्दगी के लिये बहुत ज़रूरी चीजों को जला कर बरबाद करके, जनता को भूखा मार कर यह समझाने की कोशिश की गई कि सोवियत सरकार उन्हें ज़रूरी चीजें पहुंचाने के अयोग्य है। सोवियत का समर्थन करने पर गांवों और बस्तियों को जला कर लोगों को धमकाया गया और समझाया गया के यह सरकार तुम्हारी रक्षा करने में असमर्थ है। इन सोवियत विरोधी शक्तियों के मुख्य गढ़ रूस की सीमाओं पर फैले हुये थे।

दिसम्बर के महीने में मध्य एशिया के मुस्लिम देशों में खास बेचैनी फैल रही थी। इन देशों की मुस्लिम जनता के प्रतिनिधियों की एक कान्फ्रेंस कोकन्द में की गई। कहने को तो यह कान्फ्रेंस मुस्लिम जनता के प्रतिनिधियों की थी। शिक्षित मुसलमान, उनके मौलवी और उलमा उसमें भाग ले रहे थे परन्तु वास्तव में इस कान्फ्रेंस का आयोजन विदेशी राजनीतिज्ञों की सलाह से मध्य एशिया के बे लोगों (जागीरदारों), कारखानादारों, बड़े बड़े व्योपारियों और विदेश में काराकुल खालों का व्योपार करने वाले लखपतियों ने ही किया था। ज़ार के पुराने रूसी अफ़सरों ने भी आकर इस कान्फ्रेंस में भाग लिया। लेकिन यह सब रहस्य जनता से छिपा कर रखे गये। इस धार्मिक कान्फ्रेंस में इस प्रश्न पर विचार किया गया कि

नयी स्थापित सोवियत सरकार को असफल करने के कौन उपाय सम्भव हो सकते हैं ?

इस कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिये तुर्कमानिया के रईस लोग अश्काबाद में जमा हुये और एक स्पेशल ट्रेन से कोकन्द पहुंचे। यह स्पेशल ट्रेन तुर्की कालीनों से मढ़ कर सजाई गई थी। इन प्रतिनिधियों का प्रधान, ज़ार के समय का एक बड़ा फौजी, तुर्कमान अफसर निमाज़ बेग था। निमाज़ बेग ज़रा छोटे क़द का दुबला पतला आदमी था। वह लाल मखमली चोगा और सफ़ेद भेड़ी की कीमती टोपी पहने था। उसकी कमर में रेशमी पट्टे पर चमड़े की पेटी से चाँदी की म्यान में टेढ़ी तलवार लटक रही थी। खूब ऊंचे ऊंचे कद्दावर सिपाहियों का दल उसका शरीर रक्षक था। लोग उसे 'बयार' (सर्दार) कह कर पुकारते थे और झुक झुक कर सलामें करते थे।

यह स्पेशल ट्रेन तेजेन स्टेशन पर भी खड़ी हुई। अज़ीज़ खां गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। निमाज़ बेग अपनी गाड़ी से उतर कर प्लेटफार्म पर आया और अज़ीज़ को अपने साथ गाड़ी मे ले गया। वे दोनों मित्र थे परन्तु मुलाकात पहली बार ही हुई।

दोनों की खूब घुटने लगी। निमाज़ बेग अज़ीज़ के आदर सत्कार में शराब पेश करना चाहता था। परन्तु झिझक गया—इस्लाम में शराब हराम ठहरी—उसने उसकी खातिर शिकजबीन और सोडे से ही की। अज़ीज़ ने इससे पहले कभी शाही गाड़ी देखी नहीं थी। वह घूर घूर कर गाड़ी के सामान को देख रहा था और मन में सोचता जा रहा था—यह है जिन्दगी! जिन्दगी के मजे लेना तो यह सरदार लोग ही जानते हैं।

बातचीत में अज़ीज़ ने कहा—"मैं सोच रहा हूं कि कुली खां की कमान में सोवियत की जो फौज तेजेन में है, उसे जल्दी ही खतम करदू !" निमाज़ बेग ने कुछ दिन सबर करने की सलाहदी और बोला—"अज़ीज़ खां, हम तुर्कमान लोगों की डेरावासी कौम दो दिन में बनने-बिगड़ने की चीज़ नहीं है। अभी सबर करो। कोकन्द से लौट कर मैं तुम्हारे साथ तेजेन में ठहरूगा। तभी इन बातों को तय करेंगे।"

दोनों ही एक दूसरे का मन लेने के लिये चतुरता से बात कर रहे थे और अपनी अपनी राय बनाते जा रहे थे। निमाज़ बेग ने सोचा—अगर अज़ीज़

खां को हाथ में किये रहे तो तुर्कमानिया ही नहीं बल्कि तुर्किस्तान में भी अपनी सल्तनत बढ़ा सकेंगे।

और अज़ीज़ ने सोचा—यह निमाज बेग, पतलून पहरने वाला नये ढग का आदमी है। यह फिर से ज़ार के ढंग की सल्तनत कायम करने की कोशिश करने वालों में से है। लेकिन यह आदमी काम का है। इस पर भरोसा किया जा सकता है। एक बार मेरे पांव जम जांय तो यह मेरी खुशामद करता फिरेगा।

दोनों अपनी अपनी चतुरता में अपने स्वाथ पूरे करने की कल्पना कर रहे थे :—निमाज़ बेग ज़ारशाही को फिर से जमाने की और अज़ीज़ अपनी स्वतन्त्र सल्तनत बना लेने की।

धार्मिक प्रतिनिधियों के दल में अज़ीज ने अपनी ओर से मदीर ईशान का नाम लिखवा दिया। तुर्कमान राष्ट्रीयता के दो महान नेताओं की मुलाकात समाप्त हो गई।

कोकन्द की कान्फ्रेंस में वही हुआ जो कि उसका प्रयोजन था—सोवियत सरकार को समाप्त करने के लिये, सोवियत से सभी सम्भव उपायों से लोहा लेने का निश्चय किया गया। तुर्कमानिस्तान में स्वतन्त्र राष्ट्रीय पूंजीवादी सरकार की घोषणा कर दी गई। एक गुप्त कान्फ्रेंस में तुर्कमानिया की नयी स्थापित सरकार के प्रधान ने यह भी सूचना दी कि एक बहुत बड़ी साम्राज्यवादी शक्ति हमारी नयी स्वतंत्र सरकार को आवश्यक आर्थिक सहायता, और जरूरत पड़ने पर सैनिक सहायता भी देने के लिये तैयार है। तुर्कमानिया के जागीरदारों, कारखानादारों, व्योपारियों और ज़ार के समय के अफसरों ने तुरत इस सरकार के प्रति राजभक्ति की शपथें भी लेलीं। एक सशस्त्र सेना बनाने का फैसला किया गया। इर्गाश बेग के नेतृत्व में स्थानीय डाकुओं और लुटेरों की एक सेना तुरंत तैयार भी हो गई।

घोषणा कर दी गई कि १६ दिसम्बर को पैगम्बर का जन्म दिन मनाया जायगा। देश भर में छुट्टी रहेगी और उस दिन सब जगह सोवियत विरोधी सेना का प्रदर्शन किया जायगा।

तेजेन में भी प्रदर्शन करना तय हुआ। शहर सोवियत को अज़ीज के षड्यन्त्र का भेद मिल गया। सोवियत ने भी तुरत पचायत की बैठक की और अजीज के व्यवहार तथा प्रदर्शन के सम्बध में विचार किया गया।

चर्नीशोव ने कहा— 'मुझे विश्वास है इस मौके पर अज़ीज़ सोवियत स कोई झगड़ा नहीं करेगा। वह अपना धार्मिक दिन मनाना चाहता है। इसलिये सोवियत सेनाओं को शहर में सामने लाकर उसे भड़काना ठीक नहीं। परन्तु हमे अपनी सेना को अवसर के लिये तैयार ज़रूर रखना चाहिये।"

एक दूसरे मेम्बर ने कहा—"धार्मिक दिन का जलसा केवल बहाना है। अज़ीज़ इस मौके पर सोवियत पर अवश्य हमला करेगा। वह अपना आतंक बैठाना चहता है। हमे उसका जवाब हथियार से ही देना होगा।

कुली खां ने ज़ोर दिया—"नहीं, हमें उससे पहली रात ही अज़ीज़ के डेरे पर हमला करके झगड़े की जड़ काट देनी चाहिये।"

चर्नीशोव ने फिर भी ज़ोर दिया कि—"अपने पर आक्रमण हो तो हमें उसका पूरा जवाब देना चाहिये परन्तु स्वय लड़ाई नहीं छेड़नी चाहिये। क्योंकि उसके विचार में उस समय तेजेन में लाल फौज की स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह अज़ीज़ की सेना को समाप्त कर सकती।

कुली खां अपनी बात पर अड़ा रहा—"लाल फौज का कमिस्सार मैं हूं"—वह बोला—"सोवियत माने या न माने। मैं दिन चढ़ने से पहले अज़ीज़ के डेरे पर हमला करूंगा और उनके पैगम्बर के जलसे को ग़म बनाकर रखदूंगा।"

केलुई खां ने अपनी मोंछ ऐंठ कर कहा—"कुली खां तुम लाल फौज के कमिस्सार हो और मैं कमाण्डर हूं। मुझे तुम्हारी राय जच रही है। लेकिन सुबह तक प्रतीक्षा करना फिज़ूल है। हमें फौरन ही, अभी रात में ही अज़ीज़ खां का बूड़ा समेट लेना चाहिये।"

चर्नीशोव ने उठ कर उन दोनों का विरोध किया—"कुली खां, तुम्हारा इस तरह जिद्द करना बहुत बुरी बात है।"—चर्नीशोव ने डांटा—"पिछली बार जब सोवियत जागीरदारों का अनाज जब्त करके ग़रीब किसानों में बांटने की तजवीज़ कर रही थी, तुमने उसका विरोध किया। परिनाम यह हुआ कि अज़ीज़ खां ने हमारे दाव का फायदा उठा लिया और उसने थोड़ा बहुत अनाज ज़ब्त करके, किसानों में बांट कर भोले किसानों की सहानुभूति अपनी ओर करली। यह हमारी भारी भूल थी कि सोवियत ने तुम्हारी बात को महत्व दिया। अब तुम फिर वही मूर्खता कर रहे हो!

तुम चाहते हो, सोवियत सेना आत्म-हत्या कर ले ? चाहे तुम सेना के कमिस्सार हो और केलुई खां कमाण्डर है परन्तु जब तक सोवियत फैसला नहीं करेगी और प्रादेशिक सोवियत का समर्थन नहीं होगा, हमारी सेना एक क़दम नहीं हिला सकती !"

"तुम चाहे जो कहो,"—कुली खां ने मुट्ठी बंधा हाथ उठा कर कहा—"सेना और हथियार तो मेरे हाथ में हैं !"

"बको मत"—चर्नीशोव आपे से बाहर हो गया—"मगर ज़ुबान चलाओगे तो अभी गिरफ्तार कर लिये जाओगे।"

अता दयाली केलुई खां के नीचे, लाल फौज का छोटा कमाण्डर था। उसने विस्मय से कुली खां और केलुई खां की ओर देखा और खिन्न स्वर में बोला—"क्या हो रहा है यह ? क्या तुम लोग पागल हो गये हो ? कुली खां, क्या लड़ने का बहुत चाव बढ़ रहा है ? आओ देखलूं तुम कितने बहादुर हो ? चर्नीशोव ज़रा इसका मिज़ाज़ ठण्डा होना चाहिये !"—आखिर हो क्या गया इन लोगों को ...?"

अता दयाली बहुत चतुर आदमी नहीं समझा जाता था परन्तु अवसर पर सीधे आदमी भी बहुत ढंग की बात कह जाते हैं। अता दयाली की बात से कुली खां वास्तव में ठण्डा पड़ गया और गर्दन झुका चुप रह गया। वह मन में सोचने लगा—चर्नीशोव और सोवियत से बिगाड़ कर उसके लिये पनाह कहां है ? अज़ीज़ तो उसे ज़िन्दा ज़मीन में गाड़ देगा। मन ही मन वह अपनी भूल पर पछता ज़रूर रहा था परन्तु सब के सामने अपनी ग़लती मान लेने के लिये भी वह तैयार न था। वह चुप बैठा रहा।

अब चर्नीशोव धीमे स्वर में अपनी बात समझाने लगा—"अव्वल तो हमारी सेना इतनी नहीं कि हम अज़ीज़ की सेना को सम्भाल सकें। दूसरे इस समय शहर में किसान भरे हुये हैं। होगा क्या ? बैल बैल लड़ेंगे और घास का सत्यानाश होगा। दोनो तरफ़ से गोली चलेगी और किसान मरेंगे। इस समय तो अज़ीज़ छेड़े तो भी हमें तरह दे जानी होगी। हाँ, अगर वह हम पर हमला ही कर बैठे तो सामना करना ही होगा !"

मौका देख कुली खां ने चुटकी ली—"तो हम लोग जा कर अज़ीज़ के सामने घुटने टेक कर उसी का हुक्म क्यों न मानने लगें।"

"नहीं इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं"—चर्नीशोव बोला—"हमें

समय देख कर चलना होगा। अज़ीज़ को जनता की शक्ति के सामने झुकना पड़ेगा परन्तु ढंग से। और अगर आप लोग इसके लिये जल्दी चाहते हैं तो मैं अश्काबाद जा कर इसका प्रबंध करता हूं।" सोवियत ने चर्नीश्रोव की ही बात मानी। कुली खां की बात नहीं मानी गई।

आकाश से बूंद गिरे बरस भर से अधिक हो गया था परन्तु उस रात खूब खुल कर बरसा। संध्या से ही आकाश पर बादल घिर आये थे और हवा में भी नमी थी। आधी रात से खूब बरफ गिरने लगी। धाम से झुलसी धरती पर बरफ की मोटी रजाई बिछ गई। सुबह जब मुर्गों ने तीसरी बार बांग दी, पौफटने के समय सहसा बादल छंट कर नीला आकाश उघड़ आया। सुबह आते जाते लोगों के पांव नीचे बरफ़ खसखसा रही थी और आदमियों के मुंह से भाफ़ के बादल उड़ रहे थे।

एक पहर दिन चढ़ते चढ़ते शहर के मुस्लिम जगत में हल चल मच गई। अज़ीज़ के समर्थकों का मजूमा और मौलवी गलियों-बाज़ारों में दिखाई देने लगे। अज़ीज़ भी दल बल सहित बाज़ार में आ गया। उसके दल के आगे-आगे मदीर इशान हाथ में हरा झंडा लिये चल रहा था।

छोटे से तेजेन शहर का चौक बाज़ार भीड़ से खचा खच भर गया। जुलूस गिरजा-के चौक से कराबाली मसजिद की ओर बढ़ रहा था। मदीर ईशान की आँखों से आँसू बह रहे थे और वह ऊंचे स्वर में चिल्ला रहा था—"ओ वल्लाह ...... ओ अल्लाह ...... ओ मुहम्मद !"

अज़ीज़ के दूसरे बड़े दरबारी आल्ती सोपी ने नारे लगाये—"इस्लाम ज़िन्दाबाद ! अज़ीज़ खां ज़िन्दाबाद !"

बरफ़ को कुचल कर चलती हुई भीड़ सर्दी से कांप रही थी और लोग मदीर ईशान और आल्ती सोपी के पीछे क़ुरान पाक की आयतें दोहराते हुये कराबाली मसजिद की ओर बढ़े जा रहे थे। मसजिद के पास पहुंच कर मदीर ईशान ऊंचे चबूतरे पर चढ़ गया। अपने हाथ का झंडा उसने यारमुरा काज़ी और अलनज़र बे को थमा दिया। आल्ती सोपी मीनार पर चढ़ कर तीखी और ऊंची आवाज़ में अज़ां की बांग देने लगा—"अल्ला हो अकबर ......!"

अचम्भे में खड़ी भीड़ समझ नहीं पा रही थी कि हो क्या रहा है ! अज़ीज़ को नमाज़ और अज़ां से क्या मतलब ! ...... "क्या इस्ल मी सल्तनत

क़ायम हो रही है ?" 'ज़रूर यही बात है । नहीं तो इस ज़माने में दुनिया भर, को आध-आध सेर रोटी की खैरात कौन बांट सकता था ? अल्ला का रहम हो ! दरया तेजेन पूरा रहे ! अल्ला अज़ीज़ को सलामत रखे !

अज़ीज़ की आज्ञा से आल्ती सोपी ने कोकन्द के फैसले के मुताबिक तेजेन में स्वतन्त्र इस्लामी राज क़ायम होने की घोषणा की और इस्लामी राज का मतलब समझाया। सोपी बहुत जोश में नाक भौं चला कर बोल रहा था। कभी वह खूब गला फाड़ कर चिल्लाता और कभी बिलकुल खामोश हो जाता। रूमाल लेकर वह बार बार आंसू पोंछता जा था।

यारमुश काज़ी और अलनज़र बे झगड़े के बोझ से परेशान हो रहे थे। अगर कभी पहले ऐसा धार्मिक दृश्य दिखाई देता तो बे का हृदय भक्ति से गद गद हो गया होता परन्तु इस समय उसके मन में अपना अनाज लूटा जाने का गुस्सा भरा हुआ था। उसे अज़ीज पर कोई भरोसा न था। उसकी शक्ति बढ़ती देख वह मन ही मन घबरा रहा था। तिस पर बाहें झण्डे के बोझ से टूट रही थीं। वह सोच रहा था। कब यह बवाल खत्म होगा।

अज़ीज़ भीड़ के बीचोबीच बढ़ आया। उसने ग़ुरूर भ र निगाह चारों ओर डाल कर देखा और फिर अधिकारपूर्ण गम्भीर स्वर में बोला—"उलेमा, बज़ुर्गों और लोगों ! आज का दिन मुतबरिक (पवित्र) है क्योंकि आज हज़रत पैग़म्बर का जन्म दिन है लेकिन यह और भी बड़ी बात है कि आज हम लोगों ने अपनी खोई हुई आज़ादी हासिल की है। आज से इस मुल्क में शरीयत का क़ानून क़ायम होगा। उलेमा, बज़ुर्गों और सब लोगो, इस काम में मुझे आप सब लोगों की मदद की जरूरत है। आज तक इस मुल्क में दो तरह की हुकूमत चल रही थी और दो तरह के उसूल क़ायम थे। आप लोग यक़ीन रखिये कि चन्द ही दिन में ज़ार की हुकूमत और उसके गिरोह का जो कुछ असर बाकी है, मैं खत्म कर दूगा। मुझे आप लोगों से कहना है कि आप सच्चे और सही रास्तों पर चलें। सह और सच्चा रास्ता सिर्फ इस्लाम का है। इस्लाम ज़िन्दाबाद !"

इसका समर्थन सबसे पहले किया मदीर ईशान ने। वह ज़ोर से चिल्ला उठा—"हुर्रा हुर्रा—वल्लाह"

और फिर सब भीड़ चिल्ला उठी और यह शोर आकाश तक जा पहुँचा।

१६

एक दिन पौ फटते फटते, कोशा गांव के लोग शोर सुन कर अपनी छोलदारियों से बाहर निकल आये। बात भी मामूली नहीं थी! खबर थी कि अलनज़र बे की घर वाली रात में घर छोड़ भाग गई है। बिजली की लपट की तरह खबर गांव में फैल गई। सब के होंठों पर एक ही बात थी.—"बे की औरत भाग गई!"

"मेहली भाग गई!"

"मेहली मावेद के साथ भाग गई!"

जवान लड़कियां पहले भी कई बार जवान लड़कों के साथ गांव से भाग चुकी थीं। उस पर भी बात चलती ही थी। लेकिन वैसा हो जाना कोई अनहोनी बात न थी। लेकिन ब्याहता औरत के भाग जाने से सभी लोग अचम्भे में आ गये। और तो और, ऐना की सौतेली माँ "मामा"—जिसे निजी बातों को छोड़ किसी से कुछ मतलब न था—भी बोली—"अच्छा ही हुआ इस कमबख्त के साथ। मेर लड़की चली गई थी तो इस आदमी ने मेरे नाक में दम कर दिया था। अब कोई इससे पूछे—अब क्या कहते हो? अरे वो तो अनब्याही लड़की थी। तेरी तो औरत भाग गई, नाक के नीचे से। अब बोलो! जिसकी औरत ही भाग गई उसे तो दोज़ख में भी जगह नहीं मिल सकेगी! खूब हुआ! इसके साथ यही होना चाहिये था!"

गांव की गलियों में बड़े बूढ़े कहने लगते—"अरे, ब्याहता औरत भाग गई? जाने अब इस धरती और आसमान का क्या होने को है? अब क़यामत का वक्त आ गया है!"

औरतें यह खबर सुनतीं तो ऐसे लम्बी सांस खींचतीं कि नीचे की सांस नीचे और ऊपर की ऊपर रह गई हो और फिर पड़ोसिन को खबर देने के

लिये लपक जातीं। आपस में उनकी बात ही समाप्त होने में न आती।

"अच्छा ही हुआ"—एक बोली—"ग़रीब की जान तो बची।"

"तो और करती क्या?"—दूसरी ने कहा।

कईयों ने मेहली को बेहया बेसवा कह कर गाली दी।

उम्सागुल के लिये यह मौका दिल की जलन बुझाने का आया। लहगा कमर में खोंस वह गांव में घर घर खबर सुनाती फिरी और फिर पड़ोस के गांव की ओर दौड़ी गई। बात शुरू करती तो मुंह पर हाथ रख मेहली की करतूत पर विस्मय प्रकट करती हुई धीमे स्वर में। फिर उसका सुर ऊंचा हो जाता—"लौंडियो, भाग नहीं जाती तो करती क्या? अलन ज़र उसके लिये क्या मर्द था? खाने के लिये ही उसे क्या देते थे? ऐसा कोई कुत्ते को भी नहीं देगा। अच्छा बदला लिया उसने। लौंडियो, सुना है कि वह शहर में बोलशेविकों के यहाँ शिकायत करने गई है। सुना है, बोलशेविक बे को जेल में क़ैद कर देंगे। बहनो, इस बे के तो करम ऐसे हैं कि इसके साथ जो कुछ हो, वही थोड़ा!"

वह बरस ही अलनज़र बे के लिये बदकिस्मती का था। बहू अतैरी की वजह से योंही उसकी जान सूली पर लटकी रहती। एक तो ज़ार का तख़्त पलटने से उसका दबदबा और इज़्ज़तयों खत्म हो गई थी तिसपर अतैरी बात बात में बे इज़्ज़ती कराती रहती। अरतैक ने जो उसे पीट-पाट कर अनाज लूट लिया तो लोगों की नज़र में वह बिलकुल मिट्टी हो गया। तिस पर साठ ऊँट बोझ अनाज का नुकसान कम नहीं होता। अन्त में उसकी घर की औरत ही भाग गई। कोई भी इंसान और क्या सह सकता था। ' "

मुसीबतें इंसानों पर पड़ती हैं। दुनिया बुरा सलूक भी करती है। इंसान उसे सह जाता है कि किस्मत और दूसरे लोगों पर किसी का क्या बस? लेकिन खुद अपने घर में 'अपनी घर की औरत लानत दे जाय? और फिर औरत भी क्या? और मेहली '? जिसका न कोई सगा सम्बधी था न घर बारी, एक बोरी जौ देकर तो बे ने उसे खरीदा था। और यह लड़का मावेद? बे दोष दे तो किस को? दिल का दुख कहे तो किस से? वह उन दोनों की बोटी बोटी दांत से काट डालता पर उनका सुराग कौन लगाये? बरस नहीं बीता दुनिया उसकी ताबेदार थी, उसके इशारे पर नाचती थी। कहां गये अब खोजा मुराद, दारोगा बाबा खां और कुली खां? जा कर अज़ीज़ के सामने अपना दुख रोये? जा कर कहे मेरी औरत भाग गई? एक बे'

जा कर कहे कि उसके घर की औरत भाग गई ? क्या मुंह वह दुनिया को दिखायेगा ? क्या उसका नाम रह गया, क्या उसकी इज्जत रह गई ? लोग उसे हिजड़ा कहेंगे और मुंह पर थूकेंगे । अगर यह दिन देखने से पहले ही उसकी मौत हो गई होती तो लोग उसे बुज़दिल हिजड़ा तो न कहते । अब किस तरह उसके मुंह पर लगा यह कलंक धुले ।

वह दोपहर तक बैठा सोचता रहा । उसने अपना नया लिया हुआ रिवाल्वर निकाला । हथियार को गौर से देखा गोला है या नहीं । गोली थी । उसने रिवाल्वर का घोड़ा चढ़ा लिया । उसके हाथ कांप उठे, आंखें भय से फैल गईं और होंठ लटक गये । एक मिनिट में सम्भल कर उसने रिवाल्वर की नाली अपने सीने पर टिका ली । संसार का सब मोह छोड़, संसार से नाता तोड़ लेने के लिये उसने आंखें मूंद लीं ।

परन्तु उसका दिल जोर से धड़कने लगा । उसने आँखें खोल जगमगाती दुनिया को फिर एक आँख देखा । छोलदारी की छत से धुआँ निकलने के लिये बने सूराख से धूप की किरणें आकर कीमती रंग बिरंगे कालीनों पर फैल रही थीं । कालीनों पर बने भड़कीले फूल मानों वे को पुकार कर कह रहे थे—"तुम भी क्या पागल हो ! अरे इस दुनिया के, कुदरत के, असलियत के मजे छोड़ कर तुम कहाँ जाना चाहते हो ? अंधेरी कबर में जा लेटोगे तो तुम्हारा क्या भला हो जायगा ? ज़िन्दा रहोगे तो दुनिया में मौके और जगह की इन्तहा नहीं ! सोचो हजार मौके आ सकते हैं ।"

अलनज़र अपने सांस के आने जाने का शब्द सुनने लगा और सोचा—सांस का आता रहना कितना बड़ा सुख है ! यह सांस ही बंद हो गया तो क्या रह जायगा ? ओफ कितनी तकलीफ़ होगी सांस न आने से ? सौ मन मिट्टी के नीचे कबर में दब जाना ? जाकर खुद ही मौत के फ़रिश्ते इज़राइल के हाथों पड़ जाऊँ ? धीमे-धीमे रिवाल्वर उसके हाथ से समीप पड़ी गद्दी पर जा टिका । छोलदारी के बाहर से मालकोश के हिनहिनाने की आवाज़ आ रही थी और उसकी लड़की की खिलखिलाहट भी सुनाई दी । उसे जान पड़ा वह कबर से लौट आया और ज़िन्दगी कितनी मज़ेदार चीज़ थी ?

वे ने अपनी नतारया की—मैं दर असल ही बेवकूफ हूं । निराश हो कर जान दे देने से फ़ायदा ? किसके लिये जान दे दूं ? मेहली के लिये ? न मैंने उसे कभी अपनी बीबी—बेगम समझा, न मुझे उससे कोई मुहब्बत थी ?

एक बांदी थी, बस ! समझ लो, मावेद अपनी पांच बरस की नौकरी की मजूरी ले गया। ... पर लोकबाग क्या कहेंगे ? अरे कुछ दिन बकेंगे और फिर भूल जायगे । दस पाँच दिन बात रहेगी, दब जायगी । इतने दिन ग़म खा जाओ !

बे अपनी छोलदारी से निकला । किस्मत की बात, पहले उसे अतैरी ही दिखाई दी । उसे देखते ही बे झुंझला उठा—जिस दिन से यह कलमुँही इस घर में आई है, एक के बाद दूसरी मुसीबत सदा ही सिर पर पड़ती रही । यह ज़रूर किसी डायन की औलाद है । यह आई और किस्मत ने मुँह फेर लिया । किसी तरह इससे पीछा छूटे तो मैं आधी जायदाद खैरात कर दूं । उसने अतैरी की ओर से मुँह फेर लिया ।

अतैरी बे की आंखों में घृणा भांप गई । उसे भी याद आ गया कि एक दिन यह बक्से खां को फटकार रहा था—"तू कैसा मर्द है रे, जो एक औरत को बस नहीं कर सकता ?"

अतैरी ने उसे वैसी ही निगाह से जवाब दिया और बोली—"कहो, क्या तुम्हारी मर्दानगी मैंने ही छीन ली ? औरत को तो तू क्या बस करेगा तू तो बांदी को ही नहीं निबाह पाया ? अब अपनी मर्दानगी में दाढ़ी समेट ले । हिम्मत है तो जा, पकड़ कर ला उन लोगों को !"—अतैरी ने शहर की ओर हाथ बढ़ा संकेत किया ।

बे दांत पीसकर चुप रह गया ।

जब बे के यहाँ यह बीत रही थी मावेद और मेहली शहर की ओर भागे चले जा रहे थे ।

अशीर कई दिन पहले ही लाल फौज में भरती हो चुका था । उसे फौज के निशान, नम्बर और बन्दूक मिल गई थीं । मावेद के आ जाने पर अशीर ने उसे भी अपनी ही कम्पनी में भरती करवा लिया । चर्नीशोव की सिफ़ारिश से मावेद को शहर में एक कोठड़ी मिल गई । बे के यहाँ से मिला उसके हिस्से का अनाज सम्भाल कर रखा हुआ था । कुछ दूसरे सामान के साथ वह सब उसे दे दिया गया । वह अपने नये घर में आ बसा और मेहली अपने घर की रानी बन गई । अब उस पर हाथ उठाने वाला और उसे आंख दिखाकर गाली देने वाला कोई न था । न उसे अब बांदियों की तरह नाम लेकर पुकारा जा सकता था । अब वह मावेद की घरवाली कही

जाती थी। आराम और अधिकार का नशा उसकी आंखों में चमकने लगा। कभी कभी वह सोचती इस सब के लिये किसका शुक्रिया करूँ ?

वह सोचती यह अतैरो की मेहरबानी है ? नहीं ! सोचती जार का तख्त पलटने से मेरे दिन फिरे ? नहीं ! अर्शीर की मेहरबानी है—नहीं ! मावेद की मुहब्बत ? —नहीं ! यह मेरे अपने हौसले की बात है ! नहीं तो कोई क्या कर सकता था।

मह्नी मावेद से भी यह सवाल पूछ कर जवाब मांगती। मावेद कहता—"मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता था ? मुझे भी तुमने खुद अपने आपको दिया और मेरी ज़िन्दगी बनादी !"

मावेद के शहर में आकर बस जाने की खबर अरतैक को मिली तो वह भी उन्हें मुसीबतों और गुलामी से छूट कर सुखी जीवन पाने के लिये बधाई देने गया। रास्ते में उसे चरखेजा मिल गया। चरखेजा बहुत उदास जान पड़ता था। अरतैक ने उसकी उदासी का कारण पूछा—

"क्या बताऊँ ? दुनिया के तौर मेरी समझ में नहीं आ रहे हैं। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ लोग कर क्या रहे हैं ?"

"क्या मतलब ?"—अरतैक ने पूछा—"लोग सदा ही अपनी अपनी समझ से चलते हैं। शहर में दो तीन राजनैतिक दल हैं। तुम्हें क्या कोई भी पसन्द नहीं ?"

"नहीं"

'आखिर तो तुम मुसलमान हो ?"

"अज़ीज़ के इस्लाम को मैं नहीं मानता।"

"तो तुम पतलून वालों की पार्टी (बोलशेविकों) के साथ हो जाओ।"

"कुली खां की पार्टी में ? कुली खां सदा दगाबाज़ी करता रहा है। मुझे उस पर अब भी एतबार नहीं।"

'तुम चाहते क्या हो ?'

'मैं चाहता हूँ इन्साफ़ हो ! लोग कहते थे इन्कलाब के बाद इन्साफ होगा।"

"इन्साफ़ क्या कोई गठड़ी में बांध कर तुम्हारी बगल में दे जायगा ?... क्या पागलपन की बातें करते हो चरखेजा ? तुम मेरे साथ आजाओ।"

"तुम्हारे साथ ?"

"क्यों; क्या मुझ पर विश्वास नहीं ?"

"तुम पर तो विश्वास है, अज़ीज़ पर बिलकुल नहीं ।"

"क्यों, अभी तक वह बुरा क्या कर रहा है ?"

"यह उसकी चालबाज़ी है । आगे देखना क्या करता है । मुझे उस पर भरोसा नहीं होता ।"

अरतैक के बहुत कुछ समझाने पर भी चरखेज़ को सतोष न हुआ— "देखा जायगा !"—उसने अरतैक की बात टाल दी । अरतैक भी निराश हो मावेद के घर पहुँचा । उसने मावेद और मेहर्ला को उनके नए जीवन पर बधाई दी । मन में उसके यह ख़याल अवश्य था कि इनका ब्याह असल ठीक ढंग का ब्याह तो नहीं है फिर भी उन लोगों के पिछले जीवन का ख़याल कर वह बोला—"जो हो भाई तुम दोनों ने हिम्मत की, ठीक ही किया !"

अरतैक ने मावेद को समझाया—"यह तुम्हारी गलती है कि तुम मुझे छोड़ कुली खां और अशीर की मौज में जा मिले । अपने आख़िर अपने हैं । ग़ैर, ग़ैर !" मौके से उसी समय अशीर भी नये जोड़े को बधाई देने आ पहुंचा । उसकी और अरतैक की बातचीत तानेबाजी से शुरू हुई और फिर गरमा गरमी हो गई ।

अशीर ने अरतैक का अज़ीज़ खां की फौज में जाना और अरतैक ने अशीर का कुली खां की फ़ौज में जाना मूर्खता बताया । दोनों अपनी अपनी सफाई देकर दूसरे की बेवकूफी सुझा रहे थे । उनका झगड़ा ऐसे चल रहा था जैसे दो अंधे एक दूसरे पर पत्थर चला रहे हों ।

अरतैक गुस्से में उठ कर जाने लगा । परन्तु अशीर उसकी राह रोक कर खड़ा हो गया । दोनों ही क्रोध में हांफ रहे थे । अरतैक झुंझला कर बोला—"तुम मुझे जाने क्यों नहीं देते ?"

"जब बात का फैसला हो जायगा तभी तुम जाओगे ।"—अशीर ने उसकी आंखों में घूर कर जवाब दिया ।

"तो क्या फैसला तब होगा कि तुम मुझे गोली मार दो या मैं... ?" अरतैक बोला ।

"यहाँ यह बात कमीनापन होगी। यह देखा जायगा लड़ाई के मैदान में"—अर्शीर ने जवाब दिया।

"हमारी दोस्ती खत्म है।"

'हाँ, अब हम लोग दुश्मन हैं।'

पुराने गहरे मित्र एक दूसरे की ओर ऐसे घूर घूर कर देख रहे थे कि एक दूसरे को फाड़ खायगे। अरतैक बिना कोई जवाब दिये कमरे से निकल चला गया।

१७

अज़ीज़ खां ने तेजेन में पैगम्बर मुहम्मद के जन्म दिन का जो जलसा करवाया उसमें उसका प्रयोजन अपनी सेना और शक्ति का प्रदर्शन कर देना भी था। इससे जनता पर प्रभाव बढ़ाने की आशा थी। तुर्कमानी प्रतिनिधि मंडल के नेता नियाज़ बेग से जो उसकी बातचीत कार्यक्रम के सम्बध में हुई था, उसका भी उसे ध्यान था। कोकंद से लौट कर उसके दूत मदीर ईशान ने स्वतंत्र इस्लामी राज कायम होने के जो समाचार उसे दिये थे, वह बात भी उसके ध्यान में थी।

अज़ीज़ को यह विश्वास हो गया कि देहात के किसानों और शहर की जनता की सहानुभूति उसके साथ है और वे लोग उसका आदर करते हैं। यह भी उसने देखा कि कुछ तुर्कमानी लोगों ने उसत जलसे में भाग नहीं लिया, वे लोग अभी स्थिति को परख लेना चाहते हैं। यह भी वह जानता था कि कुली खां जैसे आदमियों के प्रति लोगों में घृणा होने पर भी जनता में सोवियत का प्रभाव भी बढ़ता ही जा रहा था। वह अनुभव कर रहा था कि चर्नीशोव के प्रयत्नों से लोग किसान-मजदूर राज की आशा में दृढ़ विश्वास से मरने मारने के लिये सोवियत की ओर खिंचते चले जा रहे हैं। अशीर जैसे बे घरबार के लोग, जिन्होंने ज़ार के राज में ज़ुल्म सहे थे, मावेद और मेहली जैसे लोग, जो अब तक गुलामी में जकड़े हुये थे अब शहरों में जमा हो रहे हैं। ऐसे लोग सोवियत के कट्टर सहायक बनते जा रहे हैं। इन लोगों को समझाने बुझाने का भी कुछ असर न था। यह लोग समझते थे इनका जीवन केवल सोवियत के राज में ही सम्भव है। इन्हें चर्नीशोव के सिवा किसी दूसरे पर विश्वास ही न था। तेजेन की लाल फौज की संख्या अधिक नहीं परन्तु इसकी उपेक्षा न की जा सकती थी। लाल फौज से सामना होने पर वह किससे सहायता की आशा कर सकता था? किसानों

का भरोसा करना व्यर्थ था। इसलिये वह अवसर की प्रतीक्षा में था।

चर्नीशोव भी आशंकित था। समाजवादी क्रान्ति-विरोधी शक्तियों को इकट्ठा होते देख उसे आशंका हो रही थी। रूस की क्रान्तिकारी शक्ति मध्य एशिया से बहुत दूर थी और फिर दुतोव की ज़ार की समर्थक और क्रान्ति विरोधी सेनायें मध्य ऐशिया को शेष क्रान्तिवादी रूस से अलग किये हुये थीं। क्रान्ति विरोधी शक्तियां इस अवसर से लाभ उठा कर मध्य एशिया में अपने कदम जमा लेना चाहती थीं। कोकंद में आज़ाद इस्लामी सल्तनत क़ायम करने वाले तुर्कमानिया के जागीरदार और पूंजीपति, कास्पियन समुद्र के पड़ोस के क्रान्तिकारी सोशलिस्ट नाम से सोवियत विरोधी पार्टी बनाने वाले, ईरान से लौटी हुई कज़्ज़ाक फौजें, जुनेद खां जैसे छोटे छोटे खान जिनका काम लूट-पाट से ही चलता आया था और डाकुओं क टोलियों का सबसे बड़ा मुखिया इब्राश बे, अलीयार खां, अज़ीज़ खां और उस जैसे कई दूसरे, यह सब लोग अपनी अपनी जगह सोवियत का विरोध कर अपने स्वतंत्र राज कायम कर लेने की तिकड़में जमा रहे थे। इन सब को सिखा पढा कर सहायता देने वाले थे बृटिश साम्राज्यशाही शक्ति के एजेंट जो लोग कई जगह भेस बदल कर और कई जगह स्थानीय खानों के विश्वासपात्र बन कर बैठे हुये थे। यह लोग बरसों से इस विद्या को सीख कर एशिया के छोटे छोटे राष्ट्रों को आपस में लड़ा कर, उन्हें फोड़ कर अपनी साम्राज्यशाही सत्ता की नींवें डालते आये थे। चर्नीशोव को अभी इन गुप्त जालसाज़ों का कोई भेद मालूम न था। परन्तु इन लोगों की कर तूतों के परिणाम वह अवश्य देख रहा था। तेजेन की स्थिति बहुत डांवाडोल थी। बाहर की सोवियतों से उसका सम्बध टूट चुका था। सोवियत के मुट्ठी भर विश्वासपात्र आदमी थे। वे जो कुछ करते अपने साहस और जिम्मे वारी पर ही कर सकते थे। ताशकंद की क्रान्तिकारी कमेटी अपने इलाके में चल रही सोवियत विरोधी बग़ावत का सामना करने में उलझी हुई थी। चर्नीशोव अश्काबाद की सोवियत से कुछ आशा कर न सकता था क्योंकि वहाँ के चुनाव में ज़ार के सब पुराने अफ़सर और क्रान्तिकारी सोशलिस्ट लोग सोवियत में आ घुसे थे। सोवियत पर उन्हीं लोगों का कब्ज़ा था।

तेजेन की अवस्था दिन दिन संकटमय हो रही थी। सोवियत के सामने प्रश्न था कि अजीज खां की बढती फौज को जल्दी से जल्दी समाप्त किया जाय। लेकिन शहर में दंगा फ़िसाद की नौबत भी न आने पाये। इसके लिये आवश्यक सिपाहियों की संख्या तेजेन की सोवियत के पास थी नहीं।

कुली खां पर भी चर्नीशोव का सन्देह बढ़ता ही जा रहा था। विशेष आशा न होते हुये भी अश्काबाद जा कर यत्न करने के सिवा और कोई उपाय न था।

अजीज़ भी ऐसी ही डांवाडोल स्थिति में था। वह भी अश्काबाद से सहायता पाये बिना कुछ न कर सकता था। परन्तु नियाज बेग से सहायता मांगना भी अजीज के आत्म सम्मान के विरुद्ध था। उसने मदीर ईशान से एक पत्र नियाज बेग के नाम लिखवाया और अरतैक को पत्र देकर अश्काबाद भेजा।

अरतैक और चर्नीशोव एक ही गाड़ी से अश्काबाद जा रहे थे। चर्नीशोव को गाड़ी में देख अरतैक की बड़ी इच्छा हुई कि पुराने मित्र से मिल जुल कर बातचीत करे परन्तु उचित न जान पड़ा। अश्काबाद वह जा रहा था चर्नीशोव के विरुद्ध अजीज के लिये सहायता का प्रबंध करने। फिर मित्रता का झूठा आडम्बर क्या करता। उस समय उसे ध्यान भी आया कि वह सोवियत विरोधी मार्ग पर कहा से कहां आ पहुंचा है। चर्नीशोव की निगाह अरतैक पर न पड़ पाई थी। बाकी सफर में अरतैक जान बूझ कर चर्नीशोव की निगाह से बचा रहा।

अरतैक जिस समय अजीज का पत्र लेकर अश्काबाद की इस्लामी कमेटी में पहुंचा कमेटी की कान्फ्रेंस हो रही थी। कमरा खूब बड़ा था। इतज़ाम और सजावट योरूपियन ढंग की थी। भीड़ भी काफ़ी थी। अरतैक कमरे भर में आँखें दौड़ा कर देख रहा था कि कोई जान पहचान का चेहरा दिखाई दे। परन्तु नियाज बेग को छोड़ उसे कोई परिचित नहीं दिखाई दिया। नियाज बेग को भी उसने तेजेन के स्टेशन पर, गाड़ी में काकन्द जाते हुये ही देखा था। अरतैक को यह कमेटी का जमाव कुछ विचित्र सोही लगा। एक ओर एक गंजा, दाढ़ी मुंडा सरदार बैठा था उसके साथ ही एक तोंदियल, बड़ा व्योपारी था जिसके चेहरे पर फैली चर्बी भरी गालों में आँखें भी दबी जा रही थीं। उसके आगे एक बे बैठा था जिसका सिर मुंडा हुआ था परन्तु ठोड़ी से लम्बी दाढी लटक रही थी। एक ओर एक आदमी खड़ा था ब्रिचिस पहने। उसके रिवाल्वर की चमड़े की डोरी नीचे दूर तक लटक रही थी। यह आदमी चुप खड़ा अपनी मूछें ऐंठ रहा था। कमेटी की कारवाई इस आदमी को पसन्द नहीं आ रही थी। कभी वह एक किनारे चहलकदमी करने लगता और कभी खीझ से दूसरे लोगों की ओर देखने लगता।

कमेटी का प्रधान था ओराज़ सरदार। ओराज़ का चेहरा निस्तेज भुस-भुसा सा था। चेहरा मोटी मोटी भौं और दाढी मूछ से ढका हुआ और तोंद भी खूब बढ़ी हुई थी। ओराज सरदार के कधों पर जार के ज़माने की कर्नैलो के निशान लगे हुये थे। इन लोगों को देख कर अरतैक ने निराशा से मन मे कहा—यदि इन्हीं लोगों के हाथ हमारी नैया की पतवार है तो डूबेंगे नहीं तो क्या ?

इम इस्लामी कमेटी ने प्रादेशिक सोवियत से मांग की थी कि सोवियत इम इस्लामी कमेटी को तुर्कमानिया की पूरी जनता की प्रतिनिधि स्वीकार करले, इस कमेटी के प्रतिनिधियों को सोवियत का मेम्बर बनाले और इलाके मे लड़ाई के जितने हथियार और गोली गट्टा है, वह सब, सोवियत और इस कमेटी में बराबर बांट दिया जाय। कान्फ्रेंस में विचार यह हो रहा था कि सोवियत इन मांगों को दो दिन के भीतर स्वीकार कर लेगी या नहीं।

"यह लोग तो अभी स्वय ही बेपेंदी के लोटे की तरह लुढक रहे हैं"— मन में अरतैक ने सोचा—और हम इनकी सहायता का भरोसा कर रहे हैं!

कान्फ्रेंस में सब अपनी अपनी कहे जा रहे थे। परेशान हो कर गजे सिर वाला मोटा सरदार बोला—"हमें तो आप लोगों की बातें कुछ समझ नहीं आ रही। जब हमने सोवियत के सामने अपनी मांगें रख दी हैं तो यह मांगें पूरी होनी चाहिये। सोवियत को हमें जवाब देना होगा। अगर सोवियत तसल्लीबक्श जवाब नहीं देती है, शहर को जला डालो! सोवियत है क्या चीज़! यह मुल्क हमारा है, यहाँ ताकत हम लोगों को है। अगर कमेटी को यों बेसिर पैर की बातों में ही उलझे रहना है तो हम लोग यहाँ बैठकर क्या कर रहे हैं? इस तमाशे का फायदा ही क्या है! हमें यह तमाशा बिलकुल नापसन्द है। हम यहाँ से चले जायगे!" सरदार क्रोध मे कह रहा था और उसके मुह से थूक के फ़ुहारे उड़ रहे थे। उसका चेहरा बिलकुल सुर्ख हो गया। उसने कमेटी के लोगों की ओर इस आशा से देखा कि वे उसकी बात से डर गये होंगे।

अरतैक ने देखा कि नियाज बेग सरदार की बात पर मुस्करा रहा था और उससे नियाज़ बेग को कहते सुना—"भाड में जाय यह कमबख्त चला ही जाय तो जान छूटे। यह तो यहाँ लूट के मौके की तलाश में आया है।"

अज़ीज का खत कान्फ्रेंस में पढा गया। उस पर भी बहस छिड़ गई। किसी ने कहा—"सौ सिपाही भेज दो। दो दिन में कुली खां को खत्म कर

लौट आयेंगे।" दूसरा बोला—"अजीज से तो कुला खा ही भला। कल अज़ीज़ के पांव जम जायगे तो वह हमीं को आँखें दिखावेगा।" कुछ लोगों की राय थी कि आराज सरदार और नियाज बेग तेजेन जा कर सोवियत और अज़ीज़ खां में समझौता करवादें। कुछ की राय था—इस झगड़े स हमें क्या मतलब? कुछ ऊप रहे थे।

अज़ीज़ के पत्र के बारे में कुछ फैसला हा नहीं पाया और दूसरी ही बहस छिड़ गई। कोई बाल उठा—"जर्मनी को अगर टर्की मे जगह मिल जाय तो वह बर्तानिया के परखचे उड़ा देगा।" मोटे तादियल बे फिर बोल उठे—"यह बात सही है। अंग्रेज तुर्की को फौज का भला क्या मुकाबिला करेंगे? इस बारे में एक तुर्की अफसर ने मुझे सब कुछ बता दिया है।"

ओराज़ सरदार बाल उठा—"ईरान मे रूकी हुई ज़ार की कज्ज़ाक फौज बर्तानिया की कमान में चली गई है। बर्तानिया ही उसका पूरा खर्चा दे रहा है। कज्जाक फ़ौज के बास बडे अफ़सर कोमथूज़, खोजानेप, खीवा और बुखारा में बर्तानिया के हुक्म से गये हैं। बर्तानिया की फौजें ईरान में ही नहीं बल्कि कास्पियन समुदर के इस तरफ और तुर्कमानिया में भी आ गई हैं। रूसी फौज के पीछे हट जाने के कारण बर्तानिया इधर आ कर जर्मनी और तुर्किस्तान से खुद लड़ेगा। उम्मीद है इस मुल्क में जल्दी ही जर्मनी और बर्तानिवी फ़ौजों की जोर से टक्कर होगी।"

ओराज़ सरदार की इस महत्व पूर्ण खबर पर भो दूसरे लोगों ने खास ध्यान नहीं दिया। जो जिसके मन में आता बोलता चला जा रहा था। मुल्क पर आये खतरे को न तो कोई समझ ही रहा था और न किसी को उसकी चिन्ता थी। प्राय. लोग आपस में ही गप-शप कर रहे थे। कोई उठ कर ज़रा घूमने और चाय पीने चले जाते और फिर लौट कर आ बैठते। अरतैक यही समझा कि यह लोग यहाँ दिल बहलाने के लिये आये हैं या इस ख़याल में हैं कि पैसा बनाने का कोई अवसर हो तो उसकी खबर रहे। अरतैक ने सोचा—फिजूल मैं तेजेन से यहाँ तक आया। इन लोगों को जनता की क्या परवाह है? इनमें और ज़ार के अफ़सरों में फरक ही क्या है? यह उनसे ज्यादा मूर्ख ज़रूर हैं।

कान्फ्रेंस में सुनी बातों से एक बात ज़रूर उसे समझ में आई कि सब लोग समझते हैं कि अज़ीज़ केवल अपना राज जमाने के लिये ही सहायता

चाहता है। चर्नीशाव ने भी यही कहा था कि अज़ीज़ को जनता से कोई मतलब नहीं, वह ख़ुद ख़ान बनने का स्वप्न देख रहा है। तो अज़ीज़ को जनता का हितैशी और रक्षक सिवा उसके और कौन समझता है? कौन उसका विश्वास करता है? ख़ुद अरतैक भी क्या अज़ीज का विश्वास कर सकता है?

अरतैक का माथा घूम गया। वह कान्फ्रेंस से उठ कर चल दिया। तेजेन के मामले में कान्फ्रेंस क्या करेगी? इस विषय में वह कुछ जान नहीं पाया। कान्फ्रेंस में स्वयं कुछ कहने का भी उसे कुछ फायदा न जान पड़ा। उसने सोचा—इन स्वार्थी लोगों के सामने जनता के नाम पर, देश पर आते ख़तरे के नाम पर दुहाई देना व्यर्थ है। और फिर उसके मनमें यह भी विश्वास न था कि अजीज़ को सहायता मिलने से जनता का भला हो जायगा। वह किसी भी भगोसे के नेता के पीछे चल कर जान लड़ा देने के लिये तैयार था परन्तु किसी ख़ान की ख़ुदगर्ज़ी पूरी करने के लिये बेवकूफ बनना उसे मंज़ूर न था।

जिस समय अरतैक कान्फ्रेंस से खिन्न हो कर स्टेशन की ओर लौट रहा था दूसरी ओर चर्नीशोव प्रादेशिक सोवियत के सामने अपनी बात कह रहा था। चर्नीशोव बड़ी कठिनाई में था। वह अच्छी तरह जानता था कि अश्काबाद की सोवियत में तिकड़म से चुने गये अधिकांश लोग जनता विरोधी थे और उस पर सन्देह करते थे। मेंशेविक और सोशलिस्ट लोगों के नेता फुन्तीकोव और दोखोव का अश्काबाद की सोवियत में खूब ज़ोर जमा हुआ था। चर्नीशाव की बात लोग ध्यान से सुन अवश्य रहे थे परन्तु उनके चेहरों पर सन्देह और विरोध का भाव भी स्पष्ट था। सोवियत की उस बैठक में अश्काबाद के बोल्शेविक तेमया, फितनीकोव, मोली योज़कोव और बेतमानोव में से कोई भी मौजूद न था, इसलिये चर्नीशोव और भी घबराहट अनुभव कर रहा था। यह उसे बाद में मालूम हुआ कि सोवियत के बोल्शेविक मेम्बरों को सभा का समय ग़लत बताया गया था ताकि वे लोग सभा में आ ही न सकें।

"दिन बदिन अज़ीज़ का शक्ति बढ़ती जा रही है और उसका दुस्साहस भी बढ़ रहा है—"चर्नीशोव ने कहा—"उसका उद्देश्य क्या है? यह किसी से छिपा नहीं है। जिस तरह वह चल रहा है, उससे सन्देह का भी कोई कारण नहीं है। जनता के लिये अन्न भोजन के सम्बध में उसने ज़रूर

कुछ काम ऐसे किये हैं जो वास्तव में हमारी सोवियत को करने चाहिये थे। इसका परिणाम यह हुआ है कि कुछ समय के लिये भूखे किसानों की सहानुभूति उसकी ओर हो गई है। उसने आजाद इस्लामी सल्तनत का नारा भी लगाया है। इससे मुस्लिम जनता को उसके प्रति विश्वास होने लगा है। परन्तु अज़ीज़ की यह आजाद इस्लामी सल्तनत मुस्लिम जनता की स्वतन्त्रता के लिये नहीं है। यह आजाद इस्लामी सल्तनत कुछ जागीरदारों और तुर्कमानी पूंजीपतियों की ही हुकूमत होगी। यदि हम समय पर अजीज का उचित उपाय नहीं करेंगे तो परिणाम वही होगा जैसा ताशकंद में इस्लाम की स्वतन्त्र हुकूमत क़ायम करने के नाम पर जनता के खून की नदियां बहने के रूप में हुआ। इस हालत में अज़ीज खां की फौज को निशस्त्र कर देना बहुत ही आवश्यक है। और जहाँ तक सम्भव हो यह काम बिना खून खराबी किये, लड़ाई बिना किये होना चाहिये। इसके लिये आवश्यक है कि हमारे पास उसकी सेना से कहीं बड़ी सेना हो। यह बात तेजेन की मौजूदा लाल फौज के बस की नहीं। इसलिये मैं अश्काबाद की प्रादेशिक सोवियत से सैनिक सहायता चाहता हूं।"

चर्नीशोव ने अनुभव किया कि सोवियत के लोग तेजेन की गम्भीर स्थिति की उपेक्षा कर उसका विरोध करने के लिये उतारू हैं। वह एक बार फिर बोला—"अन्त में मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं। यह समस्या केवल तेजेन की ही समस्या नहीं है। यदि तेजेन में अजीज के उगते हुये संकट का उपाय उचित समय पर न कर दिया जायगा तो एक नहीं, सैंकड़ों अजीज पैदा हो जायगे और केवल तेजेन में नहीं, यह लोग पूरे तुर्कमानिया पर छा जायगे।"

"और यह लोग फिर से जार को गद्दी पर ला बैठायेंगे!" फुन्तिकोव ने अपनी लम्बी गर्दन उठा कर मजाक किया।

"नहीं—"चर्नीशोव ने उत्तर दिया—"यह लोग पुराने जार को ढूंढने नहीं जायगे। एक ज़ार की जगह एक सौ ज़ार जगह जगह पैदा हो जायगे।"

दुखोव बहुत शान्ति और उपेक्षा से बोला—"अज़ीज़ के प्रश्न को लेकर हमें भड़क नहीं जाना चाहिये। इस प्रश्न पर हमें राजनैतिक दृष्टि से, दूरदर्शिता से विचार करना चाहिये। हमें यह समझ लेना चाहिये कि अजीज है क्या? फर्ज़ कर लीजिये कि उसकी शक्ति एक मामूली ततैये के बराबर ही है। एक ततैये की ताक़त क्या है? यह केवल कुछ समय के

लिये परेशान कर सकता है। परन्तु एक ततैये का छेड़ने का परिणाम होता है कि पूरा छत्ता आ पड़ता है। सोच लीजिये कि एक तुर्कमान को छेड़ कर कहीं हम पूरे तुर्कमानिया को तो नहीं भड़का देंगे ? आखिर वह देश तो उन्हीं लोगों का है। इससे यह कहीं बेहतर होगा कि अजीज से स्वयं झगड़ा मोल न ले कर किसी प्रभावशाली तुर्कमान को ही अज़ीज़ का सामना करने के लिये खड़ा कर दिया जाय।"

"अज़ीज़ की फ़ौज से हथियार रखा लेने का मतलब तुर्कमान लोगों से झगड़ा शुरू करदेना हर्गिज़ नहीं है—"चर्नीशोव ने समझाना चाहा— "इसका मतलब है तुर्कमान जनता को अज़ीज़ के ज़ुल्म से बचाना। इसका मतलब है तजेन के किसानों को ज़मीन और सिंचाई का पानी देना और उन्हें पंचायत के रूप में संगठित करना। इसके विरुद्ध आपके सुझाव का अर्थ होता है कि हम जनता के एक अंग को दूसरे अंग से लड़ा दें। अगर हम ऐसा करते हैं तो यह ज़ार की फूट की कूटनीति की नकल करना होगा।"

"तुम्हारे पक्ष में कुली खां जैसे प्रभावशाली तुर्कमान हैं। जनता पर इन लोगों के प्रभाव का उपयोग होना चाहिये।"

"कुली खां पर हम लोग बिलकुल भी भरोसा नहीं कर सकते। कुली खां प्रत्येक बात में सोवियत की नीति का विरोध कर रहा है।"

"तुम तजेन की सोवियत के प्रधान हो ! यदि तुम कुली खां जैसे आदमियों को भी अनुशासन में नहीं रख सकते तो तुम वहाँ कर क्या रहे हो—" दुखोव ने पूछा।

"आप लोगों को याद होगा कि मैंने अपनी रिपोर्ट में यह कभी नहीं कहा कि हमारी सोवियत में बोल्शेविकों का बहुमत है। हमारी सोवियत में जनता विरोधी लोग काफ़ी संख्या में घुसे हुये हैं और वह बात मैं आपकी सोवियत में भी देख रहा हूं।"

फुन्तीकोव ने चर्नीशोव की ओर कनखियों से देखा और उसके माथे पर त्योरियां पड़ गईं—"जो बात तुम कह रहे हो उसकी जिम्मेवारी समझते हो ?—"उसने चर्नीशोव की ओर घूर कर प्रश्न किया।

"यदि आपकी सोवियत में जन हित के समर्थकों का बहुमत है। यदि आपको अपनी शक्ति पर पूरा विश्वास है तो तजेन की स्थिति सम्भालने में आपको हिचकिचाहट किस बात की है—और आप लोग कुली खां जैसे

आदमी का पक्ष क्यों ले रहे हैं ?"—चर्नीशोव ने प्रश्न किया—"हमारी सोवियत में कुली खां जैसे आदमियों के रहने के कारण ही अज़ीज खां को बढ़ने का मौका मिल रहा है। मुझे तो आश्चर्य है कि आपका कुली खां पर इतना भरोसा और विश्वास है !"

सोवियत की बैठक में मौजूद लोगों का व्यवहार देख चर्नीशोव ने साफ और कड़ी बातें कह देना आवश्यक समझा। कई उदाहरण पेश कर उसने बताया कि अश्काबाद से परस्पर विरोधी आज्ञायें मिलती रही हैं जिनके कारण तेजेन में उलझनें पैदा हुईं और जब हमने इन सवालों पर रोशनी डालने के लिये आपको लिखा, आपके यहाँ से जवाब ही नहीं आया। चर्नीशोव की इन बातों से फुन्तीकोव बहुत बिगड़ उठा। वह बार बार उठ कर चर्नीशोव का विरोध करने लगा कि चर्नीशोव अपनी बात कह ही न पाये परन्तु इसी समय किज़ाइल अर्वात के मज़दूरों के बहुत से प्रतिनिधि और लाल फौज के लोग भी सभा में आगये। चर्नीशोव ने फिर से अपनी बात दोहरा कर कही। अब फुन्तीकोव ने रंग बदल लिया—

"यह तो अजब तमाशा है" -फुन्तीकोव बोला—"यह आदमी हम लोगों पर तोहमत और इलज़ाम लगा रहा है, हम लोगों को क्रान्ति-विरोधी कहता है और फिर हमसे सहायता मांगता है। अपने ऐसे ही व्यवहार के कारण इस आदमी ने तेजेन की सोवियत के सब लोगों को अपना विरोधी बना लिया है। हम तेजेन के मामले की उपेक्षा नहीं कर सकते। दोस्त, चर्नीशोव हम लोग जल्दी ही आकर तेजेन की स्थिति को स्वयं देखेंगे। तुम वहाँ झगड़े और उलझनें पैदा करते जाओ और झगड़ों को दूर करने हम वहाँ जाया करें तो काम कैसे चलेगा ? यदि हम चर्नीशोव की बातें ठीक मान लें और मानलें कि तेजेन में इस समय स्थिति खराब है, तो हम अपने आदमियों को वहाँ किसकी जिम्मेवारी पर भेज सकते हैं ?"

फुन्तीकोव ने अपने इस प्रबल तर्क से सबको चुप करा देने की आशा में सब लोगों की ओर घूम घूम कर देखा—"ऐसी स्थिति में कौन तेजेन जाने के लिये तैयार होगा ?"—सब ओर चुप्पी देख फुन्तीकोव की आंखें चमक उठीं।

सहसा पीछे की ओर से आवाज़ आई—"हम जायगे तेजेन !"

फुन्तीकोव का चेहरा फक हो गया—"कौन जायगा ?" उसने फिर प्रश्न किया।

लाल फौज का एक मामूली अफ़सर लोगों को हटाता हुआ आगे बढ़ आया। चर्नीशोव ने ध्यान से देखा—यह वही अलेक्सी तिशोंको था जो तेजेन की चुनाव सभा में अरतैक को पूछता हुआ आया था। उसके बाद और कई आदमी तेजेन जाने के लिये खड़े हो गये। तिशोंको की लाल फौज की कम्पनी के साथ ही किज़ाइल अरवातियन मज़दूरों का एक स्वय सेवक दल भी तेजेन जाने के लिये तैयार था। फुन्तीकोव के लिये चुप रह जाने के सिवा उपाय न रहा। सभा समाप्त होने के दो घंटे के भीतर चर्नीशोव दो सौ लाल सिपाहियों के साथ तेजेन की ओर चल पड़ा।

लाल फौज की एक और कम्पनी तेजेन में पहुंच जाने का समाचार अज़ीज़ को जल्दी ही मिल गया। उसने तुरत अपने सलाहकार दरबारियों को बुलवाया। आल्ती सोपी और अलनज़ार बे खबर पाकर तेजेन आये परन्तु अज़ीज़ खां तेजेन में था नहीं। उन्हें कहा गया कि अज़ीज़ खां किसी आवश्यक काम से बाहर गया है—शीघ्र ही लौट आयेगा।

सूरज छिपने को था। पश्चिम की ओर छितराये बादल सुर्ख़ हो रहे थे। हवा बोझल और गरम हो रही थी। चिड़ियां भी सुस्ती अनुभव कर जहाँ तहाँ पेड़ों पर शाखाओं में जा छिपी थीं। उनकी चह-चाहट में भी उदासी जान पड़ती थी।

अलनज़ार का मन भी उदास था। वह उठ कर सराय के आंगन में चहल कदमी करने लगा। सध्या की लाली लिये धुंधलके में वह आंगन उसे कैदखाना सा लग रहा था। अज़ीज़ शाम तक भी न लौटा तो उसे विस्मय होने लगा। वह सराय की एक दीवार से दूसरी दीवार तक टहलता अपने दुर्भाग्य की बात सोचता जा रहा था। मेहली के भाग जाने के बाद से उसने लोगों से मिलना जुलना बहुत कम कर दिया था। तब से वह शहर भी नहीं आया था। यहाँ वह बात भी करता तो किससे? आल्ती सोपी शहर में अपने किसी मिलने वाले के यहाँ चला गया था। सराय में कोई बात करने लायक आदमी था भी तो नहीं।

"शहर में जाकर किसी से मिल न आऊँ?—अलनज़ार सोच रहा था" उसका मित्र अरतैन खजैन तेजेन से चला गया था। इन्कलाब होते ही खोजैन अपनी जायदाद समेट कर काकेशस चला गया था। उसे कोतूर की याद आई परन्तु साथ ही ख्याल आ गया—मेहली की बात उसने भी सुनी होगी और वह कमबख्त खूब खुश हुआ होगा! उसका मन और भी भारी

होगया—क्या फायदा कहीं जाने का ?.. इससे तो अच्छा है लेट कर आराम ही किया जाय।

लेट जाने पर नींद भी नहीं आई। चुपचाप लेटने से दुश्चिन्ताओं से मन और भी व्याकुल हो रहा था—उस पर क्या नहीं बीती ? बदनामी, माल का नुकसान ? क्या नहीं हुआ ? अब जानवरों के लिये चारा भी नहीं मिल रहा है—उसकी सैकड़ों भेड़ें और बीसियों ऊँट मर चुके थे। उसके डेरे के चारों ओर जानवारों की हड्डियां बिखरी पड़ी थीं।.. आखिर अल्ला मुझसे नाराज क्यों है ? किसकी बद दुआयें मुझे लगी हैं ?...क्या यह किस्मत का चक्कर है ? या अल्ला, मेरे गुनाह बख्श। ..मुझे पनाह दे। या अल्ला, कहीं खादिम की तरह मेरे लिये भीख मांगने की नौबत न आ जाय। मेरे खुदा रहम कर मुझ पर। बहुत देर तक इसी तरह के ख्यालों के बाद उसकी आंख लगी।

गोलियां दगने की आवाज से उसकी नींद उचट गई। वह पलंग पर से उछल पड़ा। वह एक लबादा पहने था। उस हालत में आगन की ओर दौड़ पड़ा। चारों ओर से गोलिया दगने की आवाजें, नींद में घबराहट से डर गये अज़ीज़ के सिपाहियों की चीखें सुनाई दे रही थीं और बन्दूकों की नालियों से अंधेरे में उठते भभूके दिखाई दे रहे थे।

अलनजर ने घबराकर पुकारा—"अज़ीज खां, अरतैक !"

एक गोली उसके सीने में लगी। वह लड़खड़ा गया। उसका सिर चकरा कर आंखों के आगे धुन्द छा गया। उस समय भी उसके मुह से निकला—"बेटा, अता—दयाली मैं. दुश्मन नहीं. . मुआफ़..."—वह कटे पेड की तरह फर्श पर गिर पड़ा।

अज़ीज़ खां की सेना से हथियार छीनने के लिये छापा मारने का काम बहुत चुस्ती और होशियारी से किया गया था। कुली खां को इस आयोजना की खबर भी नहीं दी गई। तेजेन की लाल फ़ौज और अश्काबाद से आई मजदूरों और सिपाहियों की कम्पनी को मिला कर पूरी कमान तिशोंको को सौंप दी गई और चर्नीशोव छापा मारने के समय स्वय भी उसके साथ बना रहा। क़ाफ़िला सराय में अज़ीज़ के डेरे की देख भाल एक दिन पहले ही करली गई थी। सोवियत सेना को दो टुकड़ियों में बांटकर पूरब की ओर से और रेलवे स्टेशन की ओर से भी घेर लिया गया। अज़ीज़ के संतरियों को घेरे का पता ही उस समय लगा जब उनके लिये कुछ कर

सकने का अवसर न रह गया था। अज़ीज के सिपाही नींद से मदहोश और हमले से घबरा जिधर बन्दूक की नाली उठी, गोली चलाने लगे। इनकी गोलियों के जवाब में रेलवे लाइन की ओर से एक बौछार गोलियों की आई। असल में तो इसी एक बौछार से लड़ाई का फैसला होगया। अजीज के सिपाही अपनी बन्दूकें फेंक नगे उघाडे सराय की नीची दीवारें फांद फांद कर भाग निकले। अज़ीज के घोड़े, हथियार और अलनज़ार बे की लाश सराय में पड़ी रह गई। सोवियत सेना ने सराय पर कब्जा कर लिया।

सोवियत के सिपाहियों ने अज़ीज के भागते हुये सिपाहियों का पीछा किया। कोई कोई भागते हुये सिपाही पीछा करने वालों पर गोली चलाते जा रहे थे। अरतैक भी इन्हीं मे था। बेखबरी में घिर कर नींद से उठने पर भी अरतैक ने अपने सिपाहियो को रोक कर दुश्मन का सामना करने की कोशिश ज़रूर की परन्तु सिपाहियों को जमता न देख कर वह भी दीवार फांद भाग निकला।

भागता हुआ अरतैक अपने बचाव के लिये पीछे की ओर गोली चलाता जा रहा था। मतलब था, कि पीछा करने वाले नज़दीक न आने पावें। लेकिन पीछा करने वाले लाल सिपाही गोलियां आने पर भी रुके नहीं। अरतैक के सिर के ऊपर से गोलिया सन्नाती हुई निकल रही थीं। अरतैक ने समझा कि पीछा करने वालों की नज़र उस पर पड़ गई है और वे उसी पर गोली चला रहे हैं। वह एक छोटी सी दीवार की आड़ में झुक गया और पीछा करने वालों को देख उसने गोली चलाई। पीछा करने वाला लाल सिपाही भी एक दीवार के कोने की ओर हो गया। दोनों के ही पास कारतूस थे- ज्योंही व दूसरे को आड़ बाहर सिर निकालते देखते, एक दूसरे पर गोली चला देते।

अंधेरे के कारण दोनों का ही निशाना खता जा रहा था। अरतैक अपने ऊपर झुंझलाया—घबराहट मे कारतूस बरबाद करने से फ़ायदा ? उसने अपना चित्त स्थिर करके निशाना लेने का यत्न किया फिर भी निशाना न बैठा। उसके कारतूस खत्म हो गये। अब उसके पास रिवाल्वर ही रह गया था। वह सोच रहा था कि जगह बदल ले। परन्तु उसने देखा कि उसके विरोधी की बन्दूक भी चुप है। उस समय अरतैक को विरोधी की ओर से बन्दूक का घोड़ा चढाने की आहट तो आई परन्तु उसकी गोली नहीं दगी। अरतैक समझ गया कि दुश्मन की बन्दूक जाम हो गई है। अरतैक उसकी

और आखे गड़ाये अपनी जगह से उठने लगा। उसका विरोधी लाल सिपाही भी खड़ा हो गया। तारों की छांव में वह सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा था। अरतैक अभी सोच नहीं पाया था कि क्या करे, सहसा लाल सिपाही की बगल से गोली चलने का धड़ाका हुआ, उसके हाथ से बन्दूक गिर गई और वह धरती पर गिर पड़ा। गिरते गिरते उसने पुकारा—"तिशोंको. . .अल्मोशा, आओ!"

यह पुकार अरतैक के कलेजे में धस गई। वह स्वर उसे पहचाना हुआ लगा। अरतैक दौड़ कर ज़ख्मी सिपाही के पास पहुँचा। लाल सिपाही धरती पर धीमे धीमे छटपटा रहा था। अरतैक उस पर झुक गया और कुछ सन्देह से पुकारा "अशीर!...क्या तुम हो अशीर?"

ज़ख्मी सिपाही ने आंखें खोल उत्तर दिया—"अरतैक?"

"हां मैं अरतैक हूँ।"

"क्या तुम?. .नहीं यह नहीं हो सकता।"

"मैंने तुम्हें ज़ख्मी नहीं किया अशीर"—अरतैक का गला रूध रहा था।

"मैं जानता हूँ।"...बहुत धीमे से अशीर की आवाज़ निकली—"मैं तुम पर गोली चला रहा था परन्तु मेरे हाथ हिल जाते। तुम भी मुझ पर गोली चला रहे थे। मैं जानता हूँ मुझे तुमने गोली नहीं मारी . ।"

अशीर का सिर एक ओर लुढ़क गया। अरतैक ने उसे बाहों में उठा लिया और सोचने लगा उसे कहाँ ले जाय। काफिला सराय में या लाल सेना की बारिक में? जहाँ भी वह जाता, अज़ीज़ की सेना का कप्तान होने के नाते गिरफ्तार कर लिया जाता परन्तु यह बात उसने नहीं सोची। उसे चिन्ता थी, जैसी भी हो अशीर की मरहम पट्टी की जाय और उसे तकलीफ़ से बचाये।

अंधेरे में समीप ही कदमों की आहट सुनाई दी। अरतैक ने उसी ओर पुकारा—"कौन है?...यहाँ आओ? मदद करो!"

राइफल सम्भाले एक आदमी आगे बढ़ आया और सदिग्ध स्वर में उसने प्रश्न किया—"क्यों, क्या बात है?"

"तिशोंको!"—अरतैक पुकार उठा—"अलेक्सी, मदद करो। इस ज़ख्मी आदमी को ले चलो!......यह तुम्हारा सिपाही है, अशीर सहात!"

"अशीर ! " जख्मी हो गया ? मैं तो इसी को खोज रहा था !"

तिशोंको और कुछ नहीं बोला। अरतैक को पहचान लेने का भी कोई संकेत उसने नहीं किया। अपनी राइफल कंधों से लटका उसने तुरत अरतैक की कलाइयों में अपनी कलाइयां डाल कर कुर्सी बना ली और अशीर को उस पर टिका कर बोला—"चर्नीशोव के यहां चलो !...... उसका घर नज़दीक है।"

बेहोश अशीर को उठाए वे दोनों धीमे धीमे चर्नीशोव के मकान पर पहुँचे। चर्नीशोव मकान पर नहीं था। उसकी पत्नी अन्ना गोलियां चलने के धड़ाके से उठ बैठी थी और फिर लेटी नहीं। दरवाज़े पर कदमों की आहट और ज़ख्मी की कराहट सुन वह घबरा उठी—"हाय, क्या, चर्नी को क्या हो गया ?"

"घबराओ नहीं अन्ना !—"तिशोंको ने गम्भीरता से कहा—"यह चर्नी नहीं है। दूसरा सिपाही है। इसकी मरहम पट्टी करो !"

अन्ना ने तुरन्त अशीर को एक बिस्तर पर लिटा दिया और उसके ज़ख्म को धोकर मरहम पट्टी करने लगी। कुछ देर बाद अशीर ने आँखें खोलीं। तिशोंको को सामने देख उसने कहा—"अलेक्सी, मुझे अरतैक ने गोली नहीं मारी।"

अशीर की बात सुन तिशोंको ने अरतैक की ओर ध्यान से देख उसे पहचाना परन्तु बोला कुछ नहीं।

"यह बात ठीक है"—अरतैक ने अशीर की बात का समर्थन किया—"परन्तु मैंने गोली इस पर ज़रूर चलाई थी।"

तिशोंको ने उत्तर न दे मुंह फेर फिर अशीर की ओर देख —"घबराओ मत तुम ! यह बाद में देखा जायगा कौन सोवियत और जनता का मित्र है और कौन उनका शत्रु ?"

तिशोंको ने अरतैक को पहचान कर न सलाम दुआ की, न कुछ बात-चीत, न इतने दिनों बाद मिलने पर प्रसन्नता ही प्रकट की। जैसे उसे जेल-खाने में भाई बनने की बात उसे याद ही न हो।

"अलेक्सी"—अशीर फिर तिशोंको की ओर देख बोला—"कुछ नहीं कहा जा सकता भाई, जब किसी को समझ आ जाए ...।"

अरतैक का चेहरा सुर्ख हो गया परन्तु वह कुछ बोला नहीं। उसे याद

आ गया, चर्नीशोव ने कहा था—तुम अज़ीज़ की तरफ़ जा रहे हो। एक दिन खुद ही तुम अनुभव करोगे कि जनता के शत्रुओं का साथ देकर तुम स्वय ही जनता के शत्रु बन जाओगे।··· ' जनता अपने शत्रुओं को कभी माफ़ नहीं करेगी।''

अरतैक के लिये वहाँ और खड़े रहना सम्भव न रहा। उसने अशा को सलाम किया और चल दिया। न किसी ने उसे रोकने का यत्न किया और ना ही किसी ने उससे पूछा कि वह कहां जा रहा है।

तारों की छांव में कठिनता से राह पहचानता वह रेल की लाइन के साथ शहर से बाहर चल दिया। उसके मन में बार बार यह बात उठ रही थी—"मैंने सोवियत सरकार और जनता के विरुद्ध हथियार उठाये हैं······ जो जनता के लिये लड़ रहे हैं वे मुझे अपना शत्रु समझेंगे ही······ चर्नीशोव ने ठीक ही कहा था।"

१८

अंधेरी रात में अरतैक अपने गांव की राह चला जा रहा था। सुबह के पहर धुन्द कम होने लगा परन्तु चमचमाते तारों पर हल्की बदली का पर्दा छा गया। अरतैक सोचता जा रहा था—"आज दुनिया में जो कुछ हो रहा है, यह समझ लेना सम्भव नहीं। दुनिया की हालत तो इस अंधेरी रात से भी ज़्यादा बुरी हो रही है। राह को सीधी और साफ समझ कर चलो। दो कदम जाते ही कांटेदार झाड़ियां आ जाती हैं। दाहिने घूमो तो दलदल है और बांयें घूमो तो नाला! लौटना चाहो तो राह भटक जाय!" पर यह तो साफ़ है कि मैं चर्नीशोव, तिशेंको और अशीर का दुश्मन बन गया हूँ। अपने हार्दिक मित्र को मैंने मार ही डाला था......! बचपन में हम लोगों का कितना मेल और प्यार था!......भाइयों से बढ़ कर! आज हम एक दूसरे की जान ले रहे थे। हमें कौन जायदाद बांटनी है? हमारी लड़ाई किस बात पर? मैं अज़ीज खां के लिए इन लोगों से लड़ रहा हूँ! अज़ीज कौन मेरा अपना है?.... तो फिर लड़ाई किस बात की?.... यह दुनिया ही धोखा है!......यह तो पागलपन है।......यह उसूलों की लड़ाई है।.....मेरा बाप उम्र भर धरती जोत खेती करता रहा, क्या बना लिया उन्हों ने? मैं ही बीस बरस एक तम्बू में पड़ा खेती करता रहा, क्या फ़ायदा हो गया उससे? भूखा रहा नंगा रहा! दुनिया मजाक नहीं। कुछ करना है तो लड़ना पड़ेगा! अगर ज़िन्दा रहना है तो लड़ना पड़ेगा। अपने लिए और अपने जैसे लोगों की ज़िन्दगी के लिए लड़ना पड़ेगा। बाबा खां और उसके दोस्तों से, जिन्होंने मेरे जैसे लोगों का खून पिया है, मुझे लड़ना पड़ेगा। लेकिन तिशेंको, चर्नीशोव और अशीर भी तो यही कर रहे हैं!.. वे लोग भी तो जनता के लिए लड़ रहे हैं। मेरा और उनका झगड़ा क्या? सहसा उसे खयाल आया—इन दोस्तों से मैं क्यों लड़ रहा हूँ? यह मेरे कन्धों पर लगे अज़ीज के निशान ही मुझे इन लोगों से लड़ा रहे हैं।"

अपने कंधे से हरे निशान उतार अरतैक ने फेंक दिए। इतने दिन तक

यह निशान लगाए रहने के लिये मन में ग्लानि भी अनुभव हुई।

भूरे भूरे बादल अब बरसने लगे थे। बूंदे महीन थीं परन्तु हवा की तेजी से चेहरे पर चुभती सी जान पड़ती थीं। अरतैक अपने मन की उलझन में इतना खोया हुआ था कि बारिश और भीगने की ओर उसका ध्यान ही न गया। सूखा पड़ने के बाद से सन् १९१८ के बरस में तह तीसरी बारिश थी।

सूरज निकलने के समय तक बारिश थम गई। बारिश से धूल बैठ गई थी। इस लिए बादलों को उड़ाने वाली हवा चली तो उसमें धूल का नाम न था। भीगी धरती से बहार (बसंत) की गंध उमड़ रही थी। सब ओर जीवन फूटने के चिन्ह दिखाई पड़ रहे थे। अभी तक अंधेरे से दृष्टि बंधी रहने के कारण अरतैक को जान पड़ रहा था धरती और संसार सिमिट कर अंधेरा कुआ बन गए हैं। अब प्रकाश फैलने से दुनिया उसकी आँखों के सामने फैल गई। खेतों में गेहूँ के अंकुर फूट रहे थे। बरस भर से दबा बीज धरती में रस पा कर फूट उठा।

चारों ओर फैली सजीवता से अरतैक के मन का दुख और शरीर की थकावट भी उड़ गई। उसका मन गुदगुदाने लगा, वह गुनगुनाने लगा और ऊँचे स्वर में गाने लगा। उसे पता भी न लगा कि राह कैसे कट गई और वह घर पहुँच गया।

ऐना उसे आया देख उसके सीने पर सिर रख ऐसे चिपट गई कि मानी वह उसके लौटने की आस खो बैठी हो। अरतैक को खूब प्रसन्न, और उसके कंधों पर से हरे निशान फटे देख ऐना का दिल बाग बाग हो गया।

"ऐना को देख पाता हूँ तो मेरा दुख और चिन्ता भूल जाती है"—अरतैक ने सोचा क्यों मैं व्यर्थ भटकता फिरता हूँ? जो सुख और विश्राम घर में है उसे भी छोड़े बैठा हू। अब चाहे जो हो, जैसा अमल चले, पहले जैसा जोर ज़ुल्म तो हो नहीं सकता। मैं राजनीति समझता नहीं हूँ। खामुखा भटक रहा हूँ। बेहतर है घर पर ही चैन करू। ऐना भी तो यही चाहती है……।"

अरतैक को अपने गांव में जीवन, स्वप्न के सुख संतोष भरे संसार जैसा जान पड़ रहा था। ऐना आखों के सामने दिखाई पड़ती रहने से जीवन में पूर्णता और संतोष जान पड़ता था। ऐना की बोली कितनी मीठी जान पड़ती। उसका चलना-फिरना, उठना-बैठना उसका सब व्यवहार उसे

सौन्दर्य की सब से बड़ी कल्पना जान पड़ती। ऐना भी सभी तरह उसे अधिक से अधिक सतोष देने का यत्न करती। ऐना यह सब कुछ पत्नी की दीनता से नहीं बल्कि अत्यन्त स्वाभाविक ढग से, परस्प· के प्यार को पूर्ण करने और सतोष पाने के लिए करती। उनका यह प्रेम निस्सीम जान पड़ता। ऐसा जान पड़ता एक ही हृदय अलग अलग शरीरों में काम कर रहा था। एक के होठों पर आई मुस्कान दूसरे के मन को गदगद कर देती। दो पना मिट कर दोनों बिलकुल एक जान हो गये थे।

अरतैक का चाचा लड़के और बहू का यह व्यवहार देख विस्मित था—आज कल के लड़के लड़कियों के ढग निराले हैं। इन बेवकूफियों में क्या रक्खा है? आखिर औरत क्या है?—वह सोचता—अपनी बीवी के लिए पागल और परेशान होने का क्या मतलब? नए घड़े का पानी तो ठडा मालूम होता ही है। चाहे इसे मुहब्बत कहलो या कुछ और। · · देर तक प्यासा रहने के बाद जो भी पानी मिल जाय उसका स्वाद और गध अच्छा ही होता है।"

अरतैक इस घरेलू ज़िन्दगी में ऐसे बैठता चला गया कि उसे दूसरी तरह का जीवन केवल मूर्खता और अहकार ही जान पड़ने लगा। वह सोचने लगा—बाप दादा से चला आया तरीका—देहात में रह कर खेती करना ही सब से बड़ा सतोष है। वह सोचता—अब कौन अलनजर आकर उसे लूट ले जायगा। वह यह भी भूल गया कि अलनज़र बेचारा तो मर ही चुका था और शायद अपने साथ ही वह अपनी निर्दयता, धूर्तता, क्रूरता और शोषण भी ले गया था। बात कही जाती है कि मकान गिर भी जाता है तो उसकी नीवें रह जाती हैं वैसे ही अरतैक के मन में अलनज़र की छाया अभी बनी ही थी। गाँव में यह अफ़वाह फैल गई थी कि अरतैक ने ही अलनजर बे को मार डाला है। हालाँ की अलनजर को मार डालने में अरतैक को कोई आपत्ति नहीं थी और न वह इस तरह की लोक निन्दा की ही चिन्ता करता परन्तु इस नए जीवन की शान्ति का यह प्रभाव था कि अरतैक को इस अफवाह से मन ही मन अच्छा न लगता। वह मन ही मन कहता—"अरे कहते हैं तो कहने दो! अलनजर का काम अगर मैंने तमाम नहीं किया तो अभी बाबा खां तो बचा ही है!"

अरतैक ने खेत के हल और दूसरे औज़ार ठीक कर डाले। बैलों के जुए सम्भाले! दीमक लग कर यह सब बरबाद हो रहे थे। उसने फावड़े

और बेलचों को ठीक कर उन पर धार रखी ।

इधर पानी का छींटा भी आकाश से रोज ही गिर रहा था । ज़मीन नरम देख किसानों ने खेत सम्भालने शुरू किए । अरतैक ने भी शहर के कपड़े बदल खेती के काम लायक कपड़े पहने । ईद के अगले रोज़ वह भी अपने चाचा के साथ हल लेकर जुताई करने खेतों में पहुँच गया । नमी भरी हवा उनके पसीने तर चेहरों को सहला जाती । नम धरती बड़ी उत्सुकता से हल के फाले के इशारे से उलटती जा रही थी और उसकी महक जोतने वालों का उत्साह बढ़ा रही थी ।

नये जुते हुये खेतों पर से एक चिड़िया (लार्क) चिल्लाती हुई निकल जाती—टू······टी······टा । टू······टी··· ·टा । "अरतैक को जान पड़ता चिड़िया कह रही है—जो जोतेगा, खाएगा । जो बोएगा, खाएगा ।"

अरतैक को विश्वास था—यही नये युग का संदेश है ।

१६

जिस रात लाल सेना ने काफ़िलासराय पर छापा मार कर अज़ीज़ के सिपाहियों के हथियार छीन लिये, अज़ीज़ शहर में न था। वह शहर से कुछ दूर एक गांव में टिका हुआ था। सराय से भागे सिपाहियों ने जाकर उसे दुर्घटना और अलनज़र बे की मौत का समाचार दिया। दुख और चिन्ता का कारण था कि इस छापे में लाल सिपाहियों ने अज़ीज़ की दो सौ अठारह राइफ़लें और बारह हज़ार कारतूस हथिया लिये। इस भयंकर चिन्ता के समय वह बे की जान को क्या रोता ?

अज़ीज़ के सिपाहियों ने खोये हुये हथियार फिर से मिल सकने की आशा भी दिलाई। उन्होंने बताया कि लाल सेना के कमाण्डर कुली खां को हथियार पा कर लाल सेना की शक्ति बढ़ाने की उतनी चिन्ता नहीं जितनी कि यह छीने हुये हथियार बेचकर रुपया बनाने की है। इन सिपाहियों ने भेद पालिया था कि कुली खां ने अज़ीज़ से छीने हुये हथियार तुरत ही एक धूर्त यमूद चारी चमन को देकर तौशेज भेज दिया है। चारी चमन यह हथियार या तो जुनैद खां के हाथ या खुरासान के सरदारों के हाथ बेचेगा। खुरासान के सरदार जुनैद खां के विरुद्ध बग़ावत करने के लिये हथियार जुटा रहे हैं। चारी चमन अभी दूर नहीं गया होगा। अगर तेज़ सांडनियों पर उसका पीछा किया जाय तो हथियार लौटाये जा सकते हैं।

अज़ीज़ ने सोच विचार में समय बरबाद न कर छः तेज़ सांडनियों पर पलान कसवाये और अपने भरोसे के छः सिपाहियों को ले, चारी चमन के पीछे सरपट चाल से रेगिस्तान में निकल पड़ा। तेज़ सांडनियां रेत के टीलों को फांदती चली जा रहीं थीं और सरपट कड़ी धरती पाकर वे हवा के आगे ऐसे उड़ने लगतीं कि हवा उनका पीछा कर रही थी। उसी राह पर चलने वाले दूसरे काफ़िले विस्मित थे कि यह लोग किस चाल से जा

रहे हैं और कहां जाकर रुकेंगे। लोगों ने यही समझा कि यह डाकुओं का दल है और पीछा करने वालों से जान बचाने के लिये भाग रहा है।

तेजेन की ओर जाते हुये भी कई क़ाफ़िले उन्हें मिले। रेगिस्तान की लम्बी मंज़िलों में भी व्यापारी क़ाफ़िलों के ऊंट अपनी लहराती गर्दनें आकाश की ओर उठाये, दांये बांये देखते हुये, धीमी मस्तानी चाल से चला करते हैं। परन्तु इन क़ाफ़िलों के ऊंटों के कोहान छिलकर खून बहते रहने से लकीरें जमी हुई थीं। कुछ ऊंट बोझ उठाने लायक ही न रहे थे और खाली ही जैसे तैसे चल रहे थे। कुछ गधों पर बोझ लाद दिया गया था और वे ऊंटों के लायक बोझ से टांगें फैलाये, काले काले पसीने से लथपथ दम तोड़ते चल रहे थे। यह क़ाफ़िले तेजेन में भूखे मरते अपने लोगों के लिये अनाज ढोकर ला रहे थे। इनके हृदय धड़क रहे थे कि अनाज घर पहुंचाने से पहले ही कहीं उनके परिवार भूख से दम न तोड़ बैठें।

राह चलते क़ाफ़िलों को अज़ीज़ ध्यान से परखता जा रहा था और उनसे आगे गये चारी चमन के विषय में पूछ लेता कि वह कितनी दूर पहुंचा होगा। पहले तो क़ाफ़िले वाले कुछ समझ न पाते परन्तु काले ठिगने, चंचल से आदमी का हुलिया सुनकर बताते कि उसे तो हमने तीन दिन पहले देखा था, वह तो बहुत दूर निकल गया होगा।

अज़ीज़ अपनी सांडनियों को और तेज़ कर देता। वह बिना रुके पड़ाव पर पड़ाव पीछे छोड़ता जा रहा था। उसने सांडनियों के पलान से पांव नीचे न रखा। काराक़ुम के रेगिस्तान में से पन्द्रह दिन की इस राह के दोनों ओर युगों से इस राह पर मरते चले आये ऊंटों के पंजर धूप से सफ़ेद होकर चमकते रहते हैं। कहीं झाड़ियों के आसपास भुखहार भटकते ऊंट भी दिखाई दे जाते जिन्हें उनके मालिक कभी साथ चलने में असमर्थ जानकर मर जाने के लिये राह पर छोड़ गये थे। परन्तु यह जानवर मरे नहीं बल्कि विश्राम पाकर चलने फिरने लायक हो गये। कहीं भेड़ों के गोल दिखाई दे जाते। रात के समय गड़रियों की बंसी की तानें भी सूने रेगिस्तान में गूंज उठतीं। १६१७ के सूखे ने इस दृश्य को और भी भयंकर बना दिया था। इस मंज़िल पर जहां तहां बने कुयें और सोते सूख कर पड़ोस में बसी छोटी मोटी बस्तियां भी उजड़ गई थीं। कहीं ही कोई बच रहा खेमा खड़ा दिखाई दे जाता। झाड़ियों में पत्ते तो उग ही न

पाये थे। भूखे ऊँट झाड़ियों की टहनियाँ ही चबा गये थे। इस साल भरे जानवरों की लाशें पिछले दस बरस के पजरों से कहीं अधिक थीं। भेड़ियों और लोमड़ियों की आवाज़ें अब पहले से कहीं अधिक सबल हो गई थीं और यह जानवर भी खूब मुटा रहे थे। इन्हें अब शिकार की तलाश में भटकना न पड़ता था। जगह जगह काफ़िलों से गिर पड़े ऊँटों की लाशें इनके खाये खतम न हो पातीं। यह जानवर रात में डेरों के पास निधड़क आ घिरते। इनके मन से इन्सानों का डर जाता रहा था। आदमियों को देख वे विस्मय से ऐसे कनौतियां खड़ी कर लेते मानों सोच रहे हों कि क्या अभी भी ज़िन्दा इन्सान और जानवर दुनिया में बाकी है।

ओतांकेक पहुच कर अज़ीज़ ने काफिलों के डेरे में फिर चारी चमन की बाबत पूछा। उसे उत्तर मिला कि काफ़िले को उन लोगों ने दो दिन पहले देखा था। वे लोग भी बहुत तेज़ी में थे। अब तक तो वे लोग काराकुम का रेगिस्तान पार कर चुके होंगे।

अज़ीज़ और तेज़ी से चल पड़ा। अज़ीज़ को भरोसा था कि खुरासान पहुंच कर वह चारी चमन को पकड़ तो लेगा परन्तु भय यह था कि अज़ीज़ के पहुचने से पहले ही चारी चमन हथियार को बेच न डाले। चारी चमन भाव तोल तो क्या करेगा? वह तो मिट्टी के मोल ही सब कुछ फेंक कर पैसा बटारने को करेगा। अज़ीज़ ने साडनियों को निर्दयता से और हाका। पन्द्रह दिन की राह वे लोग तीन ही दिन में पूरी किये डाल रहे थे।

'रख्त' पहुच कर उसने फिर एक काफ़िले से चारी चमन के विषय में पूछा। इन लोगों ने बताया चारी चमन उन्हें कल ही मिला था। बहुत जल्दी में था और हथियार बेच कर साठ ऊंट और साठ ऊंट के बोझ का चावल खरीद कर तेजेन लौटने की बात कर रहा था। इन लोगों से भ कह गया था, जिसे पुलाव खाना हो, थाली लेकर तेजेन पहुच जाये।

अज़ीज़ ने पूछा—"क्या ख्याल है, वह नौरोज़ कब तक पहुच जायगा?"

सुबह ही पहुच जायगा। बहुत देर करेगा, दोपहर तक आ पहुचेगा।" अज़ीज़ पछता रहा था—"अगर वह कुछ और पहले चल सका होता!"

अगले दिन दोपहर के बाद अज़ीज़ का दल काराकुम की सीमा पर पहुंच गया। सपाट रेत के मैदान के आगे तख्त के बाग दिखाई देने लगे थे। दिखाइ दे जाने पर भी तख्त अभी दूर था। तेजेन से पन्द्रह दिन की मंज़िल तीन दिन में पूरी करने से जितनी कठिनाई उन्हें हुई उससे अधिक दूभर हो गया रेगिस्तान की सीमा से तख्त तक पहुचना।

अज़ीज़ जब तौशेज़ और खुरासान के खान जुनैद खाँ के आँगन में पहुचा तो सूर्यास्त हो चुका था। जुनैद के आदमियों ने अज़ीज़ के लिये ठहरने की जगह का इन्तजाम कर दिया परन्तु अज़ीज ने अपने आने की खबर जुनैद खाँ को तुरन्त दी जाने का आग्रह किया।

खबर पाकर जुनैद खाँ आया। जुनैद का शरीर भारी भरकम परन्तु गठीला था। उसके लाल चेहरे पर सफेद गोल दाढ़ी खूब फब रही थी। आँखें उसकी बाज़ की तरह पैनी थीं। जुनैद ने अज़ीज़ को आलिंगन में ले सलाम किया। कुशल मगल पूछा और अज़ीज उसका हाथ अपने हाथ में थामे बोला—"मेरे भाई शुक्रिया है। तुमने अपने बड़े भाई का इतना ख्याल किया और यहाँ आने की तकलीफ़ की। और तुम्हें अचानक आ पहुचा देख कर तो मुझे और भी खुशी हुई।

जुनैद अज़ीज़ को अपने खास मेहमानखाने में लिवा ले गया। अज़ीज़ आँगन में आते जाते घुड़सवारों की सख्या से हैरान था। घोड़े भी बढ़िया और सजे धजे थे। भूरी दाढी वाले सभी सिपाही खान्दानी सर्दारों जैसे जच रहे थे। कुछ घोड़ों के पीछे, हाथ बधे, गलों में फदे पड़े आदमी घसीटते चले आ रहे थे। अज़ीज़ और उसके साथ के लोगों के ऊँटों को पहले आँगन में खड़े नौकरों ने थाम लिया। यहाँ बीसियों घोड़े, ज़ीन साज से लैस खूटों से बँधे थे। दूसरे आँगन में माल असबाब की गाँठों और बोरों के गज लगे हुये थे। जुनैद का मकान तीसरे आँगन में था। मकान बाहर से मामूली सा दिखाई देता था। परन्तु भीतर फर्श से छत तक सजावट से पटा हुआ था। सभी ओर भड़कीले रगों में बने फलों फूलों से सजावट की हुई थी। एक कोने में आग की लपटें उगलते समावार और प्यालों में चाय उड़ेलती चायदानी का चित्र बना हुआ था। कालीनों से मढे फर्श पर जगह जगह मखमली गाओ तकिये लगे हुए थे। रेशमी गद्दियों और रजाइयों के ढेर बने थे। एक कोने में आदमकद आइना लगा हुआ था।

एक नौकर हुक्का लेकर हाज़िर हुआ चिलम में तौशेज़ का सफ़ेद तम्बाकू जमा हुआ था। तम्बाकू पर दहकता हुआ अंगारा रख खादिम ने हुक्का मेहमान के सामने पेश किया। अज़ीज़ ने एक कश खींचा तम्बाकू की महक चारों ओर फैल गई परन्तु उसके साथ ही अज़ीज़ का सिर भी चकरा गया।

एक मिनिट भर सिर साफ़ होने के लिये प्रतीक्षा कर अज़ीज़ बोला—"क़ुर्बान मुहम्मद खाँ, भाई मुझे मुआफ़ करना। मैं आपको एक तकलीफ़ देने के लिये हाज़िर हुआ हू……।"

तैशेज़ के खान का नाम क़ुर्बान मुहम्मद खाँ था। जुनैद उसके कबीले का नाम था। इतने बड़े खान को नाम लेकर पुकारना और फिर घरदार के बिना पूछे ही, स्वय मतलब की बात शुरू कर देना तुर्कमानी रिवाज़ से उचित बात नहीं थी। जुनैद खाँ विस्मय से अपने मेहमान के मुख की ओर देखता रह गया और बोला—"अज़ीज़ खाँ, कैसे अचानक तुम आ पहुचे, और बात भी कुछ अजीब ढंग से कर रहे हो, खैरियत तो है ?"

"मालिक खान! इस समय में खान की स्थिति में नहीं हूँ। बल्कि अपने सर्वस्व लेकर भागते डाकुओं के पीछे तुम्हारी सहायता माँगने आया हूँ। यह डाकू आज सुबह या दोपहर आपके इलाके में आये हैं। मैं सबसे पहले इन डाकुओं को खोजने की प्रार्थना करना चाहता हूँ।"

"तुम्हारा क्या नुकसान हुआ ? निजी नुकसान या तुम्हारे इलाके का ?"

"मेरा निजी नुकसान भी और मेरे इलाके का भी !"

"खैर, अगर वह डाकू मेरे इलाके की सीमा में हैं तो कल सुबह तुम्हारे बिस्तर से उठते ही तुम्हारा माल तुम्हारी नजरों के सामने मिलेगा।"

"हजार शुक्र है मालिक !" —अज़ीज़ ने चारी चमन की हुलिया और अपनी बन्दूकों की संख्या जुनैद को बता दी। जुनैद ने तुरन्त अपने आदमियों को हुक्म दिया कि सभी गाँवों में पड़ताल की जाय और चारीचमन, और उसके सथियों और इन लोगों को शरण देने वाले लोगों को मुश्कें बाँध कर फौरन पेश किया जाय।

जुनैद ने मन ही मन सोचा, क्या अज़ीज़ खाँ इतनी सी बात के लिये अकेला उसके पास दौड़ा आया है। जरूर मुसीबत में फँसा है। अज़ीज़ को पहले विश्राम करने का अवसर देने के तकल्लुफ़ की परवाह न कर उसने

मेहमान को सम्बोधन किया—"अज़ीज़ खाँ, हम तुम दूर दूर रहते हैं तो क्या मन तो हमारा मिला हुआ है। जब कभी कोई यात्री उस ओर से आता है, मैं सदा तुम्हारा कुशल क्षेम पूछ लेता हू। तुम्हारे बढते इकबाल की बात सुन मुझे सदा बहुत प्रसन्नता होती है। आज क्या बात है? क्या बहुत थके हुए हो? तुम सुस्त और मुर्झाये से जान पड़ते हो? मैं यह नहीं पूछ रहा कि तुम्हारी यात्रा का प्रयोजन क्या है? यही सोच रहा हू कि मैंने सदा तुम्हारी बढ़ती की बातें सुनी थीं परन्तु तुम उदास दिखाई दे रहे हो।"

अज़ीज़ जानता था कि जुनैद बहुत चतुर आदमी है। उसके स्थिति भाँप लेने से अज़ीज़ का कुछ आश्चर्य नहीं हुआ। जुनैद से कुछ छिपाने का यत्न करना भी मूर्खता थी। अज़ीज़ चाय पीते-पीते धीमे धीमे कहने लगा—"मालिक खान, मुझे तुम्हारी नसीहत याद है—"अगर दुश्मन के हमले का इरादा जान पाये तो उस पर पहले ही वार करे।"—इसीलिये मैंने तेजेन में सोवियत के मौका पाने से पहले ही अमीरों का गल्ला लेकर गरीब लोगों में बाँट दिया। लेकिन सबसे बड़े मामले में ही मैं इस नियम से चूक गया और इसीलिये मार भी खा गया।"—अज़ीज़ ने तेजेन में लाल फौज के छापे और उनके हथियार खो बैठने की घटना सुना दी।

अज़ीज़ की बात खतम होते ही जुनैद पूछ बैठा—'अज़ीज़ खाँ, तुम नहीं जानते मैं सीमा में क्यों नहीं रहता। वहां इसफन्दियार खां का आलीशान महल मेरे पास है? क्यों मैंने अपना घर यहां तख्त जैसी मामूली जगह में, तौशेज के वीरान इलाके में बनाया है?" अज़ीज़ कुछ न समझ सका, जुनैद कहीं रहे, उसकी बला से? वह उससे यह प्रश्न क्यों पूछ रहा है?—"मालिक खान, मैं कुछ जवाब नहीं दे सकता। शायद यह बात है कि आप जुनैद के खान हैं।"

जुनैद मुस्करा दिया और बोला—"ठीक है। तुम नहीं समझ सकते। सुनो, अगर मैं खीवा जाकर इसफन्दियार खाँ के महल में रहू तो लोग मुझे खान के बजाय शाह समझने लगेंगे। लेकिन असलियत क्या होगी? मैं बुलबुल की तरह पिंजरे में कैद हो जाऊँगा। खीवा किले की चारदिवारी से घिरा है। और राह है केवल नदी के पुल पर से। किले के चारों ओर इसफन्दियार खाँ के पुराने सहायक जमे हुए हैं वे लोग मुझसे जलते हैं। अभी तो उनकी हिम्मत मेरा विरोध करने की नहीं परन्तु अगर मुझे कमजोर पायें तो झट चढ़ बैठें। यहाँ कोई आस पास मुझे आँख दिखाने की

हिम्मत करने वाला नहीं। यहाँ मुझे अगर खुरासान या खीवा में बगावत की खबर मिले तो सूरज डूबने से पहले मैं उन लोगों का नामोनिशान मिटा दे सकता हू। तुम यहाँ तेजेन शहर में घिरे बैठे हो, वहाँ तुम किस पर हुकूमत करोगे? ज़ार के अफसरों पर? एक तो वह रेलवे लाइन तुम्हारी छाती पर वार साधे बैठी रहती है। तुम उन लोगों के खिलाफ़ उंगली भी उठा दो तो वे सब ओर से घिर कर तुम्हारा सिर कुचल दें। मान लो मैं तुम्हें पाँच हजार घुड़ सवार दे दूँ। तुम जाकर तेजेन को फूंक डालो। फल क्या होगा? रेल के रास्ते तेजेन में दोनों तरफ से दुश्मन की फौजें आ घिरेंगी। तुम तुर्कमान सिपाही हो। रेतीले मैदान में जन्मे, पले। शहर के घमासान में तुम्हारा क्या काम? तुम अगर तेजेन के अफसरों को खत्म करना चाहो—तेजेन को लूटना चाहो तो एक रात में यह काम कर फिर अपनी जगह लौट कर चैन करो। ऐसी हालत में तुम्हारे दुश्मन सदा परेशान रहेंगे और तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे। तुम तेजेन पर कब्ज़ा भी करलो तो क्या? इससे पूरा तुर्कमानिस्तान थोड़े ही एक हो जायगा। अलबत्ता अगर तुम दुश्मन की पहुच से दूर रहो, उनसे मार न खा सकोगे तो लोग तुम पर भरोसा कर सकेंगे। मैं हर तरह से तुम्हारी सहायता के लिये तैयार रहूगा। तुम भरोसा करते हो अश्काबाद के उन धूर्त शहरियों, नियाज़ बेग और ओराज़ सरदार का! यहाँ भी उनके दूत रोज़ ही चले रहते हैं। मै उनकी बातें सुनकर चुप रह जाता हू। मुझे उन पर कोई भरोसा नहीं। यह लोग हम पर सवारी गाँठ कर अपना काम बनाना चाहते हैं। होशियारी यह है कि हम लोग इन पर सवारी गाँठें। उनकी सुने जाओ! अपनी कहो मत··· !"

अब तक अज़ीज़ अपने आप को बहुत होशियार समझता था और उसका ख्याल था कि वह अपनी सल्तनत जमा लेने के योग्य हो गया है। जुनैद की बातें सुन उसकी आँखें खुलीं और वह समझा कि इस चतुर आदमी के सामने वह केवल तुतलाता बच्चा ही है।

उन दोनों की बातचीत बहुत देर तक चलती रही। इसी बीच में एक खूब लहीम शहीम आदमी, दोनों कन्धों से कमर तक पेटियाँ कसे भीतर आया। उसकी कमर से एक पिस्तौल और कधे से राइफल लटक रही थी। अज़ीज़ ने समझा यह आदमी ज़रूर किसी बड़े कबीले का सरदार और जुनैद की फौज का कोई कप्तान है। इस आदमी ने भीतर आ दोनों खानों

को सलाम किया और जुनैद को सम्बोधन कर बोला—"मालिक, डाकू लोग एक गाँव में ठहरे हुए हैं और गाँव का चौधरी मालिक की हुक्म उदोली कर रहा है। वह डाकुओं को पकड़ने नहीं देता। हमारे सिपाहियों के हथियार उसने छीन लिये हैं और उन्हें धमका कर लौटा दिया है—"जाओ जुनैद खाँ से कह दो। हम उसके गुलाम नहीं है। अपने गाँव के हम खुद मालिक है।"—मालिक की इजाज़त हो तो इन लोगों के होश ठीक कर दिये जायँ।

यह समाचार सुन कर जुनैद के चेहरे पर कुछ परिवर्तन न आया। उसका एक रोम भी न फरका। केवल उसकी चमकीली पैनी आँखें ज़रा और सिकुड़ गई—"दो सौ सवार ले जाओ"—जुनैद ने धीमे से कहा—"गाँव के सब मर्दों के सिर उतार दो। उनके खेमे जला दो और औरतों को क़ैद करके ले आओ। यह काम करके सुबह की नमाज के वक्त मुझे खबर देना।"

"मालिक का हुक्म पूरा किया जायगा।"—कप्तान ने सलाम किया और कमरे से बाहर चला गया। जुनैद फिर बेपरवाही से बातचीत करने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

क्या जुल्म है!—अज़ीज़ मन ही मन सोच रहा था। सैकड़ों आदमियों का कत्ल, सैकड़ों खेमे लूट कर फूंक देना, सैकड़ों औरतों को क़ैद कर लेना, सिर्फ एक मामूली गुस्ताखी के लिए! लेकिन यही सही तरीका है! एक गाँव के साथ यह बरताव होगा हजारों दूसरे गाँव अपने आप सीधे बने रहेंगे। सल्तनत ऐसे ही चल सकती है।

उन दिनों खुरासान के इलाके के सरदार कलामअली और गौस मुहम्मद जुनैद के खिलाफ बगावत करने के लिये सिपाही और हथियार बटोर रहे थे और कहते फिरते थे—"जुनैद के माथे पर कौन चाँद सितारे लगे हैं। जैसा वो वैसे हम! वो हम लोगों को कुछ समझता ही नहीं। कभी हमारी बात नहीं पूछता। जैसे हम लोग ढोर डंगर हों कि हाँक दिया लाठी से! हमारे ही बूते पर तो सल्तनत चला रहा है। हम खुद ही क्यों न अपने सुल्तान बनें!"

जुनैद का यह जालिम हुक्म इन्हीं लोगों को ठीक करने के लिये था। इसके बाद जुनैद अज़ीज़ से ओर आन्तरिकता से बातचीत करने लगा।

अब्दुल करीम खाँ का चर्चा चला। अज़ीज़ ने पूछा—"मालिक खान, आपकी राय में अब्दुल करीम खाँ असल में कौन हैं ?"

जुनैद ने बताया कि वह उसके यहाँ भी आया था। और अपने आप को अफगानिस्तान के अमीर का ही दूत बताता था। परन्तु बातचीत में उसकी चतुरता और उसकी राजनैतिक जानकारी से जुनैद को सन्देह था कि वह आदमी अफगानिस्तान से बहुत बड़ी किसी सल्तनत का आदमी है और उसका मतलब भी उसकी बातों से कुछ और अधिक बड़ा और व्यापक था।

"मेरा ख़याल है उसने अपना नाम बदला हुआ है और वह मुसलमान नहीं है। अगर कल वह ब्रिटिश अफसर की वर्दी पहन कर यहाँ आ खड़ा हो तो मुझे कोई आश्चर्य न होगा। अब्दुल करीम हमारी बला से कोई भी हो ! अपने मतलब की बात यह है कि वह अपने मालिक के हुक्म से मुल्क-मुल्क घूम रहा है। हम लोगों की बीसियों बोलियाँ जानता है ! पूरब के रंग ढंग समझता है। वह हमारे दुश्मन, रूसी बोलशेविकों के ख़िलाफ सब मुसलमानों को इकट्ठा कर रहा है, यह हमारे लिये अच्छा मौका होगा, अपना कदम जमा लेने का।"

"मालिक खान आपका क्या ख़याल है ? अब्दुल करीम की चाल चल जाय और उसके मालिकों का कदम यहाँ आ जाय तो हम लोगों का फायदा रहेगा ? हमारा क्या बनेगा ?"

"मेरा ख़याल है कि हिन्दुस्तान में अंग्रेज लोगों ने खानों की गद्दी नहीं छीनी ! अंग्रेज चाहता है रियाया को काबू में रखना। वह हमारी मदद करेगा। लेकिन अपना खिराज (राजकर) लेगा। वो अपनी चाल चल रहे हैं, हमें अपनी चलना है। हम अपनी गर्दन उनके हाथ में थोड़े ही दे देंगे"

दोनों खान बहुत देर तक बैठे आपस में रियाया को दबा कर अपना आतंक कायम रखने के दाँव घात की बात करते रहे। दोनों ही जानते थे कि एक के गिरने से दूसरा भी कमज़ोर पड़ जायगा। इसलिये वे परस्पर ईमानदारी से एक दूसरे की सहायता करना चाहते थे। बातचीत करते समय जुनैद रेशम के छोटे छोटे चिन्दियों जैसे छः उंगली लम्बे-चार उंगली चौड़े रूमालों से खेलता जा रहा था। अज़ीज़ इन टुकड़ों को ध्यान

से देख रहा था। टुकड़ों पर १०-१०० और ५०० के अंक पड़े हुए थे। अज़ीज़ निरक्षर था परन्तु ज़ार की सरकार के नोटों पर यह अंक देख देख कर इन्हें पहचान गया था।

"मालिक खान, यह क्या हैं?"—आखिर वह पूछ बैठा।

"रूमाल"—जुनैद मुस्करा दिया।

अज़ीज़ ने टुकड़ों को उठाकर देखा वह खूब मजबूत रेशम से बने हुए थे। नहीं मालिक, निरे रूमाल त}यह नहीं जान पड़ते।'

"तो फिर क्या हैं?"

"मैं समझा नहीं परन्तु इन पर मोहरें लगी हैं यह तो नोटों जैसे जान पड़ते है।"

"नोट जान पड़ते हैं?"

"जान तो पड़ते हैं!"

जुनैद ने अपने यहाँ के देसी रेशमी कपड़े के नोट चला दिए थे। यह नोट मजबूत भी थे और सुन्दर भी। उसे अपने इन नोटों पर अभिमान था। इन नोटों से जुनैद को अभिमान से खेलते देख अज़ीज़ मन ही मन सोच रहा था—इसने रेशम के नोट चलाये हैं, बड़ा खुश है। मैं कालीनों व नोट चलाऊँगा।"

मुर्गी का पुलाव आया और फिर तौशेज के सर्दे आये। खा पीकर अज़ीज़ की आँखें झपकने लगीं। वह त न दिन से बिलकुल सोया न था। वह हुक्के के हल्के हल्के कश खींचता हुआ जम्हाइयाँ लेने लगा। ज्यों ही जुनैद सलाम कर जाने के लिए उठा अज़ीज़ नरम गद्दे पर पसर गया। एक बार उसे चारी चमन और अपनी खोई हुई राइफलों की याद आई और वह खुर्राटे भरने लगा।

चारी चमन दोपहर के समय ओकूज़ गाँव में पहुँच गया था। वहाँ उसने अपने ऊँटों का बोझ उतार दिया। ओकूज तुर्कमानों में बहुत पुराना और मशहूर कबीला था। साँझ होने पर गाँव के ओकूज़ और ममूद लोग चारी चमन के चारों ओर घिर आये और राइफलों को जाँच कर उनकी कीमतें पूछने लगे।

चारी चमन ने उत्तर दिया,—"अरे भाई, मैं भी तो ममूद ही हू। मैं यहाँ सौदागरी करके मुनाफा कमाने थोड़े ही आया हू अपने यहाँ के

बुज़ुर्गों का हुक्म है कि ज़ार की गद्दी गिरने का फायदा हो ' अपने लोगों के हाथ में हथियार आयें। कीमत का क्या सवाल है ? मुझे तो लागत भर दे दो।"

चारी चमन जिस घर में ठहरा था आते ही वहाँ उसने मालिक को एक राइफल भेंट कर, राइफल का दाम जान लिया। घरका मालिक भी उसकी सहायता के लिए तैयार हो गया। राइफलों का सौदा खूब सरगर्मी से हो रहा था। उसी समय सवारों के उस ओर आने की टापें सुनाई दीं। ओकूज और ममूद लोग कुछ समझ न सके परन्तु चारी चमन आशंका से कांपने लगा। उसने दूसरे लोगों से पूछा—"यह कौन लोग आ रहे हैं भाइयो ?"

घर का मालिक अपने मेहमान की घबराहट भांप गया। वह खुद भी घबराया कि यह असमय कौन लोग इस तरह सरपट घोड़े दौड़ाये चले आ रहे हैं ? परन्तु अपना भय छिपा कर उसने चारी चमन को ढाढ़स बधाया—

"तुम मेरे मेहमान हो, तुम्हें क्या फिक्र ? जुनैद खां का इकबाल कायम रहे। यहां तुम्हें कोई आंख उठा कर देख भी नहीं सकता। जब खान को मालूम होगा कि तुम इतनी राइफलें और कारतूस लेकर आये हो, वह तुम्हें अपने दस्तरखान पर बैठायेगा और तोहफे देकर विदाई देगा।"

इतने में घुड़ सवारों का दल आ पहुंचा। इन लोगों को घेर कर दल के कप्तान ने पूछा—"चारी चमन कौन है ?"

घर के मालिक की बात से चारी चमन ने सोचा—"यह जुनैद के आदमी हैं। खबर पाकर मुझे लिवा ले जाने के लिये आये हैं। वह आगे बढ़ कर बोला—"मेरा नाम है चारी चमन।"

सवारों ने कुछ जवाब न दे चारी चमन की मुश्कें जकड़ना शुरू कर दिया। सब लोग हैरान थे। घर का मालिक घबरा कर बोला—"अरे ममूदो, ओकूजो ! खड़े क्या देख रहे ! मेरा दम रहते मेरे मेहमान को कौन छू सकता है ?"

उसकी बात पूरी न हो पाई थी कि सवारों ने उसे भी पकड़ उसकी भी मुश्कें बांध दी गईं और सवारों के सरदार ने दूसरे लोगों को चेतावनी

दी—"खबरदार, अगर कोई अपनी जगह से बाल भर भी हिला तो मैं पूरे गांव को आग लगा दूंगा।"

चांद चढ आया था। उसी प्रकाश में सवारों ने सब राइफलें और कारतूस ऊंटों पर लाद लिये। मालिक को भेंट में दी गई राइफल भी लेली गई। मुश्कें बंधे चारी चमन और घर के मालिक को भी साथ ले लिया गया। इसके बाद सवार लोग गांव के लोगों को कत्ल करने और गांव को लूटने के काम में लग गये।

सुबह की नमाज़ के समय जुनैद ने अपने हाथ पसार कर खुदा का शुक्र किया कि तेरे करम से मेरा हुक्म पूरा हुआ। अज़ीज़ ने भी अपना माल मिल जाने के संतोष में भक्ति और श्रद्धा से अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर खुदा की मेहरबानी और इंसाफ के लिये शुक्रिया किया।

चारी चमन अज़ीज़ के सामने खड़ा कांप रहा था जैसे चूहा विवशता में बिल्ली के सामने खड़ा हो।

"तुम कितनी राइफलें लाये थे?"

'मालिक, दो सौ अठारह"

"कारतूस कितने थे?"

"बा ... 'बारह हज़ार!"

"तुम्हें राइफलें और कारतूस किसने दिये थे?"

"कुलीखां ने!"

"तुमने कितनी बेची हैं अभी तक?"

"एक भी नहीं!"

अपना माल वापिस मिल जाने से अज़ीज़ खां बहुत संतुष्ट था। उसने जुनैद से सिफारिश की कि चारी चमन के सिवा दूसरे लोगों को रिहाकर दिया जाये।

अज़ीज़ जुनैद खां के साथ आंगन में आया तो वहां का दृश्य देखकर सिहिर उठा। सैकड़ों बच्चे और स्त्रियां नंगे उघाड़े बैठे रो रहे थे। इस भीड़ म एक भी मर्द न था। दस बरस से अधिक उम्र का कोई लड़का भी नहीं। इससे भी भयानक चीज़ थी पेड़ों पर लटके हुये गांव के बड़े बूढ़ों के सिर। इन सिरों की दाढ़ियां हवा में लहरा रही थीं और यह पथराई हुई आंखों से सामने के दृश्य को देख रहे थे। हवा के झोंकों से यह सिर

डोल जाते तो जान पड़ता कि अपने ऊपर हुये अत्याचार के लिये जुनैद खां के राज को कोस रहे हैं।

अज़ीज कांप उठा परन्तु साथ ही अपने मन को उसने समझाया—'यही मेरी भूल थी। मुझे कुली खां और दूसरे लोगों के परिवार का ऐसा ही प्रबंध करना चाहिये था।"

अज़ीज़ खां चार पांच दिन जुनैद का मेहमान रहा। उसकी मार्फ़त उसने कुछ राइफलें बेच डालीं और फिर तेजेन की ओर लौट चला। तेजेन से दस मील उत्तर पश्चिम की ओर हट कर 'अगलान में' उसने अपना डेरा जमाया और सिपाही जुटाने लगा।

सोवियत से भयभीत जागीरदार लोग आल्ती सोपी, अन्ना क़ुर्बान, यारमुश काज़ी और करीमुल्ला वगैरा फिर उसके आसपास आ घिरे। ईशान और अखून लोग उसके यहां आने जाने लगे। अलनज़र बे की मृत्यु के बाद मुहम्मदवली निस्सहाय हो गया था वह भी अज़ीज़ के यहां आ गया।

अज़ीज अब अधिक दुस्साहस से काम ले रहा था। उसने अपने सिपाहियों को घोड़े इकट्ठे करने का हुक्म दिया। 'जहां भी अच्छा जानवर दीखे पकड़ लो या जब्त करलो!"—उसका हुक्म था। गरीब अमीर का भेदभाव न रख वह जो आवश्यक समझता, सबसे छीन लेता। अगलान की उसकी छावनी में घोड़ों की संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही थी।

अगलान एक छोटी सी पहाड़ी पर बसा था। नीचे दूर-दूर तक खेत चले गये थे। दो बड़े मकानों के समीप दो खेमे लगाकर अज़ीज़ ने अपने लिये जगह बनाली थी। यहां उसका बड़ा भाई भी साथ रहता था। तीसरा खेमा उसने अपने पिता, चपैक सरदार के लिये लगवा दिया। इन मकानों और खेमों के चारों ओर उसके सिपाहियों के खेमे लगे थे जिनके सामने सैकड़ों रासी घोड़े हिनहिना कर धरती खोदते रहते। उसने जुनैद खां की सफलता और आतंक के उदाहरण से अपना मार्ग निश्चय किया। लूटमार और खास कर ज़ार के पुराने अफ़सरों को लूटना जिन्होंने किसी समय उसका विरोध किया था, या जिनसे किसी समय विरोध की आशंका की जा सकती थी। खून और डकैती उसके दैनिक काम हो गये। आस पास की जनता उसके नाम से थर्राने लगी।

२०

तेजेन में अज़ीज़ की प्रभुता मिट चुकी थी। सब शक्ति सोवियत के हाथ में आ गई। अज़ीज का तन्दूर (रोटियों का सबसे बड़ा कारखाना) और कई दूसरे कारखाने और खत्तियां जिन्हें अज़ीज़ ने हथिया लिया था, सोवियत के हाथ में आ गये। सोवियत ने दूसरे कारखाने और किराये के सब मकानों को भी अपने कब्ज़े में ले लिया। आस पास के गांवों से आ आकर किसान तेजेन में घिरने लगे। पड़ोस के दो तीन गांवों में सोवियतों (पचायतों) के चुनाव भी हो गये। ऐसे अवसरों पर कुलीखां खूब प्रचार करता कि सोवियत की सब सफलताओं का सेहरा उसी के सिर है। इस तरह वह अपने कदम मजबूत करता जा रहा था।

चर्नीशोव यह सब देखकर भी चुप था। कुलीखां के मामले को लेकर झगड़ा करना वह अभी उचित न समझता था। वह प्रतीक्षा में था कि कुलीखां को रगे हाथों पकड़ पाये। परन्तु अशीर का ख़याल दूसरा था। घाव से बहुत खून बह जाने के कारण वह निर्बल तो बहुत हो गया था परन्तु कोई अग भग न हुआ था। वह शीघ्र ही स्वस्थ होकर सेना में लौट आया। यहां आकर उसे कुलीखां की बहुत सी करतूतों का पता चला। चर्नीशोव के अनेक झझटो में फसा रहने के कारण यह बातें उस तक पहुच ही न पाती थीं। मावेद ने अशीर को बताया कि अज़ीज़ की फौज से छीने गये सब हथियार कुलीखां ने चारी चमन नाम के एक आदमी के हाथ तौशेज़ भेज दिये हैं। मैंने कुलीखां से पूछा कि हमारे हथियार कहा भेजे जा रहे हैं? तो उसने झुँझला कर उत्तर दिया—"और कहां जायगे? अश्काबाद भेज रहा हूं।" लेकिन मैंने अपनी आंखों देखा कि चारी चमन का काफिला माल स्टेशन पर न उतार रेल की लाइन पारकर तेज़ी से तैशेज़ की ओर बढ़ गया। कुलीखां मनमानी कर रहा है, कोई बोले तो

कैसे ? कुलीखां कुचल कर रख देगा !"

अशीर ने चुपचाप तौशेज़ की राह के गावों में पूछताछ की और सेना के खलासियों और दूसरे लोगों से भी भेद ले लिया। मामला चर्नीशोव के सामने पेश करने से पहले वह कुलीखां से मिला और अज़ीज़ की सेना से छीने हथियारों के विषय में पूछा।

"तुम्हें इन बातों से क्या मतलब ?" कुलीखा ने उत्तर में भौं चढाकर अशीर को डांट दिया।

"मुझे इस बात से बहुत मतलब है।—" अशीर ने उसकी ओर घूर कर जवाब दिया। कुलीखा को अाशान थी कि कोई व्यक्ति उससे ऐसा प्रश्न पूछने का साहस कर सकता है। अशीर को वह समझता ही क्या था! बल्कि वह उससे चिड़ता भी था। परन्तु अशीर का व्यवहार देख उसने अपना क्रोध वशकर मुस्कराकर बात बनाई—"अश्काबाद से जो सिपाही छापे में सहायता देने के लिये आये थे, वे लोग उन हथियारों को साथ ही ले गये।"

"ठीक बात कहो ! मुझे उड़ाओ नहीं।" अशीर बोला।

अपनी स्थिति के विचार से अशीर की बात सहजाना कुली खां को अपना असह्य अपमान जान पड़ा।—"ज़बान सम्भालकर बोलो—" उसने अशीर को धमकाया—"कम्पनी के कमाण्डर से इस तरह बात की जाती है ? तुम्हें मुझसे जवाब तलब करने का क्या हक़ है ?"

"तुम यह बताओ चारी चमन को किसने भेजा है ?"

"किसने कहां भेजा है ?"

"भूल गये ?—तौशेज ?"

"मैंने क्यों भेजा है ?"

"राइफलें बेचने के लिये !"

पल भर के लिये कुलीखां चकरा गया और फिर समझकर बोला—"मैंने तो इस बारे म कोई खबर नहीं सुनी !"

"तुमने नहीं सुनी, परन्तु मुझे पूरी खबर मिल गई है।"

"हूं, तो फिर फौज का कमाण्डर तुम्हीं को होना चाहिये।"

"यह बात बाद में देखी जायगी। तुम मुझे पहले हमारी मज़दूर किसान सरकार के हथियारों का हिसाब दो।"

"मैंने तुमसे कहा है कि अपनी स्थिति और अधिकार के अनुसार ही बात करो।"

कुलीखाँ फिर झुँझलाया।

"तुम मुझे हथियारों का हिसाब दो।"

"तुम्हें हिसाब की ज़रूरत क्या है? क्या अरतैक की दोस्ती में अज़ीज़ को भेद देना चाहते हो? मैं जानता हूँ, तुम अज़ीज़ की तरफ से हमारे यहाँ जासूसी कर रहे हो।"

"पहले तुम तो हिसाब दो। मेरी जासूसी की पड़ताल फिर करना।"

कुलीखाँ आगबगोला हो गया और चिल्ला उठा—"कोई है? ... इस आदमी को गिरफ्तार कर लो।"

अशीर ने अपनी राइफल सम्भाली। उसी समय अतादयाली भीतर आ गया और मज़ाक में बोला—"अरे भाई क्या हो रहा है। हमतो समझे थे अब तेजेन में शान्ति हो गई है यहाँ तो घर में ही जंग हो रहा है। अशीर क्या कर रहे हो? अभी बिस्तर से उठे हो, फिर बीमार पड़ना चाहते हो। चेहरे पर ज़रा खून तो आ लेने दो। कुलीखाँ को तभी समझेंगे। चलो आओ? एक प्याली चाय पिलायें तुम्हें। तुम तो गुस्से में काँप रहे हो—।"

अशीर कमज़ोरी के कारण सचमुच गुस्से में काँप रहा था। अतादयाली उसे बाँह से थाम कर ले गया। अतादयाली हँसी मज़ाक की बातें कर रहा था परन्तु अशीर के दिमाग में कुली खाँ की बेईमानी की ही बातें घुट रही थीं। उसका मन बहलने के बजाय क्रोध बढ़ता जा रहा था। वह अपने आपको रोक न सका और उठ कर चनीशोव की खोज में चला।

अशीर कुछ दूर तक बाजार में जा एक गली में घूमा ही था कि उसे सामने से कुलीखाँ, जेल का अफसर और दो सिपाही आते हुए दिखाई दिये। कुली खाँ ने आँख से अशीर की ओर इशारा किया और अफसर के इशारे से सिपाहियों ने अशीर के दोनों हाथ पकड़ लिये। अशीर हैरान था। अफसर ने उसे कहा—"तुम गिरफ्तार हो।"

अशीर ने अपने हाथ छुड़ाकर कंधे से लटकी बन्दूक लेनी चाही।

उसके हाथों में हथकड़ी डाल दी गई। तुरन्त ही उसे जेल में पहुँचाया गया और एक छोटी अंधेरी कोठरी में मूँद दिया गया। कुलीखाँ ने जेल के अफसर को चेतावना दी—"इस आदमी की गिरफ्तारी और इसके यहाँ होने की खबर किसी को न हो।"

चर्नीशोव अपने दफ्तर में बैठा ताशकन्द की सोवियत के नाम एक पत्र लिख रहा था। अश्काबाद के अनुभव से वह बहुत हतोत्साह और चिन्तित था। वह जानता था, उस समय भी यदि तिर्शोको बीच में न पड़ता तो उसे कुछ भी सहायता न मिलती। अश्काबाद पूरे तुर्कमानिया के इलाके का केन्द्र था और वहाँ की सोवियत में अधिकाँश बेईमान बूर्जुआ लोग भरे हुए थे। वह डर रहा था कि यदि फुन्तीकोव और दोखोव जैसे दगाबाज़ों के हाथ में व्यवस्था की बागडोर रही तो क्रान्ति का परिणाम क्या होगा? चर्नीशोव पत्र में अपनी इन सब आशंकाओं को स्पष्ट कर लिख रहा था कि तुरन्त ही किसी योग्य और विश्वासपात्र व्यक्ति को अश्काबाद भेज कर स्थिति जाननी चाहिए।

जब चर्नीशोव इस ज़रूरी पत्र में उलझा हुआ था, कोई आदमी बार बार उसके कमरे का बन्द दरवाज़ा खटखटा रहा था। आखिर चर्नीशोव चिढ़ कर उठा और दरवाजा खोल दिया। बाहर मावेद को खड़े देख चर्नीशोव का चेहरा खिल उठा। चर्नीशोव कई दिन से मावेद की खोज में था। वह जानता था कि अजीज़ के हथियार रखा लेने की घटना का प्रभाव जनता पर क्या पड़ा है। इस बात के लिए साधारण लोगों से मिल जुल कर रहने वाले मावेद से अधिक उपयुक्त आदमी कौन हो सकता था। सोवियत की बदौलत ही मावेद अलनज़र बे के पालतू पशु की स्थिति से निकल कर आत्मनिर्भर मनुष्य बन गया था। मावेद और अशीर जैसे तुर्कमानी नौजवान ही इस प्रदेश में सोवियत व्यवस्था के प्रमुख राष्ट्रीय सैनिक थे।

"आओ, भीतर आओ मावेद!"—चर्नीशोव ने उसे बुला लिया। मावेद चुपचाप हतोत्साह सा एक कुर्सी पर बैठ गया। चर्नीशोव ने उसके चेहरे पर चिन्ता और उदासी की झलक देखकर पूछा—"क्यों मावेद क्या बात है? तबीयत तो ठीक है?"

"तबियत क्या ठीक होगी"

"क्यों बात क्या है ?"

"बात क्या होगी, अब हमारा तो कोई साथी रहा नहीं।"

"मैं समझा नहीं।"

"तेजेन में हमारे गाँव का एक आदमी था अरतैक वह दुश्मन के साथ चला गया। दूसरा अशीर था, वह भी गया।"

"अशीर कहाँ गया ?"

"कहाँ जायगा ? जहाँ तुमने भेज दिया।"

"मैंने भेज दिया, कहाँ ?"

"जेल में और कहाँ ? तुमने नहीं तो किसने भेजा ?"

"क्या कह रहे हो ? अशीर जेल में ?"

"और नहीं तो क्या ? जेल में तो पड़ा है बेचारा।"

"किसने कहा तुमसे ? कहाँ से खबर मिली ?"

"लोग तो कहते हैं"—मावेद झिझकते हुए बोला—"तुम्हारे ही हुक्म से अशीर जेल भेजा गया है। तुम पूछते हो खबर कहाँ से मिली ? उसे काल कोठरी में बन्द रखा गया है। जेल वालों को कुलीखाँ ने हुक्म दिया है कि अशीर साहब की कोई खबर अगर किसी को मिली तो उनकी खैर नहीं। खुद जेल के ही सिपाहियों से मैंने सुना है।"

चर्नीशोव सिर लटका कर चुपचाप सोचने लगा—कुली खाँ क्या कर रहा है ? पुराने बदले ले रहा है या जिन आदमियों से उसे भय है उन्हें चुन चुन कर समाप्त कर रहा है ?" मावेद की आँखों में आँखें डाल उसने पूछा—"मावेद मुझे तुम पूरी बात बताओ। मामला क्या है ? तुम बात छिपा रहे हो ' तुम्हें क्या मुझ पर भरोसा नहीं ? क्या सोवियत के सिपाही आपस में विश्वास नहीं कर सकते।"

"नहीं, और मुझे कुछ मालूम नहीं"—मावेद ने आँखें झुका लीं।

चर्नीशोव मावेद का हाथ अपने हाथों में ले बोला—"मावेद, अगर तुम लोग मेरा विश्वास नहीं करोगे, बातें छिपाओगे तो मैं क्या कर सकता हूँ। यह मेरा नुकसान नहीं सोवियट का नुकसान होगा तुम्हारा अपना नुकसान होगा।

मावेद ने झिझकते-झिझकते दरवाजे की ओर बार-बार देख धीमे स्वर में

अज़ीज़ के यहां से ली गई राइफ़लों के चारी चमन के हाथ तौशेज़ भेजे जाने, उसको और अशोर की बात, अशोर और कुलीखां का झगड़ा और अतादयार्श्री के आकर बीच बचाव करने की कहानी चर्नीशोव को सुना दी। उसने बताया—"सभी लोग कुलीखां से बहुत डरते हैं। उसके विरुद्ध बात कहने की हिम्मत किसी में नहीं। मुझसे भी वह जला हुआ है। यदि उसे सन्देह हो गया कि मैंने तुम्हें यह बातें बतायीं हैं तो किसी न किसी बहाने वह मुझे भी ख़त्म कर डालेगा।"

"तुम डरो नहीं"—चर्नीशोव ने मावेद को आश्वासन दिया—"मुझे इस बात का कुछ पता ही न था। अशोर को मैं अभी छुड़वाता हूं। कुलीखां से मैं खुद ही समझूंगा।"

साहस पाकर मावेद ने उत्तर दिया—"भैया, लड़कर मरने से मैं नहीं डरता। अशोर और तुम साथ हो तो मैं पूरी फौज का मुकाबला कर सकता हूं। परन्तु कुलीखां तो चुपके से क़त्ल करवा देता है। इसका कोई क्या उपाय करे?"

चर्नीशोव हाथ की मुट्ठी मेज़ पर मारकर बोला—"तुम डरो मत, यहां इन दग़ाबाजों को लाल सेना से चुन चुनकर निकालना होगा। तुम लोगों की सहायता से मैं सब कुछ करूंगा। तुम अभी दो लाल सिपाही लेकर जेल जाओ और अफ़सर को मेरा हुक्म देकर अशोर को छुड़ा लाओ।"

उसी दिन सांझ को चर्नीशोव ने सोवियत की एक बैठक ज़रूरी काम के लिए बुलवाई। कमरा तम्बाकू के धुयें के बादलों से भर रहा था। पहले चर्नीशोव ने तेजेन और तुर्कमानिया की राजनैतिक स्थिति पर संक्षिप्त विवरण सुनाया—मध्य एशिया में कहाँ कहाँ सोवियत को विजय और सफलता मिल रही है और जनता की सोवियत सरकार के सामने क्या-क्या कठिनाइयाँ आ रही हैं, ज़ार के पुराने अफसर, क्रान्तिकारी समाजवादी नाम धरने वाले लोग, मेंशेविक और दूसरे क्रान्ति विरोधी कैसे कैसे अड़ंगे जनता की सरकार की राह में लगा रहे हैं, और कैसे ये लोग मध्य एशिया और तुर्कमानिया को शेष समाजवादी रूस से पृथक कर देना चाहते हैं। उसने सोवनारकोम—प्रजातन्त्र सोवियत की लेनिन के नाम और ताशकन्द-सोवियत की तार स्टैलिन के नाम पढ़कर सुनाई। यह पहली तार थी :—

"तुर्किस्तानी प्रजातन्त्र अकाल से तड़प रहा है। काकेशस और साई-

बेरिया के मार्ग शत्रु ने रोक लिए हैं। समारा की राह तुरन्त अन्न और सैनिक सहायता भेजी जाय। विलम्ब का परिणाम भयानक होगा।"

दूसरी तार में भी अकाल, महामारी, बेकारी में सहायता के लिए स्टैलिन से तुरन्त अन्न और एक करोड़ रूबल भेज कर सहायता के लिए अनुरोध किया गया था।

चर्नीशोव का अभिप्राय स्थिति बता कर जनता को भयभीत करना नहीं था—"यदि पूँजीपति और ज़ार के पिट्ठू आशा कर करते हों कि ऐसी कठिनाइनाइयाँ हमारे मार्ग में डाल कर वे हमें पराजित कर देंगे तो यह उनकी भूल है"—चर्नीशोव ने समझाया—"यह लोग हमारी क्रान्तिवादी व्यवस्था का सम्बन्ध मास्को और पेट्रोग्राड से काट कर हमें निर्बल बना देना चाहते हैं परन्तु इन्हें सफलता नहीं मिल सकती। हम लोग अकेले नहीं हैं। समाजवादी सोवियत रूस हमारे साथ है। हमारी क्रान्ति के नेताओं ने हमें भुला नहीं दिया है। जो तारें मैंने पढ़ कर सुनाई हैं, लेनिन और स्टैलिन के विशेष निर्देशों से, इन तारों में किए गए अनुरोध पूरे किये जा चुके हैं। हमारे क्रान्तिकारी नेता सम्पूर्ण मज़दूर-किसान समाज के समान हितों और अधिकारों में विश्वास रखते हैं। मध्य एशिया की जनता को वे लोग ज़ार सरकार की तरह अपने आधीन तुच्छ जातियाँ समझ कर हमारी उपेक्षा नहीं करते। हम भी जानते हैं कि हमारा राष्ट्रीय अस्तित्व समाजवादी रूस के सहयोग से ही बच सकता है। इसलिए तुर्कमानिया की जनता पूँजीवादी और जारशाही के क्रान्ति विरोधी प्रयत्नों का मुकाबिला जी जान से करेगी और उन पर विजय पाकर ही विश्राम लेगी।"

इसके बाद चर्नीशोव ने तेजेन की स्थिति की चर्चा की—"तेजेन और उसके पड़ोस के गाँवों के लिए सहायता रूस से भेजी जा चुकी है और शीघ्र ही वह पहुंच भी जायगी। परन्तु रूस की सहायता पर ही निर्भर करना मूर्खता होगी। अपनी कठिनाइयों को दूर करने के उपाय हमे स्वय सोचने होंगे और आवश्यक साधनों को भी जहाँ तक सम्भव हो स्वय ही जुटाना होगा।" इसी प्रसग में उसने तेजेन की लाल फौज का चर्चा किया—"साथियो, हमारी लाल फौज ने बहुत आड़े समय में हमारी सहायता की है और भविष्य में भी हमें इसी का भरोसा है परन्तु हम लोगों ने अपनी लाल फौज की भीतरी व्यवस्था पर काफी ध्यान नहीं दिया है।

हमें अपनी सेना में दगा और बेईमानी की गुंजाइश नहीं रहने देनी चाहिए यह खेद की बात है कि हमारी इस सेना में कुछ ऐसे आदमी भी हैं जो इस सेना के लिए कलंक हैं और जो जनता में हमारे प्रति घृणा पैदा कर हमें निर्बल बना रहे हैं। लाल सेना के कमाण्डर केलूईखाँ की बात आपको याद है। उसने 'मनेचियाख' गाँव में डकैती की थी। उस पर मुकदमा चला कर हमने सेना से बरखास्त कर दिया है। हमें आशा थी कि केलूई खाँ का उदाहरण देख इस तरह के दूसरे लोग स्वयं सुधर जायगे। परन्तु लोग इससे भी अधिक घृणित कामों में लगे हुए हैं"—चर्नीशोव पल भर के लिए चुप रह कर फिर बोला। उसका स्वर पहले से ऊँचा और कठोर था—"मैं आप लोगों के सामने सोवियत के एक बड़े मेम्बर, हमारी सेना के कमाण्डर कुलीखाँ से जवाब चाहता हूं।"

कुलीखाँ सहसा उठ खड़ा हुआ और मूछों पर हाथ फेर कर बोला—"मुझसे तुम क्या जवाब चाहते हो ?"

चर्नीशोव ने कुलीखाँ की ओर घूर कर प्रश्न किया—"तुम जवाब दो कि अशीर सहात कहाँ है ?"

कुलीखाँ ने भरोसे का साँस लिया। उसे भय था कि चर्नीशोव राइफलों की चोरी की ही बात कहेगा। परन्तु केवल अशीर के बारे में प्रश्न सुनकर उसे सतोष हुआ कि वह बात इसे मालूम नहीं हुई। कुलीखां ने निधड़क उत्तर दिया—"अशीर सहात अज़ीज़ का गुप्तचर है। वह हमारी सेना में बगावत फैला रहा है। मैंने उसे गिरफ्तार करवा दिया है। उसके मामले की जाँच की जानी चाहिए।"

"हूं"—चर्नीशोव ने पूछा—"जो आदमी तुम्हारी करतूतों का भण्डा फोड़ करे वह दुश्मन का गुप्तचर है। तुम अब भी ज़ार की केन्द्रीय पुलिस के हथकण्डे खेल रहे हो ?"

यह बात सुन कुलीखां घबराया परन्तु अपना भय छिपा कर बोला—"मैं तुम्हारी बात नहीं समझा। तुम साफ साफ बात कहो। कौन है ?"

कुलीखां सन्न रह गया। चर्नीशोव ने अपना प्रश्न और कड़े स्वर में दोहराया—"मैं पूछता हूं, चारी चमन कौन है ?"

"क्या जानूं चारीचमन कौन है ?"—कुछ भयभीत स्वर में कुलीखा

ने उत्तर दिया—"क्या दुनिया भरके लोगों को जानता हूं ? क्या उड़ा रहे हो तुम ?"

"मैं उड़ा रहा हू या तुम उड़ रहे हो ?"—मेज़ पर हाथ पटक चर्नीशोव गरज उठा—"सोवियत तुमसे जवाब मांगती है कि अज़ीज़ के यहां से ली गई दो सौ अठारह राइफलें और बारह हज़ार कारतूस कहां हैं ?"

कुलीखां का चेहरा फक हो गया परन्तु उसने बात बनाकर उत्तर दिया—"चर्नीशोव, तुम अशीर जैसे ग़द्दारों की बातों में आकर मुझ पर कलंक लगा रहे हो ! अगर अज़ीज़ और उसकी फौज अपने हथियार साथ ले गई तो इसमें मेरा क्या दोष ? थोड़े बहुत जो हथियार मिले थे वे अशीर ने चुरा लिये हैं ...।

"सब लोग जानते हैं कि हमारी सेना ने अज़ीज़ की राइफलें छीन ली थीं। तुम्हें उनका हिसाब देना होगा ? जुनैद खां को तुमने राइफलें कहां से लेकर भेजी हैं ?"

सब लोग विस्मय से कुलीखां की ओर देख रहे थे कि वह क्या जवाब देता है। सोवियत में सभी तरह के लोग घुस आये थे। सोवियत की बैठक अचानक बुलाई जाने से कुलीखां को सन्देह हो गया था और वह अपनी सहायता के लिये अपने साथी खोजा मुराद और दारोगा बाबाखां आदि कई आदमियों को लिवा लाया था। अपने साथियों की ओर देख कुलीखां ने साहस किया और बोला—

"यदि सोवियत चाहती है कि क्रान्ति विरोधी लोगों को हथियारों की चोरी का मौका न मिले तो मुझे हक होना चाहिये कि मैं जरूरत के मुताबिक अपने विश्वासी सिपाही भरती कर सकूं ताकि पड़ोस के गांवों पर कड़ी नज़र रखी जा सके ...."

"तुम हमारे सवालों का जवाब दो, बातें न बनाओ।"—चर्नीशोव ने टोका।

"तुम्हारा यह क्या तरीका है ?"—उत्तेजित स्वर में कुलीखां ने उत्तर दिया।

"तुम ज़ार के अफ़सरों और कर्नल बेलनोविच की तरह हम तुर्कमान लोगों पर आतंक बैठाना चाहते हो ?"

"बको मत"—चर्नीशोव क्रोध में उछल पड़ा—"ज़ार की नीति पर हम चल रहे हैं या तुम ! उल्टे चोर कोतवाल को डांटे !"

"तुम कौन होते हो मुझे चुप कराने वाले ? तुम मेरी ज़बान नहीं पकड़ सकते !"

सभा में शोर मच गया। कई लोग एक साथ बोलने लगे। चर्नीशोव हैरान था कि कुलीखां की इन करतूतों के बावजूद लोग उसका समर्थन कर रहे थे। ख़ोजा मुराद उठ कर बोला—

"भाइयो, यह क्या जुल्म हो रहा है ? कुलीखां जैसे भले और इज्ज़तदार आदमी पर तोहमत लगाई जा रही है कि वह हथियारों की चोरी करता है। अगर शरीफ लोगों की इज्ज़त पर ऐसे हाथ डाला जायगा तो हम लोग कैसे जिन्दा रह सकेंगे।"

इन बातों पर कोई एतबार कर सकता है ? आप लोग तो कहेंगे कि रात में सूरज निकला है और हमें वह भी मान लेना पड़ेगा ! कुलीखां पर चोरी लगाना कितना बड़ा जुल्म है। उसने तो कभी एक कारतूस भी किसी को नहीं दिया। बेचारा सोवियत की सहायता में अपनी जान गलाये दे रहा है। ऐसे आदमी की वफादारी पर कलंक लगाना कितना बड़ा जुल्म है। बात यह है कि रूसी लोग हर बात में हम तुर्कमान लोगों का अपमान करना चाहते हैं।"

बाबाखां एक ओर खड़ा था। वहीं से हाथ उठा कर बोला—"यह आप लोग क्या जुल्म कर रहे हैं। कुलीखां जैसे ईमानदार और वफ़ादार आदमी की यों बेइज्ज़ती की जा रही है। शहर और गावों में सोवियत की जो कुछ इज्ज़त है, कुलीखां की बदौलत है। अगर कुलीखां सोवियत में न रहा तो सोवियत को कोई पूछेगा भी नहीं। कुलीखा सोवियत में न रहे तो दारोगा लोग तो सोवियत की परवाह न कर अपनी खनाते बना बैठे।"

सभा में अपना साथ देने वाले लोग न देख चर्नीशोव झिझका परन्तु उसने फिर साहस किया और इस सवाल पर वोट लेने का निश्चय किया। उसने प्रस्ताव रखा:—

"कुलीखां ने अपने अधिकार का दुरुपयोग कर सोवियत सेना के हथियारों की चोरी की है, उसने सोवियत के वफादार सिपाहियों पर अत्या-

चार किया है और वह क्रांति विरोधी तथा सोवियत विरोधी कामों में भाग ले रहा है। इस लिये प्रस्ताव किया जाता है कि कुलीखां को सेनापति के पद से पृथक करके उसके अपराध पर सैनिक न्यायालय में विचार किया जाय।"

चर्नीशोव ने सामने बैठे लोगों की ओर देख उनका मत पूछा—बहुत कम लोगों ने प्रस्ताव के समर्थन में अपने हाथ खड़े किये। कुछ आदमियों ने हाथ उठाये ही नहीं। अधिकांश ने उसके प्रस्ताव के विरुद्ध हाथ उठाये।

अब चर्नीशोव समझा कि सोवियत की भीतरी स्थिति वास्तव में क्या है। बहुत से तुर्कमानी लोग जिन्हें चर्नीशोव सोवियत का विरोधी नहीं समझता था, इस समय बाबाखां की—रूसियों के तुर्कमान लोगों का अपमान करने की बात से भड़क कर कुलीखां के ही पक्ष में राय दे रहे थे।

इस परेशानी में चर्नीशोव को याद आया कि अरतैक ने बार-बार चेतावनी दी थी कि कुलीखां कभी विश्वास योग्य नहीं हो सकता। अरतैक की ही बात ठीक थी। आज अरतैक सोवियत में होता तो ऐसी अवस्था में उस पर भरोसा किया जा सकता था। परन्तु वह तो कुलीखां के कारण ही शत्रु के दल में जा मिला और अपने ही जैसे किसानों पर गोली चलाने लगा। अरतैक की ईमानदारी किस काम की जब कि उसमें समझदारी न हो। उस रात अज़ीज़ की सेना और लाल सेना से लड़ाई के बाद तो अरतैक को अपनी भूल समझ आ गई होगी। परन्तु अब अपनी भूल मान कर सोवियत के पक्ष में उसे संकोच अनुभव हो रहा होगा। ...

चर्नीशोव ने अरतैक की ओर से ध्यान हटाकर वर्तमान समस्या को सुलझाने का यत्न किया। जब लोग कुलीखां के जाल में फस उसकी दग़ाबाज़ी का समर्थन करने के लिये तैयार हैं तो वह क्या करे?

चर्नीशोव ने सोवियत की बैठक समाप्त कर दी और तुरत तार घर जा कर अश्क़ाबाद से तार का सम्बन्ध कराया। उसने अश्काबाद के प्रतिनिधि से अनुरोध किया कि तेजेन में सोवियत का चुनाव नये सिरे से कराने और क्रांति के न्यायालय में कुलीखां के अपराध पर विचार करने की आज्ञा दी जाय। उसने कहा कि इसके बिना तेजेन की स्थिति वश में न आ सकेगी। और यदि अश्काबाद की सोवियत उसके अनुरोध को अस्वीकार करेगी तो

वह अपनी प्रार्थना, ताशकन्द में तुर्कमानी प्रदेश की केन्द्रीय सोवियत के सामने रखेगा। उसे उत्तर मिला कि कुलीखां को तुरत अश्काबाद बुला कर मामले की पड़ताल की जायगी।

अगले दिन सुबह ही कुलीखां सोवियत के दफ्तर में आकर चर्नीशोव से मिला और बोला—"मुझे अश्काबाद में सैनिक विभाग के व्यवस्थापक (Commissar) ने बुलाया है। मैं आज ही वहां जा रहा हूं। जान पड़ता है मेरे प्रति तुम्हारे मन में सन्देह जम गया है। ऐसी अवस्था में मैं सोवियत का काम कैसे चला सकूंगा। यदि तुम्हारा सन्देह मेरे प्रति दूर नहीं हो सकता तो तुम मेरी जगह किसी दूसरे व्यक्ति को कमाण्डर नियत कर लो।"

चर्नीशोव को अश्काबाद की प्रान्तीय सोवियत पर बहुत भरोसा नहीं था। उसे खूब याद था कि अज़ीज़ की सेना के हथियार रखवाने के लिये जब वह सहायता मागने अश्काबाद गया था तो उस पर क्या बीती थी। जब तक अश्काबाद की सोवियत में फुन्तीकोव और दोखोव जैसे आदमी मौजूद हैं वहां से किसी प्रकार की सहायता की आशा करना व्यर्थ है। अश्काबाद सोवियत से विशेष आशा न होने पर भी चर्नीशोव ने नियमानुकूल कार्यवाई करना उचित जान ज़ाब्ते के तौर पर पर वहां फोन कर दिया था। इसके अतिरिक्त उसने कुलीखां के विरुद्ध अपराधों का पूरा विवरण, अज़ीज़ के यहां से राइफलें और कारतूस मिलने के प्रमाणों और अशीर और मावेद के दस्तखती बयान अश्काबाद भेज दिये। यह सब कर लेने पर भी उसे कोई भरोसा न था। इसलिये वह अपने विरुद्ध निर्णय होजाने की सम्भावना के लिये भी तैयार हो गया।

चर्नीशोव की आशका ठीक ही प्रमाणित हुई। कुछ ही दिन बाद कुलीखां अश्काबाद से निर्दोष साबित हो तेजेन की लाल सेना के कमाण्डर के पद पर स्थायी रूप से नियत होकर लौट आया। कुलीखां के चेहरे पर विजय और प्रसन्नता की चमक छा रही थी। चर्नीशोव के प्रति उसने निरादर और धृष्टता न दिखाई। इसका कारण चाहे तो अश्काबाद में अपने सहायकों और समर्थकों का परामर्श रहा हो, चाहे, यह कि इतने दिनों में चर्नीशोव की दृढ़ता और लगन को वह खूब भांप चुका था।

२१

ज़ार के पिट्ठुओं और पूंजीपतियों को सहायता देकर विदेशी साम्राज्य वादी शक्तियों ने कोकन्द में एक स्वतंत्र शासन कायम कर दिया था। कोकन्द की यह क्रान्ति विरोधी और नाम को स्वतंत्र शासन समाजवादी सोवियत पर निरंतर आक्रमण कर रहा था। सन् १९१८ के फरवरी मास में सोवियत सेना ने इस स्वतंत्र शासन की सेना को हरा कर पीछे भगा दिया। सोवियत के शत्रु हार कर भी चुप न हुये। वे स्थान-स्थान पर सोवियत शासन के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे। १७ जून को इन लोगों ने अश्काबाद में भी विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को मजदूरों की स्वयं सेवक सेना ने दबा दिया। ११ जुलाई को क्रान्तिकारी समाजवादियों मैंशेविकों और राष्ट्रीयता का नारा लगाने वाले तुर्कमानी जागीरदारों और पूंजीपतियों ने एक बार सोवियत शासन को तोड़ गिराने के लिये सम्मिलित प्रयत्न किया। १२ जुलाई के दिन इन लोगों ने अश्काबाद और किज़ाइल-अरवात में अपनी अपनी सरकार की घोषणा कर दी। इस प्रदेश में सोवियत की ओर से नियत प्रतिनिधि फ्रोलोव को मार डाला गया और मजदूरों की स्वयं सेवक बोल्शेविक सेना को भी क़त्ल कर दिया गया। अवति की सोवियत के मेम्बरों गुबकिन, शाबकिन, बुदनिकोव और काल्को को गोली से उड़ा दिया गया। तीन चार दिन बाद की सोवियत के बोलशेविक मेम्बरों बात्मानोव, ःफ्रिलिकोव और लाल सेना के कमाण्डरों को भी बिना किसी प्रकार के अपराध आरोपण या जांच पड़ताल के अनाऊ ग्यारस स्टेशनों के पास गोली मार दी गई। अश्काबाद और उसके आसपास के सब प्रदेश क्रान्ति विरोधी ज़ारशाही सेनाओं के हाथ जो कि अब ब्रिटिश साम्राज्यशाही सत्ता के हुक्म पर सोवियत शक्ति से लड़ रही थीं, के हाथ पड़ गये। ज़ार की सेना के इस सैनिक शासन का प्रधान क्रान्तिकारी-समाजवादी दल के नेता फुन्तिकोव को बनाया गया परन्तु वास्तव में वह ब्रिटिश मेजर जनरल मैलिन्सन के इशारों पर चल रहा था। मैलिन्सन मध्य एशिया में सोवियत के विरुद्ध

बगावत कराकर ब्रिटिश सत्ता जमाने की आयोजना के प्रधान अफसर की स्थिति में काम कर रहा था।

जुलाई के अन्त तक कुछ फौजों को आगे कर और वास्तव में अपनी सेनाओं के बल पर ब्रिटिश सेनाओं ने पूरे रूसी तुर्किस्तान को घेर लिया। काशगर में जमे हुये ब्रिटिश काउन्सल सर मैक-कर्टने ने फर्गाना के अमीर को हथियार और हिन्दुस्तानी सिपाहियों की सेना सहायता के लिये देकर दक्षिण पूर्व के शहरों, खानों और तेलके कुओं पर अपना कब्जा जमा लिया। मैक कर्टने ने सेमिरेचेंस्क की कौसाक ग्रामीण आबादी को भी हथियारों की सहायता दे आल्मा-आता में सोवियत विरोधी सरकार स्थापित कर लेने के लिये भड़काया। पूर्व में अलायान बुतोव विद्रोह कर बैठा और उसने मास्को-ताशकन्द रेलवे लाइन उखाड़ डाली। बुखारा खीवा के डकैत खान जुनैदखां ने और कास्पियन समुद्र में मौजूद ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े ने उत्तर पच्छिम से ताशकन्द की सीमा को घेर लिया। तुर्कमानिया के प्रजातंत्र में सभी जगह ब्रिटिश गुप्तचरों के जाल फैले हुये थे। अपने कार नामों का वर्णन करते हुये मेजर जनरल मैलिन्सन ने उस समय एक पत्र में लिखा था कि इस समय एक हजार हमारे गुप्तचर फैले हुये हैं। बोल्शेविक सरकार के अनेक महत्वपूर्ण पद हमारे गुप्तचरों के हाथ में हैं और सभी खास जगहों पर हमारी सेना कि टुकड़ियां भी मौजूद हैं। मध्य एशिया भर में ऐसी कोई रेलगाड़ी नहीं चलती जिस पर हमारे गुप्तचर मौजूद न रहते हों और कोई रेलवे स्टेशन ऐसा नहीं। जहां हमारे दो तीन आदमी समय पर काम आने के लिये, मौजूद न रहते है।

मेजर जनरल मैलिन्सन जुलाई के आरम्भ में ही मशद में पहुंच गया था। रुस और ईरान की सीमा पर ब्रिटिश सेनायें जमा हो चुकी थीं। १२ अगस्त के दिन ब्रिटिश फौजें रूसी सीमा में अश्काबाद की ओर लगभग सत्तर मील भीतर धस गई। ताशकन्द से जार की सेना भी अश्काबाद की ओर बढ़ती चली आ रही थी।

तेजेन की सोवियत को समाचार मिला कि जार की समर्थक क्रान्ति विरोधी सेना मारी और जार्दजोव पर आक्रमण करने के लिये बढ़ रही है और एक दो दिन में तेजेन पहुंच जायगी। मारी और जार्दजोव से तेजेन में सहायता पहुच सकने की कोई सम्भावना न थी। तेजेन की लाल सेना की

छोटी सी टुकड़ी अजीज का सामना तो सफलता से कर सकती थी परन्तु इस बड़ी जारशाही सेना का सामना इस टुकड़ी से करना केवल मज़ाक ही था। यह भी निश्चित था कि अवसर देख कर उसी रात या अगले दिन सुबह तेजेन पर छापा मारने वाला था।

इस परिस्थिति में चर्नीशोव ने तेजेन की सोवियत सरकार को ताशकन्द की ओर, पीछे मारी में हटा लेना उचित समझा। उसने अपना प्रस्ताव तेजेन की सोवियत के सन्मुख रखा। कुलीखाँ ने इस प्रस्ताव का ज़ोरों से विरोध किया और चर्नीशोव के विरुद्ध गद्दारी के अनेक आरोप भी लगाये। कुलीखाँ ने कहा—

"हम तो जानते ही थे कि तुम यहाँ केवल मेहमान बन कर मौज मारने के लिये आये हुए हो। जब तक कोई भय न था तुम बड़े तीसमार खाँ बने रहे और मुझ पर लाँछन लगाते रहे। मुसीबत आई है तो तुम बिस्तर लपेट कर जान बचाने की फ़िक्र में भागने की तैयारी कर रहे हो कि मुसीबत का सामना हम करें! काँटे तुम बो जाओ और उन्हें समेटने का काम हमारे सिर रहे। हम तेजेन को नहीं छोड़ेंगे। हमारे शरीर में जब तक खून की एक भी बूंद रहेगी हम ज़ार की फौज को अपनी तलवारों पर रोकेंगे। हम तुम्हें तेजेन के साथ हरगिज गद्दारी न करने देंगे।"

कुलीखाँ की इस चालबाज़ी का मतलब चर्नीशोव खूब समझता था। वह समझ गया कि कुलीखाँ जब अश्काबाद गया था तभी अश्काबाद बाद के क्रान्ति विरोधी दल के साथ यह षड़यन्त्र रच आया था। फ़ुन्तिकोव और दोखोव ने कुलीखाँ को इसी अवसर के लिए अश्काबाद में बैठाया हुआ था। वह समझ गया कि कुलीखाँ हमें सगठित रूपसे पीछे हट कर लड़ने से रोकना चाहता है और जार की सेना के तेजेन में आते ही वह उनसे जा मिलेगा '''चर्नीशोव ने अनुभव किया कि अब सोवियत के भविष्य के भाग्य निर्णय का समय आ गया है। और इस समय उसे दृढता से काम लेना होगा। वह शान्त बना रहा और बोला—

"कुलीखाँ, तुम सदा से सोवियत के साथ दग़ा करते आये हो। आज भी तुम वही बात कर रहे हो। यह बात नहीं की तुम भोले हो और स्थिति को समझ नहीं सकते। तुम सब कुछ समझते हो और चाहते हो सोवियत को जाल में फ़सा कर समाप्त कर देना। मैं तेजेन में मेहमान बनकर मौज

मारने नहीं आया हू । तेजेन की भूमि के प्रत्येक ढेले के लिए मैं जान दे दूँगा । समाजवादी प्रजातन्त्र सोवियत की सम्पूर्ण भूमि का प्रत्येक भाग हमारा अपना घर है । मैं इस भूमि के प्रत्येक व्यक्ति की जान को मूल्यवान समझता हूं । मैं झुँझला कर इस देश के लोगों को मौत की भट्ठी में झोंक देने के लिए तैयार नहीं हू । हम शत्रु से हार मान कर पीछे नहीं हट रहे हैं । हम शत्रु पर अधिक बल से हमला करने के लिए उचित जगह मोर्चा बना रहे हैं । मैं यह समझता हू कि किसान मजदूर सरकार को सफल बनाने के लिये और सोवियत प्रजातन्त्र के शत्रुओं को समाप्त करने के लिए तेजेन की सोवियत के सदस्यों के जीवित रहने की आवश्यकता है । हम लोग तुम्हारे षड्यन्त्र को खूब समझते हैं । हम समझते हैं ज़ार की सेना के तेजेन में कदम रखते ही तुम उनसे जा मिलोगे और सोवियत के वफ़ादार लोगों चर्नीशोव, अशार, अलेद वगैरा को ज़ार की सेना के हाथ में देकर तुम उनसे ईनाम माँगोगे।"

कुलीखाँ ने बीच में टोकने का यत्न किया परन्तु चर्नीशोव अपनी आवाज और ऊँची कर बोलता गया—"कुलीखाँ याद रखो, सोवियत सरकार जनता की सरकार है और रूसी जनता के साथ इन सब देशों की जनता की सरकार है जो अपनी मुक्ति के लिये जनवादी क्रान्ति के मार्ग पर चल रही है । जनता की सोवियत सरकार को न तो बरबाद हो चुके ज़ार की सेना और न मूर्खों को अपने स्वार्थ का साधन बनाने वाली साम्राज्यशाही परास्त कर सकती है । किसानों और मजदूरों की हमारी सरकार आज कठिनाई में अवश्य है परन्तु हम लोग निरुत्साह और भयभीत नहीं हैं । हमें पूरा विश्वास है कि हमारी इस भूमि पर सोवियत का झण्डा-ईमानदारी से मेहनत कर पैदावार करने वालों का झण्डा लहरायेगा, हमारी विजय होगी । इस समय की परिस्थियों में विजय को निश्चित बनाने के लिये यदि आज हमें कुछ पीछे हट कर शत्रु पर वार करना पड़ता है तो यह न तो हमारे लिए अपमान का कारण है और न यह हमारी हार है । आज हम चार कदम पीछे हटते हैं तो कल सोलह कदम आगे बढ़ेंगे । इस समय यह हमारी जिम्मेवारी है कि हम यहां सोवियत की शक्ति को नष्ट न होने देकर आगामी आक्रमण के लिये उसकी रक्षा करें । इस समय हमारे सामने एक ही रास्ता है कि हम अपनी सोवियत को मारी ले जाकर वहां सयुक्त मोर्चे बनायें । तेजेन की सोवियत का प्रधान और तेजेन की लाल सेना का प्रधान सेनापति मैं हू

और मेरा फैसला है कि हमें तुरत यह काम करना होगा। इस समय संकट उपस्थित है और रक्षा के काम को समुचित रूप से चलाने के लिये मैं सब अधिकार अपने हाथ में ले रहा हूं। मेरी पहली आज्ञा है कि तेजेन की सम्पूर्ण लालसेना मारी जाने के लिये तुरत रेल पर सवार हो जाय। दूसरी आज्ञा है कि सोवियत की रक्षा करने वाले सभी नागरिक भी इस सेना के साथ जायें और आवश्यकता पड़ने पर इन सब लोगों को सिपाहियों का काम करना होगा।"

कुलीखां चर्नीशोव के व्यवहार से घबरा गया। वह ऐसी स्थिति की आशा नहीं कर रहा था। उसे भरोसा था कि तेजेन की सैनिक शक्ति स्वयं उसके हाथ में है परन्तु चर्नीशोव ने सेना की कमान अपने हाथ में लेली। अब वह क्या करे? कुलीखां ने सोचा इस समय वह क्या कर सकता है? सेना में उसके भरोसे के सिपाहियों की संख्या कम ही थी। उसका साथ देने वाले लोग भी सोवियत की इस बैठक में मौजूद न थे। चर्नीशोव का साथ देने वाले अशीर और मावेद सामने ही बैठे थे। इन लोगों से हाथापाई करना व्यर्थ था। इन लोगों से परे हट रेल से छूट जाने का बहाना करके पीछे रह जाने का भी कोई अवसर न था। और कोई लाभ भी न था। ज़ार की फौज उसकी कद्र तभी करती जब वह अपने साथ सेना लेकर उनके पक्ष में चला जाता। यदि वे उसे अकेले पकड़ पायेंगे तो बिना कुछ पूछताछ किये उसे सोवियत में महत्वपूर्ण पद पर काम करते रहने के अपराध में तुरत गोली से उड़ा देंगे।

निराशा की एक गहरी सांस लेकर वह बोला—"चर्नीशोव, अफसोस है कि मेरे विचार से सहमत न होने के कारण ही तुम मुझपर विश्वासघात के षड्यन्त्र का आरोप लगा रहे हो। तुम जानते हो मैं सिपाही आदमी हूँ। मरना मारना मेरा काम है। दुश्मन के सामने से भागना मुझे अच्छा नहीं लगता। परन्तु यदि तुम सोवियत का हित इसी बात मे समझते हो तो मैं तुम्हारा हुक्म मानने के लिये तैयार हूँ।"

"तुम्हें यही करना भी चाहिए"—मुस्करा कर चर्नीशोव ने कहा—"अब मेरी आज्ञा है कि तुम अपने हथियार इन सिपाहियों को सौंप दो। तुम इस समय गिरफ्तारी में हो। अशीर और मावेद तुम लोग इस कैदी को लेजाकर पहरे में रखो। यदि कैदी भागने की कोशिश करे या हाथापाई

करे, उसे गोली मारदो।"

कुलीखां का चेहरा कागज की तरह सफेद पड़ गया। उसने कुछ कहने के लिये मुँह खोला परन्तु चर्नीशोव ने हाथ उठा कर उसे रोक दिया—"बस!"

अशीर और मावेद ने कुलीखां के हथियार उतार लिये। कुली खां ने चुपचाप सिर झुका लिया और वैसे ही उन लोगों के साथ इशारा पाकर चलता गया।

जब अशीर कुली खां को कोठड़ी में बन्द कर लौटा चर्नीशोव उसे अपने दफ्तर में ले गया और दरवाज़ा बन्द कर बोला—"अशीर, मैं तुम्हें एक काम सौंप रहा हूँ। हम लोग मारी जा रहे हैं। मुझे विश्वास है मारी की सोवियत सेना के साथ मिल कर हम दुश्मन को जल्दी ही पीट देंगे और प्रायः एक सप्ताह के भीतर तेजेन लौट आयेंगे। यहाँ आकर हमें अश्काबाद पर भी हमला करना होगा। तुम्हें यहाँ पीछे रहना होगा। तुम आसपास के गांवों में जाकर किसानों को समझाओ कि वास्तविक स्थिति क्या है? ज़ारशाही की सेना का साथ देने से उनका नाश होगा। तुम किसानों को सगठित करके सोवियत सेना की सहायता के लिये तैयारी करो—।"

"लेकिन अज़ीज़ यह सब करने देगा?"

"अज़ीज़ हो या और कोई हो! यह काम तो करना ही होगा। मेरा ख्याल है अजीज़ ज़ार की सेना के साथ मिलकर हम लोगों का पीछा करने भागेगा। लेकिन तुम्हें अपना काम करना है। यह काम सबसे ज़रूरी है और इसमें सबसे अधिक खतरा भी है। दुश्मन के सामने डट कर, बन्दूक ले उसका सामना करना कहीं अधिक आसान है। यह याद रखो कि किसी भी हालत में तुम्हें दुश्मन के हाथ नहीं पड़ना है। अगर तुम्हें सहायता की आवश्यकता है तो तुम मावेद को भी साथ रख सकते हो।"

"नहीं, मावेद को तुम अपने साथ रखो। तुम्हें एक भरोसे के आदमी की आवश्यकता होगी। मैं किसी और को ढूंढ लूंगा।"

"अगर कहीं अरतैक से मुलाकात हो तो उसे समझाने की कोशिश करना। मेरा मन कहता है कि वह अब भी सोवियत का मित्र है। उसमें न्याय बुद्धि है।"

२२

अरतैक का मन अपने घर में रम गया था। ऐसा ही उसका समार थी। उससे परे की वह बात ही न सोचता था। उस वर्ष खूब वर्षा हुई। जहाँ तक नजर जाती भूमि पर लहराती हरी घास का कालीन बिछा दिखाई देता था। तेजेन्का नदी भी जल की गर्वीली धारा से गरज रही थी। तेजेन की भूमि पर उसका पुराना जोबन उमड़ आया और अरतैक की नसों में उसके किसान पूर्वजों का रक्त उमगने लगा। उसने मुरीद से बीज के लिये आवश्यक अनाज उधार लिया और अपने चाचा के साथ मिलकर सोवियत व्यवस्था से नयी मिली ज़मीन जोत कर बीज डाल दिया। मुख्य नहर से एक नाली खोद कर वह अपने खेतों की सिंचाई करने लगा।

एक दिन अरतैक खेतों से थका तीसरे पहर, घर लौट कर चाय पी रहा था। चाय के गरम घूंट गले से उतर उसकी कल्पना और स्मृति को सचेत करने लगे। उसे अपने बचपन के खेल याद आने लगे। बचपन के साथी अशीर की याद आने लगी। वह सोच रहा था—अशीर जाने कहाँ होगा?

उसी समय एक चमत्कार हुआ—अशीर उसके सामने आ खड़ा हुआ। अरतैक पुरानी मित्रता के आवेग में अशीर को गले लगा लेने के लिये झपटा परन्तु अशीर से झगड़े और अपने अपमान की बात याद आ जाने से उसका मन बुझ सा गया। दोनों मित्रों ने सलाम दुआ की और बातचीत भी कर रहे थे परन्तु जैसे कुछ कतरा कर!

अरतैक की माँ नूरजहाँ को इन दोनों मित्रों के झगड़े की कोई खबर न थी परन्तु उनका परस्पर खिंचाव उसने भी अनुभव किया और मन ही मन चिन्ता कर रही थी—हाय, इन दोनों के बीच में यह बेगानापन कैसे आ गया! क्या बात है। छोटी बहिन शाकिरा भी हैरान थी कि क्या सचमुच यह अशीर है? अशीर होता तो दोनों ऐसे बेगानेपन से मिलते? ऐसा बड़ी

चतुर थी परन्तु इस स्थिति का कारण वह भी न भांप पाई। अरतैक ऐना से कोई बात छिपाता न था परन्तु अशीर से झगड़े की चर्चा उसने ऐना से न की थी। सोचा, बेचारी का मन दुखाने से क्या लाभ? और फिर इस झगड़े में वह भूल भी अपनी ही समझता था।

अशीर का घाव ठीक हो जाने और अशीर के उसके घर मिलने आने के कारण अरतैक को बहुत संतोष हुआ तिस पर भी अहंकार के कारण वह अपनी भूल मान लेने के लिये तैयार न हो सका।

उस झगड़े की बात अशीर भी न भूला था। यह झगड़ा योंही मामूली छीन झपट की बात तो थी नहीं, अपने अपने विश्वास और सिद्धान्त की बात थी। इसी झगड़े के परिणाम स्वरूप वे एक दूसरे पर गोली चलाकर आपस में खून बहाने के लिये तैयार थे। इस सब झगड़े के बावजूद अशीर यह भी न भूल सकता था कि उसके घायल हो कर गिर जाने पर अरतैक ने ही उसके प्राण बचाये थे। इस कृतज्ञता को वह कैसे भुला देता?

एक दूसरे के कुशल क्षेम की बात हो चुकने के बाद अशीर ने तेजेन की अवस्था, ज़ार की सेना के आक्रमण, लाल सेना का मारी की ओर हट जाने और अरतैक से मिलने के लिये चर्नीशोव के आग्रह की बात भी कह सुनाई और पूछा।—"इस स्थिति में तुम्हारा क्या विचार है, क्या करना चाहते हो?"

अरतैक ने भी अश्काबाद में सोवियत के विरुद्ध विद्रोह का समाचार सुना था परन्तु वास्तविक स्थिति उसे मालूम न थी। उसे कुछ उत्तर न दे लगातार सिर झुकाये सोचते देख अशीर ने फिर सम्बोधन किया—"क्या सोच रहे हो? क्या विचार है तुम्हारा? चर्नीशोव को मैं क्या उत्तर दूं?"

"चर्नीशोव से कहना मैं अपनी भूल मानता हूँ"—अरतैक ने सहसा सिर उठा कर उत्तर दिया—"मेरे कसूर की मुआफ़ी नहीं है"—यह शब्द कहते समय अरतैक का कलेजा कट कर रह गया। अरतैक अभिमानी आदमी था अपना अपराध स्वीकार करने की अपेक्षा दुश्मन की गोली सीने पर सह लेना उसके लिये अधिक आसान था। परन्तु जब मित्र के सामने उसने दिल खोल दिया तो कुछ भी न छिपाया।

"अशीर मुझ से ग़लती हो गई" वह बोला—"इतना कह देना ही काफ़ी नहीं। जब तक हम यह न समझें कि ग़लती क्या थी, कैसे हुई, तब

तक ग़ल्ती से बचा नहीं जा सकता। १६१६ में मैंने अज़ीज के साथ हथियार उठाये। उसमें मेरा कुछ स्वार्थ न था। मैंने क्रांति में ज़ार के विरुद्ध हथियार उठाये। उसमें भी मैंने कोई फ़ायदा उठाने की बात नहीं सोची। मैं जागीरदारों और जार के अफ़सरों के विरुद्ध अपने किसान भाइयों की मुक्ति के लिये लड़ रहा था। चर्नीशोव मुझसे नाराज है। मैं चर्नीशोव को अपना बड़ा भाई मानता हूँ। मैं मानता हूँ कि वह निस्वार्थी नहीं, वह जनता की भलाई के लिये जान दे रहा है। परन्तु उसने जार के पुराने बेईमान आदमियों का कुलीखां जैसे बदमाशों को भरोसा किया। मैं कुलीखां जैसे आदमियों का, विश्वास कभी नहीं कर सकता ? तुम्हीं बताओ कुलीखां और बाबाखां हम लोगों का पेट काट कर जागीरदारों और जार के अफ़सरों का पेट भरते रहे हैं कि नहीं ? अज़ीज चाहे जैसा रहा हो कम से कम उसने लोगों की भलाई की बातों का एलान किया, जागीरदारों की जायदादें ले ग़रीबों को रोटी तो दी ! मैंने उसका साथ दिया तो क्या बुरा किया ? • • "

"अरतैक, जब मैं रूस से लौटा था तो मैंने तुम से कहा नहीं था • • ?"—अशीर ने टोका

"मुझे कह लेने दो ! टोको मत ! उस समय तुम्हीं क्या जानते थे ? जो कुछ मैं जानता था वही तुम भी जानते थे !"

"नहीं, यह बात नहीं है अरतैक, मैं रूस के संगठित मजदूरों में रह कर आया था। मुझे वहाँ काफ़ी देखने सुनने का मौका मिला था।"

"मान लिया तुम माँ के पेट से ही इन्कलाबी पैदा हुये थे परन्तु मेरी भी बात सुनलो। मैंने अलनज़र बे के दांत तोड़े, बाबाखां को धूल चटाई। गांव के किसानों को सिर ऊंचा करके चलने का मौका दिया। मैं अज़ीज की नौकरी में था परन्तु मैंने किया क्या ? लेकिन अजीज़ ने रंग बदल लिया। वह खुद ही सुल्तान बन बैठा। उसने किसानों के गले से जागीरदारों का जुआ तो हटाया परन्तु उनके कंधे पर स्वयं सवारी गांठली। मैं तो उसकी नेकी में विश्वास कर उसका साथ दे रहा था। वह धोखा दे गया तो मैं क्या करूँ ? बताओ मेरी भूल क्या थी ?"

"यह तो साफ़ है ?"

"नहीं, अभी तुम नहीं समझे। सुनो मैंने जो कुछ देखा उस पर ही

विश्वास कर लिया। यह नहीं सोचा कि कि भीतरी बात क्या है? मैं कुलीखां की दग़ाबाजी से डरता रहा। यह नहीं सोचा कि जनता को साथ लेकर ही ऐसे दुष्टों को कुचला जा सकता है। मेरी दूसरी भूल थी कि मैंने यह नहीं सोचा कि अजीज़ का स्वार्थ तो जनता के हित के विरुद्ध है। जो जनता पर शासन करना चाहता है वह जनता को आज़ादी कैसे दे सकेगा? उसका साथ दे मैंने सोवियत के शत्रु की शक्ति बढ़ाई। सोवियत की राह में रोड़े अटकाये। अब मैं समझ रहा हूँ, परन्तु क्या फायदा? अब तो बात हाथ से निकल गई।"

"हाथ से कुछ नहीं निकल गया। चर्नीशोव अब भी तुम्हें बुला रहा है। उसे तुम्हारी ईमानदारी पर भरोसा है।"

"इतनी ही बात नहीं"—खिन्न स्वर मे अरतैक बोला—"चर्नीशोव ने मुझे तभी समझाया था कि अज़ीज़ का साथ देकर मैं सोवियत का विरोधी बन जाऊंगा। उसका कहना ठीक था। उस समय मैंने उसकी बात नहीं मानी, परिणाम क्या हुआ? अब अज़ीज़ की सेना से हथियार छीनने के लिये छापा मारा गया, मैंने सोवियत सिपाहियों पर गोली चलाई। मान लिया कि मैं आत्म-रक्षा के लिये ही गोली चला रहा था परन्तु मेरी गोली से तुम, मावेद या तिशोंको, कोई भी मर सकता था। मुझे चाहिये था कि ऐसी अवस्था में राइफल नीचे डाल खड़ा हो जाता। हो सकता था, मैं गोली खाकर मर जाता परन्तु जो लोग जनता के लिये, सही काम के लिये लड़ रहे हैं उन्हें मारने से तो स्वय मर जाना भला था। तुम कहते हो चर्नीशोव मुझे अब भी बुला रहा है, मुझे मुआफ़ कर देने के लिये तैयार है परन्तु मैं अपने अपराध को स्वय जानता हू, मैं जनता के सम्मुख अपराधी हू। उस समय मेरे दिमाग में कुलीखां के लिये घृणा और भय घुसा हुआ था। चर्नी ने कहा था राज जनता का है, कुलीखां का नहीं। परन्तु मुझे भरोसा न हुआ। अब उसकी ही बात ठीक निकली। यह भी मेरी ग़लती थी। तुम लोग मुझे मुआफ़ करने के लिये तैयार हो परन्तु मैं अपने अपराध का बदला चुकाऊंगा। मैं पहले अज़ीज़ के यहां ही जाऊंगा। मेरी तरह भूल करने वाले और बीसियों लोग वहा हैं। मैं उन सबको समेट कर तुम्हारे यहां आऊंगा या अपने अपराध के दण्ड में वहां जान दे दूंगा।"

अरतैक दिल भर आने से चुप हो गया। अशीर भी चुप रहा। वह जानता था, अरतैक को समझाने का कुछ लाभ नहीं। वह जिद्दी आदमी है। उसके मन में जो समा गया, वही करेगा। अरतैक यदि अपने अपराध का बदला चुकाना चाहता है तो वह उसे क्यों रोके? उसे अपना मन हलका करने का मौका देना ही ठीक है।

अशीर उठ खड़ा हुआ और विदाई के लिये अपना हाथ अरतैक की ओर बढ़ा दिया। अरतैक की आँखें अशीर से मिलीं। इन आंखों की सफाई ने अरतैक के मन का सकोच और मैल धो दिया। दोनों मित्रों ने बहुत दिन बाद मन के पूरे उच्छ्वास से हाथ मिलाया। अशीर का हाथ थामे हुये अरतैक ने कहा—चर्नों से कहना मैं आऊंगा, अपने अपराध का बदला चुका कर आऊंगा। मुझे भूल न जाना।"

उन दिनों किसी भी आदमी के लिये राजनैतिक संघर्ष से निश्पक्ष बने रहना सम्भव न रहा था, या तो क्रान्ति के पक्ष में होते या क्रान्ति के विरोध में। उसी सांझ, कई घुड़सवारों से घिरा किज़िलखां अरतैक की छोलदारी के सामने आ पहुंचा। जीन से उतरे बिना, अरतैक को सलाम कर किज़िलखां बोलाः—

"अरतैक, अज़ीज़खां ने तुम्हें सलाम कहा है। वह मुद्दत से तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा है। आये नहीं। भाई अगर निमत्रण की ज़रूरत थी तो मैं निमत्रण लेकर आ गया हूं। अब उठो, जल्दी आजाओ!"

अज़ीज़खां के साथियों में किज़िलखां बहादुर और ईमानदार आदमी था। अरतैक उसका भरोसा और आदर करता था—"यहां कैसे आये क़िज़िलखां?"

अरतैक ने प्रश्न किया—"क्या दिहात में गड़रियों को बटोरने आये हो?"

"क्या अज़ीज़खां गड़रियों को खोजता फिरता है!"

"तुम समझते हो मैं यहां दाता लोगों की प्रतीक्षा में बैठा हूं।"

"क्या बात करते हो अरतैक, क्यों बिगड़ रहे हो?"

अज़ीज़खां के यहां पुलाव सही पर यहां क्या तुम्हारे लिये सूखी रोटी

का टुकड़ा भी नहीं है ?

"अरतैक तुम भी कहां से कहां बात उड़ाले जाते हो !"—किज़िलखां ने घूमकर अपने सवारों की ओर देख हुक्म दिया—"घोड़े एक तरफ़ बांध दो !"

अरतैक ने चाय से सिपाहियों की खातिर की और बोला"—किज़िल-खां भाई, मैं चलने के लिये तो तैयार हू परन्तु मेरे पास घोड़ा नहीं। अल नज़ार के तबेले मे अज़ीज़खां का फौज के लायक एक बढ़िया घोड़ा बधा है। वही घोड़ा मँगवा लो। अलनज़ार की रुह जन्नत में दुआ देगी।"

अलनज़ार के यहां से मालकोश आ गया। आधे घटे के बाद अरतैक चलने के लिये तैयार हुआ तो ऐना की आंखों में आंसू आ गये। अरतैक ने कहा—"वाह यह क्या ? तुम्हारे जैसी समझदार औरत की यह हरकत !"

ऐना मुस्करा दी उसकी आंखों में छलकी बूंदें ऐसे चमक उठीं जैसे पखड़ियों पर खड़ी ओस की बूंदें बाल सूर्य की किरणों में झलमला उठती हैं।

२३

अगलान पहुंच कर अरतैक ने देखा—अज़ीज़ ने तीन सौ से अधिक घुड़सवार जुटा लिये थे। अज़ीज़ अपने विचार में अपने सब विरोधियों को समाप्त कर चुका था। उसकी खून की प्यासी आखें और भी खूनी होगई थीं। उसके सिपाही भी लूट मार के अवसर के लिये उतावले हो रहे थे। वे लोग खूब खा पीकर मुटा रहे थे और बेकार बैठे बात बात पर आपस में झगड़ बैठते और एक दूसरे का गला काटने के लिये झपटते रहते।

अज़ीज़ ने अरतैक का स्वागत आत्मीयता से किया। बातचीत विशेष न हो पाई। अज़ीज़ अपनी तैयारियों में बहुत व्यस्त था। मदीईशान ने उसे अश्काबाद में सोवियत के विरुद्ध बगावत हो जाने और 'तुर्कमान राष्ट्रीय कमेटी' के, ज़ार की सेना के साथ मिलजाने के फैसले की सूचना भेज दी थी। अज़ीज़ इस अवसर से लाभ उठाने का निश्चय कर चुका था। सिपाही आपस में तेजेन और काइका रेल स्टेशन पर छापा मार कर कब्ज़ा कर लेते की बातें कर रहे थे लेकिन अज़ीज़ जाने किस ख्याल से समय टाले जा रहा था। अरतैक अज़ीज़ के यहाँ नित्य ही अंगरेज अफसरों को आते जाते देख विस्मित था।

अज़ीज़ के यहाँ आने से पहले अरतैक ने बहुत धीरज से काम लेने का निश्चय किया था। उसने यहां आते ही अनुभव किया कि उसे धीरज की बहुत कठिन परीक्षा देनी होगी। अज़ीज के खेमे में रहना ही उसे असह्य जान पड़ रहा था। जिस पर नित्य ही ऐसी घटनायें होती कि विरोध में उसका खून खौल उठता। इसके अतिरिक्त उसे अपनी कमान के सिपाहियों का ख्याल भी था। यह सिपाही उसे बहुत मानते थे. उस पर भरोसा कर जीने मरने के लिये तैयार थे। अरतैक ने अबकी बार यहां आकर अज़ीज के पुराने सहायक केलखां से भी घनिष्ठता जमाली थी। केलखां भी अज़ीज़ के अत्याचारों और नादिरशाही से उकता चुका था। उन लोगों ने आपस में

निश्चय कर लिया था कि यदि दोनों में से किसी पर संकट आया तो परस्पर सहायता करेंगे।

उनकी इस आपसी निश्चय की परीक्षा का दिन भी जल्दी ही आगया। एक जागीरदार ने अजीज के यहाँ आकर शिकायत की कि रात में आकर किसी ने उसके खेतों में से आधी फसल काट ली है। जागीरदार को अपने गांव के एक नौजवान पर सन्देह था। अज़ीज ने घुड़सवार भेजकर नौजवान को पकड़ मगवाया।

नौजवान ने गिड़गिड़ाकर दुहाई दी कि उसने यह काम नहीं किया। उसे इस घटना के बारे में कुछ पता भी न था।

"हम अभी तुम्हें सब बताये देते हैं"— अजीज़ ने नौजवान को उत्तर दिया। अजीज़ के इशारे पर दो सिपाही आगे बढ आये। उन लोगों ने फुर्ती से नौजवान के सब कपड़े उतार डाले। उसे धरती पर पट लिटा कर एक सिपाही उसकी पिंडलियों पर और दूसरा कन्धों पर बैठ गया। धूप में दुबले पतले नौजवान की एक एक पसली दिखाई पड़ रही थी। अजीज़ ने फिर इशारा किया। दो और सिपाही चमड़े की बटी हुई रस्सियों के कोड़े लेकर आये और नौजवान के दोनों ओर खड़े होकर उसकी पीठपर कोड़े बरसाने लगे। कुछ ही पल में नौजवान की पीठ लाल होकर नीली पड़ गई। वह अपनी पूरी ताकत से चीख रहा था—"हाय मैं मर गया! मैंने चोरी नहीं की।"

अपनी छोलदारी में बैठे अरतैक ने यह दर्दनाक चीखें सुनी। उससे रहा न गया। वह इस दृश्य के चारों ओर घिरी भीड़ की ओर चला आया। भीड़ में फस कर उसने सिपाहियों के हाथ से कोड़े छीन लिये। नौजवान को दबा कर बैठे सिपाहियों को परे धकेल दिया। नौजावन की पीठ से मांस के लोथड़े उठ आये थे और खून बह रहा था। उसकी बांह थाम अरतैक ने उसे पांव पर खड़ा किया।

अज़ीज़ की ओर देख वह बोला—"ऐसा अन्याय क्यों करा रहे हो?"—अज़ीज़ की आंखों में खून उतर आया। झुंझला कर उसने कहा—"तुम कौन हो मेरे हुक्म में दखल देने वाले।" सिपाहियों को उसने हुक्म दिया—"इसे पकड़ कर गुस्ताखी के लिये अभी कोड़े लगाओ।"

सिपाही अरतैक की ओर बढे तो उसने रिवाल्वर निकाल लिया—"जो आगे आयेगा, उसका सिर उड़ा दूगा।"

इतने में केलखां और अजीज़ की कम्पनी के सिपाही आगे बढ़ आये। अजीज़ क्रोध में आपे से बाहर हो स्वय ही अरतैक की ओर झपटा। अरतैक ने रिवाल्वर उसकी ओर साधा। यह देख अजीज़ ठिठक गया और उसने पुकारा—" केलखां !"

"हुक्म मालिक !"—केलखां ने जवाब दिया।

"मेरा हुक्म है, अरतैक को गोली मारदो।"

"मालिक कितने आदमियों को तुम गोली मार चुके हो ? अब हम लोगों को गोली मारने की बारी आ गई !"—केलखां ने प्रश्न किया।

"हूँ, तुम भी उसका साथ दे रहे हो !"

"मालिक मैं इन्साफ का साथ दे रहा हूँ। मेरे खयाल में अरतैक भी इन्साफ की बात कर रहा है।"—केलखां ने उत्तर दिया।

अजीज़खां इधर उधर देख किज़िलखां को ढूढ़ रहा था। उसे याद आया कि किज़िलखां को उसने किसी काम से छावनी से दूर भेजा हुआ है। बेबस हो कर उसका हाथ अपनी कमर में बधे रिवाल्वर की ओर गया। उसी समय भीड़ में शोर मच गया।

अरतैक की टुकड़ी के सिपाही चिल्ला रहे थे—"अरतैक, हुक्म दो हम अभी इन लोगों को गोली मारदें !"

"ज़ालिम तबाह हो !"

"अरतैक हमारा खान है।"

यारमुश काज़ी अज़ीज़ को आस्तीन से थाम एक ओर ले गया और समझाया—"क्या बेवकूफ़ लोगों को मुह लगा रहे हो ? तुम इन लोगों को रहने दो। होश आयेगी तो अपने आप तुम से मुआफ़ी मांगेगे।" अज़ीज़ अभी शान्त भी न हो पाया था कि एक अर्दली ने आकर खबर दी:—"अश्काबाद से सरकारी आदमी आये हैं।"

अज़ीज़ ने इन मेहमानों को ले जाकर बैठाने के लिये हुक्म दिया और अपना मन शान्त करने के लिये एकान्त में जा लेटा। वह सोच रहा

था—"जिन लोगों को अपने हाथों बनाया वही लोग आज मुझे मुंह चिढ़ा रहे हैं। यह सब क्या हो रहा है ? अरतैक की यह हिम्मत की मेरे हुक्म का विरोध करे ? खैर, अरतैक बे समझ है तो इस केलखां को मुझसे क्या शिकायत है ? यह आदमी टुकड़ों के लिये भटक रहा था। दूसरे लोगों का बोझ ढो रहा था। मैंने इसे आदमी बना दिया। सौ घुड़सवारों का सरदार बना दिया। आज यह मुझे आंखें दिखा रहा है। यह मेरी बेवकूफी है कि मैंने इन लोगों को इतना मुंह लगा लिया। अरतैक को तो मैं आज ही रात खत्म करवा दूं परन्तु उसके साथ के सौ घुड़सवार उसी से मिल गये हैं। यह लोग विरुद्ध खड़े होंगे। यह लोग मेरे घोड़े और हथियार लेकर मेरे ही दुश्मन बन जायगे। क्या है मेरी किस्मत ? केलखां का भी क्या विश्वास ? वह भी अगर छोड़कर चलदे तो मैं निहत्था रह जाऊंगा। जुनैदखां में क्या बात है ? वह कैसे अपने दुश्मनों को पल भर में कुचल डालता है ?' 'नहीं, अभी अरतैक से झगड़ा करने का वक्त नहीं है। उसे चुपके चुपके खत्म करना होगा। अभी उसे बुलाकर समझा बुझा कर शान्त किया जाय' ' '।"

यह निश्चय कर वह अश्काबाद से आये राजदूतों से मिलने के लिये गया। इन लोगों ने अज़ीज़खां को नियाज़बेग और ओराज़ सरदार की ओर से उसकी वीरता और सफलता के लिये बधाई देकर एक पत्र नियाज़बेग की ओर से और दूसरा ज़ारशाही सेना के कमाण्डर की ओर से, दिया। इन पत्रों में सोवियत के विरुद्ध विद्रोह में अज़ीज़ के सहयोग पर प्रसन्नता प्रकट करके उससे अपना सहायक बन जाने का अनुरोध किया गया था। उसे विश्वास दिलाया गया था कि आवश्यकता पड़ने पर हथियार, धन और योग्य अफ़सर भेज कर उसके सिपाहियों को युद्ध शिक्षा देने में सहायता दी जायगी और उसे तेजेन का स्वतंत्र खान स्वीकार कर लिया जायगा। उसके प्रबंध में किसी प्रकार का दखल न दिया जायगा।

पत्र लाने वाले राजदूतों ने अज़ीज़ की खूब प्रशंसा कर उसे फुसलाया। इस पत्र से अज़ीज़ की बरसों की महत्वाकांक्षा पूर्ण हो रही थी। उसने तुरंत ही एक संधि पत्र पर अपनी शर्तें देकर दस्तखत कर दिये। उसकी मांगे थीं:—उसे आवश्यकतानुसार हथियार और धन सहायता के लिये दिये जायगे और उसके राज प्रबंध में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न किया जायगा।

अज़ीज़ इस सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर कर ही चुका था कि उसे बुखारा के अमीर के राजदूत तोगसा बे के आने का समाचार मिला। तोगसा बे अपने साथ अज़ीज़ के लिये अमीर की भेजी हुई भेंट लेकर आया था—पचास मन हरी चाय, बहुत कीमती पोशाकें और सूर्य के रूप में बना एक सोने का बड़ा पदक उसने पेश किये। तोगसा बे को बोलशेविकों के डर से भारी का चक्कर काट कर आना पड़ा था। बुखारा का राजदूत स्वय भी सुनहरी ज़री के चोगे पर रूपहली ज़री की पेटी लगा सिर पर खूब बड़ी पगड़ी बांध कर अज़ीज़ के सामने पेश हुआ। बे का चेहरा अनार के फूल की तरह लाल हो रहा था। अपनी भारी तोंद को जैसे तैसे सम्भाल अज़ीज़ के सामने कमर तक झुक सलाम कर उसने कहा—

"ऐ वालिये दीनो दुनिया, अमीरुलअमीर, अफज़लुलअकबर, आलिमुल आलमीन, खानेखाना, नूरुलइस्लाम! शहनशाहे बुखारा जहांपनाह की ख़िदमत में अपने दोस्ताना सलाम अरसाल फ़र्माते हैं।"

"अमीर पर खुदा की बरकत हो!"—अज़ीज़खां ने तोगसा बे के लम्बे सम्भाषण के उत्तर में संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

"पाक बुखारा के बारा मुफ़्ती, और शैख उल इस्लाम खानेखाना की सेहत के लिये दुआ देते हैं और खुदावन्द से इल्तजा करते हैं कि जहांपनाह का इक़बाल दोबाला हो। खुदा का हज़ार शुक्र है मुझे अमीरेतेजेन की मुनव्वर हस्ती का नियाज़ पाने में कामयाबी हुई।......।"

अज़ीज़खां तोगसा बे के मुह से झड़ते दुर्बोध शब्दों को आंखें झपकता हुआ सुन रहा था। बे ने फिर एक बार झुक कर सलाम किया, और अज़ीज़ ने फिर यत्न से उचित शब्द याद कर अपना जवाब दोहराया—"शाहनशाहे बुखारा पर खुदावन्द का करम हो!"

तोगसा बे ने अमीर बुखारा के भेजे हुये उपहार अज़ीज़ के सामने पेशकर सोने का दमकता हुआ सूरज अपने हाथों से अज़ीज़ के सीने पर टांक दिया। अज़ीज़ का चेहरा खुशी से चमक उठा।

"अमीर बुखारा ने जो इज्जत मुझे बख्शी है उसके लिये मैं उनका शुक्रिया कैसे अदा करूं। खुदा उनका इकबाल दोबाला करे"—अज़ीज़ ने फिर कहा।

इस कठिन काम को सफलता पूर्वक कर पाने के सन्तोष से तोगस बे का सीना फूल उठा। वह फिर बोला—" जहाँपनाह, खानेखाना, अमीरे तेजेन ने इस्लाम की जो खिदमत की है उसके लिये शहनशाह बुखारा-हुजूर की खिदमत अपना शुक्रिया और एहतराम फर्मा कर पैगाम देते हैं कि अगर हुजूर को कभी किसी किस्म की मदद की जरूरत हो तो ऐसी खिदमत का मौका शहनशाह बुखारा अपने लिये खुशकिस्मती खयाल करेंगे। शहर तेजेन बुखारा से अगरचे दूर है लेकिन अमीरे-बुखारा का दिल खानेखाना की याद से हमेशा पुर रहता है। शहनशाह बुखारा को उम्मीद है कि ज़मीन पर अमन कायम हो पर हुजूर के बुखारा तशरीफ लाने का मौका आयगा और अमीर-बुखारा को खानेखाना के इस्तकबाल का खुशगवार मौका हासिल होगा।"

"बशर्ते ज़िन्दगी मैं अमीरे बुखारा की खिदमत में हाज़िर होने की कोशिश करूगा।"—अज़ीज़ ने उत्तर दिया।

तोगसा बे को इस बात की चिन्ता न थी कि अज़ीज़खाँ उसकी बात समझ रहा है या नहीं। वह उसे अपनी विद्वत्ता से प्रभावित कर देना चाहता था। उसने अरबी, फारसी के दुर्बोध शब्दों की बौछार में बताया कि बुखारा के अमीर वर्तमान राजनैतिक स्थिति का लाभ उठा कर, इस्लाम की रक्षा के लिये अपने राज्य का विस्तार दूर तक कर लेना चाहते हैं और अज़ीज़खाँ को तुर्कमानिया में अपना सूबेदार (वायसराय) नियत कर देना चाहते हैं।

उस राजनैतिक गड़बड़ी में अज़ीज़खाँ अपने आप को सहसा ईरान के शाह की बराबरी का बादशाह समझने लगा था। दो बरस पहले उसे कोई पहचानता नहीं था और अब कई राज्यों के राजदूत उसे अपना सहायक बनाने के लिये उसके यहाँ पहुच उसकी खुशामद कर सभी प्रकार की सहायता देने के वायदे कर रहे थे। अज़ीज़ सोच रहा था—"मैंशेविकों और क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी से मैं नये ढग की बन्दूकें और तोपें लेलू और फिर बुखारा जाऊ। बुखारा में पहले अमीर के सामने सिर झुका कर सलाम करने से मेरा क्या बिगड़ जायगा ? तोगसा बे समझेगा मुझे फसा लिया। कौन फसता है, यह बाद में पता लगेगा। बाद में मैं फौजें बढ़ाकर अश्काबाद के मैंशेविकों को, उनके ही हथियारों से कुचल डालूंगा। सारे

तुर्कमानिया की रियाया मेरे सामने सिर झुकायेगी·········।"

अश्काबाद और बुखारा के राजदूतों से बात खत्म कर अज़ीज़ ने अपने सलाहकारों से सलाह ली और फिर तेजेन की प्रजा के नाम फर्मान लिखवाया:—

"हमारे मौलवियों का फ़तवा है कि इस्लाम से मुनकिर हो जाने वाले काफिरों के खिलाफ जिहाद करना सब मुसलमानों का फर्ज़ है। शरीयत के हुक्म से हम जिहाद के लिये कमर बस्ता हैं। तेजेन की रियाया के नाम हमारा फर्मान है:—इलाके के तमाम दारोगा और मुखियाँ को हुक्म है कि बीस जुलाई के दिन सुबह के वक्त सब गावों से, हर पांच घरों के पीछे एक आदमी तेजेन शहर में पहुंच जाये। जो हाकिम इस हुक्म की पाबन्दी में कोताही करेगा, सख्त सज़ा का मुस्तहिक होगा। जो रियाया इस हुक्म से एतराज़ करेगी, वह ग़द्दार करार देकर बोल्शेविक समझी जायगी और मौत की सज़ा की मुस्तहिक होगी।"

फर्मान को मुस्तैदी से पूरा करने के लिये अज़ीज़ ने गांव गांव अपने सवारों के दस्ते भेजे कि बस्तियों से ज़रूरी सिपाही पकड़ लिये जांय और बस्तियों के सब घोड़े भी कब्जे में ले लिये जांय।

यह सब कर चुकने के बाद उसने अरतैक को बुलवाया। अरतैक भी मन ही मन पछता रहा था कि उसने जल्दबाज़ी में अवसर से पहले अज़ीज़ से झगड़ा कर लिया। इस भूल से उसका पहले से सोचा हुआ ढग सरंजाम बिगड़ जायगा। अज़ीज़ उस पर सन्देह कर चाहे जो कर बैठे। अभी उसे कुछ दिन और सीनेपर पत्थर रख प्रतीक्षा करना चाहिये था। अब सावधानी के लिये उसने जीनसाज कस कर अपने घोड़े मालकौश को तैयार कर लिया। अपनी टुकड़ी के सिपाहियों को आशंका से अपने चारों ओर मडराते देख उनसे स्पष्ट बातचीत कर लेना ही उचित समझा।

"जवानों,"—अपने सिपाहियों को उसने सम्बोधन किया। "बहुत दिन से हम लोगों का साथ है। हम लोगों ने एक साथ खतरे झेले हैं। हम लोग भाई भाई हैं। आप लोगों से विदा होते मुझे बहुत दुख हो रहा है परन्तु मेरे लिये अब यहाँ रहना ठीक नहीं। भाइयो, मेरा कहा सुना मुआफ़ करना।"

सिपाही सिर झुकाये चुप रह गये। अरतैक का दिल भर आया—"दोस्तो", यह दुनिया आनी जानी है। आजकल का समय भी ऐसा है कि आदमी सुबह तख्त पर बैठा है तो शाम को सूली पर चढ़ जाय। तुम्हें छोड़ कर जाते नहीं बनता। पर बात ही ऐसी आ पड़ी है कि मैं अगर यहाँ बना रहूं तो मेरी जान पर और तुम्हारी जान पर भी मुसीबत पड़ेगी। मैं चला जाऊँ तो शायद अज़ीज़ खां तुम्हें मुआफ़ कर दे। ख़ैर, जिन्दगी रही तो फिर कहीं मिलेंगे।"

एक बूढ़े सिपाही ने गर्दन उठा प्रश्न किया—"तुम कहां जाओगे?"

"क्या कह सकता हूं कहां जाऊँगा"—अरतैक ने गहरी सांस ली—"अपने गांव लौट जाऊं या फिर जैसा मौका हो.. ।"

"हमें अज़ीज़ खां से क्या लेना है? कहो तो अज़ीज़ खां से दो-दो हाथ कर देखें?"—सिपाही ने धीमे से कहा।

"नहीं, यह बात बनेगी नहीं"—अरतैक ने समझाया—"अज़ीज़ की ताकत हम लोगों से बहुत ज्यादा है।"

"तो हम लोगो को भी साथ ही ले चलो।"

अरतैक चुपचाप सोचने लगा, क्या करे? अपने साथ के घुड़सवारों को साथ लेकर लाल सेना में जा मिलने के उद्देश्य से ही यह अज़ीज़ के यहाँ आया था। परन्तु इस काम के लिये अभी अवसर उपयुक्त न था। सोवियत सेना इस समय बहुत दूर थी और केवल एक सौ घुड़ सवार लेकर अज़ीज़ और ज़ारशाही सेना का सामना करना केवल अपने सिपाहियों को कटवा डालना होता। सोवियत सेना के समीप आये बिना और उनसे सम्बध स्थापित हुये बिना उनसे जा मिलने का यत्न करना मूर्खता ही थी। अभी प्रतीक्षा करना आवश्यक था। परन्तु उसके सिपाही बेचैन हो रहे थे।

"भाइयो"—उसने साथी सिपाहियों को समझाया—"इस बात के लिये अभी ठीक अवसर नहीं है। मगर मैं अकेला जाऊं तो किसी तरह छिप कर भाग भी सकता हूँ परन्तु एक सौ सवारों का छिप कर भाग जाना कैसे सम्भव हो सकता है? अभी हम लोगों का यहां बना रहना ही ठीक है। परन्तु आप लोग वायदा कीजिये कि यदि अज़ीज़ ने मुझे यहां रहने न दिया तो मेरा इशारा पाते ही आप सब लोग मेरे साथ चले आयेंगे।" मन में उसने

निश्चय किया कि अपना अवसर आने तक जैसे तैसे अज़ीज़ से सुलह बना कर रखनी होगी। इसलिये जब केलखां अज़ीज़ का सन्देश लेकर आया, अरतैक चुपचाप उसके साथ चल दिया।

अज़ीज़ ने अपने दोनों सेनापतियों से बात करते समय उस दुर्घटना का कोई जिक्र न किया। इस समय वह अपनी ऊंची और जिम्मेवार स्थिति से बात कर रहा था—"क़िज़िल खां तो अभी लौटा नहीं"—वह बोला—हो सकता है, आज सांझ तक आजाये। जवानों, अभी तक तो हम लोग तेजेन के इलाके में अपने कदम जमाने में ही लगे रहे लेकिन अब हमें अपने क़दम आगे बढाने होंगे। इस समय हमारे सामने बहुत गम्भीर स्थिति आगाई है। कल, नहीं तो परसों हमें बोल्शेविकों पर धावा बोलना होगा। इसलिये तुम लोगों को बहुत ख्याल से पूरी तैयारी करनी होगी। हर बात को खूब ब्योरे से ध्यान देकर देख लेना चाहिये। एक एक घोड़े के ज़ीन, लगाम और नाल तक जांच लेने चाहिये।"

अरतैक और केलखां दोनों चुप रहे—"तुम लोगों का क्या ख्याल है?"—अज़ीज़ ने पूछा। अरतैक से कुछ कहते न बन पड़ा। झूठी बात बनाना और खुशामद करना उसे आता न था। अपने साथी को चुप देख केलखां बोला—"खां, तुम हमारे मालिक हो। हम तुम्हारी ताबेदारी में हैं। लेकिन तुम हमारा कुछ ख़याल नहीं करते!"

"ठीक है भैया केलखां"—अज़ीज़ ने उत्तर दिया—"कभी परेशानी में आदमी आपे से बाहर हो जाता है, जैसे आज हो गया।"

"ख़ान, तुम अपने दरबारियों से राय लेकर सब बातें तय करते हो! हमें इसमें क्या शिकायत? लेकिन हमें तो यह भी मालूम नहीं होता कि आज हमें क्या काम करना है। अगर हमें पता रहे कि हमें फलां काम के लिये तैयार रहना है तो हमें जो कुछ सुविधा होगी, उसमें तुम्हारा ही फायदा अधिक होगा। खून तो अपना हमीं को बहाना पड़ता है। हम भी तो आख़िर आदमी हैं। हमें यही मालूम हो कि अपना खून बहा किस बात के लिये रहे हैं।"

"केलखां, जो बात हो गई, उसके लिये मुझे भी दुख है पर अब उसे याद करने से क्या फायदा? ऐसी बातें बार बार नहीं हुआ करतीं"—

अज़ीज़ ने अरतैक को सम्बोधन किया—"अरतैक, तुम जानते हो, मेरा मिजाज़ ज़रा गरम है। वह बात आई गई। मैंने तो अभी कहा कि मुझे खुद उस बात का दुख है। पिछली बातें छोड़ कर अब आगे के लिये सोचना चाहिये। ज्यादा से ज्यादा परसों। मान लो, हम लोगों को अपने घोड़े और सिपाही लेकर रेलगाड़ी पर चढ़ना है। बताओ, उसके लिये क्या क्या तैयारी ज़रूरी है?"

गहरी सांस खींच अरतैक ने उत्तर दिया—"अज़ीज़खां, मेरे लिये यही अच्छा है कि अपनी तलवार तुम्हें लौटा दूं।"

"अरतैक, यह तुम्हारी ज़्यादती है। उसी बात के पीछे पड़े हो। आदमी से और तो क्या, नमाज़ में भी गलती हो सकती है। अब काम करो। सवाल सिर्फ तेजेन का ही नहीं" . . ."

"जैसे तुम आदमियों के साथ ज़ुल्म करते रहे हो ऐसे ही तुम पूरे मुल्क के साथ करोगे"—अरतैक बोल उठा।

"जब तक हम लोग पूरे तुर्कमानिया को आज़ाद नहीं कर लेते, हम लोग हथियार नहीं डाल सकते"—अज़ीज़ बोला जैसे उसने अरतैक की बात समझी ही नहीं।

"हमें आज़ाद होना है तो सबसे पहले तुम्हारे ही गले में फंदा डाल कर पेड़ से लटकाना पड़ेगा" मन ही मन अरतैक सोच रहा था। केलखां ने बात सम्भाली—"हम लोगों में कोई आदमी ऐसा नहीं जो वक्त पर हथियार डाल कर दगा दे जाय। लेकिन सभी लोगों पर उनके सामर्थ्य भर ही बोझ डालना चाहिये।"

अरतैक और अज़ीज़ की आंखें पल भर को मिल गई। अज़ीज़ का भाव था—"खैर, अभी तो मैं अपमान निगले ले रहा हूँ, वक्त आने पर समझूंगा।" अरतैक के मनमें था—"मैं तुम्हारे फंदों को खूब जानता हूँ। तुम्हारे जाल में अब नहीं फंसने का। मैं भी अपने मौके की तलाश में हूँ।"

२४

तुर्कमानिया पर भयकर दुर्दिन छा रहे थे।

अश्काबाद में मेंशेविकों, समाजवादी क्रान्तिकारियों और सफ़ेद (जारशाही) सेना ने मिल कर सोवियत के विरुद्ध बग़ावत कर शासन अपने हाथ में ले लिया और रेलवे लाइन के साथ साथ, पूर्व-पश्चिम में आतंक फैलाना शुरू किया। जगह जगह तारें देकर हुक्म दिया जाता कि सोवियत व्यवस्था को तुरत समाप्त कर दिया जाय। जगह जगह रेलवे लाइनें उखाड़ दी गईं, जगह जगह शस्त्रागार लूट लिये गये। शीघ्र ही 'क्रास्नोवोद्स्क' पर भी इनका कब्ज़ा हो गया। सोवियत से सहानुभूति रखने वाले लोगों को सामूहिक रूप से गिरफ्तार कर क़त्ल किया जाने लगा। जारशाही सेना के अफसर बोल्शेविकों और उनसे सहानुभूति रखने वाले मज़दूरों से बर्बरता पूर्ण बदले ले रहे थे। जेलख़ाने ठसाठस भर गये। जो लोग इस आतंक से जगलों और पहाड़ों की ओर भाग रहे थे, उन्हें भी पकड़ कर क़त्ल कर दिया गया।

इन अत्याचारों, लूटपाट और काली करतूतों में भाग लेने के लिये शहरों के गुण्डे, चोर, उचक्के और देहात के डाकू-क्रान्तिकारी समाजवादी दल और ज़ारशाही सेना के साथ आमिले। अंग्रेज कूटनीतिज्ञों की सरक्षता में जारशाही सेना के अफ़सरों ने आठ सौ आदमियों की एक स्थानीय स्वयं सेवक सेना बनाई जिसमें जागीरदारों, व्यापारियों के लड़के, उनके निजी नौकर और कुछ भोले भाले किसान भी मिला लिये गये थे। इस स्वय सेवक सेना में से लगभग तीन सौ आदमियों को मारी की ओर भेज दिया गया। २१ जुलाई तक प्रायः सम्पूर्ण तुर्कमानिया ज़ारशाही सेना के हाथों आ गया। केवल 'कुश्क' का किला उनके हाथ न आ पाया। इस किले की रक्षा देशभक्त जनरल 'वोस्रोसावलिन' की कमान में मज़दूरों की एक सेना कर रही थी। इसी सेना की एक टुकड़ी चार्दीजोव से आने वाले

रास्तों पर डटी जारशाही सेना को रोके हुये थी।

तुर्किस्तान के बोल्शेविकों ने सब अत्याचार और संकट सह कर भी ज़ारशाही और अंग्रेज़ी सेना के सामने सिर नहीं झुकाया। अश्काबाद के शासन की बागडोर ज़ारशाही के हाथ में जाने की खबर पाते ही तुर्किस्तान की केन्द्रीय सोवियत और जनता की प्रतिनिधि सभा ने श्रम कमिस्सार साथी पोल्तोरातस्की की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि मण्डल तुर्कमानिया भेज दिया। पोल्तोरातस्की का प्रतिनिधि मण्डल रास्ते के सभी शहरों में ठहर ठहर कर आगे बढ़ रहा था। वही सभी स्थानों में सार्वजनिक सभायें करके राजनैतिक स्थिति सम्भालता और जनता की भावना समझने का यत्न करता। स्थानीय सोवियतों के प्रतिनिधि भी इनके साथ सम्मिलित होते जा रहे थे। कगान में ज़ारशाही के समर्थकों ने उसे सभा नहीं करने दी। मण्डल को गिरफ्तार करने की भी कोशिश की। प्रतिनिधि मण्डल बड़ी कठिनाई से गिरफ्तारी से बच पाया।

इस पर भी पोल्तोरातस्की डरा नहीं। वह पुराना और अनुभव क्रान्ति-कारी था। स. १९०५ से प्रजातन्त्रवादी दलका मेम्बर और बाकू के मज़दूर आंदोलन में भाग ले चुका था। वह मज़दूर परिवार की सतान था। बचपन से प्रेस में कम्पोज़ीटरी करके अपना निर्वाह करता आया था। इतनी अवस्था में उसे बुखारा के मज़दूरों ने "अखिल रूसी कांग्रेस" के लिये अपना प्रतिनिधि चुना था। इसके बाद वह बोल्शेविक पार्टी का मेम्बर बन गया। ताशकन्द में वह लाल सेना के सिपाही की स्थिति से मोर्चे पर जमकर क्रांति विरोधी ज़ारशाही सेना से लड़ चुका था। वह 'राष्ट्रीय आर्थिक आयोजन समिति' का सदस्य भी था और क्रान्ति के पश्चात तुर्किस्तान के पहले समाज-वादी पत्र "सोवियत तुर्किस्तान" का सस्थापक और सम्पादक भी था। सोवियत के प्रतिनिधि मण्डल के प्रधान की स्थिति से वह शत्रु से घिरे नगरों में निर्भय निधड़क चला जाता। पोल्तोरातस्की को पूरा विश्वास था कि वह अमर उद्देश्य और जनता की अजेय शक्ति का प्रतिनिधि है।

चार्दिजोव में क्रान्तिकारी मज़दूरों की बहुत बड़ी भीड़ ने पोल्तोरातस्की का स्वागत किया और क्रान्ति की विजय के लिये आमरण युद्ध की प्रतिज्ञा की। मारी की सोवियत के अधिकांश सदस्य विश्वास के योग्य नहीं हैं। उनकी सहानुभूति ज़ारशाही के प्रति है। पोल्तोरातस्की को मिलने आनेवाले

लोगों में चर्नीशोव भी था। मारी पहुंच कर चर्नीशोव ने स्थानीय राजनैतिक स्थिति को समझने का यत्न किया। यहां उसे अश्काबाद से आया हुआ तिशोंको भी सहायता के लिये मिल गया। तिशोंको इस इलाके की कठिन स्थिति और शहर की संदिग्ध स्थिति से पहले ही परिचित हो चुका था।

तिशोंको ने चर्नीशोव से करगेज़ ईशान, का परिचय कराया। करगेज़ की दाढ़ी घनी और काली थी, आंखें तीखी और उज्जवल। करगेज़ ईशान मारी की सोवियत का सदस्य था। मज़दूरों और किसानों को उस पर बहुत विश्वास था। करगेज़ कठिनाई के समय सोवियत सिपाहियों को लगातार राशन पहुंचा रहा था। चर्नीशोव को भी यह आदमी विश्वासपात्र और बहुत समझदार जान पड़ा। उसने सोचा, यह आदमी स्थानीय जनता से सोवियत का सम्बध बनाये रखने में सहायक हो सकेगा।

चर्नीशोव ने करगेज़ ईशान का परिचय पोल्तोरातस्की से करादिया। पोल्तोरातस्की का भी करगेज़ ईशान भरोसे का आदमी जचा और उसे भी प्रतिनिधि मण्डल में सम्मिलित कर लिया गया।

चर्नीशोव और दूसरे विश्वासपात्र साथियों से बातचीत करने के बाद पोल्तोरातस्की को मालूम हुआ कि मारी की अवस्था अनुमान से कहीं अधिक चिन्ताजनक थी। जनता को बहकाने वाले लोग शहर के चारों ओर घिर आये थे और जगह जगह सोवियत के विरुद्ध खुला प्रचार हो रहा था ? चर्नीशोव ने सोवियत सेना के लिये गावों से कुछ घोड़े इकट्ठे किये थे। गांव वालों ने बहकावे में आकर इन घोड़ों को इधर उधर कर छिपा लिया। लाल सेना सफ़ेद सेना के आक्रमण का सामना करने की तैयारी में लगी हुई थी। शहर में अभी हुई गड़बड़ की ओर ध्यान देने का किसी को अवसर न था। रेलवे में काम करने वाले मज़दूर साथियों ने खबर भेजी कि अश्काबाद से फौजों से भरी गाड़ियां चली आ रही थीं। चर्नीशोव का अनुमान था। कम से कम छः सौ सफ़ेद सिपाही मारी पर आक्रमण करने के लिये आ रहे हैं।

ताशकन्द से चलते समय पोल्तोरातस्की को आशा थी कि सोवियत विरोधी बग़ावत, रक्तपात के बिना ही वश को जा सकेगी। परन्तु अब उसे दूसरी बात दिखाई दे रही थी। उसने मारी में एक सार्वजनिक सभा कर जनता को समझाने का यत्न किया। इस सभा का प्रभाव भी अच्छा हुआ।

परन्तु ज़ारशाही के छः सौ सिपाहियों से मोर्चा ले सकने की सामर्थ्य सोवियत सेना में न थी। पूरी तैयारी के लिये समय भी न था। सफ़ेद सेना उसी सांझ पहुंचने वाली थी।

पोल्तोरातस्की ने प्रतिनिधि मण्डल के सब लोगों को चर्नीशोव के साथ मारी से छब्बीस मील दूर बैरमअली की मज़दूर बस्ती में भेज दिया। स्वयं लाल सेना की एक छोटी टुकड़ी ले उसने चार्दीज़ोव जाकर ज़ारशाही सेना की राह रोके रहने का निश्चय किया। चर्नीशोव उसे अकेला छोड़ कर जाने के लिये तैयार न था। पोल्तोरातस्की ने उसे समझाया कि वह ताशकन्द से सोवियत सेना को बुला आया है। यदि उसका निश्चय किया कार्यक्रम ठीक से निभ गया तो आशंका की कोई बात नहीं और यदि हालत खराब होगी तो वह स्वयम ही बैरमअली पहुंच जायगा। यह खबर मिल चुकी थी कि ताशकन्द से आने वाली सेना कगान तक पहुंच चुकी है।

पोल्तोरातस्की ने तैयारी का अवसर पाने के लिये और ज़ारशाही सेना को राह में अटकाने के लिये अश्काबाद में टेलीफोन कर फ़ुन्तिकोव से समझौते की राह निकालने की बातचीत शुरू की। पोल्तोरातस्की ने पहला प्रश्न फ़ुन्तिकोव से पूछा"—अश्काबाद में क्या हालत है?" फ़ुन्तिकोव ने टालने के लिये उत्तर दिया—"तुम अश्काबाद आ जाओ। यहां की हालत भी मालूम हो जायगी और बात-चीत भी ठीक ढंग से हो सकेगी। पोल्तोरातस्की को इस जाल में फंसना स्वीकार न था। वह तार-घर से लौट रहा था उस समय दफ्तर की घड़ी रात के तीन बजा रही थी। काले आकाश में उज्जवल तारे टिम टिमा रहे थे। दिन की गरमी शीतल बयार में बदल गई थी। सूनी रात में स्टेशन पर शन्टिंग करने वाले इंजनों की सीटियां और फुफकारों के सिवा और कोई शब्द न सुनाई दे रहा था।

पोल्तोरातस्की तुर्किस्तानी जनता के प्रतिनिधि मण्डल के प्रधान से टेलीफोन पर बात करने के लिये स्टेशन पर पहुँचा। प्रधान से फोन मिलाने में देर हो रही थी इसलिये पोल्तोरातस्की तिशेंको के साथ स्टेशन के प्लेटफार्म पर टहल रहा था। सहसा पूर्व की ओर लाल सेना के मोर्चे से गोली चलने का शब्द सुनाई दिया। फायरिंग की आवाज़ बढ़ती जा रही थी। तिशेंको को चौंकते देख पोल्तोरातस्की ने कहा—यह शहर की गड़बड़ी ही है और कुछ नहीं परन्तु जब गोली चलना बहुत देर तक न रुका तो

उसने तिशोंको से कहा—"साथी, मेरा ख़याल है तुम जा कर देखो बात क्या है।"

"मैं तुम्हें अकेले कैसे छोड़ जाऊ ?"

"यहाँ एक हुआ या दो, कोई ख़ास फरक नहीं पड़ेगा। यह शोर बन्द होना चाहिये नहीं तो सारा शहर बौखला जायगा।"—पोल्तोरातस्की ने आग्रह किया।

तिशोंको झिझक रहा था, क्या करे ? पोल्तोरातस्की ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा—"साथी, अब झिझकने का समय नहीं। जैसे भी हो इस स्थिति को सम्भालना है। इस काम की जिम्मेवारी पार्टी ने हमें दी है। यहाँ हम दोनो रहें या एक क्या अन्तर पड़ेगा ? मुझे तुम अकेले नहीं छोड़ना चाहते परन्तु वहाँ इतने आदमी ख़तरे में हैं। वहाँ की स्थिति सम्भाल कर तुम तारघर में आ जाना। मैं वहाँ मिलूगा।"

ताशकन्द से टेलीफोन मिलाने में प्रायः एक घंटे का समय लग गया। पोल्तोरातस्की ने जन सभा के प्रधान को मारी की स्थिति समझाई। प्रधान ने आश्वासन दिया कि पहले भेजे गये सिपाहियों के अतिरिक्त वह एक और टुकड़ी तुरत मारी की ओर भेज रहा है।

पोल्तोरातस्की बहुत थक गया था कुछ मिनिट विश्राम कर लेने के लिये वह एक ओर बैठ गया। उसी समय ज़ारशाही के सैनिकों की फौलादी गाड़ी स्टेशन पर आ पहुँची। एक बन्दूक चलने की आवाज़ से स्टेशन गूंज उठा। पोल्तोरातस्की तुरत उठ स्टेशन के बाहर खड़े अपने घोड़े की ओर चला परन्तु ज़ारशाही सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और उसके हथियार छीन लिये।

पौ फट रही थी। शहर भर में जगह जगह गोलियाँ दग रही थीं। स्टेशन का प्लेटफार्म ज़ारशाही के सिपाहियों से भर गया था। तिशोंको अभी तक लौटा न था।

तिशोंको ने अपने सिपाहियों के पास पहुँच कर देखा कि ज़ारशाही सेना की हरावल से उनकी मुठभेड़ हो गई है। उसने हथियारों और गोली बारूद का गोदाम और आवश्यक काग़ज़ात तुरंत पीछे भेज देने की आज्ञा दी और अपने सिपाहियों को धीमे धीमे बैरामअली की ओर हट जाने के लिये कह दिया। उसे तारघर पहुचने की जल्दी थी। सोचा दो सिपाही

साथ ले ले फिर खयाल आया, यों भी मुझे कौन पहचानता है। यहाँ आदमियों की ज़रूरत ज्यादा है।

लौटते समय तिशोंको जिधर से भी बचकर निकलना चाहता, ज़ारशाही के सिपाही सामने पड़ जाते। वह समझ गया, पोल्तोरात्स्की के पास पहुच पाना कठिन होगा। वह अर्याक बाग़ की दिवारों की आड़ में होकर आगे बढ़ रहा था। तारघर के पास पहुच कर देखा कि वहाँ जारशाही सिपाहियों का कब्ज़ा हो चुका था। आड़ में ही ठिठक कर वह सोच रहा था क्या करे ? उसी समय उसे किसी की आवाज़ सुनाई दीः—"यह किसका घोड़ा है।"

"एक बोल्शेविक इस पर सवार था। वह ताशकन्द का कमिस्सार निकला"—उत्तर सुनाई दिया।

"कमिस्सार कहाँ है ?"

"क्या मालूम ? जेल भेज दिया गया कि गोली ही मारदी हो।"

तिशोंको के शरीर से पसीना छूट गया।—क्या करे ? बैरामअली लौट जाय ? परन्तु पोल्तोरात्स्की को खोकर वह चर्नीशोव और दूसरे साथियों को क्या मुह दिखायेगा ? कुछ तो करना ही होगा ? अपनी जान बचा लेना ही कौन बहादुरी है ? यों ही लौट जाने में कौन बोल्शेविक पना है ? पर करू क्या ? कैसे मालूम हो कि पोल्तोरात्स्की है कहाँ ?

अचानक याद आया जेल का सुपरिण्टेण्डेण्ट उसका पुराना परिचित है। अश्काबाद में दोनों साथ साथ जेल में सिपाही थे। सुपरिण्टेण्डेण्ट पुराने ढग का सीधा आदमी था, राजनीति और किसी पार्टी वार्टी से बेमतलब। तिशोंको ने सोचा दांव चलाया जाय। शायद सीधा ही पड़ जाय। दिन भर वह छिपा रहा। रात पड़ने पर अपनी राइफ़ल एक जगह छिपाकर वह निधड़क जेल के दफ्तर में पहुचा। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उसे पहचाना तो विस्मित देखता रह गया। उसे खूब मालूम था कि तिशोंको लाल सेना का कमिस्सार है। जारशाही सेना का कब्जा हो जाने पर वह कैसे यहाँ आ पहुंचा ?

तिशोंको सुपरिण्टेण्डेण्ट की घबराहट भांप कर स्वयम ही बोला—"मैं तुम पर भरोसा करके आया हूँ। इस समय तुम्ही मुझे बचा सकते हो।"

"क्यों क्या बात है?......मैं क्या कर सकता हूं?"

"मैं लाल सेना से भाग कर आया हूँ। अगर सफ़ेद सेना में सीधे चला जाऊं तो वे लोग गोली मार देंगे या मुझे फिर मोर्चे पर भेज देंगे। मैं इस लड़ाई में अपनी जान नहीं देना चाहता पुरानी दोस्ती का खयाल कर मुझे यहाँ कोई काम दे दो। यहाँ का काम मैं सब समझता हूं।"

सुपरिण्टेण्डेण्ट सन्देह से उसकी ओर देखता रहा। तिर्शेको फिर बोला—मैं अपनी राइफल और रिवाल्वर यहाँ पास ही छिपा आया हूँ। तुम्हें जरूरत हो तो लादूँ? मुझे उनका क्या करना है? तुम चाहो बेच लेना। हथियार आजकल चौगुनी कीमत पर बिक रहे हैं।"

सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कुछ पल आँखें झपक कर उत्तर दिया—अच्छा, सोचूंगा। दो चार दिन में बताऊंगा।"

"मैं जाऊं कहाँ?"—तिर्शेको अधीरता से बोला—"तुम सब बात जानते हो। कहाँ जाऊं? मुझे कोई काम देदो, मेहतर का, भिश्तीका, जान बचे किसी तरह!"

सुपरिण्टेण्डेण्ट कुछ देर सिर खुजाता सोचता रहा और फिर बोला—"भीतर के चक्कर में पहरेदार की जगह दे सकता हूं।" उंगली उठाकर चेतावनी दी—"देखो, कोई शरारत या धोखा न करना!" स्वर धीमा कर उसने समझाय—"भीतर के चक्कर में कमिस्सार पोल्तोरातस्की बन्द है। अगर कहीं वह निकल भागा तो मेरा और तुम्हारा, दोनों का सिर काट लिया जायगा।" आधे घटे बाद तिर्शेको जेल के सिपाही की रिवाल्वर लगी पेटी कमर पर कस जेल के भीतर के चक्कर में आ पहुंचा।

पोल्तोरातस्की एक काल कोठड़ी में चुपचाप अकेला बैठा था। उसे मालूम हो गया था कि उसे गोली मार देने का हुक्म हो चुका है। कुछ घण्टों की ही बात थी। अपने बीते जीवन की बातें याद आ रही थीं:—बचपन में धूप में खेलते समय उसके सुनहरी बाल खूब चमका करते थे। गली-मुहल्ला के लोग उसे बहुत प्यार करते थे। पहले पहल उसने प्रेस में कम्पोज़ीटर की नौकरी की। मजदूरों का प्रतिनिधि बन वह पेट्रोग्राड कांग्रेस में गया। वहाँ लेनिन का व्याख्यान सुना और बोल्शेविक पार्टी में सम्मिलित हो गया। फिर ताशकन्द में बिताये दिन। उसके मन में असंतोष था कि

सोवियत के लिये संकट के समय में, जब एक भी आदमी का खो जाना सोवियत की शक्ति को धक्का पहुँचा रहा है, वह मर रहा है। उसका काम अपूर्ण ही रह गया है। सिर झुकाये बैठा वह इसी विचार में डूबा था। पल पल बीत कर उसकी मौत का समय समीप आता जा रहा था''' ''।

पीठ पीछे, कोठरी में झांकने के लिये दरवाज़े में बने छेद के खुलने और मुँदने की आहट दो तीन बार सुनाई थी। पोल्तोरातस्की ने उस ओर ध्यान देना व्यर्थ समझा। उसे भान पड़ा कोई फुसफुसा कर पुकार रहा है—"कामरेड कमिस्सार !"

पोल्तोरातस्की ने घूम कर देखा। छेद से झांकती हुई आंखें उसे परिचित भान पड़ीं। वह उठकर दरवाज़े पर आ गया। तिशोंको ने उसे सिपाही बन कर जेल में पहुंच जाने की बात बता कर कहा कि वह अवसर की प्रतीक्षा में है।

पोल्तोरातस्की क्षण भर सोच कर बोला—"तुमने व्यर्थ में अपने आप को फसाया। यहां से बच के निकलने की कोई आशा नहीं। हो सके तो मुझे कागज पेंसिल ला दो।"

तिशोंको की जेब में कागज और पेंसिल का टुकड़ा था। वह उसने पोल्तोरातस्की को दे दिया। दरवाज़े का छेद मूंद कर तिशोंको आगे बढ़ा ही था कि उसे जेल दफ्तर में पहुचने का हुक्म मिला।

सुपरिण्टेण्डेण्ट घबराया हुआ था, बोला—"बड़ी आफ़त आई! तुम्हें पहचान लिया गया है। हुक्म मिला है कि तुम्हें पहरे से हटाकर पहरे में रखा जाय।"

"मैंने तो पहले ही कह दिया था, अपनी जान तुम्हारे हाथों सौंप रहा हूं"—तिशोंको ने धैर्य से कहा—"मैं और क्या कह सकता हूँ। तुम जो समझो।"

"मैंने तो उन लोगों को समझाया कि पहचानने में भूल हो रही है। तुम तिशोंको नहीं हो। कमाण्डर ने हुक्म भेजा है कि तुम्हें कोठड़ी में बन्द कर दिया जाय और कल सुबह वह खुद आकर देखेगा। सुनो, तुम अश्काबाद चले जाओ—"

"अश्काबाद ?"

"हां, मैं तुम्हें पास दे दूगा। वहां जाकर तुम अपनी पुरानी जगह काम शुरू कर दो। इससे किसी पर बात न आयेगी।"

तिशेंको चाहता था जेल से जाने से पहले एक बार पोल्तोरातस्की से मिल ले। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने तिशेंको को यात्रा का पास और जाकर नौकरी लेने के हुक्म की चिट्ठी देदी। तिशेंको ने कहा—"अश्काबाद के लिये गाड़ी सुबह पौफटते समय छूटती है। तब तक मुझे जेल में रहने दो।" उसी समय फोन की घण्टी बजी। फोन पर सफेद सेना के कमाण्डर का हुक्म आ रहा था कि पोल्तोरातस्की को तैयार रखा जाय। उसे गोली मारने के लिये सिपाहियों की टुकड़ी भेजी जा रही है।

तिशेंको तुरत अवसर पाकर पोल्तोरातस्की की कोठड़ी के दरवाज़े पर पहुँचा। पोल्तोरातस्की ने एक पत्र लिख रखा था। वह पत्र तिशेंको को देकर उसने कहा—"मुझे जो कुछ कहना था इसमें लिख दिया है। यह पत्र साथियों तक पहुंचा दो।" तिशेंको के लिये कुछ उत्तर देने का समय न था। बाहर के बराम्दे से सिपाहियों के मिले कदमों के समीप आते जाने की आहट आ रही थी। गोली मारने के लिये सिपाहियों की टुकड़ी आ पहुँची थी। तिशेंको हट कर दूसरी ओर के बराम्दे में चल गया।

पोल्तोरातस्की की कोठड़ी का ताला खोला जाने की आहट तिशेंको ने सुनी और पोल्तोरातस्की की ऊंची निर्भय आवाज़ सुनी—"तुम लोग अपनी मनुष्यता खो चुके हो। तुम लोगों को शिकारी कुत्तों की तरह काम में लाया जा रहा है। तुम लोग मुझे गोली मार सकते हो परन्तु इससे क्रान्ति की सफलता में बाधा नहीं पड़ सकती। मेरे खून की एक एक बूंद से क्रान्ति के सैकड़ों बहादुर सिपाही पैदा होंगे।"

सिपाहियों के कोठड़ी से लौटते कदमों की आहट सुन तिशेंको से रहा न गया। वह भी लौट कर सिपाहियों की टुकड़ी के पीछे पीछे चलने लगा और एक हाथ से अपनी पेटी से लटके रिवाल्वर को खोलता जा रहा था। परन्तु जेल के आंगन में पहुंच उसने देखा कि पोल्तोरातस्की को बचा सकना सम्भव न था। आंगन सशस्त्र घुड़सवार सिपाहियों से भरा था।—"मैं अपनी जान चाहे दे दूं परन्तु कमिस्सार को बचा सकने की कोई सम्भावना नहीं"—उसने सोचा—"अपनी सेना का एक आदमी और

घटेगा और फिर कमिस्सार का पत्र, इस पत्र में अवश्य ही बहुत आवश्यक बाते होंगी, यह पत्र भी बीच में रह जायगा—शत्रु के हाथ पड़ जायगा।

उसी समय तिशैंको के समीप खड़ा सवार अपने घोड़े से उत्तर समीप के नल पर पानी पीने लगा। तिशैंको के दिमाग में बिजली सी कौंध गयी। वह लपक कर घोड़े की जीन पर जा बैठा और घोड़े को ज़ोर से एड़ लगा कर जेल के खुले हुये फाटक की ओर घुमा दिया।

दूसरे सिपाही कुछ समझ पायें इससे पहले ही तिशैंको फाटक से सौ गज़ से परे निकल चुका था। उसके पीछे धड़ाधड़ गोलियां चलाई गई परन्तु घने अंधेरे में उसे कोई देख न पाया। पोल्तोरातस्की भी यह घटना देख रहा था। अपने सिपाही की इस विजय औ' अपना पत्र साथियों के हाथ में पहुंच जाने के विश्वास से वह सीना फुला कर दुश्मन की गोली का सामना करने के लिये तैयार हो गया।

बैरमअली बहुत छोटा सा कस्बा था। यहां लाल सेना को बहुत निराशा हुई। यहां लाल सेना की कोई टुकड़ी पहले से न थी। ताशकन्द से भेजी गई सेना भी अभी तक न आई थी। रात भर में गावों से किसान बटोर कर उन्हें हथियार चलाना सिखाकर सफ़ेद सेना का सामना कैसे किया जा सकता था। सफेद सेना तेज़ी से बैरमअली की ओर बढ़ती आ रही थी। चर्नीशाव परेशान था, क्या करे? मारी सफेद सेना ने ले लिया था। वहां से लाल सेना पीछे हटकर बैरमअली में आ गई थी। इस सेना के लगभग आधे सिपाही बैरमअली में खेत रहे थे। तिशैंको और पोल्तोरातस्की का कुछ पता न था। एक बार उसके मन में आया कि किसी आदमी को, करगेश-ईशान को मारी भेज कर उन दोनों की खोज कराये परन्तु खबर लेने जानें वाला इतनी जल्दी लौट कर न आ सकता था।

चर्नीशोव ने साथियों को बुला कर रायली। तय हुआ कि बैरमअली छोड़ चार्दीज़ोव में मौजूद लाल सेना के साथ मिला जाये। दो ट्रेनें तैयार की गईं। गाड़ियां छोड़ी जाने से पहले चर्नीशोव रेत के एक टीले पर चढ़ कर अन्तिम बार इस स्थान को देख रहा था। उसने पहले पूरब की ओर और फिर पश्चिम की ओर आंखें दौड़ाईं। पूर्व में सूर्य अभी ही 'सुलतान सजर' के किले के पीछे धरती से ऊपर उठा था। किरणें अभी स्टेशन की छत और रुई के कारखाने की चिमनी को ही छू रही थीं। चिमनी से धुआं

नहीं निकल रहा था। कारखाने ने एक सीटी दी परन्तु वह बीच में ही रुक गई। मज़दूर भी आते हुये दिखाई नहीं दिये। बल्कि बहुत से लोग अपने बीबी बच्चों और असबाब के साथ स्टेशन की ओर चले आ रहे थे।

यह रुई का कारखाना सोवियत ने अभी हाल में मज़दूरों के सहयोग से बनाया था—"मज़दूरों के पसीने से यह कारखाना क्या शोषकों के हाथ चला जायगा? जिस मज़दूर वर्ग को हमने उत्पीड़न से मुक्त कर स्वतन्त्र मनुष्य बनाया है, क्या वे फिर पूँजीपति शोषकों द्वारा कुचले जायँगे? नहीं, यह न हो सकेगा।"—चर्नी मन ही मन सोच रहा था। मारी की ओर से तोपों की गरज सुनाई दे रही थी। चर्नीशोव ने अनुमान किया यह सफ़ेद सेना और ताशकन्द सेनाओं की मुठभेड़ हो रही है। अब चलने में अधिक विलम्ब करना उचित नहीं। उसने पहली ट्रेन छोड़ी जाने का हुक्म दे दिया। उसी समय उसे दूर से एक घुड़सवार मारी की ओर से आता दिखाई दिया। पहले तो उसने समझा कि यह उसके खोजी सिपाहियों में से कोई होगा जिन्हें उसने सफ़ेद सेना की खोज खबर लेने भेजा था। परन्तु सवार के समीप आ जाने पर उसने देखा यह कोई और है, घोड़ा बहुत थका टूटा पसीने से तर और लड़खड़ाता सा मालूम हो रहा था।

सवार समीप आकर घोड़े से कूद पड़ा। यह तिशेंको था। चर्नीशोव ने पूछा—"पोल्तोरातस्की कहाँ है?"

तिशेंको कुछ उत्तर न दे सिर झुकाये खड़ा रह गया। बहुत से सशस्त्र मज़दूर सिपाही चारों ओर से घिर आये थे और चिन्ता तथा उत्सुकता से तिशेंको के चेहरे की ओर देख उत्तर की परीक्षा कर रहे थे। तिशेंको ने कुछ उत्तर न दे अपनी जेब से पत्र निकाल चर्नीशोव को थमा दिया। पत्र लेते समय उसके हाथ काँप रहे थे। पत्र ले चर्नीशोव ने सबको सुनाने के लिये पढ़ना शुरू किया। उसका स्वर भी काँप रहा था:—

"प्यारे सोवियत मज़दूरों और सिपाही साथियों, सफ़ेद सेना के अफ़सरों ने मुझे गोली मार देने का हुक्म दिया है। मैं कुछ ही घंटों के लिये और जीवित हूँ। इस थोड़े से, मूल्यवान समय में मैं अपना यह सन्देश लिखकर आप को भेज रहा हूँ।

"प्यारे साथियो, क्रान्ति विरोधी लोग मेरी जान ले रहे हैं। मुझे विश्वास है कि मेरी मृत्यु से क्रान्ति की सफलता में बाधा नहीं पड़ेगी। मेरा स्थान

मुझसे अधिक योग्यता और दृढ़ता से काम करने वाले साथी ले लेंगे। और मेहनत करने वाली श्रेणी अपने बँधनों से मुक्त होकर मनुष्य-समाज को विकास और स्वतन्त्रता की ओर ले जायगी।

"साथियो, आज मैं विदाई ले रहा हूँ। मैं स्वय एक मज़दूर हू। मृत्यु के समय मुझे केवल यह चिन्ता है कि मेरी मृत्यु से आप लोग हतोत्साह और निराश न हों। मेहनत करने वाली श्रेणी की मुक्ति के सघर्ष में यदि किसी भी प्रकार की शिथिलता आयेगी तो यह न केवल तुर्किस्तान की मेहनत करने वाली श्रेणी के साथ विश्वासघात होगा बल्कि इससे सम्पूर्ण ससार की मेहनत करने वाली श्रेणी के भविष्य को धक्का लगेगा। आपकी यह शिथिलता और उत्साह की कमी अक्टूबर की समाजवादी क्रान्ति में अपने प्राण निछावर करने वाले वीरों के प्रति विश्वासघात होगी।"

"साथियों, मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि मौत कोई बहुत बड़ी बात नहीं, न मुझे उसके लिये दुख है। मुझे दुख है इस बात के लिये कि हमारे अपने कई साथी जारशाही के बचे हुए भूतों के भय और प्रभाव से स्वय क्रान्ति विरोधी मार्ग पर चल कर प्रजातन्त्र और समाजवाद की सफलता की राह में अड़चने डाल रहे हैं, यह लोग स्वय अपनी, अपने परिवारों और अपनी श्रेणी की कबरें खोद रहे हैं। इनकी यह कायरता और गद्दारी हमारी श्रेणी के उद्धार के लिये आत्म बलिदान करने वाले वीरों की स्मृति के लिए कल क बन रही है।"

"साथियों, आज मेहनत करने वाली श्रेणी को बहुत फूट फरेब और जालसाज़ी से वश में करने की कोशिश की जा रही है। हमारे शोषक सामन्त-शाही और पूँजीपति खुली लड़ाई में मेहनत करने लाली श्रेणी से परास्त होकर हमें धोखे और फरेब से वश में कर रहे हैं। आपको समझाया यह जाता है कि क्रान्ति विरोधी शक्तियाँ सोवियत के विरुद्ध बग़ावत नहीं कर रहीं वह केवल सोवियत के कुछ लोगों के 'अत्याचार' के विरुद्ध लड़ रही हैं। साथियो, इस धोखे को पहचानो। हमारी श्रेणी का राज व्यक्तियों का राज नहीं! यह श्रेणी का राज है। हमारे शासन को चलाने वाले हमारे प्रतिनिधि हैं। उनके अच्छे बुरे काम की जाँच हम स्वयम करेंगे। यदि शत्रु हमारी श्रेणी के किसी भी व्यक्ति पर हाथ उठाते हैं तो यह सम्पूर्ण श्रेणी पर हमला है। राष्ट्रीयता और आज़ादी के नाम पर इस सोवियत विरोधी बग़ावत के नेता

अज़ीज़ खाँ, बुखारा का अमीर, ज़ार के पुराने अफ़सर और पूँजीपति लोग तथा इनके विदेशी सहायक हैं जो अपने शोषण के अधिकार को क़ायम रखने का प्रयत्न कर रहे है। हमारी शक्ति का सामना वे नहीं कर सकते इसलिये वह हमारी श्रेणी में फूट डालकर हमें निर्बल करने की चाल चल रहे हैं। आप क्या इन लोगों से यह आशा कर सकते हैं कि यह लोग अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार कर आपका हित करने के लिए ही सब कुछ कर रहे हैं?

"साथियो, जब तक तुम्हारे हाथ में शस्त्र हैं तुम दुर्जेय शक्ति हो! सम्पूर्ण समाज का जीवन तुम्हारे हाथों मे है, शहरों और गाँवों की सब पैदावार, यातायात, बिजली, पानी भोजन सब कुछ तुम्हारे हाथ में है, फिर तुम असमर्थ क्यों हो? केवल इसलिए कि तुम अपनी सम्मिलित श्रेणी-शक्ति को भूल जाते हो! साथियो, आज तुम अपनी मुक्ति के और अधिकार प्राप्त करने के मार्ग पर बहुत आगे बढ़ चुके हो। इसके लिये हमारी श्रेणी ने बहुत बड़ा मूल्य दिया दिया है। आज कदम पीछे हटाना बड़ी भारी भूल होगी। इस भूल से हमने जो कुछ पाया है, सब कुछ खो बैठेंगे। अब हमारे पीछे हटने से हमारे दुश्मन और भी अधिक बलवान, चौकन्ने और तैयार हो जायँगे और दुबारा आगे बढ़ने के लिए हमें पहले से चौगुनी कुर्बानी और कीमत अदा करनी पड़ेगी।

"साथियो, मेरा अन्तिम सदेश यही है कि अपनी सेना में से विश्वासघाती और क्रान्ति विरोधियों को चुन-चुन कर निकाल दीजिये। और अपनी मुक्ति के सग्राम में अपनी पूरी शक्ति से आगे बढ़िये। इस क्रान्ति की सफलता में यही आप के जीवन की सम्भावना है!

आपका साथी,
पी० पोल्तोरातस्की"

"प्यारे साथियो यही मेरा सदेश है। मुझे अपनी मृत्यु के लिए कोई खेद या दुःख नहीं। मुझे विश्वास और सतोष है कि मैं अपने और अपनी श्रेणी के जीवन के उद्देश्य को विश्वस्त और योग्य हाथों में सौंप रहा हूं।

आधी रात—जुलाई २१, १६१८ पी० पोल्तोरातस्की"

इस पत्र को सुनकर सिपाहियों ने दाँत पीस लिये। उनकी आँखों में आँसू छलक आये थे, उन्हें छिपाने के लिये वे इधर उधर देखने का बहाना

कर रहे थे।

पत्र समाप्त कर चर्नीशोव चुप रह गया। वह कुछ कह न सका। पोल्तोरातस्की के शब्द पढ दिये जाने पश्चात कुछ और कहने की आवश्यकता भी क्या थी? फिर भी दाँतों से ओंठ काट कर वह बोला—

"हम लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि साथी पोल्तोरातस्की के सदेश को पूरा करेंगे।"

तुरन्त पोल्तोरातस्की के इस पत्र की सैकड़ों लिपियाँ लिखी गई और स्टेशन, कारखाने और ट्रेनों में जगह-जगह यह लिपियाँ चिपका दी है।

चर्नीशोव ने करगेज ईशान को कुछ साथियों के साथ पीछे छोड़ दिया। उसे वही काम सौंपा गया जो तेजेन में अशीर को सौंपा गया था। पोल्तोरातस्की के पत्र की एक कापी करगेज को देकर चर्नीशोव ने कहा—"इस पत्र की जितनी अधिक लिपियाँ बन सकें बनवा कर गाँव-गाँव बाँट दी जायें। हमारी सबसे बड़ी शक्ति हमारी श्रेणी-चेतना और अपनी श्रेणी की शक्ति को पहचानना ही है।"

२५

तेजेन पर कब्ज़ा कर लेने के बाद जनता पर अपना आतंक जमाने के लिये अज़ीज़खां ने क्रूरता के नये ढंग और तौर शुरू किये। उसने अनाचार और अपराध को जड़ से खोद डालने की घोषणा करदी। चोरों को चौक बाज़ार में खड़ा कर कोड़े लगा कर खाल उतार दी जाती। नशाखोरों को इससे भी विकराल दण्ड दिया गया।

होराज़ बक्शी की आयु बहुत अधिक हो चुकी थी। हाथ पांव से भी रह गया था। उसकी अफ़ीम की आदत छोड़े न छुटी। अज़ीज़खां ने उसे चौक के एक खम्भे से फांसी लगवा दिया और बक्शी के सीने पर इश्तहार चिपका दिया गया — "यह अफीम खाने का दण्ड है।"

जनता अज़ीज़खां के नाम से कांपने लगी। अज़ीज़ के लिये यही सबसे अधिक संतोष की बात थी।

तेजेन स्टेशन से मारी की ओर सफ़ेद सेना के सिपाहियों से भरी बीसियों ट्रेनें जा चुकी थीं। अब लगातार माल गाड़ियों के खुले ठेलों पर लम्बी लम्बी सूंडों वाली बड़ी बड़ी तापें उस ओर जा रही थीं। यह तोपें पल में हज़ारों आदमियों को भस्म कर देने के लिये क्रोध भरी अपनी सूंडें आकाश की ओर उठाये चली जा रही थीं।

अज़ीज़ ने अपने पुराने सिपाहियों और नये भरती किये सिपाहियों को पल्टनों और कम्पनियों में बांट कर संगठित कर लिया। प्रत्येक कंपनी में सफेद सेना का एक एक अफ़सर भी लगा दिया गया। शहर के व्यापारियों और अमीर घरानों के जवानों ने एक स्वयं-सेवक सेना अज़ीज़ की सहायता के लिये बनाली। शहर के नंगे भूखे ग़रीबों को भी अज़ीज़ ने भरती कर लिया। जो कुछ जैसा कुछ कपड़ा उन्हें मिला बांट कर बन्दूकें भी देदीं। कोई सिर्फ कोट पहने था तो कोई सिर्फ बनियान, कोई सिलवार पहने था तो कोई निकर या पाजामा। इस नई सेना को भी अज़ीज़ ने ट्रेन पर सवार

करा कर सफेद सेना के पीछे युद्ध के मोर्चों की ओर भेज दिया।

इस धावे में अरतैक भी अपनी कम्पनी के साथ भेजा गया। अरतैक निरंतर अवसर की प्रतीक्षा में था कि सोवियत सेना से सम्पर्क हो तो उनसे जा मिले। परन्तु सोवियत सेना की स्थिति के विषय में उसे कुछ भी मालूम न था।

सफ़ेद सेना और अज़ीज़ की पचमेल सेनाओं की ट्रेनों का यह काफ़िला मारी के स्टेशन पर बहुत देर तक रुका रहा। अरतैक के लिये यह विलम्ब असह्य हो रहा था। रात के ग्यारह बजे थे। वह अपनी गाड़ी से उतर अंधेरे में प्लेटफारम पर टहलने लगा। उस समय भी गाड़ियों के आपस में टकराने के शब्द इंजन की सीटियों और सिपाहियों के हो हल्ले से उसका मन और भी खिन्न हो रहा था। वह स्टेशन के सूने भाग की ओर निकल गया। टहलने से उसे कुछ भी शान्ति न मिली। अपरिचित कोलाहल और दुर्गंध से उसका सिर दर्द करने लगा। लेट जाने के विचार से वह अपनी गाड़ी की ओर लौटने को था कि अंधेरे में एक आदमी एक गाड़ी के नीचे से दुबक कर निकलता हुआ दिखाई दिया। जान पड़ता था कि आदमी या तो किसी दूसरे आदमी को खोज रहा है या अपनी गाड़ी भूल गया है। यह आदमी अरतैक की ओर ही आ रहा था। अंधेरे में भी उसका गोरा चेहरा गोल दाढ़ी से घिरा जान पड़ रहा था परन्तु पहचान पाना कठिन था। अरतैक को देख आदमी उसकी ओर बढ़ आया और सहमते हुये बोला—"भैया, यह क्या अजीजखां की फौज है?"

"हूँ"—अरतैक ने उत्तर दिया—"तुम्हें अजीजखां से क्या काम है?"

"नहीं, मुझे एक दूसरे आदमी से काम है, शायद तुम उसे जानते हो?"

"इस फ़ौज में ऐसा कौन आदमी है जिसे मैं नहीं जानता?"

"मैं अरतैक बबाली से मिलना चाहता हूँ"

अरतैक ने उसके चेहरे को घूर कर देखा और प्रश्न किया—"अरतैक बबाली से तुम्हें क्या मतलब है?"

"उसे एक सन्देश देना है भैया।"

"मैं ही हूँ अरतैक बबाली।"

अब इस व्यक्ति ने अरतैक की ओर सन्देह से देख प्रश्न किया—

"नेजेन के रूसियों में कोई तुम्हारा परिचित था ?"

अरतैक को सबसे पहले चर्नीशोव का ही नाम याद आया उसने उत्तर दिया—"चर्नीशोव को मैं खूब जानता हूँ।"

"चर्नीशोव ने तुम्हें सलाम कहा है ..."

अरतैक ने अपना हाथ इस आदमी के कंधे पर रख दिया। आदमी कुछ सहम कर चुप हो गया। अरतैक ने आश्वासन दिया—"घबराओ नहीं, भरोसा रखो, डरने की बात नहीं है ? तुम्हारा नाम क्या है ?"

"करगेज़ ईशान !"

"चर्नीशोव से कहां मिले ?"

करगेज ने चारों ओर नजर फिरा कर देखा कि आस पास कोई सुनने वाला तो नहीं और अरतैक को 'मारी' और 'बैरमअली' की पूरी घटना सुना दी। उसने यह भी बताया कि सोवियत के निर्णय से कुलीखां को जनता के हथियारों की चोरी करने के अपराध में गोली मारदी गई है।" · चर्नीशोव तुम्हें बहुत याद करता है। तिशेंको, और अशीर भी तुम्हें बहुत याद करते हैं और कहते हैं कि अब तो तुम खूब समझ गये होगे कि जनता का शत्रु कौन है और मित्र कौन ? यदि तुम्हें जनता के हित का खयाल है तो अब और देर किये बिना तुम्हें सोवियत की सहायता के लिये तुरत कदम उठाना चाहिये।

करगेज से बातचीत करते समय अरतैक को सन्देह हो रहा था पिछली गाड़ी से कोई आदमी उन्हें ताक रहा है। वह करगेज़ को बांह से थाम गहरे अंधेरे में ले गया परन्तु अरतैक के मन में खटका बना ही रहा कि कोई उसका पीछा कर रहा है। इसलिये बहुत धीमे स्वर में उसने करगेज़ को समझाया—" मैं केवल अवसर की प्रतीक्षा में हूं। यहां पल पल काटना मुझे मुसीबत हो रहा है। अभी दिखाने को मैं अज़ीज़खां की सेना के साथ हू परन्तु मैं इसकी ओर से लड़ूंगा, नहीं। मौका पाते ही चर्नीशोव की सेना से जा मिलूगा।" अरतैक ने बात समाप्त कर करगेज से अपनापन जताने के लिये हाथ मिला कर बिदा ली। करगेज़ समीप खड़ी गाड़ी के नीचे दबक कर किसी ओर चला गया और अरतैक अपनी गाड़ी में आ बैठा।

करगेज़ कुछ कदम ही जा पाया था कि सफ़ेद सेना के जासूसों ने उसे घेर कर गिरफ्तार कर लिया। करगेज़ की तलाशी लेने पर उसके पास पोल्तोरात्स्की के पत्र की कई प्रतियां मिलीं। उसके कम्युनिस्टों का जासूस और प्रचारक होने में कोई सन्देह न रहा। सफ़ेद सेना के लोगों ने अजीज़ को स्थानीय शासक मान कर करगेज़ को उसी के हाथ सौंप दिया। करगेज़ तुर्कमान था तिस पर मौलवी भी। सफ़ेद सेना के ज़ारपन्थी अफसरों की चाल थी कि अज़ीज़खाँ करगेज़ ईशान को सज़ा देगा तो तुर्कमान लोगों में परस्पर झगड़े का कारण बन जायगा। यह अफ़सर तुर्कमान लोगों की एकता फूटी आंखों न देख पाते थे।

मारी के बे लोगो ने गवाही दी कि कुछ दिन पहले करगेज़ ईशान ने मारी के बाज़ार में सभा करके प्रजा को बोलशेविकों का साथ देने के लिय उकसाया था। अज़ीज़ खाँ को और क्या चाहिये था? वह तो सदा मौके की खोज में रहता था कि कोई ऐसी बात कर पाये जिसका चर्चा दूर तक हो और लोगों पर उसका आतंक गहरा हो जाय।

करगेज को अज़ीज़ के सामने रात के एक बजे पेश किया गया। उस समय अज़ीज़ के साथ उसकी गाड़ी में यात्रा करने वाले उसके दरबारी और दूसरे सब अफ़सर सो रहे थे। अरतैक अज़ीज़ की गाड़ी से अगली गाड़ी मे था। इस गाड़ी में भी सभी लोग सो रहे थे। अज़ीज़ के साथ इस समय केवल मदीर-ईशान था। दो सिपाहियों को अज़ीज़ ने और बुलवा लिया।

अज़ीज़ ने करगेज से बड़ी सज्जनता से बातचीत की और बातचीत समाप्त हो जाने पर उसने अपने नौकर पेलांग को हुक्म दिया—"जाओ, ईशान को कुत्तों से बचाकर पहुंचा आओ।"

पकड़ा जाने के बाद से करगेज बहुत भयभीत था। परन्तु अज़ीज के व्यवहार से उसे बहुत कुछ भरोसा हो गया। कुत्तों से बचाकर पहुँचा आने के हुक्म से उसे फिर सन्देह हुआ। शहर में कोई खास कुत्ते न थे और गाड़ियों के आस पास तो कोई कुत्ता दिखाई न दिया था। करगेज ने सोचा, शायद अज़ीज का संकेत मारी के बे लोगो से है या वह सफ़ेद सेना के अफ़सरों को ही कुत्ता पुकारता है! या मुझे ही कुत्ता कह रहा है ...... सहमती हुई धीमी आवाज में उसने अजीज से निवेदन किया—"मालिक की मेहरबानी है, क्या तकलीफ़ कीजियेगा। मैं खुद ही चला जाऊंगा।"

अजीज होंठ सिकोड़ मुस्करा कर बोला—"मौलाना, रात बहुत हो गई है। जमाना खराब है। किसी का क्या भरोसा? यह लोग तुम्हें कुत्तों से बचाकर पहुचा देंगे।"

कुत्तों से बचाने की बात करग़ेज ईशान को फिर खटकी। उसने फिर अपनी बात दोहराई—"कोई जरूरत नहीं मालिक, कुत्तों का कोई डर नहीं है आप परेशान न हों।"

"नहीं नहीं"—अज़ीज़ ने आग्रह दिया—"कुत्तों का डर सदा ही है और खास कर लड़ाई के समय। बेपरवाही ठीक नहीं।" अपने नौकर की ओर देख अज़ीज़ बोला—"ले जाओ!"

"ले जाओ!" हुक्म सुन कर तो करग़ेज कांप उठा। उसके पांव पत्थर हो गये। उसे चलते न देख सिपाही उतावला हो बोल उठा—"चलो मौलाना, देर न करो।"

सिपाही की इस रूखाई से करग़ेज का दिल और भी बैठ गया। फिर भी उसने साहस कर, अज़ीज़ की ओर कातर दृष्टि से देख विनय की—"मालिक खान,'' ''।"

अज़ीज़खां झुंझला उठा। उसने अपने नौकर को धमकाया—"पेलाग।"

प्रायः अठाईस वर्ष की आयु के एक कुरूप जवान ने आगे बढ़ करग़ेज ईशान को दोनों कधों से थाम दरवाजे की ओर घुमा दिया। उसने करग़ेज़ के कधों को इतने जोर से दबोचा कि कधे प्राय, सुन्न हो गये। इस पर भी करग़ेज के कदम आगे न बढ़े। वह फिर पीछे घूम कर अजीज़ से प्रार्थना करना चाहता था। इतने में उसकी पीठ पर बन्दूक का एक कुन्दा ज़ोर से पड़ा। उसके पांव उखड़ गये। घसिटता हुआ वह कमरे से बाहर चला गया।

इसके बाद करग़ेज ईशान का कुछ पता न चला।

अगली संध्या अज़ीज़ की सेना का काफ़िला बरखांनी स्टेशन पर पहुचा। वहाँ से चार्दीजोव एक पड़ाव आगे था। यहाँ सिपाहियो से भरी बड़ी बड़ी बारह ट्रेनें पहले से खड़ी थीं। सिपाहियों और उनके घोड़ों को गाड़ियों से उतारा गया। स्टेशन के समीप फैले रेत के टीलों पर दूर दूर तक सिपाही छा गये।

इतनी बड़ी सफ़ेद सेना को देख अज़ीज़ मन ही मन सोच रहा था,

यहाँ इतनी बड़ी सेना इकट्ठी करने का क्या मतलब है ? चार्दीजोव को तो मैं अपनी सेना से ही दिन भर में जीत सकता था ?"

पौ फटने से पहले ही सफेद सेना ने चार्दीजोव की ओर कूच कर दिया। अज़ीज़खां भी मदीर ईशान और अपने जठ अफ़सर के साथ घोड़ों पर सवार हो सेना के साथ चला। केवल सफ़ेद सेना के पादरी, अज़ीज़खां के साथ के मौलवी और फौजी रसोईये ही पीछे रह गये। एक साथ मिलकर खड़ी, सिपाहियों से खाली ट्रेनें शहद की मक्खियों के खाली छत्तों जैसी जान पड़ रही थीं।

दोपहर तक सफ़ेद सेना आगे बढ़ती और अपने मार्ग में आये इलाकों पर कब्ज़ा करती हुई डीपो तक पहुँच गई। इस समय लाल सेना की ओर से उनकी कज़ान रेजिमेण्ट आगे आई और उन्होंने पीछे हटती लाल सेना की ओर से पलट कर धावा बोल दिया। लाल सेना की सब कम्पनियाँ पीछे हटना छोड़ उलट कर हमला करने लगीं। सफ़ेद सेना चारों ओर से सिमिट कर पीछे हटने लगी। अज़ीज़खां की घुड़ सवार सेना ने पीछे न हट कई पैंतरे बदले परन्तु उसकी पैदल सेना को पीछे लौटना पड़ा।

अरतैक अपने सौ सवारों को लिये सफ़ेद सेना के हमले का ज़ोर घटा देने के लिये कई मोर्चे बदल चुका था। वह अपने सवारों को ले दक्खिन की ओर से शहर का चक्कर लगाता हुआ, आमू के रेलवे पुल की ओर बढ़ गया। उसे आशा थी वहाँ लाल सेना से सम्पर्क हो सकेगा। लेकिन इस ओर भी सफ़ेद सेना जमी हुई थी। अरतैक ने समझा कि शहर सफ़ेद सेना के हाथों आ गया है और वह लौट पड़ा। अपने सवारों को लिये वह दल दल में रुका रहा और सूर्यास्त के समय अज़ीज़खां की छावनी में लौटा। लौट कर उसे अपनी भूल मालूम हुई; सफ़ेद सेना शहर पर कब्जा नहीं कर सकी थी। बल्कि असफल हो कर आमू के पुल से पीछे हट रही थी। यदि वह उस समय इस सेना पर हमला कर देता तो इस सेना का पीछा करती लाल सेना इन्हें समाप्त कर देती और अरतैक लाल सेना से जा मिलता परन्तु अवसर हाथ से जा चुका था।

२६

चार्दीजोव के मोर्चे पर लाल सेना से मार खा कर सफ़ेद सेना तेज़ी से पीछे हटती जा रही थी। अंग्रेज़ अफ़सरों ने सफ़ेद सेना की सहयता के लिये बैरमअली में हिन्दुस्तानी फ़ौज की एक मशीनगन कम्पनी भेजी थी। इस कम्पनी ने रात भर के लिये लाल सेना की राह रोक दी परन्तु दिन चढ़ते ही इन्हें भी पीछे हट आना पड़ा। चार दिन तक कदम कदम पर सफ़ेद सेना को धकेलती लाल सेना लड़ती रही और उन्होंने मारी शहर पर कब्ज़ा कर लिया। सफ़ेद सेना और उसकी सहायक ब्रिटिश सेना बहुत नुकसान उठा कर पीछे हट गई।

सफ़ेद सेना और ब्रिटिश हिन्दुस्तानी सेना के साथ साथ अज़ीज़ भी अपनी सेना को लिये पीछे हट रहा था और मन ही मन पछता रहा था कि इन लोगों के साथ मैं किस झमेले में आ फसा? उसे जुनैदखां की नसीहत याद आ रही थी कि हमारी शक्ति रेतीले मैदानों में ही है। रेलों के चक्कर में फसे तो मारे जायगे। शहरों पर कब्ज़ा करने के सैनिक ढग से उसे क्या मतलब था? वह चाहता था जैसे तैसे बच निकले और अगलान के अपने डकैती के किले में जा छिपे जहां से समय पर, राह चलते निस्सहाय काफ़िलों पर हमला कर अपनी शक्ति बढ़ाता जाय। परन्तु चारों ओर से घिर आई लाल सेना निकल भागने का अवसर ही न दे रही थी।

सफ़ेद सेना तीन दिन तक लगातार पीछे हट कर तेजेन पहुंची तो यहां भी लाल सेना ने पीछा न छोड़ा और उन पर आ पड़ी। अभी पौ भी न फट पाई थी कि अधियारे अकाश को चीर कर सुर्ख दहकती हुई गोलियां चलने लगीं। तुरंत ही गोला बारी भी शुरू हो गई। अज़ीज़ ने अपनी सेना को तुरंत पीछे हट जाने का हुक्म दिया।

अरतैक सोच रहा था कि अपने सौ सवारों को ले दक्खिन की ओर

से रेलवे लाइन पार कर, शहर की ओर जा लाल सेना से मिल जाये। उसे भरोसा था कि अपने गांव और घर की इस भूमि में वह कदम कदम धरती से परिचित है और यहां वह सुविधा से अपने साथियों से जा मिलेगा।

वह अपने सवारों के साथ रेलवे लाइन के पार पहुंचा ही था कि एक ट्रेन चली आती दिखाई दी इसमें सफेद सेना का काम करने वाले मज़दूरों की कम्पनी थी। इस ट्रेन के पीछे पीछे दूसरी ट्रेन आ रही थी इसमें ब्रिटिश हिन्दुस्तानी फौज का मशीनगन का रिसाला था। अरतैक ने दांतों से होंठ काट कर मन ही मन सोचा—यह है इन साम्राज्यवादियों की चाल ! खतरे में पहले रूसी सेना को भेजते हैं और उसके पीछे अपनी सेना को ! वह भी हिन्दुस्तानी सेना ! एक देश को गुलाम बना, उसे लड़ा कर दूसरे देशों पर कब्जा करना;यह है साम्राज्यवाद की चाल।

अरतैक प्रतीक्षा के सिवा और क्या करता ? सूर्योदय के समय लाल सेना तेजेन शहर में घुस चुकी थी हालांकि शहर के उत्तर-पश्चिम की ओर झाड़ियों में अज़ीज़ की सेना का रिसाला लाल सेना से अब भी उलझ रहा था। अरतैक और उसके सवारों ने लड़ाई में कोई भाग न लिया। वे लोग घनी झाड़ियों के जंगल को चीरते हुये तेजेन की ओर बढ़ रहे थे। इन्हें देख और शत्रु समझ लाल सेना इन पर भी गोली बरसाने लगती इसलिए खुले मैदान की राह शहर की ओर आगे बढ़ना सम्भव न था।

अरतैक को शहर की ओर दूरी पर तिशैंको दिखाई दिया। अरतैक ने चिल्ला कर उसे नाम से पुकारा। बन्दूकों की गरज में अरतैक की पुकार तिशैंको तक न पहुंची। तिशैंको ने अपनी ओर बढते शत्रु के रिसाले को देख लिया था। उसने अपनी कम्पनी को झाड़ियों में दबक कर इस ओर बढ़ने और शत्रु के रिसाले पर हमला करने का हुक्म दे दिया। अरतैक यह सब देख रहा था परन्तु वह रुका नहीं। उसने सवारों को हुक्म दिया कि "सरपट शहर की ओर बढ़ो" वह स्वयं सबसे आगे हाथ उठाये तिशैंको को पुकारता चला जा रहा था।

तिशैंकोने अपने नाम की पुकार सुनी और अरतैक की आवाज़ पहचानी अपने सिपाहियों को 'फायर' रोकने का हुक्म दिया। परन्तु इससे पहले ही चल चुकी एक गोली अरतैक के कंधे में जा धसी। उसके हाथ से राइफ़ल गिरगई और घोड़े की लगाम भी छूट गई। गिरने से बचने के लिये अरतैक

ने दूसरे हाथ से घोड़े के अयाल थाम लिये। अरतैक का घोड़ा, मालिक के ज़ख्मी हो जाने और गोलियों की बौछार से घबरा कर लौट पड़ा और अरतैक को लिये सरपट भागा जा रहा था। तिशौको उसके पीछे पीछे अरतैक को पुकारता दौड़ा आ रहा था। अरतैक उसकी पुकार सुन न सका। वह अपने घोड़े को वश न कर सकता था। घोड़े की पीठ पर सम्भले रहना ही उसके लिये दूभर हो रहा था।

तेजेन में हार कर सफेद और ब्रिटिश सेना काहका स्टेशन की ओर पीछे हट रही थी और लाल सेना उनका पीछा कर रही थी। अश्काबाद की राह में सफ़ेद सेना को कई सुरक्षित मोर्चे मिल गये। ईरान की ओर से नयी ब्रिटिश फौजें भी उनकी सहायता के लिये आ मिलीं। यहां सफेद और ब्रिटिश सेना ने नये सिरे से पक्के मोर्चे जमा लिये। लड़ाई जम कर होने लगी।

अज़ीज़खां तेजेन से ही अपनी सेना को ले अलगान भाग गया था। लाल सेना काहका में सफ़ेद सेना के मुकाबिले में उलझी हुई थी। इस अवसर से लाभ उठा अज़ीज़ ने तेजेन और अलगान के बीच अपनी सेना का एक मोर्चा लगा दिया और अलगान में स्वतंत्र खान बन बैठा।

अज़ीज़ ने लाल सेना का मुकाबिला करने के नाम पर सफ़ेद सेना से हथियार तो काफ़ी हथिया लिये थे परन्तु रसद राशन की उसके यहाँ कमी थी। इस कठिनाई का भी उसने उपाय तुरत कर लिया। उसने इलाके के इशानों और मुल्लाओं को इकट्ठा कर उन्हें खिला पिला कर, कुछ दबा-धमका कर फतवा ले लिया कि अज़ीज़खां इलाके का मुसलिम बादशाह है और उसे प्रजा से राजकर लेने का अधिकार है। शरीयत के अनुसार राजा को प्रजा से खेती की पैदावार का दसवां भाग और पशुओं की पैदावार का चालीसवां भाग लेने का अधिकार होता है। शरीयत से यह अधिकार पाकर अज़ीज़खां के अफ़सरों और गुमाश्तों ने राजकर इकट्ठा करना शुरू किया। जब कर लेने का अधिकार हो गया तो दसवाँ भाग कितना है, यह निश्चय करना उनके अपने हाथ की बात हो गई। इस उपाय से अज़ीज़खां, उसके दरबारियों और सेना का पेट मज़े में पलने लगा।

* * *

अरतैक ज़ख्मी हालत में जैसे तैसे अपने गाँव पहुँचा। उसे क्या आशा

थी ऐसी हालत में अपने घर लौटेगा। भविष्य उसके सामने अस्पष्ट और अंधकारमय था। मानसिक चिन्ता के बावजूद ऐना का स्नेह, माँ की ममता और नये उत्पन्न पुत्र के प्रति उसके आकर्षण ने अरतैक को सजीव करना शुरू किया। अब अरतैक समस्या को अपने परिवार और पुत्र के भविष्य की दृष्टि से सोचने लगा।—क्या यह लोग सदा ही साधनहीन, दूसरों की दया के मोहताज गुलाम बने रहेंगे? क्या इन्हें अपने जीवन की राह बनाने का, उस राह पर क़दम उठाने का अधिकार आत्मनिर्णय का अधिकार कभी प्राप्त न होगा, यह कभी मनुष्य न बनेंगे?

२७

पतझड़ आ गया। अरतैक का जख्म लगभग ठीक होकर उसका स्वास्थ्य भी बहुत कुछ सुधर गया था। अपने गाव म ही उसने सुना कि लाल सना चार बार काहाक स्टेशन को लेने का प्रयत्न कर चुकी है परन्तु सफल नहीं हुई। उसे भरासा हुआ, चार बार असफल हो कर भी यदि लाल सेना डटी हुई है तो उसमे सफलता पालेने की शक्ति जरूर होगी।

अक्टूबर का महीना बीत रहा था। एक दिन एक आदमी अरतैक के लिय अज़ीज़खा का जरूरी सन्देश लेकर आया—"तुरत अलगान पहुचो। अंग्रेजी सना लाल सना पर भारी हमला करने वाली है और अंग्रेजों ने हमें लाल सना क पीछे भागने के रास्ते मे 'दुशाक' स्टेशन के पास रेलवे लाइन ताडने —"का काम सौंपा है।"

अरतैक का मन नहीं मान रहा था परन्तु फिर भी वह अज़ीज़खा के बुलाव पर चला। अंग्रेजों से मिलकर तुर्कमान जनता की सोवियत के विरुद्ध अजीज की विश्वासघात की नीति स अरतैक का मन उसके प्रति घृणा और क्रोध से भर रहा था। अरतैक का विशेष क्रोध इसलिये था कि अज़ीज़ विदेशी साम्राज्यवादी शक्ति के हाथों बिक रहा था। उसने यह भी सुना कि ब्रिटिश जनरल मालिन्सन के हुक्म से काहका के अंग्रेज अफसर प्राय नित्य ही हवाई जहाज पर चढ़कर अलगान पहुचा करते हैं।

अरतैक कुछ विलम्ब से पहुँचा। अजीजखा का रिसाला तकीर स्टेशन पर पहुँच चुका था। परन्तु स्टेशन पर मौजूद लाल सेना की फौलादी गाड़ी से मशीन गन की मार खा कर उसे पीछे लौट आना पड़ा। उसी समय अरतैक ने सुना कि दुशाक मे लाल सेना पर हमला कर अंग्रेजी फौज हार गई है और टुकडियों में तितर बितर हो कर कहाक की ओर लौट रही है। इस समाचार से अरतैक को बहुत सतोष हुआ।

यह स्थिति देख अज़ीज़ ने अपनी सेना को तेजेन की ओर बढ जाने

का हुक्म दिया। इस समय लाल सेना दुशाक म लड रहा था। तेजेन की रक्षा करने वाला कोइ न था। अरतक समझ गया अजीज को यह सलाह अंग्रेज अफसरों ने दी है ताकि लाल सेना का ध्यान तेजेन की ओर हट जाय। तेजेन पर इस हमले म अजीज क साथ अलीयारखा भी साझीदार था। अलीयारखा जार की कज्जाक फौज का पुराना अफसर था। इस समय वह अंग्रेजों की सहायता से अपनी छोटी सी स्वतंत्र सल्तनत बना लेने की फिक्र में अंग्रेजों के इशारे पर नाच रहा था।

अरतैक ने तेजेन का इस लूट म भाग न लेने का निश्चय कर लिया। उसका जख्म अभी पूरे तौर से ठीक नहीं हो पाया था इसलिये वह दर्द का कारण बता कर लेटा रहा और दिन चढे बहुत देर म अलगान से तेजेन की ओर चला।

अजीज़खा और अलीयारखा के रिसाले रात रहते ही तेजेन पहुँच गये थे। उनका सामना करने वाला कोई था नहीं। बाजारों और गलियों में जा उन्होने दुकानों और मकानों को लूटना शुरू किया, स्त्रियों और लडकियों को घरों से खींच गलियों और बाजारों म उनके साथ बलात्कार के प्रदर्शन किये। जो मर्द बूढे जवान या बच्चे या औरतें सामने आये, सबको कत्ल कर दिया। कटे हुये मुंड या बिना मुंड के शरीर जगह जगह खम्भों और वृक्षों पर लटका दिये गये। शहर के दफ्तरों, बडी बडी दुकानों और रूई के कारखाने म भी आग लगा दी गई।

केलखा की कम्पनी के सवार नदी किनारे एक ईसाई स्कूल मे जा घुसे। स्कूल में एक तुर्कमान ईसाई पादरी था। इन लोगों को देख कर भी वह भागा नहीं, शान्त खडा रहा। केलखा के सिपाहियों ने उसे पकड कर उसके कपडे फाड दिये। पादरी इस व्यवहार से कुछ मूढसा हो गया। साहस कर उसने मुह खोला—

"भाइयो, क्या करते हो? मैं भी तो तुर्कमान हूँ।"

"तुम गद्दार हो! गद्दारी की सजा कत्ल है"—उसे उत्तर मिला

"मैं गद्दार नहीं हू और न किसी का दुश्मन हूँ।"

"हम दुश्मन पर रहम कर सकते हैं परन्तु गद्दार को मुआफ नहीं करेंगे!"

"भाइयो मुझे खान अजीजखा के सामने ले चलो! अगर मैं कसूरवार हूँ तो वह मुझे सजा देगा।"

"इस झमेले की जरूरत क्या ?"—उसे रुखा उत्तर मिला ।

एक सिपाही ने अपनी राइफल उठा उसकी छाती पर निशाना साधा । इतने मे केलखा आ पहुचा । यह दृश्य देख वह चिल्ला उठा—"अरे बेवकूफो क्या कर रहे हो ?" परन्तु सिपाही ने गोली दाग ही दी ।

अरतैक दोपहर के समय तेजेन पहुचा । सैकडों जले हुये मकान अभी सुलग रहे थे । आकाश धुयें से भरा था और चिरांध आ रही थी । बाजारों और गलियों में खून फैला हुआ था । जगह जगह अग भग मुर्दे पडे थे और वृक्षों से लाशें झूल रही थीं । सिपाही छीनी हुई गायों को रस्सियों से थामे दो दो चार-चार शहरी नगी औरतों के साथ हांके लिये जा रहे थे । आलयारखा के सिपाहियों को शराब का एक गोदाम मिल गया था वे मन मानी पीकर बौखले हो रहे थे । अज़ज़ीखा के सिपाही अब भी लूट मे लगे हुये थे । जिस घर मे जो कुछ मिल जाता, जेवर, कपडा, कालीन, रजाई तकिया सब घसीटे,ला रहे थे ।

अज़ीज़ का नोकर पेलाग रूसी ढग का कोट पहने फिर रहा था । अरतैक का ध्यान उस ओर गया । वह कोट उसे पहचाना सा जान पड़ा । "यह तो चनाशोव का कोट है ! क्या इन जालिमों ने उसे भी मार डाला ?"—क्रोध से अरतैक का सिर चकरा गया । उसका हाथ अपने रिवाल्वर की मूठ पर जा पहुचा । वह पेलाग को गोली मार देने को ही था परन्तु उसने अपने आप को सम्भाला । पेलाग के कोट पर हाथ रख उसने पूछा—"बहुत बढिया कपडा है । कहा से लिया ?"

"पिछली रात की लूट मे" पेलाग ने उत्तर दिया । "बडे जोरदार आदमी हो यार ! कोट वाले को मार डाला ?—ऐसा बढिया कोट यों भला क्यों देने लगा ?"

"पचासों मार डाले । लेकिन यह कोट ऐसे ही मिल गया । कोट वाला घर मे था ही नहीं ।"

"तो किसी दूसरे ने उसे खत्म किया होगा ?"

"नहीं घर में बस एक रूसी औरत थी । उस साली ने कोट पकड लिया और मुझसे लडने लगी । मकान स्टेशन के पास ही था । वहा कई लाल सिपाही थे । वे लोग खटका सुनते ही गोली चला दे रहे थे । मैं झटके से कोट छीन कर भाग आया ।"

अरतैक को सतोष हुआ कि चर्नीशोव और उसकी स्त्री अभी जीवित हैं लेकिन बाकी शहर तो ध्वंस हो चुका था। उस ओर देख उसका मन भर भर आता। वह पीछे रह जाने के लिये पछताने लगा। समय पर आ जाता तो शायद चर्नीशोव, मावेद या अशीर में से कोई मिल जाता और वह उनके साथ मिल कर शहर को बचाने के लिये कुछ प्रयत्न कर सकता! अब जाने वे लोग कहा होंगे! लाल सेना में वह कैसे पहुंचे?

लाल सेना ने दुशाक में सफ़ेद सेना और ब्रिटिश फौज को हरा कर भगा दिया परन्तु इनका पीछा न कर सकी। इसके कई कारण थे। दूसरे मोर्चों पर अभी तक सफ़ेद सेना का जोर बना हुआ था, दुशाक में लाल सेना के रसद गोदाम और लड़ाई के समान में आग लग कर बहुत नुकसान हो गया था और यह भी भय था कि सफ़ेद सेना का पीछा करने के लिये आगे बढ़ जाने पर पिछले मोर्चों से सम्बंध न टूट जाये। तेजेन पर अज़ीज़खां और अलीयारखां के हमले से एक बात स्पष्ट हो गई कि ब्रिटिश सेना सहायता पा कर लाल सेना को परेशान करने वाले बड़े-बड़े डकैत दल, चाहे अपने राज स्थापित करने में सफल न हो सकें परन्तु यह लोग जनता को परेशान और निराश कर रहे हैं और लाल सेना को काफ़ी नुकसान भी पहुंचा रहे हैं। इसलिये उचित यही था कि एक स्टेशन और पीछे, राविना में लौट कर आगे बढ़ने से पहले पीछे से आने वाले भय का प्रबंध कर लिया जाय!

दुशाक में लाल सेना से मार खाकर ब्रिटिश फौजों ने फिर आगे बढ़ने और लाल सेना से टक्कर लेने का प्रयत्न न किया। सोवियत के हाथ से जो शहर छीने गये थे उन पर प्रकट में सफ़ेद सेना का कब्ज़ा रखा गया। अज़ीज़खा भी इस अव्यवस्थित परिस्थिति में फायदा उठा रहा था। तेजेन में जो कुछ करतूत उसने की थी वही उसने मारी में भी की। उसके विचार में अपनी सत्ता बढ़ाने और जमाने का यही उपाय था।

अजीज़ अपने रिसाले को ले मारी पहुंचा। इस नये कस्बे में आते ही वह बस्ती पर अपना आतंक बैठाने का नया उपाय सोचने लगा। मारी में तेजेन की लाल सेना का एक अफ़सर अतादयाली उसके हाथ पड़ गया था। अज़ीज़ को याद था कि अतादयाली ने तेजेन में उसकी सेना पर छापा मार कर उसके हथियार छीनने में भाग लिया था। अज़ीज़खां ने अतादयाली की मुश्कें बंधवा दीं। एक लम्बी रस्सी दयाली के कंधों में

और दूसरी पांव में बांध कर दो घोड़ों की जीनों से बांध दिया गया। घोड़ों को चाबुक मार कर बाज़ारों में खूब दौड़ाया गया। दयाली का शरीर शहतीर की तरह बंधा ज़मीन पर रगड़ता, उछलता छिन्न भिन्न हो गया। इसके बाद अज़ीज़ ने मारी के कस्बे में ढोंडी पिटवादी:—

"होशियार, खबरदार! फिर न कहना हमने सुना नहीं, जो कोई आदमी किसी भी तरह बोलशेविकों को सहायता देगा, उसे अतादयाली की तरह सज़ा दी जायगी!"

अगले दिन उसने दो और आदमियों को पकड़ मगवाया। उन्हें भी यही सज़ा दी गई। मारी की बस्ती अज़ीज़ के आतंक से कांपने लगी।

अरतैक अपने सौ सवारों को लिये अज़ीज़ की सेना के पीछे पीछे आ रहा था। मारी के काण्ड का समाचार उसे रास्ते में ही मिल गया। क्रोध और घृणा से व्याकुल हो उसने सोचा— 'जनता के इस खूंख्वार जल्लाद के साथ मेरा निबाह कैसे हो सकता है? अब चाहे जो हो, मुझे इसके विरुद्ध आवाज़ उठानी ही पड़ेगी।' इन्हीं विचारों में वह अज़ीज़ की छावनी की ओर चला जा रहा था।

अरतैक अभी अलगान की छावनी के भीतर जा नहीं पाया था कि बाहर ही उसकी मुलाकत अज़ीज़खां से हो गई। अज़ीज़, केलखां, किज़िलखां और मदीरईशान के साथ घोड़े पर सवार था। अरतैक अपने सवारों के साथ उसकी ओर बढ़ता चला गया। दस कदम का अन्तर बीच में रह जाने पर उसने अपने सवारों को रुकने का हुक्म दिया और सलाम दुआ किये बिना, रूखे स्वर में अज़ीज़ को सम्बोधन किया—

"अज़ीज़ खां, कभी तुमने सोचा है कि तुम क्या कर रहे हो?"

अज़ीज़ ने एक ही नज़र में समझ लिया कि अरतैक इस समय क्रोध के कारण बिगड़ा हुआ है। उसने भी रूखा उत्तर दिया—"मुझे तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं।"

"तुम्हारे यह जुल्म मैं नहीं सह सकता। अतादयाली के कत्ल के बाद मेरा सब्र खतम हो गया है।"

"तुम हो कौन मुझसे जवाब तलब करने वाले?"

"मैं कौन हूँ, यह तुम्हें मालूम हो जायगा!"

"अतादयाली क्या तुम्हारा भाई लगता था ? जान पड़ता है तुम बोलशेविकों से रिश्वत खाने लगे हो ?"

"यह भी तुम्हें जल्दी ही मालूम हो जायगा।"

"हूँ"—अज़ीज़ ने आँखे नीची कर क्रोध में होंठ दबा लिये। उसका चेहरा सुर्ख हो गया। पल भर सोच उसने अरतैक की ओर देख गहरी सांस लेकर कहा—"जब गधा बहुत मुटा जाता है तो मालिक पर ही दुलत्ती झाड़ने लगता है।" उत्तेजना से रकाबों पर तन कर वह जीन से उठ गया। हाथ का हटर घुमा कर उसने अरतैक को हुक्म दिया—"मैं तुम्हें बर्खास्त करता हूँ। मेरे हथियार लौटा दो।"

"मैं तुम्हारी नौकरी बहुत दिन पहले ही छोड़ चुका हूँ। तुम अंग्रेज़ों के पालतू डाकू हो और तुर्कमानी लोगों को खाये जा रहे हो।"

"किज़िल खां! केलखां!" अज़ीज़ ने क्रोध में पुकारा।

केलखां चुप रह गया। किज़िल खां अपना घोड़ा अरतैक की ओर बढ़ा कर बोला—"अरतैक, लाओ भाई हथियार मुझे दे दो।"

अरतैक ने अपना रिवाल्वर किज़िल खां की ओर साध कर उत्तर दिया—"किज़िल खां, तुम बीच में न पड़ो। अगर आगे बढ़ोगे तो मैं गोली मार दूंगा।"

किज़िल खां रुक गया। मदारईशान का चेहरा भी फक हो गया था परन्तु बीच बचाव करना अपना कर्तव्य समझ वह समझाने के ढंग से बोला—

"भैया अरतैक, क्या कर रहे हो ? कुछ खयाल करो !"

अज़ीज़ खां को कमर में बंधे रिवाल्वर की ओर हाथ बढ़ाते देख अरतैक ने चेतवानी दी—"अज़ीज़ खां, जान प्यारी है तो हाथ उधर मत ले जाओ"

अरतैक का एक सवार पीछे से बोल उठा—"अरतैक खां, क्या बात बढ़ा रहे हो ? गोली मारो।"

अज़ीज़ खां ने अरतैक के सौ सवारों की ओर नज़र डाली। अब तक वह उन्हें भूला ही हुआ था। अपने आपको वश में कर बोला—"अरतैक खां, मैं जानता हूँ तुम बहादुर आदमी हो। तुम ने दुश्मनों को नीचा दिखाया है, यह क्या आपस में झगड़ने का समय है ? इन बातों को जाने दो। हमार

तुम्हारे सम्बध पुराने है. ।"

अरतैक मन ही मन सोच रहा था—"अजीज़ और मदीर को अभी गोली मार कर लाल सेना की ओर भाग जाऊ" परन्तु ख्याल आया, मेरे साथ सौ सवार भी तो हैं। इन्हें भी तो साथ ले जाना है। लाल सेना का मोर्चा बहुत दूर है। अगर यहाँ घिर गये तो इन सवारों का क्या होगा ? वह सोचता रहा और फिर उसने अज़ीज़ खां को उत्तर दिया—"हमारी तुम्हारी नहीं निभ सकती। अब मैं तुम्हारे यहाँ नहीं रहूँगा। मैं जा रहा हूँ। लेकिन एक बात कहे देता हूँ, अगर तुम मुझे रोकोगे, या पीछा करोगे तो तुम भी बच नहीं सकोगे।"

वह अपने सवारों की ओर घूम गया—"भाइयो, जो मुझे मानता हो, मेरे साथ आ जाये !"

सौ सवारों का पूरा दस्ता अरतैक की ओर बढ आया। अरतैक पीछे लौट पड़ा और उसके सवार उसे घेर कर उसके साथ मारी की ओर चल दिये।

अज़ीज ने आपे से बाहर हो अपना रिवाल्वर निकाल लिया। उसका निशाना बहुत पक्का था। वह उड़ते हुये कौए को गिरा देता था। परन्तु केलखां ने उसे रोका—"क्या करते हो ? देखते नहीं सौ सवार हैं !" तुम्हारे जिस्म की धूल भी नहीं मिलेगी।"

अज़ीज़ दांत पीसता हुआ अपनी छावनी की ओर लौट चला। वह सोच रहा था—मेरी शक्ति क्या धूल बढ़ रही है ?...यह आदमी मेरे मुँह पर थूक गया। सौ घुड़ सवार हाथ से गये ' दूसरों पर ही क्या भरोसा है ? इन से क्या लड़ूं ?

* * *

अज़ीज़ से विदा हो अरतैक अपने सवारों के साथ 'सकारचग' से पूर्व की ओर चला जा रहा था। 'कुर्बानकला' के पास उसे ब्रिटिश फौज का एक हिन्दूस्तानी रिसाला मिला। इन लोगों ने उसे नियाज़बेग का रिसाला समझ कर कुछ नहीं कहा।

आगे बढ़ 'अनेकोवों' में उसे नियाज़बेग का ही रिसाला मिल गया। यह लोग लाल सेना की खोज खबर लगाते फिर रहे थे। अरतैक ने उन्हें बताया कि वह भी अज़ीज़ की सेना की ओर से लाल सेना की स्थिति

समझने के लिये इधर चक्कर लगा रहा है। यहां उसे पता चल गया कि सफेद सेना और लाल सेना में अनेकोवो से राविना तक मोर्चा लगा हुआ है। लाल सेना राविना में छावनी डाले पड़ी है। उसने इन लोगों से राविना की राह भी पूछ ली।

अरतैक ने निश्चय किया लाल सेना की ओर रात के समय जाना ठीक न होगा। उसने अपने सवारों को रेलवे लाइन से काफी दूर रेत के मैदानों में उगी ऊँची घास में विश्राम के लिये टिका दिया। पौ फटते ही उसने एक सफ़ेद झण्डा ऊँचा किया और सीधा राविना की ओर बढ चला। इससे पहले काहाक में ब्रिटिश हिन्दुस्तानी फौज सफेद झण्डा दिखा कर लाल सेना को धोखा दे चुकी थी इसलिये उन्होंने अरतैक को नजदीक नहीं आने दिया। लाल सेना की फौलादी ट्रेन से गोली चलने लगी। गोली की बौछार में अरतैक के रिसाले के घोड़े तितर बितर होने लगे।

अरतैक पीछे हट गया। उसने दक्खिन की ओर से राविना की ओर जाने का निश्चय किया और सफ़ेद झण्डा उठाकर उस ओर से बढा परन्तु इस ओर से भी उस पर गोलियों की बौछार पड़ने लगी। राविना पहुच कर लाल सेना मे मिलने का कोई उपाय न देख वह निराश हो पदीन के रेगिस्तान की ओर चल दिया।

इस समय अलीयार खाँ भी अपना रिसाला लेकर पदीन में आया हुआ था। बात यह थी कि अज़ीज़ और अलीयार खाँ ने तेजेन में जो अत्याचार किये, उनके कारण अश्काबाद तक का इलाका काँप उठा। 'मरता क्या न करता' कि मिसाल लोग मरने मारने के लिये उठ खड़े हुये। जनता को अपने विरुद्ध भड़कता देख ब्रिटिश अफ़सरों और सफेद सेना को इस मामले में जाँच पड़ताल करनी पड़ी। अज़ीज़ खाँ और अलीयार खाँ से जवाब तलब किया। अज़ीज़ ने सब उत्तरदायित्व अलीयार पर डाल दिया। अलीयार खाँ को जाँच पड़ताल के लिए अश्काबाद की फौजी अदालत में पेश होने के लिये बुलाया गया। वह इस झंझट में न पड़ना चाहता था। वह तेजेन छोड़ पदीन के मैदानों में आ गया कि आसानी से लूट मार कर अपना निर्वाह कर लेगा।

इस इलाके में अलीयार खाँ जब चाहता सिरयाक के गड़रियों की भेड़ें पकड़वा लेता उनके दूसरे ढोरों को भी वह अपनी ही सम्पत्ति समझता था।

अलीयार खाँ गाँव-गाँव घूम रहा था। उजड़े और बरबाद गाँवों को देख कर उसका रास्ता मालूम हो जाता था। वह जहाँ से गुजरता क़त्ल और बलात्कार के चिन्ह छोड़ जाता। तेजेन से वह अपने लिये एक खूबसूरत औरत पकड़वा लाया था। कुछ दिन बाद उसे सन्देह हुआ कि वह औरत उसके किसी सिपाही से मिल गई है। इस औरत को उसने अपने प्रेमी के साथ गढ़ा खुदवा कर ज़िन्दा ही गड़वा दिया। अलीयार की इस क्रूरता पर उसके सिपाहियों में सनसनी फैल गई। एक सरदार ने इस पर आपत्ति की। अलीयार ने इस सरदार को रात में क़त्ल करवा दिया। इसके बाद किसी को कुछ कहने का साहस न हुआ।

अरतैक खूब समझ चुका था कि सफ़ेद सेना, रूस के मामले में दखल देने आई अंग्रेजी फौज अज़ीज़ खाँ और अलीयार खाँ में कोई अन्तर न था। अलीयार खाँ इन सबसे मूर्ख और बेहूदा था। अरतैक ने सोचा पहले अलीयार खाँ से ही समझा जाय। अरतैक का रिसाला आसपास की बस्तियों में लूट मार न करता था इसलिये इलाके गाँवों के लोगों और चरवाहों को उससे सहानुभूति थी, वे उसे रसद पहुँचा देते और आवश्यकता होने पर राह भी बताते।

अरतैक ने अपने एक सिपाही के हाथ अलीयार खाँ के पास सन्देश भेजा—"या तो तुम आकर मुझसे मिलो या इस इलाके से बाहर चले जाओ!"

अलीयार खाँ ने इस सिपाही की मूँछे मुँडवा दीं और उसके घोड़े की दुम कटवा दी और बोला—"चले जाओ वापिस और अरतैक से कह दो, यह है मेरा जवाब!"

इस अपमान से अरतैक को बहुत क्रोध आया। दूसरे दिन पौ फटने से पहले ही उसने अपना रिसाला ले अलीयार खाँ का खेमा जा घेरा और नंगी तलवारों से हमला बोल दिया। अचानक हमला हो जाने के कारण अलीयार खाँ के सिपाहियों के सिर और शरीर के दूसरे अंग कट कट कर ठंडी रेत पर गिरने लगे। जिस सरदार को अलीयार खाँ ने क़त्ल करवा दिया था, उसके साथी भी समय देख अलीयार खाँ के ही आदमियों पर टूट पड़े। थोड़ी ही देर में लड़ाई समाप्त हो गई। मैदान खून से तर हो कटे हुए अंगों से छितरा गया। बिना सवारों के घोड़े इधर उधर भागते

फिर रहे थे। अलीयार खाँ लगभग सौ हरमी सिपाही लेकर भाग गया अरतैक के चार आदमी खेत रहे परन्तु उसे चालीस सवार और मिल गये और बहुत से बढ़िया घोड़े भी मिले। इन्हें उसने अपने सवारों में बाँट दिया।

अरतैक फिर लाल सेना से मिलने का प्रयत्न करना चाहता था परन्तु बीच में दूसरी बाधा आ पड़ी। अलीयार खाँ के अत्याचारों से पीड़ित हो इलाके के लोग रोते पीटते ब्रिटिश फौज की छावनी में फरियाद करने पहुंचे थे। इस इलाके की सहानुभूति अपनी ओर करने के लिये अंग्रेज़ों ने अपने हिन्दुस्तानी रिसाले के अफसरों की एक कम्पनी अलीयार खाँ को पकड़लाने के लिये भेज दी थी। लेकिन अब अलीयार खाँ की जगह आ बैठा था अरतैक! इलाके के चरवाहों और गड़रियों ने आकर प्रसन्नता से अरतैक को खबर दी की हमारी-तुम्हारी सहायता के लिये और अलीयार खाँ से बदला लेने के लिये अंग्रेज़ी फौज आ रही है। अरतैक जानता था कि यह लोग उसे कैसी सहायता देंगे।

हिन्दुस्तानी रिसाला रेतीले मैदान की राह आने वाला था। अरतैक ने इस राह में अपने कुछ सवारों को एक मील तक रास्ते के दोनों ओर की झाड़ियों में छिपा दिया और अपने शेष सवारों को ले एक नीची जगह में जा दुबका। रिसाला आया तो छिपे हुए सवारों ने उसे चुपचाप आगे निकल जाने दिया। जब रिसाला स्वयं अरतैक के बिलकुल समीप पहुँच गया तो सहसा एक सौ राइफलों की गोलियाँ की बौछार इन पर आ पड़ीं और सौ सवारों का दल नंगी तलवारें ले इन पर टूट पड़ा। अफसर लोग बौखला गये। सहसा पीछे लौटने में एक दूसरे से टकरा कर घोड़ों से गिर पड़े। पीछे लौटे तो अरतैक के छिपे हुए सवार इन पर टूट पड़े। आधे से अधिक हिन्दुस्तानी अफसर मारे गये, कुछ पकड़े गये। अरतैक को कई और घोड़े और बहुत सी, कई कई गोली भरने वाली बढ़िया राइफलें मिल गईं।

अरतैक ने लाल सेना से सम्बध जोड़ने की फिर कोशिश की। इस बार उसने अपने रिसाले को राविना की ओर कुछ दूर ले जाकर दक्खिन पच्छिम के जगल में छिपा दिया और दो घुड़सवारों को सफ़ेद झंडा और अपना सदेश देकर लाल सेना की ओर भेजा। सवार दूर जा कर नज़र से ओझल हो गये। दूसरी ओर से गोली चलने की कोई आहट नहीं आई। अरतैक इन सवारों के हाथ उत्तर आने की प्रतीक्षा उत्सुकता से कर रहा था। सवारों को गये तीन घंटे बीत गये परन्तु कोई उत्तर न आया। उसे

चिन्ता होने लगी—क्या उन लोगों को मेरा विश्वास नहीं ? शायद सवारों को गिरफ्तार कर लाल सेना हमारे चारों ओर घेरा डाल रही है। यदि हमें घेर कर उन लोगों ने गोली चलाई तो मैं क्या करूंगा ? क्या गोली का जवाब गोली से दूं ? क्या करूँ ? जवाब न मिले तो, मैं क्या करूं ?··· ' यहाँ कब तक प्रतीक्षा करूं ? ' पदीन लौट जाऊँ या तेजेन चला जाऊं ? नहीं अब लौट नहीं सकता। मुझे हर हालत में लाल सेना में जाना ही है। मैं चर्नीशोव और अशीर के सामने जाऊंगा यदि उन लोगों को मेरा विश्वास नहीं तो वे मुझे गोली मार सकते हैं ! मैं अब लौटूंगा नहीं ·· । एक घण्टे के करीब और बीत गया। कोई उत्तर नहीं आया। उसने सोचा एक बार फिर सन्देश भेजूं ? उसने दो और सवारों को तैयार होने के लिये हुक्म दिया। सवारों ने रकाबों में पांव रखे ही थे कि सामने पाँच सवार राबिना की ओर से आते दिखाई दिये। अरतैक ने सान्त्वना का दीर्घ श्वास लिया।

अरतैक राबिना से अपनी ओर आते इन सवारों को लगातार दूरबीन से देख कर पहचानने का यत्न कर रहा था। वे अभी बहुत दूर थे। कभी दृष्टि से ओझल हो जाते और फिर पहले से कुछ स्पष्ट और नज़दीक दिखाई देने लगते। बीच की भूमि ऊंची नीची होने के कारण गहराई में चले जाने पर वे दिखाई न पड़ते थे। कुछ देर बाद अरतैक ने अपने दोनों सवारों को पहचान लिया। बाकी तीन को वह पहचान न सका। उसकी आँखें उत्सुकता के कारण थकी जा रही थीं। सवारों के कुछ और समीप आने पर वे कुछ पहचाने हुये जान पड़े। इनमें से दो तो ' ···

"अशीर ! तिशोंको !"—अरतैक चिल्ला उठा और उन लोगों की ओर दौड़ पड़ा।

व्यग्र उत्सुकता में अरतैक की आँखें धोखा खा गई थीं। इन सवारों में न अशीर था और न तिशोंको, और न कोई उसका अपना आदमी। यह लाल सेना के पाँच सवार थे जो अपने मोर्चे के आस पास जांच पड़ताल के लिये गश्त कर रहे थे। लेकिन अशीर और तिशोंको का नाम परिचय शब्द (पासवर्ड) का काम कर गये।

दो घंटे बाद अरतैक लाल सेना के मुख्य दफ्तर में बैठा था। सावेद, अशीर और तिशोंको उसे घेरे हुये थे। तिशोंको इस कम्पनी का कमान

अफ़सर था। वह कीचड़ में लथपथ कहीं से लौटा ही था और मुह हाथ धोता हुआ अरतैक से बातचीत कर रहा था—"तुम्हें चार्दीजोव जा कर हमारे कमाण्डर-इन-चीफ से मिलना होगा। वही तुम्हें किसी रेजीमेंट में नियुक्त करेगा।"

"कमाण्डर-इन-चीफ़! मैं क्या जानू कौन है कमाण्डर इन-चीफ़! और वह मुझे क्या जाने!"

"घबराओ नहीं। तुम्हारे साथ आदमी जायगे और फिर कमाण्डर-इन-चीफ़ को भी तुम शायद पहचान लो, उसका नाम है—चर्नीशोव!... क्यों पहचान लोगे!"

अरतैक का चेहरा खिल उठा।

* * *

चर्नीशोव और अरतैक आमू नदी के किनारे टहलते हुये बातचीत कर रहे थे। उन्होंने आपस में युद्ध की स्थिति, ब्रिटिश सेना की दखल देने की नीति सफ़ेद सेना की शक्ति और लाल सेना के पीछे के मोर्चे, सभी विषयों पर बात-चीत की। अरतैक आमू नदी के विस्तृत प्रवाह की ओर विस्मय से देख रहा था। अब तक उसने इस नदी की चर्चा ही सुनी थी, देखने का यह पहला ही अवसर था। दृष्टि की पहुच तक मटियाले जल की लहरें बल खाती चली जा रही थीं। दोनों किनारों पर सधा हुआ, बहुत लंबा फौलादी पुल तना हुआ था। उसी समय परले पार से एक भारी मालगाड़ी प्रबल वेग से दौड़ती पुल के भीतर घुस गई। गाड़ी के बोझ और चाल का कुछ भी प्रभाव पुल पर न जान पड़ता था। पुल के नीचे चौड़े चौड़े दृढ़ खम्भे स्वय छोटे मोटे मकानों की तरह थे। उसे याद आ रहे थे अपने गांव के आस पास की नहरों पर बने हुये बांसों और रस्सी के छोटे-छोटे पुल जो एक आदमी या एक गधे के गुज़रने के बोझ से ही लचक लचक जाते थे। वह सोच रहा था—धन्य है तू, इस पुल को बनाने वाले।

तेजेन्का नदी की ही भाति आमू से भी कई नहरें निकली हुई थीं परन्तु यह नहरें स्वय तेजेन्का नदी से भी बड़ी और चौड़ी थीं। इन नहरों में पाल उड़ाती नावें आ-जा रही थीं। आमू में बड़े-बड़े स्टीमर सैंकड़ो आदमी और हज़ारों मन बोझ उठाये दौड़ रहे थे। किनारों पर मछली मार डोंगे लंगर डाले खड़े थे। इन पर से बड़ी बड़ी मछलियां उतारी जा रही थीं। मटिया।५

जल में हवा के थपेड़ों से बौखलाई लहरें एक दूसरे पर चढ़ जाना चाहती थीं और उनकी भिड़न्त से सफ़ेद फेन उठ रहा था। लहरें आतीं और अपना फ़ेन किनारों पर छोड़ जातीं। दूसरी लहर आकर इस फेन को समेट ले जाती। अरतैक जल के इस विस्तार को देख विमूढ़सा हो बोल उठा—

"भैया चर्नीशोव, पानी है यहां! इससे तो पृथ्वी और आकाश सभी भर जाय और यह खत्म न हो! कहां से आता है इतना पानी और कहा समाता होगा?"

"क्यों?"—चर्नीशोव ने उत्तर दिया—"यह कोई छोटी मोटी नदी तो है नहीं। अफ़ग़ानिस्तान क्या, हिन्दुस्तान की सीमा तक का चक्कर लगाती है। इसके जल से कर्की का इलाका, चार्दीजोव का इलाका पलता है फिर यह दैनू दानिता, खीवा तौशोज़ की भूमियों को सींचती है। तब कहीं जाकर अराल के समुद्र में गिर जाती है।"

"समुद्र में दिन और रात बरसों से इतना पानी गिर रहा है और उसका पेट नहीं भरा। तभी लोग कहते हैं, समुद्र का पेट कभी नहीं भरता।"

"नहीं भरता तभी ठीक है यदि समुद्र अघा कर यह पानी लौटाना शुरू कर दे तो पृथ्वी पर खड़े होने की जगह न रहे।"

अरतैक चुप था परन्तु उसकी कल्पना में तेजेन के इलाके के अपने गांवों की सूखी धरती घूम रही थी जो जल बिना बरसों दरारों से फटा करती है। वहां कोपेतदाग की छोटी पहाड़ी से निकलने वाले सोते के जल की नालियों पर चुल्लू चुल्लू भर जल के लिये झगड़े होते रहते हैं और हर साल इन झगड़ों में कई खून हो जाते हैं। पदीन के रेतीले मैदानों में जल के बिना सैंकड़ो पशु प्यासे मर जाते हैं! पानी के बिना कितने काफ़िले अपनी लम्बी यात्राओं में प्यासे मर जाते हैं! और यहां आमू नदी का विस्तृत जल पर्याप्त स्थान न पाने के कारण क्रोध में गर्ज रहा है, लहरें आपस में भिड़ रही हैं और जाकर समुद्र में स्थान ढूँढ़ रही हैं! यदि समुद्र में गिर कर व्यर्थ होने वाला आमू का यह जल, अखाल और तेजेन की ओर बहे तो क्या हानि है! यदि ऐसा हो सके तो तेजेन की उपजाऊ धरती धूप में सूख कर जल के बिना चटकेगी नहीं। हमारी धरती अघा कर फूलों से मुस्करा उठेगी। हमारे किसान भूख और प्यास से न तड़पेंगे!"

अरतैक ने सुना था कि आमू नदी की बड़ी महिमा है। उसके जल से

अनेक रोगों का नाश हो जाता है। उसमें अपार शक्ति है। शायद इस विश्वास से, या किसी दूसरे भाव से आमू को सम्बोधन कर वह बोल उठी—"हे सुन्दर और समृद्ध नदी, तू इतनी कठोर और निर्दय क्यों है ? हमारे प्यासे सूखे गांवों की ओर भी एक नज़र डाल !"

यह सुनकर चर्नोशोव मुस्कारा दिया अरतैक को यह भला न लगा—'तुम्हें हसी क्यो आ रही है ?"—उसने पूछा।

"क्या नदी के कान हैं जो तुम्हारी बात सुनेगी।"

"क्यों नहीं, यह लहरें इसके कान नहीं तो क्या हैं ! यह गरज रही है तो सुन नहीं सकेगी ?"

"मान लिया। परन्तु यदि भूमि को जोते बोये बिना उससे अन्न मांगो तो मिलेगा ?"

अब अरतैक चुप रह गया। चर्नोशोव बोला—"आमू का जल तुर्कमानिस्तान पहुचाने के लिये हमे बंद बांधने होंगे और नहरें खोदनी होंगी।"

"यह कौन कर पायेगा ! किस में है इतना सामर्थ्य ?"

"सोवियत में जनता की सम्मिलित शक्ति में है यह सामर्थ्य। और सोवियत यह काम करेगी।"

"तुम्हारी यह बात भी उतनी ही भोलेपन की है जितनी कि मेरी थी।"

"खेतों से फसल पाने के लिये तुम्हें मेहनत करनी पड़ती है या नहीं ?"

"खेत में पानी आये तभी तो श्रम करके फसल पाई जा सकती है।"

"ठीक है, जैसे फसल के लिये श्रम की आवश्यकता है वैसेही खेतों में पानी पहुचाने के लिये भी श्रम की आवश्यकता है। यह काम अकेले आदमी के बस का नहीं परन्तु यदि हम लोग इसके लिये सगठित रूप से श्रम करें तो देश के कोने कोने में जल पहुच सकता है।"

"अगर मेरे श्रम से तेजेन में पानी पहुच सके, मैं उम्र भर नहर खोदने के लिये तैयार हूं।"

"तुम्हारी तरह जी जान से परीश्रम करने के लिये तैयार करोड़ों आदमी हमारे देश में हैं। उनके श्रम से हम सभी कुछ कर सकते हैं। यदि यह विदेशी यहां आकर दखल न दें और हमारे देश की जनता का श्रम चूसने

वाले, हमारे देश के जमींदार और पूंजीपति हमारी जनता को अपनी भलाई के लिये संगठित होकर काम करने दें तो हम सब कुछ कर सकते हैं। परन्तु जो लोग हमारी जनता का श्रम हथिया कर शासन का अधिकार भोगते आये हैं और गुलछर्रे उड़ाते आये हैं, हमारी राह में रोड़े अटका रहे हैं। पहले उनके हाथ से मुक्ति पाना आवश्यक है।"

अरतैक चुपचाप आमू के जल की ओर दृष्टि लगाये खड़ा रह गया। चर्नीशोव ने उसे पुकारा—"अब लौटोगे नहीं ?"

अरतैक आमू के जल की ओरसे अपनी प्यासी आंखें न हटा पा रहा था। जैसे भूखे बच्चों के लिये मिठाई की ओर से दृष्टि हटाना कठिन हो जाता है। जब लौटना ही पड़ा तो, भविष्य में उस जल को पाने की आशा से उसने उस जल को स्पर्श कर उससे अपना मुंह धो अपने को शांत करने का प्रयत्न किया।

२८

कई दिन, सप्ताह और मास बीत गये। कुशाक में लाल सेना से मार खाने के बाद ब्रिटिश सेना ने फिर आगे बढ़ने का साहस न किया। सन १९१९ में मार्च महीने के अन्त में एक गाल यह ब्रिटिश सेना अपनी जगह डेनिकिन की सेना को छोड़ चुपचाप खिसक गई। यह लोग अपनी याद के रूप में पीछे अपनी केवल एक पल्टन क्रास्नोवोद्स्क मे छोड़ गये। यों तो तुर्किस्तान भर में इनके दलालों का जाल बिछा था, जो जनता में भ्रम फैलाकर सोवियत के विरुद्ध असतोष फैला रहे थे। यह लोग सोवियत के कार्यक्रम को विदेशियों के बल पर बरबाद करने की और सोवियत को हटाने की चेष्टा कर रहे थे। सफेद सेना को विदेशियों की सहायता से सोवियत को हटाने की चेष्टा करते देख तुर्कमान जनता समझने लगी थी कि न तो यह विदेशी हमारे हित चिन्तक हो सकते हैं और न इन विदेशियों के नौकर सफ़ेद सेना वाले ही। तिस पर लाल सेना से मुठभेड़ में ब्रिटिश फौजों को जन धन का नुकसान भी बहुत उठाना पड़ रहा था। इसलिये अंग्रेज़ों ने तुर्कमानिस्तान में भी अपनी पुरानी साम्राज्यवादी चाल चलने का ही निश्चय किया सोवियत के विरुद्ध अपनी बन्दूक सफ़ेद सेना के कंधों पर रखकर ही चलाई जाये। ब्रिटेन को अपनी इस चाल में भी सफलता न मिली। कम्युनिस्टपार्टी के नेताओं के सैनिक नेतृत्व में लाल सेना और रूसी और तुर्कमानी जनता ने शीघ्र ही ब्रिटेन की कठपुतलियों, इन सफ़ेद सेनाओं, को भी मैदान से भगा दिया।

जुलाई, १९१९ में कास्पियनपार की लाल सेना के अफसरों ने अपनी सरकार को रिपोर्टें भेजीः—

"कास्पियन-पार की हमारी बहादुर सेना दुरुह अड़चनों को पार कर कश्हाक पहुच गई है। इस सेना के एक भाग ने भागते हुए शत्रु के पिछले भाग पर हमला बोल उसे मुख्य सेना से काट कर तितर बितर कर दिया"

"कश्हाक में हमारी सेना ने सफ़ेद सेना की सब रसद और युद्ध का सामान छीन लिया है" ...

"सफ़ेद सेना को हमने पूरी तरह परास्त कर धूल में मिला दिया है।

उसके कुछ दल तितर-बितर हालत में भाग कर समीप के पहाड़ों और रेगिस्तान में जा छिपे हैं। हम उनका पीछा कर, चुन चुन कर उन्हें समाप्त कर रहे हैं।"

क्रास्नोवोदस्क में अभी ब्रिटिश फौज की एक पल्टन शेष थी। परन्तु क्रास्नोवोदस्की कास्पियन-पार से सैकड़ों मील दूर है और मार्ग में रेगिस्तान और उजाड़ पहाड़ फैले हुए हैं। इन सब अड़चनों को लाँघ कर शत्रु पर धावा बोलना आसान काम न था। सफ़ेद सेना हार कर भागते समय जितना भी बन पड़ता नुकसान कर जाती। शहरों और गोदामों को जला देती, पुलों और बाँधों को तोड़ जाती। इस पर भी लाल सेना उनका पीछा न छोड़ा।

इस ऐतिहासिक युद्ध में भाग लेने वाली लाल सेना की कम्पनियों के सबसे योग्य और बहादुर कमाण्डरों में अरतैक बबाली का भी नाम था। अरतैक की रेजीमेण्ट का कमिस्सार तिशेंको था। अशीर और मावेद उसके मुख्य सहायकों म थे। इस सेना ने सफ़ेद सेना को पराजय पर पराजय देकर अपनी तुर्कमान मातृभूमि को स्वतन्त्र करके ही चैन की साँस ली।

लाल सेना की इस पल्टन का मोर्चा कज़ान्दिक में रेलवे लाइन के समीप लगा हुआ था। मोर्चे के चारों ओर की धरती दूर दूर तक तोपों के गोलों से खुदे गढ़ों और लड़ाई के मोर्चों के लिये खोदी गई टेढ़ी मेढ़ी खन्दकों से ऊबड़ खाबड़ हो रही थी। लाइन पर एक छिन्न भिन्न फौलादी ट्रेन खड़ी हुई थी और परखचे उड़ी हुई गाड़ियाँ लाइन के चारों ओर बिखरी हुई थीं। जहाँ तहाँ लड़ाई के टूटे हुए हथियार बिखरे हुए थे। तोपों के पहिये और जले हुए कुन्दों वाली राइफलें सब ओर पड़ी नज़र आती रहतीं। सम्पूर्ण प्रदेश लड़ाई की आग से झुलसा हुआ जान पड़ता था। परन्तु इस मोर्चे पर डटी हुई सेना के लोग इस प्रकार की परिस्थितियों और वातावरण के प्रति अभ्यस्त हो चुके थे। उनकी वर्दियाँ तार तार हो रही थी और पहाड़ों से आती बर्फानी हवा उनके शरीर को छेदे दे रही थी। रात में पूरी नींद सोना उनके लिए दूभर था परन्तु इस पर भी सिपाही खिन्न और हताश न थे। रात पड़ने पर कहीं कोई आदमी इकतारा या दुतारा बजाने लगता और दूसरे सिपाही गोल बाँधकर उसके चारों ओर नाचने लगते। कहीं बहुत से सिपाही टोलियाँ बना गीत छेड़ देते। भय और कठनाइयों की उन्हें कोई चिन्ता न थी, क्योंकि यह लोग अपने मानवी अधिकारों के लिए, मनुष्य बनने के लिये, स्वयं अपनी इच्छा से अपने शोषकों से लड़ रहे थे।

एक दिन सुबह ही लाल सेना के इस मोर्चे का मुख्य सेनापति (कमाण्डर इन-चीफ) अपने सहायक और सलाहकार अफसरों और अर्दलियों को लिये स्टेशन के तार घर से बाहर निकला और उसने खबर दी की क्रान्ति की युद्ध समिति का सदस्य, एक बहुत जिम्मेवार व्यक्ति कामरेड कुइबशेव इस मोर्चे के निरीक्षण के लिये आ रहा है। छावनी में खबर पहुचते ही सब दृश्य एक दम बदल गया। सिपाही अपनी फटी पुरानी वर्दियों को झाड पांछ कर पहनने लगे। बूटों, पेटियों और बटनों पर पालिश होने लगी। घोड़ों के जीनसाज़ और रकाबें ठीक से बाँधी जाने लगीं और पल्टन के डाक्टर दौड़-दौड कर सफ़ाई देखने और बावर्चीखाने का इन्तज़ाम ठीक कराने लगे।

खबर पा कर सब कम्पनियों के कमाण्डर भी हजामत बना, वर्दी ठीक कर एक साथ इकट्ठे हो, स्टेशन पर आ पहुँचे।

कमाण्डर इन-चीफ स्टेशन पर खड़ा अपने सलाहकरों से बात कर रहा था। उसके चेहरे पर गहरी चिन्ता और उलझन दिखाई दे रही थी। बातचीत करते समय वह बार बार अश्काबाद से आने वाली लाइन की ओर देख रहा था। सब ओर स्तब्ध उत्सुकता का आतंक छा रहा था।

अरतैक और तिशेंको एक साथ खड़े थे। तिशेंको पर भी परिस्थिति का प्रभाव पड़ रहा था। शरीर के तनाव से उसके रोंगटे खड़े हो रहे थे।

अरतैक ने उसकी ओर देख मुस्करा कर पूछा—"तिशेंको, क्या बहुत जाड़ा मालूम हो रहा है ?"

"हां, देखो तो हवा कितनी सर्द है ? · कपड़ों को छेदे दे रही है !"

"कपड़े तो मेरे भी तुम्हारे जैसे ही हैं।"

"अरे भाई घबराने की तो बात ही है"—तिशेंको ने स्वीकार किया—"यह आदमी तुर्किस्तान की क्रान्तिकारी युद्ध समिति का सदस्य है, तुर्किस्तान की केन्द्रीय पार्टी की कार्य-कारिणी का मेम्बर है जानते भी हो ?"

"मैं जानता हूँ कामरेड कुइबशेव दौरे पर आ रहा है परन्तु वह यहाँ खामुखा नुकताचीनी करने और हमें फटकार बताने तो नहीं आ रहा।"

"यह तो ठीक है। वह हमारा उत्साह बढ़ाने आ रहा है। वह हमें जल्दी से जल्दी लड़ाई जीतने के लिये उपाय बतायेगा। फिर भी भाई एक बड़े आदमी का कुछ रोब होता ही है। दुश्मन की गली का सामना कर लेना और बात है ! यह उत्तरदायित्व की बात है।"

अरतैक तिशोंको की परेशानी पर मुस्कराता रहा परन्तु जब स्पेशल ट्रेन सनसनाती हुई स्टेशन पर आ पहुँची तो वह स्वयम भी स्तब्ध सा रह गया। मोर्चे का कमाण्डर-इन चीफ का० चर्नीशोव स्थानीय अफ़सरों के साथ कुइबशेव की गाड़ी की ओर गया। स्पेशल ट्रेन में साथ चलने वाले सिगनेलर तुरत गाड़ी से उतरे और उन्होने स्टेशन के टेलीफोन से तारें लेकर कुइबशेव की गाडी में टेलीफोन लगा दिया। अरतैक भी कौतूहल से उस गाड़ी की खिड़कियों की ओर देख रहा था। खिड़की में से उसे एक दुबला पतला आदमी फौजी कोट पहने दिखाई दिया। उसका माथा ऊंचा और चौड़ा था, सिर पर बाल बहुत कम थे। यह आदमी खिड़की में से चुपचाप पहाड़ियों की ओर देख रहा था। अरतैक ने कुइबशेव को पहचान लिया। फौजी अखबार में वह उस का चित्र कई बार देख चुका था।

कुछ देर बाद चर्नीशोव इस गाड़ी से बाहर निकला। उसका चेहरा प्रसन्न और उत्साहित था। अरतैक और तिशोंको को देख वह इनकी ओर बढ़ आया। इनसे हाथ मिला वह इनकी पल्टन के बारे में पूछाताछ करने लगा।

मौका देख अरतैक ने मुस्करा कर पूछा—"साथी कमाण्डर-इन-चीफ, यह कामरेड कुइबशेव क्या हम जैसे लोगों से भी बात कर लेता है?"

चर्नीशोव ने भी मुस्करा दिया—"तुम से बात करेगा तो अपने आप ही देख लेना।"

"मुझसे बात करेगा?"—अरतैक ने विस्मय से पूछा।

"हाँ"

अरतैक चुप रह गया। और फिर सोच कर गम्भीर स्वर में बोला—"साथी कमाण्डर इन चीफ़, अगर मेरे काम से तुम सन्तुष्ट नहीं हो, या मुझ पर तुम्हें कुछ सन्देह है तो तुम स्वयम ही मुझसे साफ़ साफ बात कर सकते थे!

"तुम्हारी बात मैं नहीं समझा"—अब चर्नीशोव के चेहरे पर विस्मय दिखाई दे रहा था—"क्या कहते हो तुम?"

"तुम जानते हो मैं अज़ीज़खां के साथ था। मैंने सफ़ेद सेना में भी काम किया है। मैंने इन बातों को कभी छिपाया भी नहीं।"—अरतैक का चेहरा लाल हो गया—"अब यह बातें मुझे कामरेड कुइबशेव के भी

सामने स्वीकार करनी पड़ेगी। यह अपमान मैं न सह सकूगा।"

चर्नीशोव के माथे पर बल पड़ गये—"अरतैक बवाली, क्या कुढमगज़ा आदमी हो तुम ! खबरदार अगर तुमने इन बेहूदा बातों को दोहराया। मैं किसी भी आदमी के मुह से ऐसी बात सुनने के लिये तैयार नहीं हूँ। कामरेड कमिस्सार !" - चर्नीशोव ने तिशेंको की ओर देखा—"सेना के सिपाहियों को तुम क्या राजनैतिक शिक्षा दे रहे हो ! इतने बड़े जिम्मेवार अफ़सरों के मन से भी तुम व्यर्थ और मिथ्या भावनायें अब तक दूर नहीं कर सके ?"

तिशेंको ने फौजी सैल्यूट कर उत्तर दिया—"मुझे अपनी भूल के लिये अफ़सोस है कमाण्डर-इन चीफ़।"

अरतैक हैरान रह गया—बात ने यह क्या रूप ले लिया ! वह फिर बोला—"कामरेड कमाण्डर-इन-चीफ मैं कुछ कहना चाहता हूँ !"

"क्या कहना चाहते हो ? · · कहो !"

"इस मामले में कमिस्सार तिशेंको का कोई दोष नहीं !"

"यह कमिस्सार का ही दोष है"—दृढ़ता से चर्नीशोव बोला—"कमिस्सार का कर्तव्य है कि लाल सेना के सिपाहियों और अफ़सरों को उचित राजनैतिक शिक्षा दे कर उनके व्यर्थ सन्देह को दूर करे। कमिस्सार तिशेंको, मैं तुम्हें इस उपेक्षा के प्रति चेतावनी दे रहा हूँ, याद रहे !"

"आप की बात ठीक है कमाण्डर इन चीफ़"—तिशेंको ने फिर सैल्यूट कर स्वीकार किया।

अरतैक मूढ़सा रह गया। अपनी परेशानी में वह यह भी न देख सका कि चर्नीशोव ने आंख से तिशेंको को क्या इशारा किया और तिशेंको ने इशारे में क्या उत्तर दिया।

"अच्छा भाई"—चर्नीशोव का स्वर फिर कोमल होगया—"तुम लोग अपनी पल्टन में लौट कर तैयार रहो। हो सकता है, कामरेड कुइबशेव तुम लोगों से बातचीत करने वहीं आवें।"

अरतैक खिन्न मन से लौट पड़ा। रास्ते में वह तिशेंको से बोला—"भाई तिशेंको, जो कजरौटे को छुयेगा, उसके हाथ काले होंगे। मुआफ करना, मेरे कारण आज तुम्हें भी इतना सुनना पड़ा। इसके लिये मुझे अफ़सोस है परन्तु इसमें मेरा क्या बस था ?"

"अरतैक, अभी पांच मिनिट नहीं हुये कि हम दोनों पर डांट पड़ी है"-तिर्शेंको ने उत्तर दिया— 'तुम फिर वैसी ही बातें कर रहे हो। कमाण्डर-इन चीफ़ की बात बिलकुल ठीक है। तुम्हारे माथे पर तो कोई मोहर लगी नहीं। मनुष्य अपनी समझ और विश्वास के अनुसार ही काम करता है। तुम्हें अज़ीज़ पर विश्वास था इसलिये तुम उसका साथ दे रहे थे। बात समझ आ जाने पर तुमने उसका साथ छोड़ दिया। कौन नहीं जानता कि पूरे एक बरस से तुम जान हथेली पर लिये सोवियत और जनता की रक्षा के लिये लड़ रहे हो। इस पर भी तुम समझो कि तुम पर शत्रु का साथ देने का दाग़ लगा हुआ है तो, क्या इलाज ? अज़ीज़ के साथ कुछ दिन रहनें का तो तुम्हारे मन पर इतना प्रभाव है परन्तु सोवियत के पक्ष में रहने की बात ही भूल जाते हो। आख़िर यह क्या बात है ?"

"कोढ़ का भी कोई इलाज होता है ?"—आह भर अरतैक ने पूछा।

"मरने पर तो शरीर के साथ कोढ़ भी ख़त्म हो जाता है।"—तिर्शेंको ने समझाया—"सोवियत के लिये तुमनें कितनी बार मौत का सामना किया ? कोढ़ अभी तक धुला नहीं ? अज़ीज़ के साथ का कोढ़ तो तभी दूर हो गया था जब तुम उसे लात मार आये थे। अब तो तुम पूर्ण स्वास्थ्य सोवियत सैनिक हो। उस बात का चर्चा अब न करना, याद रहे।"

"अच्छा भाई अब नहीं करूँगा।"

कुइबशेव बहुत देर तक गाड़ी में ही बैठा स्थानीय मोर्चे के सम्बध में रिपोर्ट सुन कर पूछताछ करता रहा। अपने मन को समझाने के लिये अरतैक को काफ़ी समय मिल गया। वह सोचता रहा—कुइबशेव यह प्रश्न करेगा तो मैं यह उत्तर दूंगा, वह बात पूछेगा तो ऐसा उत्तर दूंगा। परन्तु जब उसने कमाण्डरों को अपनी पल्टन की ओर आते देखा तो सब कुछ भूल गया।

कुइबशेव जब बिलकुल समीप आ गया तो अरतैक ने अपने घोड़े की रकाबों पर तन कर अपनी पल्टन को सलामी देने का हुक्म दिया—"पल्टन सावधान !"

कुइबशेव ने पल्टन के सवारों को एक सिरे से दूसरे तक पैनी नज़र से देखा। अरतैक ने उसके सामने आकर फौजी सलाम किया और अटेंशेन (सावधान) में खड़ा रहा।

कुइबशेव ने हुक्म दिया—"स्टैंड एटईज़" आराम से हो जाओ! और हाथ बढ़ा कर अरतैक से मिलाया। कुइबशेव बहुत देर तक अरतैक और तिशेंकों को उनके नाम से सम्बोधन कर, मुस्करा मुस्करा कर उनसे बात करता रहा। वह बात बात में मज़ाक कर देता और उसकी बातों से दूसरे लोग भी मुस्करा देते।

कुइबशेव के चले जाने पर भी अरतैक उसकी आंखों की गम्भीरता और बात करने के सरल ढंग को याद कर सोचता रहा—यह है असल फौलादी आदमी, जो किसी भी परिस्थिति से घबरा नहीं सकता। ऐसे व्यक्ति का नेतृत्व मिले तो मेरे जैसे दिहाती किसान भी काम लायक सिपाही बन सकते हैं,

कुइबशेव के शब्द उसे याद आ रहे थे—"कामरेड कमाण्डर, सोवियत सरकार जानती है कि आपकी सेना दुर्गम और बीहड़ रास्तों पर, जान की बाज़ी लगा कर लड़ती हुई एक हज़ार मील से अधिक सफर तय कर चुकी है। क्रास्नवोदस्क पहुंचने के लिये अभी आप लोगों को सैकड़ों मील रेगिस्तान पार करना होगा। रास्ते में कई और विकट मोर्चे पड़ सकते हैं। आपका क्या ख्याल है, आप के सवार थक नहीं गये होंगे?"

अरतैक ने उत्तर देने का यत्न किया—"क्रान्ति... "क्रान्ति युद्ध, युद्ध कमेटी के मेम्बर... ।"

कुइबशेव बोल उठा—"अरे भाई, वह इतना बड़ा नाम रहने दो न! मेरा नाम कुइबशेव है। मेरा नाम ले कर बात करो।"

"कामरेड कुइबशेव, हमारे यहाँ कहावत है—तलवार मियान में पड़ी रहे तो जंग खा जाती है। हमारे सवार तो खाली बैठे रहने से ही घबराते हैं। हम लोग तो किसान हैं। किसान तो तभी आराम करता है जब फसल बटोर कर घर ले आता है।"—अरतैक ने उत्तर दिया।

"अच्छा!"—कुइबशेव ज़ोर से हंस कर बोला—"तो आप सफ़ेद सेना को अपनी फसल समझते हैं; खूब!"

"नहीं नहीं, हमारे यहाँ एक दूसरी कहावत भी है, बैरी, रोग, सांप चिंगारी, कब हू छोटे न गानै विचारी।"

"हूं, तो आप इन सफ़ेद सांपों को कुचले बिना आराम न करेंगे?"

"कभी नहीं।"

"इस कूच में आप मुझे साथ ले चल सकते हैं ?"—मुस्कराकर कुइब-शेवने पूछा।

"क्या कीजियेगा अपना समय नष्ट करके ? कूच में मुश्किल भी रहती है। आप क्यों यह सब झेलें ?"

"मैं स्वयं देखना चाहता हूं हमारी लाल सेना और उसकी तुर्कमानी पल्टन और रिसाले कैसी वीरता से शत्रु को पछाड़ते हैं।"

कुइबशेव ने यह बात तुर्कमानी पल्टनका दिल रखने के लिये ही नहीं कही थी। वह अरतैक के सवारों के साथ कूच में शामिल हो गया। सैनिकों में सनसनी फैल गई—"कामरेड कुइबशेव पल्टन के साथ कूच कर रहा है।" और उनके हौसले दूने-चौगने हो गये।

'अक्चा कुइमा' स्टेशन पर लाल सेना ने सफ़ेद सेना पर सामने और बाईं बगल से एक साथ चोट की। सफ़ेद सेना सामना किये बिना ही भाग निकली और 'पेरेवाल' से भी आगे भागती चली गई।

अक्चा कुइमा और पेरेवाल के बीच में कुइबशेव तार के खम्भों पर मीलों के नम्बर देखता जा रहा था। दो सौ सात नम्बर के खम्भे के पास वह रेलवे लाइन से तीस कदम परे हट अपने घोड़े से उतर गया और सिर से टोपी उतार हाथ में ले ली। वहां रेत पर कोई भी चिन्ह दिखाई न दे रहे थे। परन्तु उसके साथ चलने वाले दूसरे अफ़सरों ने भी वैसा ही किया। गले में आंसू भर आने के कारण भर्राये हुये स्वर में कुइबशेव बोला—"कम्यु-निस्ट पार्टी, उसके नेता लेनिन, स्टैलिन और लाल सेना की ओर से हम लोग कामरेड शामयान और उसके साथी छब्बीस कमिस्सारों के प्रति, जो दगाबाज़ ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा इस स्थान पर गोली मार कर दफ़ना दिये गये थे, हम आदर प्रकट करते हैं। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक देश और जनता के शत्रुओं को समाप्त नहीं कर देंगे और बाकू को शोषकों के पंजे से स्वतन्त्र कर अपने वीर साथियों की इस समाधि पर स्वतन्त्र मानवता का हंसिये हथौड़े का लाल झण्डा न फहरा देंगे, आराम न लेंगे।"

वीरों के इस स्मृतिस्थान को पूरी पल्टन ने सलामी दी और बाकू को स्वतंत्र करने की प्रतिज्ञा कर आगे बढ़ी।

'लाल सेना के' आदिज में पहुंचने की घटना अरतैक कैसे भूल सकता था ? शत्रु पर लाल रिसाले के हमला करने का समय निश्चित हो चुका था।

लाल पैदल फौज की स्थिति जानने और उन्हें इस हमले की सूचना देने के लिये अरतैक ने सवार भेज दिये थे। हमले का समय बिल-कुल समीप आ रहा था परन्तु पैदल सेना को सूचना देने गये सवार अभी तक न लौटे थे। अरतैक बहुत चिन्तित था। चारों ओर खूब घना कोहरा छाया हुआ था। कुइबशेव का अनुमान था कि सूचना देने गये सवार कोहरे में राह भूल गये हैं। पैदल सेना हमला करने के लिये अपने स्थान पर तैयार खड़ी सूचना और आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही है। कुछ सवारों और अरतैक को साथ ले कुइबशेव ने स्वयम ही उस ओर जाने का निश्चय किया।

कुइबशेव के पल्टन के साथ होने पर अरतैक बिलकुल निर्भय रहता और उसका हौंसला बढ़ा रहता। परन्तु कुइबशेव की उचित रक्षा के उत्तर दायित्व का बोझ भी कम न था। इस गहरे धुन्द में, जब चार हाथ परे की चीज़ भी दिखाई न देती थी, और साथ केवल बीस ही सवार थे, पार्टी की युद्ध समिति के एक बहुत महत्व पूर्ण व्यक्ति को साथ ले जाना अरतैक को निरापद मालूम न हो रहा था। उसने कुइबशेव से पीछे रहने के लिये अनुरोध किया परन्तु कुइबशेव ने निरपेक्ष शान्ति से उत्तर दिया "तुम परवाह मत करो, मेरे साथ आओ!" अरतैक चुप रह गया।

कुइबशेव आगे आगे चल रहा था और शीघ्र ही उसने पैदल सेना की जगह का पता लगा लिया। कोहरा भी कुछ झीना होने लगा था। सफेद सेना के मोर्चे और उनकी फौलादी ट्रेन का इधर आना जाना भी सूझ पड़ने लगा था। कुइबशेवने हमला बोलने का स्थान और मार्ग निश्चय किया और पैदल सेना को यह सब कुछ समझा देने के लिये एक सवार उस ओर भेज दिया।

सफ़ेद सेना की खोजी पार्टी ने अपने अफ़सरों को सूचना देदी थी कि लाल सेना चार मील के अन्तर पर पहुंच चुकी है। सफेद सेना के अफ़सरों को इस बात पर विश्वास ही न हुआ। उन्हें सन्देह हुआ कि खोजी पार्टी का नेता शरारत कर हमारी सेना को डराना चाहता है। इन अफ़सरों ने आज्ञा दी कि उसे गिरफ्तार कर लिया जाय। इस अफ़सर के गिरफ्तार किये जाने से पहले ही सफ़ेद सेना पर लाल तोप खानों के गोले आ पड़े और लाल सेना ने हमला बोल दिया।

बहुत घमासान लड़ाई हुई। कुइबशेव पूरे मोर्चे पर बिजली की तरह

नाचता फिर रहा था। वह कभी रिसाले के पीछे दिखाई देता और कभी पैदल सेना के साथ। जहां भी वह अपनी सेना का हमला धीमा होता देखता, तुरंत स्वयं पहुंच जाता। अरतैक भी कुद्दबशेव की ढाल बना, उसके शरीर पर आते वार को अपने ऊपर लेने के लिये आतुर, उसके साथ बना रहा।

सफ़ेद सेना ने सूर्य छिपे तक सामना किया परन्तु अंधेरा होते-होते उनके पांव उखड़ गये। लाल सेना के हाथ हज़ारों सफ़ेद सैनिक कैद हो गये और लड़ाई का भी बहुत सा सामान उनके हाथ लगा।

अगले दिन सूर्योदय के समय क्रास्नोवोदस्क लाल सेना की आंखों के सामने झलमला रहा था और लाल सेना अपने लक्ष पर टूट पड़ने के लिये तैयार खड़ी थी।

क्रास्नोवोदस्क के दायें बायें दोनो ओर पहाड़ हैं। पीछे की ओर कास्पियन समुद्र राह रोके है। लाल सेना शहर पर केवल सामने से ही हमला कर सकती थी। और इस रास्ते में एक जबरदस्त किला मौजूद था। शहर के चारों ओर मोर्चे बने थे और लम्बे कांटे लगी तारों के घेरे बने हुए थे। मोर्चों पर दूर और नज़दीक मार करने वाली तोपें कतारों में खड़ी हुई थीं। शहर के पीछे समुद्र में पन्द्रह जंगी जहाज़ बड़ी बड़ी तोपें लिये तैयार खड़े थे। सफ़ेद सेना की सबसे बहादुर "शेर दिल" 'चीता दल" ख़ूंखार दल" वगैरा पल्टनें और एक ब्रिटिश पल्टन भी क्रास्नोवोदस्क में डटी हुई थी। सफ़ेद सेना के सबसे बड़े सेनापति देनिकिन के जनरलों को विश्वास था कि क्रास्नो-वोदस्क का किला अजेय है।

लाल सेना ने अपना हमला ६ फरवरी-१९२० की रात में आरम्भ किया। आधी रात के समय राइफलों के फायर की पहली बौछार हुई और कुछ ही देर में भारी भारी तोपों के फायरों से पहाड़ गूंजने लगे।

सुबह होते ही बरफ़ पड़ने लगी। घाटी की हवा जले बारूद की चिरांध से भारी हो गई। आकाश बादलों से पटा हुआ था।

लाल सेना छोटी छोटी पहाड़ियों और कोहरे की आड़ लेकर तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। सफ़ेद सेना दोनों ओर की पहाड़ियों पर जमी हुई थी। नीचे लाल सेना की गति विधि उन्हें स्पष्ट दिखाई न दे रही थी पर वे आंखों

की तरह दनादन गोली-गोला बरसा रहे थे। लाल सेना इस मार पर भी न रुकी और उन्होंने सफ़ेद सेना का पहला मोर्चा छीन ही लिया। उजेला हो जाने के कारण सफेद सेना के लिये लाल सेना पर निशाना लेना और आसान हो गया। गोला-गोली मूसलाधार बरसने लगे। समुद्र में खड़े पन्द्रह जहाज़ भी २ ,के पीछे से लगातार गोले बरसा रहे थे। अब लाल सेना के लिए और आगे बढ़ना सम्भव न रहा।

लाल सेना का एक छोटा तोपखाना चट्टानों की आड़ ले एक पहाड़ी पर चढ़ गया और उसने जहाजों पर निशाना बाँध गोले बरसाने शुरु कर दिये। एक जहाज में आग लग गई। काजल से काले धुयें के गुबार आकाश की ओर उठने लगे। जहाज के गोला गोदाम में आग पहुचने पर गोले फट फट कर आस पास के जहाजों पर और शहर में भी गिरने लगे। शत्रु के मोर्चों में गड़बड़ी और घबराहट फैल गई। अवसर देख लाल सेना की पैदल पल्टन ने शहर पर हल्ला बोल दिया।

अरतैक ने अपने रिसाले को सफेद सेना के एक बड़े मोर्चे पर हमला करने का हुक्म दिया। सवार हाथों में नंगी तलवारें लिये बाजों के झुण्ड की तरह झपट पड़े। अरतैक रिसाले के बीचों-बीच स्वयं हमले का नेतृत्व कर रहा था। एक जहाज ने इस रिसाले पर छर्रे भरे हुए गोले बरसाने शुरु किए। एक गोला अरतैक के बिलकुल सामने आकर फटा। गोले के धक्के से अरतैक का घोड़ा पीछे की ओर धसक गया परन्तु अरतैक ने उसे सम्भाल कर एड़ी लगाई और फिर आगे बढ़ाया। दूसरा गोला फटा और लोहे का एक बड़ा टुकड़ा घोड़े के सीने में धस गया। घोड़ा गिर पड़ा और अरतैक भी दूर जा पड़ा।

तिशोंको समीप ही था। वह तुरन्त अपने घोड़े से कूद पड़ा और अरतैक की बाँह में बाँह दे उसे खड़ा करने की कोशिश करने लगा। वह बार बार अरतैक का नाम लेकर पुकार रहा था परन्तु अरतैक सुन नहीं रहा था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

"अरतैक उठो, देखो हमने मोर्चा ले लिया"—तिशोंको, ऊँचे स्वर में चिल्लाया।

"हूँ" करके अरतैक ने आँखे खोलने की चेष्टा की। उसकी आँखें पथराई हुई थीं, वह कुछ देख न पाया। उसकी गर्दन फिर झुक गई।

इतने में "हुर्रा हुर्रा"—लाल सेना का गगन, भेदी विजय का नारा गूँज उठा। अरतैक की आँखें खुल गईं परन्तु अब भी वे पथराई हुई थीं।

तिशेंको तुम हो?"—अरतैक ने बहुत धीमे स्वर में पूछा।

"हाँ, अरतैक मैं हूँ हम जीत गये।"—उत्साह से ऊँचे स्वर में तिशेंको ने उत्तर दिया। अरतैक अपनी गर्दन न उठा सका। तिशेंको उसे अपनी बाँहों में सम्भाले था। अरतैक के सवार तीरों की तेजी से झपटते हुए उस के समीप से निकल आगे बढ़ रहे थे, चारों ओर शत्रुओं की लाशें पड़ी थीं। अरतैक के चेहरे पर जीवन की हल्की छाया झलक आई थी। उसकी आँखें आधी खुल गईं थीं।

दोपहर बीत गई। हल्की हवा ने बादलों को तितर बितर कर दिया। वर्षा से भीगे भीगे सूर्य की किरणें शहर पर फैलने लगीं। किरणों में चमचमाते समुद्र की सतह पर सफेद सेना के भागते हुए जहाज बहुत दूरी पर धब्बे जैसे दिखाई दे रहे थे। इन जहाजों से बरसे आखिरी गोलों में से एक गोला स्टेशन के समीप बने पैट्रोल के गोदाम पर पड़ गया था। गोदाम में आग लग गई थी और काजल का एक विस्तार धरती से आकाश तक फैल रहा था। इस काले पर्दे पर शोषितों की विजय का लाल झण्डा नवजीवन के दीपक की शिखा की तरह झलमल कर रहा था।

तिशेंको की बाहों में सम्भला हुआ जख्मी अरतैक अधमुँदी आँखों से आशा की इस लाल प्रकाश शिखा को देख रहा था। इस प्रकाश से उसकी कल्पना में कास्पियन समुद्र से लेकर आमू नदी और तेजेन तक का प्रदेश जगमगा उठा। उसके बीते सम्पूर्ण जीवन के दृश्य प्रकाशित हो उठे—अपनी जनता के लिये स्वतंत्रता से जी सकने के अधिकार के संघर्ष का मार्ग उद्भासित हो उठा। जीवन की भूलों और पश्चात्ताप की छाया, विश्वस्त मित्रों के साथ मिलकर जीवन को स्वतन्त्रता के लिये लड़ कर सफलता पाने के प्रकाश में मिट गई......।